Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

૩૦૨૪

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळा-ग्रन्थांक ४२.

जैन धातुप्रतिमा लेखसंग्रह.

भाग १ लो.

लेखक.

योगनिष्ठ शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी.

प्रगटकर्त्ता

श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ.

(हा. शा. लल्लुभाई करमचंद दलाल.)

चंपागली—मुंबाई.

प्रत—५००

वीर संवत् २४४३. विक्रम संवत् १९७३.

किम्मत १—०—०.

वडोदरा—शियापुरामां, लुहाणामित्र स्टीम प्रि. प्रेसमां, विठ्ठलभाई आशाराम ठक्करे ता. ३१—७—१७ ना रोज प्रकाशक—शाह लल्लुभाई करमचंद दलाल, चंपागली-मुंबाई-ने माटे छाप्पो प्रसिद्ध कर्युं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

(સ્થાપન–જ્ઞાનપંચમી–વીર સંવત્ ૨૪૩૫.

જો તમારે તત્ત્વજ્ઞાનના ઉત્તમ સિદ્ધાંતો, સરલ અને પ્રિય શૈલીમાં સમજવા હોય અને પોતાનું હૃદય નિર્મળ બનાવવું હોય, તો મંડળ તરફથી પ્રગટ થયેલ:

શ્રીમદ્ બુદ્ધિસાગરજી ગ્રન્થમાળા અવશ્ય વાંચો.

મજકુર ગ્રન્થમાળામાં નીચેના ગ્રન્થો પ્રગટ થયેલ છે, જે વાંચી, મનન કરી, તમારા આત્માને ઉચ્ચ શ્રેણિએ ચઢાવો. ઉત્તમ ગ્રન્થો એજ અપૂર્વ સત્સંગ છે. ખચીત આ ગ્રન્થોના મનનથી ઘણું જાણવા અને મેળવવા પામશો–ગુરૂશ્રીની લેખનશૈલી–માધ્યસ્થદૃષ્ટિવાળી હોવાથી, દરેક ધર્માવલંબીઓ તેને પ્રેમપૂર્વક વાંચે છે. દરેક ગ્રન્થોમાં અધ્યાત્મજ્ઞાન અને તત્ત્વજ્ઞાન સંબંધી વિવેચન છે.

વૈરાગ્ય, ઉપદેશક, અને બોધક, પદો–ભજનો–તે તે વિષયમાં લીનતા કરી નાખે છે. દરેક પદોનો સાર વિચારણીય છે. અનેકાન્તદૃષ્ટિથી, હૃદયની વિશાળતાપૂર્વક અને પ્રિય તથા પથ્યવાણીથી વાચકોનાં હૃદયને ઉત્તમ કરી શકાય છે અને તે મુજબ આ ગ્રન્થો છે.

માત્ર વાચકોના હિતાર્થે, ઉદાર ગૃહસ્થોની સહાય વડે,–કોઇપણ ગ્રન્થ પ્રકાશકમંડળ કરતાં–ઓછામાં ઓછી કિંમત રાખવાની પહેલ આ મંડળેજ કરી છે–ઓછી કિંમત છતાં છપાઇ–કાગળ–બંધાઇ વગેરે કામ સુંદર થાય છે, તદુપરાંત વધુ પ્રચારાર્થે–પ્રભાવના, વિદ્યાર્થીઓને ઇનામ અને ભેટ આપનાર માટે વધુ નકલો મંગાવનારને (શીલીકમાં હોય તો) બની શકતી ઓછી કિંમતે આપવામાં આવે છે.

જેઓને પ્રગટ થઇ ચુકેલા અને થવાના ગ્રન્થો પૈકી, કોઇપણ ગ્રન્થો પોતાના મુરબ્બી–કે સ્નેહી અને ઉપકારીઓના સ્મરણાર્થે, પ્રગટ કરવાને ઇચ્છા હોય તેમને તે મુજબ મંડળ સગવડ કરી આપે છે.

પત્રવ્યવહાર–મુંબાઇ–ચંપાગલી. વ્યવસ્થાપક–**અધ્યાત્મ જ્ઞાનપ્રસારકમંડળ** જોગ કરવો.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निवेदन.

आ मंडळ द्वारा श्रीमद् बुद्धिसागरजी ग्रन्थमाळानो ४२ मो "जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह" नामे आ जैन ऐतिहासिक ग्रन्थ जनसमाज समक्ष रजु थाय छे.

आ ग्रन्थना कर्त्ता श्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरीश्वर छे. श्रीमदे धातुप्रतिमाओ उपर लखायला लेखोथी शुं शुं जाणवानुं मळे छे ते संबंधी ६० पृष्ठनी प्रस्तावना लखी सविस्तर जणाव्युं छे. जे उपरथी बारमा सैकाथी सोळमा सत्तरमा सैका सुधीमां जैनोनी जाहोजलाली केटली बधी हती ते प्रतीत् थाय छे. ते समयना जैन श्रेष्ठिओ, जैनाचार्यो, गच्छो, वणिक ज्ञातियो, नगरो अने गामो संबंधी प्रस्तावनामां सारो प्रकाश पाड्यो छे. इतिहासज्ञसाक्षरोमां आ पुस्तक अतिउपयोगी थइ पडशे केमके जैनोना इतिहास पर आ ग्रन्थ अत्यंत अजवाळुं पाडे तेम छे.

आ ग्रन्थमां कोइ कोइ दिगंबर प्रतिमाओना पण लेखो आव्या छे. ते संबंधी एम अनुमान कराय छे के वचला समयमां मंदिरो अने प्रतिमाओना रक्षण माटे मुश्केली उभी थयेली ते वखते जे प्रदेशमां दिगम्बर मंदिरो अने तेओनी वस्ती कमी हशे त्यांना श्वेतांबर भाईओए ते मूर्तिओना रक्षण माटे स्थान आप्युं होवुं जोइए; ते साथे ते समये मारा तारापणानी मारामारी प्रभुप्रतिमा अंगे नहि होय.

गुरुश्रीए आ ग्रन्थनी प्रस्तावना लखी जैन कोम उपर महाद् उपकार कर्यो छे. दरेक गच्छना साधु, साध्वीओए पोताना गच्छनी पूर्वे केवी जाहोजलाली हती ते जाणवा सारु आ ग्रन्थ अवश्य वांचवो जोइए. अने जैन कोम पूर्वनी स्थिति पुनः प्राप्त करे तेवा प्रयासो करवा जोइए;—तेवा मार्गोने सहाय आपवी जोइए.

आ ग्रन्थना प्रकाशार्थे द्रव्यनी सहाय करनारनां मुबारक नामो पाछला पृष्ठ उपर उपकार पत्रमां जणाव्यां छे. तथा प्रकारनी सहाय माटे तेओने धन्यवाद घटे छे. अने मंडळ तेओनो उपकार प्रगट करे छे. धातु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमाना हजु नहिं छपायेला एवा दोढ हजार लगभग लेखो बाकी छे. जे माटे कोइ गृहस्थो तरफथी उत्साही सहाय मळे बीजो भाग प्रगट कराशे. वर्तमान समये कागळनी मोंघवारी इत्यादीने लइ धार्या करतां अतिखर्च थवाथी अने सहायकोने योग्य नकलो भेट अपाती होवाथी किम्मतमां वधारो करवो पड्योछे. तोपण तेना काम अने खर्च तरफ जोतां थोडी किंमत राखी छे.

आ ग्रन्थ वांची जे कंई सुचनाओ करवी जणाय ते वांचको लखी मोकलशे तो बीजी आवृत्ति समये, तथा बीजा भाग प्रसंगे उपयोगी थई पडशे, ते माटे विद्वानोए खास लक्ष राखवा जरुर छे.

चंपागली—मुंबाई
सं. १९७३ अषाढ वदि ११

ली०
अध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ.

उपकारपत्र.

(परोपकारायसतांविभूतयः)

नीचे जणावेला सद्गृहस्थोए साथे जणाव्या मुजब द्रव्यनी, आ ग्रन्थना प्रकाशार्थे सहाय आपी होवाथी तेओनी उपकार साथे नोंध लेवी उचित धारी छे. स्वकमाइनो उपयोग हरेक रीते थइ शके छे तेमां पण ज्ञानने प्रगट करवा माटे अने ज्ञाननो वधारो करवा माटे तेना जे जे साधनो होय तेने सहाय आपवी एज सर्वोत्तम होवाथी तेओ विषेश धन्यवादने पात्र छे. "ज्ञानदान एज सर्वोत्तम दान छे.

२५०) शेठ मुरीयाभाई जीवणचंद झवेरी. मुंबईवाळा तरफथी.
१०१) शेठ मगनलाल करमचंद. प्रांतिजवाळा तरफथी.
७९) शेठ माधवलाल अमथालाल. माणसावाळा तरफथी (तेमनी दीकरीना स्मर्णार्थे).
२९) शेठ गीरधरलाल पुरुषोतमदास. नारदीपुरवाळा तरफथी.
१५१) शेठ डाह्याभाई घेलाभाई. महेसाणावाळा तरफथी.

रु. ६०२)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन धातुप्रतिमा लेखसंग्रह प्रथम भागनी

प्रस्तावना.

जैन धातुप्रतिमाओना लेखोथी जैन कोमने तथा जैनेतर कोमोनी ऐतिहासिक विषय संबंधी घणुं जाणवानुं मळी शके तेम छे एम जाणी धातुप्रतिमाओना लेखो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे. जैन कोममां धातुप्रतिमाओपर लेखो कोतरवानो प्राचीनकालनो रीवाज होय एम जणाय छे. वि. सं. सातमा सैकाथी धातुप्रतिमाना लेखो मळी आवे छे एम साक्षर श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय ध्रुवे पण अमारी वार्ता प्रसंगे अमने जणाव्युं हतुं. धातुप्रतिमाना लेखो मोटा भागे एक हजार वर्ष चाली शके छे. जैनेतर कोममां पण धातुनी प्रतिमापर लेखो लखवानो रीवाज प्रायः देखवामां आवे छे. परंतु जैनो ते माटे अग्रगण्यपद धरावे छे. वि. सं. नवसेंनी सालथी आ पुस्तकमां धातुप्रतिमाओना लेखनी प्रारंभता देखवामां आवे छे. धातुप्रतिमाओना लेखोथी नीचे प्रमाणेनी हकीकत जाणवानी विचार स्फुरणा प्रगटी नीकळे छे.

१ कई कई ज्ञातिवाळाओए प्रतिमा भरावी.

२ हालमां ते ज्ञातियोमांथी कई ज्ञातियो जैनो तरीके छे.

३ कया कया गच्छना आचार्योए प्रतिष्ठा करावी.

४ कया गच्छमां आचार्य प्रतिष्ठा करी शकता अने शकता नहोता ?

५ ते गच्छो पैकी हाल कया गच्छो विद्यमान छे.

६ कया कया गाममां आचार्योनो वास हतो अने कया कया गाममां जैन गृहस्थोए प्रतिमा भरावी.

७ जूनामांजूनो लेख तथा अर्वाचीन लेख.

८ प्राचीन प्रतिमाओपर लेखो लखवानी प्रवृत्ति संबंधी विचार.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ कया कया गच्छो उत्पन्न थया.
१० कइ कइ ज्ञातियो हाल जैन धर्मथी रहित थई.
११ जैन वणिकोनी पदवीओ.
१२ कया कया ग्रन्थोथी आ संबंधी अजवाळुं पडी शके छे?
१३ दिगंबर धातुप्रतिमाओ संबंधी विचार.
१४ अन्य जैन मुनियो तथा विद्वानोनो आ दिशामां प्रयत्न.

१ कइ कइ ज्ञातिओए जैन धातुप्रतिमाओ भरावी.

आ पुस्तकमां आवेला लेखोमांथी जे जे ज्ञातियोए जैन प्रतिमाओ भरावी जेनुं अत्र लीस्ट कर्युं छे ते जोवाथी जैन वणिक ज्ञातियोनुं ज्ञान मळी शके तेम छे.

लाडुआ श्रीमालीजात. असलथी जैनधर्म पाळती आवेली छे. जैनाचार्योए क्षात्र रजपुतोने वणिक बनावी लाडुआ श्रीमाळी तरीके प्रसिद्ध कर्या. लाडुआ श्रीमाळी वणिकोए तेरमा चौदमा सैकाथी जैन ग्रन्थो, मंदिरो प्रतिमाओ भरावी छे एम सिद्ध थाय छे. लाड वाणिआ अने लाडुवा वाणिया ए बे जात भिन्न छे. सुरत, कानेर वगेरे गामोमां लाडुआ श्रीमाली वणिकोनी वस्ती छे तेओ जैन धर्म पाळे छे. लाडवणिको पण जैनो छे. पंन्यास मुनिश्री मेघविजयजी पूर्वे ते ज्ञातिना हता. जेओ विद्वान् छे. लाडुआ श्रीमाळीओए पूर्व लाडुआमां सुवर्ण महोरोने घाली गरीब जैनोने आपी होय वा तेओने अन्य जैनराजाओए लाडवामां सुवर्ण महोरो घालीने आपी होय वा तेओए अन्य जनोने लाडुवानुं ल्हाणुं आप्युं होय एम लागे छे तेथी तेओ लाडुआ श्रीमाली तरीके प्रसिद्ध थया छे. लाडवा श्रीमाली ज्ञातिए जैनधर्मनी सेवामां जैनाचार्योनी सारी रीते भक्ति करी छे.

वायडज्ञाति—पाटण पासे वायड (वायट) गाममां जे वणिको ब्राह्मणो, क्षत्रियो रहेता हता ते वायट नामथी प्रसिद्ध थया.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाटण पासे वायड गाम आवेलुं छे. ते पूर्वे एक मोटुं नगर हतुं. वायु पुराणमां वायड वणिकोनुं वर्णन आवे छे. वायुपुराण प्राचीन नथी. वायट गाममां जैन मन्दिरो प्राचीन कालथी विद्यमान हतां. पाटणथी पण वायड, गांभू, मोढेरा वगेरे गामो प्राचीन छे. वायड गाममां सर्व वर्णना लोको एक वखते जैनधर्मी हता तेथी वायड गामना नामे त्यां वसता जैनाचार्यो पण वायडगच्छ नामथी प्रसिद्ध थया. वायड वणिकोए जैन धर्मनी आराधनामां मुख्य भाग भजव्यो छे. विवेकविलास, बाल-भारत वगेरे ग्रन्थोमांथी वायड ज्ञातिनो इतिहास मळी आवे छे. प्रभाचंद्र सूरिए लखेल प्रभावक चारित्र तथा श्रीराजशेखर प्रणीत प्रबंधकोषमांथी वायडज्ञाति संबंधी इतिहास मळी शके तेम छे. वायुवाट शब्दपरथी वायड गाम अपभ्रंश तरीके प्रसिद्ध थयुं होय तेम जणाय छे. वायु पुराणमां अतिशयोक्तिथी केटलुंक वर्णन कर्युं छे. विक्रमना पांचमा शतकमां वायु पुराणनी रचना थएली केटलाको जणावे छे. पण ते सिद्ध थई शकती नथी, तेमां जैनोनुं वा जैन संबंधी बीजी हकीकतनुं वर्णन नथी, तेटला मात्रथी पण जैन वायड वणिकनी पूर्वना कालनुं छे एम मानी शकाय तेम नथी. कारण के केटलीक वखत पाछळथी जे पुस्तक लखवामां आवे छे तेमां पूर्वनी स्थितिनुं वर्णन खास प्राचीन पुस्तक सिद्ध करवा माटे लखवामां आवतुं नथी. वायुवट गाममां श्रीमाली, ओशवाल, पोरवाड, नागर, दिशावाड वगेरे वणिकोए पाछळथी आवी वास कर्यो हतो. ते माटे अर्वाचीन श्लोक जुओ.

श्रीमाली उसपालाश्च पौरवाताश्चनागराः ।
दिक्पाला गुर्जरा मोढा, ये वायुवटवासिनः ॥

आ श्लोक पाछळथी रचायलो लागे छे. जे त्रांबापत्रमां आ श्लोक आवेल छे. आ त्रांबापत्रनो श्लोक लखायो ते प्रसंगे ते वायड गामना मूळ वाणिया उपरांत ओशवालो, पोरवाडो, नागरो, दशा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिशावाड, गुर्जरा अने मोढो ते गाममां व्यापारादिक कारणे आव्या हता एम सिद्ध थाय छे.

जे जातो **महेश्वर** (महादेव) ने देव मानवा लागी ते माहेश्वरीय नामे प्रसिद्ध थइ. वल्लभीपुरनो छेल्लो राजा तथा केटलीक वणिक ज्ञातियोए शंकराचार्य पछी **महेश्वरनो** धर्म स्वीकार्यो ते जैन मटीने **माहेश्वरीय** (मेसरी) तरीके प्रसिद्ध थई.

हाल पण महादेवने माननारा वाणियाओने **माहेश्वरीय** (महेसरी) कहेवामां आवे छे. गुजरातमां नवमा सैका पछी जैनो मटीने **महेश्वर** धर्ममां गएला राजाओ तथा वणिको **माहेश्वरीय**—महादेवना नामथी धर्म पाळवा माटे प्रसिद्ध प्रख्यात थएल तरीके ओळखावा लाग्या. पण ज्यारे वि. सं. सोळमा सैकामां वल्लभाचार्यनो धर्म विष्णुनी उपासना तरीकेनो गुजरातमां फेलायो, तथा वैष्णवी रामानुजनो धर्म फेलायो त्यारे **माहेश्वरीय वणिको**मांथी केटलाक वैष्णव वाणिया तरीके प्रसिद्ध थया. अने जैन धर्म पाळनाराओ जैनवणिक तथा श्रावकवाणियाना नामथी प्रसिद्ध थया. पूर्वे तो चोराशी जातना वणिको जैन धर्म पाळता हता अने तेनी पूर्वे तो शंकराचार्यनी पहेलां तो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अने शूद्र ए चार वर्ण जैनधर्म पाळती हती. शंकराचार्य, रामानुज अने वल्लभाचार्यना प्रगटवा पछी माहेश्वरी. वैष्णव तरीके वणिको कहेवाया. परंतु पूर्वे तो ते सर्वे जैन वणिको तरीके प्रसिद्ध हता. वायडवणिको पूर्वे जैन हता. वनराजना वखतमां **वायटज्ञाति** विद्यमान हती. जैनग्रंथोमां वायडनुं मोटानगर तरीके वर्णन करवामां आव्युं छे. वायडमां पन्नरमा सैका लगभगमां वाव बनेली छे. वायडमां वि. सं. सातसेंनी सालमां निंब नामना गुजरातना जैन मंत्रीए महावीरप्रभुनुं देरासर बांध्युं हतुं. प्राचीन देरासरनो ध्वंस थया बाद मुसलमानोनी राज्यस्थापना पछी लगभग २९ वर्षे नवुं देरासर बनाववामां आव्युं होय एम श्रीजीवदेवसूरिनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिष्ठाथी सिद्ध थाय छे. वायडना देरासरनो नाश सं. १३५४ मां अल्लाउद्दीनना सुबाए कर्यो हतो तेथी पश्चात् १३७०–८० लगभगमां पाछुं नवीन देरासर बन्युं एम जीवदेवसूरिए प्रतिष्ठा करावी तेथी सिद्ध थाय छे. उदा महेताने वायड गाममां वायड वणिक जैनज्ञातिए बंधावेला श्रीअजितसागरना देरासरमां त्यां वसवानी स्थिति माटे ते ज्ञातिए गुरुना कहेवाथी साहाय्य आपी हती. कर्णनो समय सं. ११२० थी ११५० नो छे. कर्णना वखतमां गुजरातमां केटलीक वावो बनेली छे. वायडमां पण ते समये वा ते पछी वाव बनेली लागे छे. दरेक वावमां मातानी मूर्तिने गाम लोक तरफथी पधराववामां आवे छे. तेने लोको देवी तरीके मान आपे छे. वायडमां वायड वणिकोना तथा वायडगच्छ संस्थापक तरीके रासिल्लसूरि प्रसिद्धि पाम्या छे. रासिल्लसूरिना समयमां वायडमां जैनोनुं घणुं जोर हतुं. ते समये ब्राह्मणो जैन हता. पाछळथी तेओ वैदिक बन्या. वायट वणिकोए भरावेली प्रतिमाओ अमदावाद, पाटण, वडोदरा, सुरत, राधनपुर, वगेरे घणा गामोमां छे. वायड वंशमां देवपाल, धनपाल, शान्तड, आसल, पद्ममंत्री वगेरे मंत्रीओ थया छे. वायड ज्ञाति प्रायः सत्तरमा सैका सुधी जैन धर्म पाळती हती. सोळमा सैकामां तो तेनो पोणो भाग जैन धर्म पाळतो हतो. वायड ज्ञातिना कुलगुरू जैन महात्माओ हाल चाणसमामां वसे छे तेओनी पासे वायडा वाणियानी वही छे तेथी ते जात एक बे सैकाथी वैष्णव तरीके बनेली जणाय छे. सोळमा सैका सुधी तो तेओए जैन प्रतिमाओ भरावी एम देखाय छे पण पाछळथी वल्लभाचार्यना पंथमां दाखल थएली लागे छे. **वायटवंशज्ञातिना** स्थापक जैनाचार्यो छे अने तेमनो जैन ग्रंथोमांथी इतिहास मळी आवे छे. आ संबंधी विशेष हकीकत हवे पछी जणाववामां बनशे ते प्रयास करवामां आवशे.

उपकेश ज्ञाति—ओशा नगरीमां जैनाचार्यथी उपकेशवंशनी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थापना थइ छे. ते संबंधी जैनाचार्योनी पट्टावलीमां लखवामां आव्युं छे जैनोनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति नामना पुस्तकमां अमोए ओशवालोनी उत्पत्ति संबंधी विवेचन कर्युं छे. हाल ओशवाल ज्ञाति जैन धर्ममां मुख्य भाग भजवे छे. जोधपुरपासे **ओशानगरी** हाल विद्यमान छे. **उकेश—उपकेश** ज्ञातिना प्रतिबोधक जैनाचार्यो पण **उकेश—उपकेशगच्छीय** आचार्यो तरीके हाल सर्वत्र प्रसिद्ध छे. ओशवंशी वणिकोमां क्षात्रबलनी विशेषता देखवामां आवे छे अने ते **ओसवाल भूपाल** तरीके हिन्दुस्थानमां प्रसिद्धिपात्र बन्या छे. उपकेशज्ञातिजनोए सिद्धाचल वगेरे तीर्थोना उद्धारो—जिनमंदिरो—उपाश्रयो—बांधवामां अग्रगण्य भाग लीधो छे. जोधपुर, उदेपुर, जयपुर, जेसलमेर, विकानेर वगेरे मारवाडनां राज्योमां एक सैका पूर्व सुधी जैन ओशवालोए प्रधान, दिवान, कोटवाल खचरनची महेता भंडारी वगेरेनी पदवीओ ठेठथी जाळवी राखी हती. उपकेश ज्ञातिमांथी घणा जैनाचार्यो उपाध्यायो अने साधुओ थया छे अने जैनधर्मनी झाहोझलाली वर्तावी छे. हाल ओशवाल जैनो, जैनकोममां अग्रगण्यपद भोगवे छे. उपकेश ज्ञातिमांथी ओशवाल ज्ञाति पाछळथी नीकळी होय एम जणाय छे. ओशवाल ज्ञातिना बे भेद छे. १ वीशा ओशवाल ने बीजा दशा ओशवाल. पुनर्लग्न के अन्य कोमनी साथे जमण विगेरे कारणथी ज्ञातिभेदो पडे छे. वीशा ओशवालनी वस्ती मारवाड, मेवाड, गुजरात, दक्षिण, काठीयावाड विगेरे देशोमां घणी छे, अने दशा ओशवालनी वस्तीनो मोटोभाग कच्छ, गुजरात अने बीजे ठेकाणे पण छे. ओशवालो स्वभावे बहादुर होय छे. अने राज्यमां आगेवानी भर्यो भाग ले छे, अने पोतानी कोम अग्रगण्य गणावाने अति स्पर्धाभर्यो भाग ले छे अने पोतानी कोम पाछळ न पडे तेने माटे काळजी राखे छे. ओशवालो पहेलां राजाओ हता एम अमदावादना नगरशेठ शान्तिदासना इतिहासपरथी मालूम पडे छे. ज्यारे ओशवालो राज्यपदना पापथी व्हीवा लाग्या त्यारे तेओए पश्चात्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंत्रिपद स्विकार्यां. ओशवाल लोको हवे पोतानी पूर्वनी झाहोझलाली प्राप्त करवाने पुनः प्रयत्न करी रह्या छे.

श्रीमालज्ञाति—श्री मारवाडना भिन्नमालनगरमां श्रीमालीज्ञातिनी उत्पत्ति थयेली छे. श्रीमाली ज्ञातिना वडवाओ असल राजाओ हता, अने तेओ भिन्नमाल नगरनी आसपासना प्रदेशमां राज्य करता हता. विक्रम संवत् पूर्वे पण तेओनी सारी झाहोझलाली हती एम इतिहास परथी सिद्ध थाय छे. निवृत्ति मार्गना प्राधान्य उपदेशनी असरथी तेओए राजानी पदवीनो त्याग कर्यो अने मंत्रीपद विगेरे पदवीओ स्वीकारी. तेओनुं केन्द्रस्थान भिन्नमाल होइ तेओ आजुबाजुना प्रदेशमां विचरवा लाग्या. जैनाचार्योए तेओने वणिकना गुणकर्ममां योज्या. काळांतरे तेओ वणिक तरिके प्रसिद्ध थया. श्रीमालीना त्रण भेद छे. १ वीशाश्रीश्रीमाली, २ वीशाश्रीमाली, ३ दशाश्रीमाली ए त्रण भेद हता. तेरमा सैका पर्यंत वीशाश्रीश्रीमाली अने वीशाश्रीमाली ए बे भेद हता. तेरमा सैकाना अन्ते गुजरातना प्रधान वस्तुपाल तेजपाल थया. वस्तुपाल तेजपाले पाटणमां ८४ जातना वणिकोने जमवाने माटे नोतर्या हता. तत्समये पाटणमां नगरशेठनी पदवी वीशाश्रीमालीने घेर हती. ते वखते नगरशेठनो पुत्र नानो हतो तेथी तेने ८४ जातना जैन वाणीया भेगा थया ते अवसरे बोलाववामां आव्यो न्होतो. तेथी तेनी माताए पुत्रने उश्केर्यो अने कह्युं के वस्तुपाल तेजपालनी माताए पुनर्लग्न कर्यां छे ने तेना वस्तुपाल तेजपाल बे पुत्रो छे. ८४ जातना वाणीयाओए ए वातनी तपास करी ते वात साची ठरी तेथी जमणमां भंगाण पडवा मांडयुं. जे पोरवाड पक्षना वस्तुपाल तेजपालना पक्षमां रही जमणमां भाग लीधो ते सर्व वणिको दशाश्रीमाली, दशापोरवाड, दशाओशवाल तरीके प्रसिद्ध थया. अने जेओए जमवामां भाग लीधो नहि तेओ वीशाश्रीमाली वगेरे तरीके प्रसिद्ध थया. त्यारथी वीशा ओशवाल, दशा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओशवाल, वीशाश्रीमाली, दशाश्रीमाली, वीशा पोरवाड, दशा पोरवाड विगेरे ज्ञातिओना भेद थया. ए रीते वस्तुपालना रासमां लख्युं छे. अने विमलमंत्रिना रासमां तेओनां नाम पण आपवामां आव्यां छे. तेमज बीजा अन्य ग्रन्थोमां पण नामो मळी आवे छे. अमारा बनावेला " जैनोनी प्राचीन अर्वाचीन स्थिति " नामना ग्रन्थमां पण नाम आपवामां आवेलां छे. वीशा श्रीमालीने वृद्ध शाखा. दशा श्रीमालीने लघु शाखा श्रीमाली कहेवामां आवे छे एम दरेक प्रतिमाना लेखोपरथी जणाय छे. चोहाण, राठोड, चावडा, सोलंकी विगेरे रजपूतो असल वीशा श्रीमाली तरीके प्रसिद्ध थयेला छे. पाटणनी गादीपर थयेला वनराज चावडानी संततिना बे पक्ष थया तेमांथी एक हाल जैनधर्म पाळे छे ने बीजो महेश्वर धर्म पाळे छे. वरसोडा तथा माणसाना चावडा राजाना पूर्वजो असल जैन धर्मी हता. वनराजनी पूर्वेना तेना वंशना ३०—३२ राजाओ जैन धर्मी हता. एवुं लाडोलना जैन महात्मा मणिलालजीनी वहीमां लखेलुं छे अने ते वही जुनी छे. वनराज पछीना वंशजो जे जैन तरीके कायम रह्या ते वीशा श्रीमाली कोममां भळेला छे. माणसामां उबखलीया वीशाश्रीमालीओ छे ते असल वनराजना वंशना गणाय छे. वनराजनी २० मी के २९ मी पेढीए हाल माणसाना ठाकोर आवेला छे. ने उबखलीआ पण तेज पेढीए आवेला छे. आ उपरथी एम समजी शकाय छे के चावडा चोहाण विगेरे राजाओनां केटलांक कुळो जैन वीशाश्रीमाली तरीके हाल विद्यमान छे. श्रीश्रीमाल नामनी वणिक जातिना लोको हाल मारवाडमां घणा छे. ते जातिना जैनोए असल जैन देरासरो ने जैन प्रतिमाओ कराववामां घणो भाग आप्यो छे. जैन धर्मना आचारो पाळवामां पण तेओ श्रेष्ठ गणाता हता. वीशाश्रीमाळीनो बीजो भेद जे दशाश्रीमाली तरीके गणाय छे ते सर्व लोको असल जैन धर्म पाळता हता ने तेमांथी हाल केटलाएक शतक लगभगमां माहेश्वरी, वैष्णव थया छे. लाडोलना जैन पूनमीया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गच्छना महात्माओनी वहीओमां वीशाश्रीमालीने दशाश्रीमालीनी वही छे तेमां तेओना गोत्र विगेरे घणी हकीकत छे. वीशाश्रीमाली जैनो मोटा भागे वेपार, राजाओनुं कारभारीपणुं विशेष करे छे. मोटा भागे वेपार करे छे. मारवाड, मेवाड, गुजरात, काठियावाड, बंगाल, दक्षिण, खानदेश मध्यप्रान्त कच्छ, वागड वगेरे घणे स्थाने वीशाश्रीमालीनो मोटो भाग छे. पाटण, राधनपुर विगेरे स्थळोमां नगरशेठ वीशाश्रीमाली छे. वीशाश्रीमाली जैनधर्म पाळवामां चुस्त छे. वीशाश्रीमाली, दशा-श्रीमाली, ए बे श्रीमालीना भेद छे. वीशाश्रीश्रीमालीमां जैनाचार्यो, उपाध्यायो, साधुओ घणा थयेला छे ने विशाश्रीमालीओए सिद्धाच-लना उद्धारो पण कराव्या छे. गुजरातना अमदावाद शहेरमां वीशाश्रीमाली ने दशाश्रीमालीनी वस्ती घणी छे. वीशाश्रीमालीओ हवे असलनी स्थिति जाळवी राखवाने माटे मंडळो वगेरे भरी पूर्ण प्रयत्न करी रह्या छे. पूर्वना व्यापारो अने सत्ता पुनः प्राप्त करवाने माटे तेओ अभिमान पूर्वक प्रयत्न करी रह्या छे. हवे तेओ पोतानी नात-जातमां उन्नति माटे अनेक जातना सुधारा करवा लाग्या छे वीशा-श्रीमालीनी वस्तीमां गामोगाम कंईक घटाडो थवा लाग्यो छे. अने रांडी-रांडोनी वस्ती वधवा लागी छे. तो हवे तेओए पोतानी कोमनी संख्यावृद्धि माटे चांपता उपायो लेवा जोईए.

डीसावालज्ञाति—पालणपुरनी पासे आवेला डीसा गाममां रहे-नार वणिकोना नामथी डीसावालज्ञातिनी उत्पत्ति थयेली छे. डीसावाल वणिको असल जैनधर्मी हता. वादिवेत्ताल शान्तिसूरि, नन्नसूरि, अभय-देवसूरि वगेरे आचार्योए डीसावाल जैन वणिकोनी जाहोजलाली करवामां आगेवानी भर्यो भाग लीधो हतो. डीसावाल जैन कोममांथी अनेक आचार्यो, उपाध्याओ ने साधुओ थया छे. डीसावाल वणिको वडगच्छ ने तपागच्छना श्रावको कहेवाय छे. आ पुस्तकना पत्रमां १७—७७—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२३३–६४२–१०६०–१०६४–१०८९–१५०८–१५२१ विगेरे लेखोनी प्रतिमाओ डीसावाल (देसावाल) जैन वणिकोए भरावी छे. म्हेसाणाना डीसावाल जैन वणिको शा. वीरचंद जादवजी विगेरे १९२९ नी साल सुधी जैनधर्म पाळता हता. अने ते लहुडी पोशाल गच्छना हता. तेमना बापाए तेमनी पालीताणानी देरी सं. १९२८ लगभगमां समरावी हती. म्हेसाणामां चगोठीया अने भाटवाडा आगळ तेमणे उपाश्रय हतो. हालपण वीरचंद जादवजीना वंशजो दशा डीसावाल वाणीयाओ श्रीपद्मप्रभुना देहरे वरकन्यानो कंकणदोरो छोडवाने माटे जाय छे. १९४० लगभगनी सालमां तेओने वैष्णव थवाथी नोकारशीमांथी दूर कर्या. पालीताणानी टुंकमां दशा डीसावालना बंधावेलां देहरां छे. सं. १९२१ लगभगनी सालमां ते देहराने तेमना तरफथी समरावबामां आव्युं हतुं. म्हेसाणा, माणसा, कोलवडा, गोजारीया, लांघणज विगेरे गाममां डीसावालनी वस्ती छे. दिगंबरोमां डिसावाल जैनो हाल पण छे. जैन साधुओनो उपदेश बराबर नहि मळवाथी वल्लभाचार्यना पंथीओनी उपदेशनी असर थतां तेओमांथी केटलाक अन्य धर्म पाळवा लाग्या छे. दशा डीसावालनी वस्ती थोडी छे, अने तेओ व्यापार करे छे.

नागरज्ञाति—नागर ज्ञाति असलथी जैनधर्म पाळती आवेली छे पत्र ३–१०–२४–५४–४९–९९–११२–२१९–२५० मां नागरज्ञातिना श्रेष्ठिओए भरावेली जैन प्रतिमाना लेखो आप्या छे ते उपरथी सिद्ध थाय छे के १६मा सैकामां नागरज्ञातिना वणिको जैन धर्ममां चुस्त हता. अंचलगच्छना, तपागच्छना ने वडगच्छना श्रावको तरीके नागर वणिको प्रसिद्ध हता. देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणना वखतमां वडनगरना रहीश वणिको ने नागर (नगरमां उत्पन्न थनार ते नागर) पद आपवामां आव्युं हतुं. नागर वणिकोमांथी घणा आचार्यो, उपाध्यायो ने साधुओ थया त्यारथी नागरगच्छनी उत्पत्ति थई. नागरगच्छमां श्रीजिनेश्वरसूरिनामे महा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य थया छे अने तेमना संतानोमां पण घणा आचार्यो थया छे. नागरज्ञातिमां घणा वणिकोने मंत्रिपद मल्यां छे. अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरिना उपदेशथी नागरज्ञातिना मंत्रि भामाभी भार्या दूबी तेना पुत्र वालामंडण तेमणे श्री संभवनाथनी प्रतिमा भरावी हती. संवत् १५३६ नी सालमां कुकरवाडा गाम वास्तव्य नागरज्ञाति शेठ राजा सुत नाथाकेन संभवनाथनी प्रतिमा भरावी हती के जेनी प्रतिष्ठा तेमना गच्छगुरु वृद्ध तपापक्षी श्रीरत्नसिंहसूरि, श्रीउदयवल्लभसूरि, श्रीज्ञानसागरसूरि विगेरे आचार्यो थया हता तेमणे प्रतिष्ठा करी हती. वडनगरमां अंचलगच्छेश श्री जयकेशरसूरिना उपदेशथी वडनगरना नागर व्यवहारी शेठ राणाना पौत्र आंबा खीमाए श्री संभवनाथनी प्रतिमा भरावी हती. वि० सं० १४८९ नी सालमां नागरज्ञाति शेठ गोवी साजन तेमना पुत्र शेठ गोवी साजने महावीर स्वामिनी प्रतिमा भरावी ने तेनी प्रतिष्ठा श्री जैनसिंहसूरिए करी. सं. १५१४ मां पथांपुरवासी नागरज्ञातीय दोसी हीरा भार्या मेतू पुत्र दोसी राणाक भार्या पूरी प्रमुखकुटुंबे वृद्ध भार्या कालीना कल्याण माटे सुमतिनाथनी प्रतिमा भरावी अने प्रतिष्ठा श्रीरत्नसिंहसूरिए करी इत्यादि. नागर ज्ञातिए भरावेली प्रतिमाना घणा लेखो छे. वि. सं. १७ मी १८ मी सदी सुधी नागरवणिको जैनधर्म पाळता हता ने पश्चात् तेमांना केटलाक महेश्वरी अने विष्णु धर्म पाळवा लाग्या अने हाल तो ते ज्ञाति, जैन धर्मथी भ्रष्ट जेवी दशावाळी थई गई छे. वडनगरमां संवत १९३०–४० नी शाल सुधी नागरवाणियानां २०–३० घर जैन धर्मी रह्यां हतां, परन्तु बीजा वैष्णधर्मी नागरवणिकोए जैनधर्म पाळनार नागरज्ञाति उपर दबाण कर्युं के जो तमो जैन धर्म पाळशो तो कन्या आपवामां नहीं आवे. आथी तेओ अमदावादमां श्रीआत्मारामजी, श्रीरविसागरजी, श्रीमोहनलालजी महाराज वगेरेने विनंति करी के अमोने अन्य वीशा श्रीमाली वणिक कोममां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाखल करावो पण ज्यारे जैनज्ञातिए ते वात नहीं मानी त्यारे ते लोकोए नाइलाजे वैष्णवनी कंठी बांधी. हाल वडनगरमां देवी नागर लोकोनां बंधावेलां देहरां छे अने तेमांना केटलाक जिनमंदिरमां छानामाना दर्शन करवाने माटे जाय छे. हजी पण तेओमां जैनपणानो जुस्सो छे.

नागर वणिकोनी वस्ति माणसा, वडनगर, वसइ, पीलवाइ, अमदावाद, सुरत वगेरे ठेकाणे छे. शीलगुणसूरि, बप्पभट्टसूरि, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्र-सूरि जिनदत्तसूरि, जिनकुशलसूरि, जयसिंहसूरि वगेरे आचार्योए नागर-ज्ञातिनी उन्नति करवामां महाभाग लीधो हतो. अंचलगच्छना अने वृद्ध तपागच्छना आचार्यो ए नागरज्ञातिना गुरु हता. दिगंबरोमां तथा श्वेतांबरोमां मध्यप्रांत दक्षिण वगेरेमां केटलाक नागरो जैन धर्मी छे. नागरज्ञातिनो इति-हास जैन ग्रंथो अने जैन महात्माओनी वहीओमांथी नीकळी आवे तेम छे.

गुर्जरज्ञाति—ज्यारे सौराष्ट्र वगेरे देशोमां सिथियन अने गुर्जर लोकोए सवारीओ करी त्यारे आनर्त देशनुं नाम गुजरात पडयुं. अने गुजरातना नामे प्रसिद्ध थयेला जैन वणिको काळांतरे गुर्जर ज्ञाति तरीके प्रसिद्ध थया. अथवा गुर्जर लोकोनी सवारीओनी साथे जेओ अहिं आव्या ते गुर्जर वाणीआओ तरीके अत्र प्रसिद्ध थया. गुर्जर वणिकोने जैनाचार्योए जैनधर्ममां दाखल कर्या. वडनगर, वीसनगर, पाटण, प्रांतीज, सुरत वगेरेमां गुर्जर ज्ञातिनी वसति छे. आ जैन प्रतिमा लेखसंग्रहना पत्र ५—५९—६१—६७—१०३—१८४—२०७—२१०—२२९—२३५ पत्रोमां गुर्जर ज्ञातिए जैन प्रतिमा भरावी छे तेना लेखो छे. वि० सं० १६मा सत्तरमा सैका सुधी गुर्जरवणिको श्वेतांबर जैनधर्म पाळता हता एवुं लेखोथी सिद्ध थाय छे. अने उपरना पत्रांकना लेखो वांचवाथी पण वांचकोने विदित थशे एम आशा राखवामां आवे छे. विजापुरमां गुर्जर वणिको १९२० नी साल सुधी जैनधर्म पाळता हता. पश्चात् तेओ वैष्णव धर्ममां भळवा लाग्या. पहेलां तेओ जैन नोकारशीमां जमवा आवता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हता ने हाल तेओ विजापुरमां ल्हाणुं ले छे आ उपरथी सिद्ध थाय छे के तेओ जैनधर्म पाळता हता. वृद्ध तपापक्षना आचार्योना अने आगमगच्छना आचार्योना तेओ श्रावको हता. गुजरातमां वल्लभाचार्यनो पंथ फेलाया पछी २०० वर्षे तेओ वल्लभीपंथमां दाखल थवा लाग्या. तेओनी वसती घणी सांकडी छे. तेओ आचार विचारमां घणा सांकडा थता जाय छे. तेथी तेथी कदाच तेओनुं अस्तित्व कायम न रहे तेवो भय रहे छे. जैन महात्माओ पासेथी गुर्जर ज्ञातिनो इतिहास मळी शके तेवो संभव छे. जैन कोममांथी गुर्जर ज्ञाति जुदी पड्या बाद ते संकीर्ण थइ गइ छे. दुनियामां सुधारा वधारानी साथे ते विशाळ वणिक कोमनी साथे भळती नहि रहे तो तेओने घणुं खमवुं पडे तेम छे. दिगंबर जैन तरीके गुर्जरज्ञाति हजी हयात छे.

पोरवाडज्ञाति—मारवाडना भिन्नमाल नगरनी पूर्वदिशामां वसनार क्षत्रियोने जैनाचार्योए वणिक तरीके स्थापन कर्या. गुजरातना जैन महात्मा वहीवंचाओ पासे पोरवाडज्ञातिनी उत्पत्तिनी वही छे. तेमज अन्य जैन ग्रंथोमां पण पोरवाड ज्ञातिनी उत्पत्तिनुं वर्णन आपवामां आवेलुं छे. चोहाण, राठोड, सिसोदिया वगेरे रजपूतोनुं पोरवाड ज्ञातिमां मिलन थयुं छे. पोरवाडना मूळवंशजो असल राजाओ हता ने तेओ मारवाड देशमां राज्य करता हता, पण काळांतरे तेओ राजा तरीके रही शक्या नहि. विमलमंत्रि, धन्ना पोरवाड, अने वस्तुपाले तेजपाले, पोरवाडकोममां आगेवानी भर्यो भाग लीधो छे. विमलशाहे चंद्रावतीनुं (आबुनुं) राज्य कर्युं छे, अने तेणे कुंभारिया उपर पांच देहेरासर बंधाव्यां छे तेनी कोरणी जोवालायक छे. कुंभारिया पासे हडाद गामनुं देहरासर पण तेणे बंधावेलुं छे. पोसीनामां आवेलां केटलांक देहरासर पण तेणे बंधावेलां छे. आबुजी देलवाडामां तेणे एक मोटुं देहरासर बंधाव्युं छे अने तेनी कोरणी एटलीबधी सुंदर छे के तेने जोवाने माटे सर्व देशना विद्वानो आवे छे अने तेनी नोंध ले छे. आबुजीनां देहरासरनां दर्शन करवाने माटे हिंदुस्तानना सर्व जैनो आवे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे, अने युरोपीयनो पण आवे छे. तेनी कारीगरी जोई घणा खुशी थाय छे. आबुजीना देहरासर पासे वस्तुपाल तेजपालना बंधावेलां देहरासर छे, तेनी कारीगरी पण अत्युत्तम छे. वस्तुपाले अने तेजपाले बीजे घणे ठेकाणे देहरासर कराव्यां छे तथा २१ जैनज्ञानभंडार कराव्या हता अने सिद्धाचलनो संघ काढीने १२॥ यात्राओ करीने करोडो रुपियानो खर्च कर्यो हतो. तेनी संततिमां दशा पोरवाड जैन वणिको छे. वीशापोरवाड जैनो पैसेटके सुखी छे. तथा जैन कोममां आगेवान छे. ते कोमे घणा जैनज्ञान भंडारो तथा देहरासरो ने प्रतिमाओ करावीने जैनधर्मनी घणी झाहोझलाली दर्शावी छे. पोरवाड कोमे जैन धर्मनी उन्नति करवा माटे घणा आचार्यो उपाध्यायो ने साधुओने घणी सहाय करी छे ते ते कोममांथी घणा जैनाचार्यो, उपाध्यायो अने साधुओ थया छे. वीसा तथा दशा पोरवाड जैनोए घणां देहरासर तथा घणी जैन प्रतिमाओ भरावी छे. ते संबंधी हजारो लेखो मली आवे छे. वीसापोरवाड सर्वे जैनधर्म पाळे छे अने दशापोरवाड पण जैनधर्मी छे. हाल केटलाक दशापोरवाडो थोडी संख्यामां वैष्णवधर्ममां दाखल थया छे तेम छतां तेओ जैन साधुओने मान आपी हजी सुधी जैन आचार विचार पाळे छे. दशापोरवाडनो मोटो भाग जैन धर्म पाळे छे अने तेओ जैन धर्माभिमाननी सारी लागणी धरावे छे.

उवलज्ञाति—उवलज्ञाति संबंधी विशेष हकीकत वांचवामां आवी नथी. अन्य लेखोमां ते संबंधी हकीकत मळशे तो तेनुं भविष्यमां विशेष वर्णन करवामां आवशे.

पल्लिवालज्ञाति—जैनश्वेतांबर पल्लिवालज्ञाति अने श्वेतांबर पल्लिवालगच्छने निकटनो संबंध जणाय छे. पल्लिवारमां (पालीमां) पल्लिवार वणिकोना नामे वा पल्लिवाल गामना नामे पल्लिवाल ज्ञाति प्रसिद्ध थएली जणाय छे. मारवाडमां वा मारवाडना शिरोही जील्ला वगेरे प्रदेशोमां पल्लिवालनगर, गाम अगर हालनुं पाली होवुं जोईए. गुजरातमां, काठीयावाडमां पल्लिवाल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञाति संबंधी विशेष जाणवानी हकीकत मळी शकती नथी. मारवाडमां मध्यप्रांतमां पल्लिवालज्ञाति संबंधी विशेष हकीकत मळी शके एम भासे छे. दिगंबरोमां हाल पल्लिवाल जैनो विशेष सख्यामां छे. श्वेतांबरोमां पल्लिवाल ज्ञातिना नामे पल्लिवाल गच्छ प्रगट्यो छे. पत्र २६ मामां १३५मो पल्लिवालज्ञाति संबंधी तथा पत्र २७ मां ३२८ मो लेख छे ने १३२७–१३७१ सालनो छे. वडगच्छना आचार्योने तावे पल्लिवालज्ञाति होय एम लागे छे. चंद्रसूरि शिष्य माणिकसूरि ते वखते तेमना गुरु तरीके हता एम लेख उपरथी जणाय छे.

श्रीमाल गुर्जरज्ञाति—संवत् १५१६ नी सालमां खरतरगच्छना आचार्य जिनसागरसूरिपट्टे, जिनसुंदरसूरि हता. श्रीजिनसुंदरसूरिना श्रावको तरीके श्रीमालगुर्जर ज्ञातिना लोको हता एम पत्र ३० माना लेख परथी सिद्ध थाय छे. हाल श्रीमालगुर्जर ज्ञाति अन्य ज्ञातिमां भळी गई छे के तेनाथी जुदी हयात छे ? तेनो तपास करवानी जरुर छे.

उपजाति—पत्र ४४ मांना २४६ मा लेखमां सुरोठा गोत्रवाळी ज्ञाति विद्यमान हती अने तेना गुरु वडगच्छना आचार्य सागरचंद्रसूरि हता. ते समय जे गच्छना श्रावको हता. ते गच्छना आचार्य पासे प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावता हता: कोई खास जातिमांथी उपजाति नीकळेली होय एम जणाय छे. सं. १४९९ मां तेनी विद्यमानता हती तेटलुंतो उपर प्रमाणे लेखथकी सिद्ध थाय छे.

मोढज्ञाति—मोढेरा नगरमां रहेला वणिकोने मोढ वणिको कहेवामां आवे छे अने तेमां असलथी रहेला ब्राह्मणोने मोढब्राह्मणो कहेवामां आवे छे. पाटणनी पहेलानुं मोढेरा नगर छे. मोढेरामां प्राचीन जैन श्वेतांबर मंदिर हतुं तेमज तेमां प्राचीन एक दिगंबर जैन मंदिर हतुं. अल्लाउद्दीन बादशाहना समयमां मोढेराना प्राचीन जैन मंदिरो नाश पाम्यां. मोढज्ञाति वणिको विक्रम सं. एक हजारनी सालथी जुदा जुदा देशमां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वसवाट करवा गएला होय एम जणाय छे. विक्रम संवत् बारनी सालमां थएल श्रीहेमचंद्राचार्य, मोढ वणिक ज्ञातीय हता, अने तेओनां मातापिता धंधुकामां रहेतां हतां, विक्रम संवत् बारमां धंधुकामां मोढ वणिको विद्यमान हता तेथी एम सिद्ध थाय छे के मोढेरामां व्यापार वगेरेनी पडती थतां मोढ वणिकोए काठीयावाड वगेरे देशोमां व्यापार माटे वसवाट कर्यो लागे छे. मोढज्ञातिए कलिकाल सर्वज्ञश्री हेमचंद्राचार्य जेवा महा विद्वान्ने प्रगटावी मोढज्ञातिनी ज्वलंत कीर्ति संरक्षी छे. मोढज्ञाति जैनोए अनेक जैनाचार्यो, उपाध्यायो अने साधुओ प्रगटाव्या छे. जैन ग्रन्थोमां मोढज्ञातिनो इतिहास जळवायेलो छे, मोढज्ञातीय जैनोए देरासरो बंधाव्यां छे. जैन प्रतिमाओ भरावी छे. धातुप्रतिमाओ करावी छे. तेणे जैनधर्मनी प्रचारणामां जे अमूल्य लाभ आप्यो छे ते हेमचंद्राचार्यना नामनी साथे सदा स्मरणीय रहेशे. संवत् १५०६ नी सालमांथी तपापक्षगच्छमां धनरत्नसूरि थया छे तेमना मोढ श्रावक हेमराजे जिनेश्वरनी धातु प्रतिमाओ भरावी छेः—बीजा पण लेखो छे एथी सिद्ध थाय छे के ते समय सुधी मोढज्ञाती श्वेतांबर जैनधर्मी हती. धंधुकामां मोढज्ञातीनां घणां घरो छे अने ते श्रीहेमचंद्रप्रभुनां गृहस्थावस्थानां कुटुंबी घर छे. धंधुकामां मोढवणिक जैनोए जैनमंदिरो बंधाव्यां छे. मोढवणिक जैनोए जैनधर्मनी जाहोजलालीमां जैनाचार्यो वगेरेनो हिस्सो सारी रीते आप्यो छे. अढारमा सैकामां केटलीक मोढवणिक ज्ञाति वैष्णव धर्ममां भळी अने ओगणीसमा सैकामां तेनो मोटो भाग भळी गयो. वीसमा सैकामां हाल मोढवणिकोनो मोटो भाग तेमना असल जैन धर्मथी अज्ञात थइ गयो छे. केटलीक मोढेरा ज्ञाति दिगंबर जैनो तरीके हाल प्रायः विद्यमान छे.

हुंबडज्ञाति—हुंबडज्ञातिनी उत्पति क्यारे थइ ते संबंधी जैनग्रंथोमांथी इतिहास शोधवानी जरुर छे. इडरजील्लामां, वींछी वाडामां,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रांतिज, पेथापुर, ओरण, अलवा, पोसीना, सोनासण, डुंगरपुर, प्रतापगढ, वगेरे गामोमां जैन हुंबड श्रावकोनां घर छे. हुंबडोमां श्वेतांबर हुंबड अने दिगंबर हुंबडए बे भेद छे. हालमां श्वेतांबर हुंबड अने दिगंबर हुंबड ए बे जातना हुंबडोनां इडर वगेरेमां घर छे. वडगच्छना अने तपागच्छना नवसें श्वेतांबर हुंबड घरो अने नवसें दिगंबर हुंबडनां घरो छे. इडरजिल्लामां, डुंगरपुर जिल्लामां, प्रतापगढ वगेरेमां श्वेतांबरी हुंबड जैनोनां घरो छे. श्वेतांबरोमां वीशा हुंबड अने दशा हुंबड ए बे भेद छे.

आ लेखसंग्रहना ६८–८०–८९–१००–१४६–१८४–१९८–२०४–२३१–२४३–२९१ अने २९२ मा पत्रमां हुंबडज्ञातिए भरावेली जैन प्रतिमाना लेखो छे. वडगच्छ तपागच्छना आचार्योए हुंबड जैनोपर घणो उपकार कर्यो छे. हुंबड जैनोनुं एक श्वेतांबर मंदिर श्री इडरमां छे अने तेओनो उपाश्रय पण त्यां छे. हुंबड जैनोमांथी घणा जैनाचार्यो, उपाध्यायो अने साधुओ थया छे तेथी तेना नामे हुंबडगच्छनी उत्पत्ति थइ छे. सं. १५९२ मां तपागच्छीय हेमविमलनी साथे श्वेतांबर हुंबडगच्छमां संघदत्तसूरि थया छे. बीजा पण हुंबडगच्छना लेखो छे. इडर, प्रतापगढ, केशरीया, डुंगरपुर, प्रांतिज, साद्रा तरफना हुंबड जैनोमां हुंबडगच्छ प्रवर्ततो हतो. एक बे सैकां पूर्वे हुंबडगच्छनी अस्तितामां खामी आवी होय एम संभवे छे. वडगच्छना श्री पूज्यने हाल पण हुंबड वणिको पोताना गुरु तरीके गणी सर्व हक्को आपे छे. श्रीचंद्रसिंहसूरिनी पाटे हाल वडगच्छमां श्रीबुद्धिसिंहसूरि छे. श्वेतांबर जैनाचार्योए हुंबड जैनोनी [illegible]मां भाग लेवा माटे खामी न राखवी जोईए. श्वेतांबर हुंबड जैनोनी पेठे दिगंबर हुंबड जैनो पण श्वेतांबर मुनियोने पूजे छे, माने छे. पेथापुर वगेरे स्थळोमां श्वेतांबर जैनोनी नवकारशीमां दिगंबर हुंबड जैनो पण जमे छे अने तेओ जैन श्वेतांबर मुनियो पासे व्याख्यान वगेरे धर्म कथाओ सांभळे छे.

3

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीशा हुंबड अने दशा हुंबड एम बे तडोमां हुंबड ज्ञाति वहेंचाई गइ छे.

कपोल ज्ञाति—कपोल वणिक ज्ञातिनो इतिहास मेळववानी जरुर छे. केटलाक ब्राह्मणो वणिकोनां पुराणो लखीने तेओना अन्य इतिहासनो केटलीक वखत लोप करे छे. भाटो वगेरे पण केटलीक वहीयोमां वंशोना इतिहासोमां घणुं असत्य भेळवे छे तेथी सत्य इतिहास मेळवतां अति प्रयास करवो पडे छे. कपोल ज्ञातिना लोकोए जैन प्रतिमाओ भरावी छे तेथी ते जातना सर्व लोको वा तेमांथी मोटो भाग वा अर्ध भाग जैन धर्मी हतो एम सिद्ध थाय छे. पश्चात् वल्लभाचार्य तथा ब्राह्मणोनुं जोर वधतां तथा जैनाचार्योमां प्रमाद वधतां कपोल कोमनो पोंणो भाग कपोलज्ञाति वैष्णवमां भळी गयो होय एम जणाय छे.

संवत् १५४७ नी सालमां तपागच्छमां लक्ष्मीसागरसूरिनी पाटे श्रीसुमतिसाधुसूरि थया तेमना वखतमां कपोलज्ञाति श्रेष्ठी सरवणना कुटुंबे जैन प्रतिमा भरावी हती. कपोलज्ञाति जैनोए घणी प्रतिमाओ भरावी छे. तेना लेखो अमारी पासे छे तेथी एम सिद्ध थाय छे के, सोळमा सैका सुधी तो वा सत्तरमा सेका सुधी ते कपोलज्ञाति जैनधर्मी हती. परंतु पाछळथी वल्लभाचार्यना पंथना जोरथी ते ज्ञाति प्रायः वैष्णव थएली जणाय छे. सं. १९६६ ना चैत्र मासमां वल्लभाचार्य वैष्णवोनी सुरतमां एक मोटी सभा भराणी हती ते वखतमां अमो त्यां हतां. ते वखते एक वैष्णव पंडिते सभामां उभा थई ने कह्युं हतुं के "शंकराचार्य माधवतीर्थ, अमारा वल्लभी संप्रदाय पर नकामो द्वेष करे छे. त्रीश लाख जैनोने अमोए वल्लभी संप्रदायमां लीधा छे." आवुं ते वैष्णव पंडित बोल्यो हतो तेमां घणो सत्य भाग छे. सत्तरमा सैकाना अन्ते अढारमा सैकामां कपोल, मोढ, गुर्जर, नागर वगेरे ज्ञातियोमांनो केटलोक भाग वैष्णव थवा लाग्यो. जैनाचार्योमां ते वखते शिथिलता आवी गई हती तेथी तेनो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाभ तेओए लीधो ए स्वाभाविक छे. कपोलज्ञातिना मनुष्योनी अल्प संख्या छे तेओ व्यापार वगेरेथी आजीविका चलावे छे. केटलीक कपोल ज्ञाति जैन छे एम सांभळ्युं छे. काठीयावाड, सुरत, मुंबाई वगेरेमां तेमनी वसति छे.

सितकेशज्ञाति—सोळमा सैकामां सितकेशज्ञाति जैनधर्मी हती अने तेणे जैनप्रतिमाओ भरावी छे. सितकेशज्ञाति हाल विद्यमान छे के केम ? तेनो तपास करवानी जरुर छे.

निमावणिग्ज्ञाति—कपडवणज वगेरे गामोमां नीमा वाणियाओनी विशेष वसति छे. तेओ जैनधर्मी छे. तेओए जैन मंदिरो बंधाव्यां छे. जैन उपाश्रयो बंधाव्या छे. तेओनी ज्ञातिमांथी जैनाचार्यो साधुओ थया छे. हालपण तेओनी ज्ञातिमांथी मुनि थएल पन्न्यास आनंदसागरजी, पन्न्यास मणिविजयजी, जैन कोममां गीतार्थ विद्वान् तरीके सर्वत्र प्रख्यात छे.

श्री वंशज्ञातिनो लेख पत्र १६३ मामां छे. श्रीश्रीवंशज्ञातिना लेखो १६८–१७७–२०३–२१३–२१८–२२२–२२९ पत्रे छे. श्री श्री वीरवंशज्ञातिनो लेख १७२–१८१ मा पत्रे छे. आ त्रण वा बे ज्ञातियोनो इतिहास शोधाय छे. ते संबंधी विशेष जाणवामां आवतां प्रगट करवामां आवशे सोलमा सत्तरमा सैका सुधी तो ते ज्ञातियो विद्यमान हती. हाल विद्यमान छे के केम तेनो तपास करवानी जरुर छे.

उकेश चहुहाणज्ञाति—उकेश अने चोहाण क्षत्रियोनी साथे ते ज्ञातिनो गाढसंबंध छे. पूर्वे चौहाण राजपुतो चौदशीया पक्षना आचार्यना भक्तो हता. संडेसरगच्छना श्रावको तरीके शिशोदिया राजपुतो हता. हालपण शिशोदिया वंशना गुरु तरीके षंडेरगच्छना श्री पूज्य मारवाडमां छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शालापतिज्ञाति–पाटणना जैन शाल्वीओनी शालापतिज्ञाति छे. तेओनो मोटो भाग हाल पाटणमां छे. तेमनां बंधावेलां जैन देरासरो तथा उपाश्रयो हाल विद्यमान छे. तेमांथी केटलाक जैन साधुओ थया छे तेओ व्यापार करे छे. पाटणनी वणिग् ज्ञाति जैनोनी भेगा नवकारसीमां जमे छे. जैन धर्ममां तेओ चूस्त छे. जैन कुमारपालराजाना समयमां तेओनुं बहुमान हतुं. तेओ स्वज्ञातिनी उन्नति करवा तैयार थया छे.

महनियाणज्ञाति–आ ज्ञाति संबंधी विशेष जाणवा योग्य हकीकत मळी नथी. मणियार ज्ञातिने मळती आ ज्ञाति छे. उपर्युक्त नामनी ज्ञाति हाल विद्यमान छे के केम तेनी तपास करवानी जरूर छे.

खडायताज्ञाति–सोळमा सैकामां खडायताज्ञाति जैन धर्म पाळती हती. विजापुर पासे त्रण गाउपर साबरमतीना कांठापर खडायता (षड्डायतन) गाम छे त्यांना रहेवासी वणिकोना नामथी खडायता वणिक प्रसिद्ध थयां पूर्वे खडायता वणिको जैन धर्म पाळता हता, पण पाछळथी तेओ अढारमा सैकामां वैष्णव बन्या. खडायता जैनवणिकोनी करावेली जैन प्रतिमाओ हाल छे. कालनी गति गहन छे. खडायता वणिको व्यापार करे छे. तेमनी थोडी संख्या छे.

हुच्छमहुच्छज्ञाति तथा नागद्राज्ञाति सोलमा सैका सुधी श्वेतांबर-जैन तरीके हती. पश्चात् तेनो इतिहास मळतो नथी. नागदा, गुर्जर, लाडु वगेरे वणिको दिगंबर जैनो तरीके हाल विद्यमान छे. आ प्रमाणे आ भागमां आवेली वणिक्ज्ञातियो संबंधी विवेचन कर्युं. चोरासी वणिक् जातियो पैकी थोडी जातियोनुं विवेचन कर्युं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कइ जैन वणिग्ज्ञातिओए धातुप्रतिमाओ भरावी तेनां नामो.

नाम	पृष्ठांक
१ लाडुआ श्रीमालीज्ञाति	२–२०५ –२३८
२ वायडज्ञाति	२–१४–२७–५२–५४–१०३–१७५–२३८
३ उपकेशज्ञाति	३
४ श्रीमालज्ञाति	३
५ डीसावालज्ञाति	३–१६–४२–११३–१८९-१९०-१९५–२०७–२१७
६ श्री श्रीमालज्ञाति	४
७ वृद्धशाखा श्रीमालज्ञाति	४
८ ओशवालज्ञाति	४
९ गुर्जरज्ञाति	५–५५–६१–६७–१०३–१९४–२०७–२१०–२२५–२३५
१० प्राग्वाटवंशज्ञाति	७
११ उवलज्ञाति (?)	२०
१२ पल्लीवालज्ञाति	२६–५७
१३ वृद्धप्राग्वाटज्ञाति (वीशापोरवाड)	२८
१४ श्रीमाल गुर्जरज्ञाति (दशापोरवाड)	३०
१५ नागरज्ञाति	३१–४४–४५–५४–८५–११२–२१९–२५०
१६ उपकेशज्ञाति	३९
१७ उपजाति (सुरोठा) गोत्र	४४
१८ मोढज्ञाति	४५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९ हुंबडज्ञाति	६८–८०–८५–१००–१४६–१८४–१९८–२०४–२३१–२४३–२५१–२५१–२५२–२५२
२० कपोलज्ञाति	१०३
२१ ओशवाल लघुशाखा (दशाओशवाल)	१०४
२२ सितकेशज्ञाति	१११
२३ निमाज्ञाति	१५२–२०२
२४ श्रीवंशज्ञाति	१६३
२५ श्री श्रीवंशज्ञाति	१६८–१७७–१७७–२०६–२१३–२१८–२३२–२३५
२६ वीरवंशज्ञाति	१७२–१८१
२७ उकेश चहुआणज्ञाति	१८९
२८ शालापतिज्ञाति	२३७
२९ महनियाणज्ञाति	२४०
३० खडायताज्ञाति	२४६–२४६
३१ हुच्छमच्छानिवृद्धशाखा	२४९
३२ हुंबडज्ञाति वृद्धशाखा	२५०
३३ नागेंद्रज्ञाति	१
३४ नागद्राज्ञाति	१२
३५ भावसार कणबी (कूर्मक्षत्रिय)	

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्वेतांबर जातियोनी यादी आप्याबाद जैन दिगंबर धर्म पाळनारी ज्ञातिओमां नाम प्रसंगवशात् अत्रे आपवामां आवे छे.

१ परमार
२ खंडेलवाल
३ आसाटी
४ गोलापूर्व
५ कासार
६ बघेरवाल
७ बदनीरा
८ सैतवाल
९ धाकड
१० नरनागरे
११ चौसके
१२ पोरवाड
१३ जांगडाबीसे
१४ गोलालारे
१५ गंगेरवाल
१६ कुकेकरी
१७ समैया
१८ पंचविषे
१९ बीनेकया
२० लाड
२१ पद्मावती परवार
२२ अयोध्यावासी
२३ कटनेरे
२४ जांगडा वीसा पोरवाड
२५ नेवा
२६ असाटी
२७ पल्लीवाल
२८ लमेचू
२९ नेमा
३० बडनारे
३१ अग्रवाल
३२ कृष्णपक्षी
३३ कामभोज
३४ परनागर
३५ धवलजैन
३६ चोसके परवार
३७ पंचम
३८ अयु० जैन
३९ जांगडा
४० जैसवाल
४१ असाठी
४२ दशाहुमड
४३ नरसिंहपुरा वीशा
४४ बरैया
४५ चित्तौडा
४६ नागद दशा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४७ नायी जैनी
४८ वीशाहुमड
४९ वीशाअग्रवाल
५० नागदा
५१ तारनपंथी
५२ खंडलवाल
५३ असेटे
५४ गोलसिंह०
५५ नागदावीशा
५६ श्रीमाल
५७ ओसवाल
५८ खरौवा
५९ असेटे
६० नेमावीशा
६१ नरसिंहपुरा दशा
६२ लगेच
६३ सुनार जैन
६४ सहेतवाल
६५ बीशा मेवाडा
६६ चतुर्थ
६७ खुरसाले
६८ बोगारका
६९ उपाध्याय
७० कांबोज
७१ हरदर
७२ वाडा
७३ जैन
७४ ब्राह्मण जैन
७५ सादर जैन
७६ दि. जैन
७७ रेडियर
७८ जैनक्षत्रिय
७९ बढियार
८० पुरोहित
८१ श्रावक
८२ वैश्य जैन
८३ खैरावा
८४ फतेपुरीया
८५ लोहीया
८६ बुढेले
८७ बुरले
८८ खैराया
८९ गोलसिंघाडे
९० बुदेले
९१ नूतनजैन
९२ पापडीवाल
९३ भवसागर
९४ तगर
९५ चौघले
९६ गुर्जर
९७ गांधी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिगंबर जैनोमां उपर प्रमाणे ज्ञातियो छे. दिगंबरोनी चार लाख पचास हजार पांचसे ने चोराशीनी मनुष्य संख्या छे. श्वेतांबर जैनोमां अने दिगंबर जैनोमां घणी ज्ञातियोमां फेर छे. श्वेतांबरोमां पल्लिवाल ज्ञाति छे ते ज्ञाति दिगंबरमां पण हयात छे. पल्लिवाल ज्ञातिना नामे पल्लीवालगच्छ नीकळ्यो छे तेथी ते ज्ञाति असल श्वेतांबरमां हती परंतु पाछळथी परिवर्तन थयुं जणाय छे. पोरवाड, ओशवाल, श्रीमाळी ज्ञातिना केटलाक जैनो ज्यां दिगंबरोनुं जोर छे त्यां ते धर्म पाळनारा बन्या होय एम लागे छे. पोरवाड, ओशवाल, श्रीमालज्ञाति तो श्वेतांबर जैनमां छे. श्वेतांबरमां लाड जाति छे. दिगंबरमां पण लाड जाति छे. श्वेतांबरमां अग्रवाल जाति छे. (मारवाड पंजाब वगेरे प्रदेशोमां) श्वेतांबरमां भावडार जाति हती अने तेना नामथी भावडारगच्छ नीकळ्यो हतो तेनुं गच्छावलिना लीस्टमां नाम आपवामां आव्युं छे. दशा अने वीसा हुंबड श्वेतांबर पण छे अने दिगंबर पण छे. नागद्रा जाति असल श्वेतांबरमां छे अने जेना नामथी नागद्रा—नागह्रदगच्छ नीकळ्यो छे. श्वेतांबरमां ते जाति छे अने दिगंबरमां हाल नागदा जाति छे. एम केटलीक तो सामान्य भेदे जुदी गणाय तेवी छे. दिगंबर जैन डिरेकटरीमांथी दिगंबर जातियोनो उतारो करवामां आव्यो छे. श्वेतांबरोमां गुर्जर, कपोल झालोरा सोरठीया लाड वगेरे जातियो छे अने तेमानां केटलाक लोको जैनधर्मी छे. मध्यप्रांत, संयुक्तप्रांत, बंगाल, पंजाप, कच्छ, मारवाड अने सिंध वगेरे देशोमां श्वेतांबर जैनोनी केटलीक जातियो छे. परंतु ते संबंधी तपास करवामांथी आगळ उपर ते संबंधी उल्लेख थशे. गुजरातमां भावसार ज्ञाति जैनधर्म पाळे छे अने तेनां घणां घरो छे चरोत्तरमां लेवा पाटीदारो जैनधर्म पाळे छे तेमनां नडीयाद, कावीठा, सुणाव, नार, भादरण वगेरे गामोमां घरो छे. लेवापाटीदारोमांथी हाल घणा साधुओ थया छे केटलाक ब्राह्मणो जैनधर्मी छे. मारवाडमां सेवकना नामनी ब्राह्मण-ज्ञाति जैनधर्म पाळे छे. गुजरातमां भोजक नामनी ब्राह्मण ज्ञाति जैनधर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाळे छे. तेना वडनगर, विसनगर, मेसाणा, पाटण वगेरेमां घणां घरो छे. ए प्रमाणे ज्ञातियो संबंधी विचार करवामां आव्यो. श्वेतांबर जैनोमां वणिकोनी चोराशी ज्ञातियो हती तेनुं अस्मदीय जैनोनी प्राचीन तथा अर्वाचीन स्थिति नामना पुस्तकमां लीस्ट आपवामां आव्युं छे.

२ आ लेखसंग्रहना पहेला भागमां जे जे लेखो आव्या छे तेमां कया कया गच्छना आचार्योए प्रतिष्ठा करावी ते जाणवा माटे गच्छोनां नामो जे जे आवेलां छे ते जणाववामां आवे छे.

चोराशी गच्छो पैकी घणां गच्छोनां नामो आ पुस्तकमांना लेखोमां आवे छे. चोराशी गच्छो संबंधी विशेष हकीकत अवलोकवी होय तो अमारुं बनावेलुं "गच्छमतप्रबंध" नामनुं पुस्तक साद्यंत वांची जवुं. गच्छमतप्रबंधमां शिला लेखोथी तथा पुस्तकोथी सिद्ध थनार चोराशी उपरांत गच्छोनां नामो लखवामां आव्यां छे. कया गच्छो क्यां उत्पन्न थया तेनुं झांखुं स्पष्टीकरण (गच्छमतप्रबंधनी प्रस्तावनामां) करवामां आव्युं छे. श्वेतांबरोमां हालमां तो तपागच्छ, सागरगच्छ, वडगच्छ, खरतरगच्छ, अंचलगच्छ, पायचंदगच्छ मुख्यताए विद्यमान छे. बाकीना गच्छोना आचार्योनी पट्टावलियो पण आज सुधीनी पूर्ण मळती नथी. चौदमा, पन्नरमा अने सोळमा सैकामां चोराशी गच्छोनुं अत्यंत जोर हतुं. चोराशी गच्छोना आचार्यो जे सैकामां विद्यमान हता. ते वखतमां जैनोनी करोडो संख्यामां वसति हती. सर्व गच्छोमां ते वखते हजारो, लाखो साधुओ विद्यमान हता. आखा हिन्दुस्थानमां सर्वत्र जैनोनुं प्राबल्य हतुं. एक वड वृक्षनां चोराशी डाळां होय ते वखते तेनी शोभा अने तेनो विस्तार केटलो होय ? अने पश्चात् पांच छ डाळां होय ते वखते जेटलो विस्तार होय तेटलो हाल तो जैनोनो विस्तार देखवामां आवे छे. श्वेतांबर अने दिगंबरोनी भेगी वसति करतां तेर लाख जैनोनी वसति थाय छे. श्वेतांबरपक्षमां चोराशी गच्छोना आचार्योमां गच्छभेदे पण बारमा तेरमा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सैकामां सारो संप हतो. जैनो परस्परमां लडीने पोतानो नाश करता नहोता. पन्नरमा सैका पछी गच्छ कलह उद्भव्यो अने तेथी जैनोनी पडतीनो प्रारंभ थयो तेथी अनेक जैन गच्छोनो नाश थयो.

गच्छमतप्रबंधमां पल्लीवालगच्छ संबंधी अमोए तेनी गुजरातमां उत्पत्ति थइ एवी कल्पना करी छे परंतु दिगंबरमां पल्लीवाल ज्ञातिनी हयाती छे एम अवलोकतां तेनी मारवाडमां अगर मेवाडमां पल्ली नामना गामथी (पालीथी) ख्याति थइ होय एम विशेष संभव रहे छे. नागद्रा नामना गच्छनी श्वेतांबरोमां उत्पत्ति अवलोकवामां आवे छे तेनी प्रायः मेवाडमां उत्पत्ति संभवे छे. हाल गोलवाडमां मडार छे त्यां मडाहडागच्छनी उत्पत्ति संभवे छे. रासाओमां, ग्रन्थोमां, कच्छोलीवालगच्छ संबंधी उल्लेखो आवे छे, ते संबंधी श्रीयुत चीमनलाल डाह्याभाई रासमालामां उल्लेख करवाना छे. कया गच्छो कई सालमां उत्पन्न थया तेनो विचार करतां खरतरगच्छ, वडगच्छ, तपागच्छ, अंचलगच्छ, पायचंदगच्छ पूर्णिमागच्छ, सागरगच्छ वगेरेनी साल मळी आवे छे परंतु आ साथे जे गच्छोनां बीजां नामो लख्यां छे तेनी साल काढवा माटे हजी जैन-गच्छना इतिहास संबंधी घणां पुस्तको हस्तमां आवतां तत्संबंधी विशेष निर्णयात्मक प्रकाश पाडी शकाय तेम छे. गामो, बिरुद अने कंई तिथि आदि भेदोथी गच्छो उत्पन्न थया छे. दिगंबरोमां चतुर्थपंचमनो भेद छे ते श्वेतांबरोनी चोथपांचमना नामभेदने मळतो आवे छे. धर्मघोष आचार्यना नामथी धर्मघोषगच्छ प्रगट्यो छे, अने कृष्णर्षिना नामथी कृष्णर्षिगच्छ थयो छे. चतुर्दशी अने पूर्णिमा तिथिना भेदे चतुर्दशी अने पूर्णिमागच्छ थयो छे. आगमनी मुख्यमान्यताए आगमगच्छ थयो छे. निगम (जैनवेद उपनिषद्नी मुख्यमान्यताए निगमगच्छ थयो छे.) पोशालना भेदे वडीपोशाल, लहुडी, (लघुपोशाल) गच्छ भेदो थया छे. विजयआनंदसूरि अने विजयदेवसूरिना नामे अणसुर अने देवसुर एम बे तपागच्छमां भेद पड्या छे. त्रण भवमां मुक्ति जनार आचार्योना नामे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिभवीयागच्छ थयो हतो. ज्ञातिना नामथी नागर, हुंबड, ओशवाल वगेरे गच्छो प्रगट्या छे. क्रियाना भेदे द्विवंदनिक, विधिगच्छ वगेरे गच्छो थया छे. ढुंढक साधुओमां गामना भेदे लींबडीसंघाडो, गोंडळसंघाडो, खंभातसंघाडो वगेरे भेदो पड्या छे. जैन जातियोमां पण गाम, वर्ण, पद्वी वगेरे भेदोथी भेदो थया छे. अत्र आ पुस्तकमां आवेला गच्छोनी नामावली आपवामां आवे छे.

गच्छनां नाम.

		पृष्टांक			पृष्टांक
१	ब्रह्माणगच्छ	१	१६	वृहद्गच्छ	९
२	नागेंद्रगच्छ	१	१७	सागरगच्छ	१०
३	सरस्वतीगच्छ	१	१८	द्विवंदनिकगच्छ	११
४	साहु(धु)पूर्णिमागच्छ	२	१९	भावडारगच्छ	११
५	तपागच्छ	२	२०	आगमगच्छ	१६
६	देवसूरतपागच्छ	२	२१	चतुर्दशीगच्छ	२०
७	वृद्धतपागच्छ	३	२२	सिद्धांतगच्छ	२१
८	श्रीकोरंटगच्छ	३	२३	धर्मघोषगच्छ	२६
९	चैत्रगच्छ	४	२४	वडगच्छ	२७
१०	पूर्णिमापक्ष	४	२५	संडेरगच्छ	२७
११	अंचलगच्छ	५	२६	भिन्नमालगच्छ	३२
१२	पिप्पलगच्छ	५	२७	रुद्रपल्लीयगच्छ	३५
१३	उकेशगच्छ	५	२८	तंथफल (?) गच्छ	३५
१४	श्रीमलधारीगच्छ	९	२९	घोषपुरीगच्छ	३८
१५	श्रीखरतरगच्छ	९	३०	प्रीतिश (?) गच्छ	४०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

		पृष्टांक			पृष्टांक
३१	विधिपक्षगच्छ	४०	५१	थिराद्रगच्छ	१४९
३२	भावडहेरागच्छ	४०	५२	मडारगच्छ	१६९
३३	उपकेशगच्छ	४५	५३	वृद्ध थिराद्रागच्छ	१७२
३४	विद्याधरगच्छ	४८	५४	श्रीजीरापल्लीयगच्छ	१८२
३५	खरतरमधुकरगच्छ	५३	५५	निवृत्तिगच्छ	१८४
३६	श्रीचंद्रगच्छ	५४	५६	नागरगच्छ	२१८
३७	मडाहडगच्छ	५६	५७	सहुआलीयागच्छ	२१४
३८	नाणंद्रगच्छ	६७	५८	कुतुबपुरागच्छ	२१८
३९	चित्रावलगच्छ	७९	५९	जीराउल्लगच्छ	२३१
४०	श्रीपल्लीवालगच्छ	८१	६०	महुकेशगच्छ	२४५
४१	श्रीनाणावालगच्छ	८४	६१	श्रीसिद्दुणागच्छ	२४८
४२	श्रीकृष्णर्षिगच्छ	९१	६२	थिरापद्रीयगच्छ	२४९
४३	श्रीहीरापल्लीगच्छ	९५	६३	लुहडीपोशालगच्छ	२४९
४४	सिद्धानीगच्छ ?	९६	६४	कच्छुलिडागच्छ (कच्छोलीवाल)	२५०
४५	आणंदसूरतपागच्छ	१११			
४६	सीदाघटीयगच्छ—?	११२	६५	वृद्धतपागच्छ	२५२
४७	नंदीतरगच्छ	१२०	६६	हुंबडगच्छ	२५२
४८	श्रीहारीजगच्छ	१३१	६७	नायलगच्छ	१७४
४९	श्रीराजगच्छ	१४३	६८	त्रिभवियागच्छ	
५०	रालद्रागच्छ	१४४			

आ लेख संग्रहना प्रथम भागमां जे गच्छोनां नामो आव्यां छे, ते अत्र नामावलिमां आपवामां आव्यां छे. मंडारगच्छ मंडाहडागच्छ, एक संभवे छे. उवएशगच्छ, उपकेशगच्छ अने उकेशगच्छ एक गच्छनां नाम छे. जे गच्छोनी आगळ ? शंका चिह्न कर्युं छे ते गच्छोनां नामो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शंकाशील विचारवा योग्य छे. सिड्डानीगच्छ ते सिद्धांतीगच्छ होय एम लागे छे कारण के ते लेख बराबर वंचायो नथी. केटलाक गच्छोनां नामोने वांचतां शब्द भेद थवानो कोइ ठेकाणे संभव लागे छे. घोषपुरीगच्छ संबंधी विशेष तपास करवानी जरुर रहे छे. भावडहेर, भावडारगच्छ एक होय एम जणाय छे. भावसार ज्ञातिनो **भावडहर, भावडारगच्छ** साथे संबंध होय एम जणाय छे. पंजाबमां भावडा जैनो छे तेनो कया गच्छनी साथे संबंध हतो तेनो शिलालेखो वगेरेथी भविष्यमां प्रकाश पाडी शकाय तेम छे. वडगच्छ यतिवर्गमां हाल **श्रीबुद्धिसिंहसूरि** विद्यमान छे. विजयदेवसूरि तपागच्छना यतिवर्गमां हाल **श्रीमुनिचंद्रसूरि** विद्यमान छे. खरतरगच्छ यति वर्गमां हाल श्री पूज्य विद्यमान छे अने खरतर संवेगीमां श्रीकृपाचंद्रसूरि विद्यमान छे. अंचलगच्छना यति वर्गमां श्री पूज्य विद्यमान छे. पार्श्वचंद्रगच्छमां आचार्य विद्यमान छे. तपागच्छमां अढीसें वर्षथी संवेगी मुनियोनो वर्ग प्रगट्यो छे अने तेमां त्रीश वर्षथी आचार्यो थवा लाग्या छे. खरतरगच्छमांथी नीकळेल श्री मोहनलालजीना संघाडामांना मुनियोमां केटलाक श्री हर्षमुनि वगेरे तपागच्छनी क्रिया करे छे, अने **केशरमुनि तथा तेमना** शिष्य **बुद्धिमुनि** वगेरे खरतरगच्छनी क्रिया करे छे. अंचलगच्छमां हाल केटलाक संवेगी साधु थया छे. हाल तपागच्छमां संवेगी साधुओ आशरे अढीसें त्रणसें छे अने हजारना आशरे संवेगी साध्वीओ छे. सर्व गच्छोमां हाल तपागच्छना साधुओनी श्वेतांबर पक्षमां मुख्यताए ज्ञाहोज्ञलाली छे अने तेओनुं विशेष जोर छे. हिंदुस्थानना सर्व देशोमां तपागच्छना साधुओ विचरी शके छे. अन विद्वत्तामां तेओ मुख्य भाग भजवे छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ धातुप्रतिमा लेखसंग्रहमां आवेला प्रत्येक गच्छना
आचार्योना नामोनुं लीष्ट.

आचार्य	संवत
हारीजगच्छ.	
भट्टा० शीलभद्रसूरि	१५७७
द्विवंदनीकगच्छ.	
देवगुप्त प० सिद्धसूरि	१५१६ –१५३३
कक्कसूरि	१५५२
देवगुप्तसूरि	१५७३–१५९९
अंचलगच्छ.	
जयकीर्तिसूरि	१४८७ –१४९९–१४८१
भावसागरसूरि	१५७३ –१५७६–१५६५
जयकेशरसूरि	१५२५ –१५१९–१५०८–१५०८
श्रीसूरि	१५७९
सिद्धांतसागरसूरि	१५५१ –१५४८
जयाकरसूरि	१५०५
मेरुतुंगसूरि	१४५६–१४७०
गुणनिधानसूरि	१५९१
जयशिखरसूरि	१५१७

आचार्य.	संवत्
चैत्रगच्छ.	
मलयचंद्रसूरिप० लक्ष्मीसागरसूरि	१५२२
जिनेश्वरसूरि सं. वर्धमानसूरि	१३३९
श्रीपासदेवसूरि	१४५१–४१५७
रत्नदेवसूरि	१५५८
ज्ञानदेसूरि	१५२७
मानदेवसूरि	१४१७
धर्मदेवसूरि	१४०५
गुणदेवसूरि सं. जिनदेवसूरि प. रत्नदेवसूरि	१५१२
जिनदेवसूरि	१४८४
हरिचंद्रसूरि	१३८८
मुनितिलकसूरि	१५०७–१५०२
वीरदेवसूरि पट्टे पासदेवसूरि	१५७९
सोमदेवसूरि	१५५४
मलयचंद्रसूरि प. श्रीलक्ष्मीसागरसूरि	१५२०
सोमचंद्रसूरि प. चारुचंद्रसूरि	१५३७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
श्रीसूरि	१५१९
लक्ष्मीदेवसूरि	१५०७
मानदेवसूरि	१३९६
पार्श्वचंद्रसूरि शि. मलयचंद्रसूरि	१४७४
राजदेवसूरि	१४००
देवानंदसूरि	१३३३

कोरंटगच्छ.

नन्नाचार्यसंताने श्रीकक्कासूरि प. श्रीसावदेवसूरि	१५२१
सावदेवसूरि	१५११–१५२५ –१५३१
नन्नसूरि	१४९६
कक्कसूरि	१५९५
पज्जुनसूरि	१५१९
कक्कसूरि प. सावदेवसूरि	१५१३
सर्वदेवसूरि	१५२०

ब्रह्माणीयागच्छ.

वीरसूरि	१४६२–१५२२
मुनिचंद्रसूरि	१५१२
जजगसूरि प. पज्जुन्नसूरि	१४९३
श्रीपतिसूरि	११८८
वीरसूरि	१२१३
विजयसेनसूरि	१३८०

आचार्य	सं.
मुनिचंद्रसूरि	१४३३–१५०५
मुनिचंद्रसूरि प. वीरसूरि	१४७१
बुद्धिसागरसूरि	१४९३–१४२९ –१५४९
विमलसूरि	१६१५
बुद्धिसागरसूरि प. विमलसूरि	१५१७–१५२४
हेमतिलकसूरि	१४५४
बुद्धिसागरसूरि	१३८०

षंडेरगच्छ.

शान्तिसूरि	१२७४
शान्तिसूरि	१५०८
इश्वरसूरि	१५६०
सुमतिसूरि	१४५९

उकेशगच्छ.

देवेंद्रसूरि	१३७३
सिद्धाचार्ये सं. कक्कसूरि	१५३७ –१५०८–१५०४ –१५०१–१५११
सिद्धसूरि	१५७९
देवगुप्तसूरि	१३
सर्वसूरि	१५१८
सिद्धसूरि	१५३०–१५१५
कुंकुदाचार्य सं.श्रीकक्कसूरि	१५१९

For Private And Personal Use Only

आचार्य	सं.
सिद्धाचार्य संताते देवभद्रसूरि	१५९१
कक्कसूरि	१५५२
सिंहसूरि	१४८४
सिद्धाचार्य सं. देवगुप्तसूरि	१५१९
तपागच्छ.	
हेमविमलसूरि	१५५१५६—५७
	१५६७१५५—४
	—१५८४
विजयधर्मसूरि	१८३९
लक्ष्मीसागरसूरि शिष्य सोमदेवसूरि	१५२२
हेमसोमसूरि	१६६७
रत्नसिंहसूरि	१४८४-१५०७
विजयरत्नसूरि	१५३७
विजयदेवसूरि प. विजयदेवसूरि	१६८२
लक्ष्मीसागरसूरि	१५२३—१५२५
	१५१९—१५२५
	१५२५—१५४०
	१५३६—१५३५
	—१५२४
रत्नशेखरसूरि	१५१५
रत्नशेखरसूरि प. लक्ष्मीसागरसूरि	१५२१—१५१८
	१५२३—१५३३

आचार्य	सं.
सोमसूरि प. लक्ष्मीसागरसूरि	१५३५—१५३४
सोमसुंदरसूरि	१४९५—१४८७
	१४०६—१४९९
	—१४८६
कमलकलशसूरि	१५५३—१५५९
जयचंद्रसूरि	१५०३—१५०४
	—१५०४
विजयदयासूरि	१५७८
विजयनरेंद्रसूरि	१९०३
विजयसेनसूरि	१५५४
विजयजिनेंद्रसूरि	१८७३—१८७३
	—१८७३
उदयनंदीसूरि शि. सुरसुंदरसूरि	१५१३
सोमसुंदरसूरि शि. रत्नशेखरसूरि	१५१३
सौभाग्यहर्षसूरि	१५८४
मुनिसुंदरसूरि	१५०१
विजयदेवसूरि	१६८३—१६७२
	—१६७४
हीरविजयसूरि	१६२४—१६२५
जयकल्याणसूरि	१५०२
संवेगीरूपविजयगणी	१८९३
विजयदानसूरि	१५७०—१६१७
	१६१५—१५९६

5

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
शान्तिसागरसूरि	१८९३
विजयदेवसूरि	१८९३
सुमतिसाधुसूरि	१५४४
विजयदेवसूरि	१६८२
आनंदविमलसूरि	१५९५
ज्ञानविमलसूरि	१७५९
धनेश्वरसूरि	१८९३
आनंदविमलसूरि	१८९०
देवसुंदरसूरि	१४६६
श्रीसूरि	१५९८
लाभसागरगणी	१५२०
विजयदेवसूरिवारके मुक्तिसागरसूरि	१६८२
विजयानंदसूरि प. विजयराजसूरि	१७२१
उदयनंदीसूरि	१५१२
सोमसुंदरसूरि	१४७२
इंद्रनंदीसूरि प. विनयहंसगणी	१५६५
विमलसोमसूरितेज. प्रमोदगणी	१६७१
देवसुरगच्छ.	
विजयधर्मसूरि	१८२५–१८३९
विजयजिनेंद्रसूरि	१८४५

आचार्य	सं.
आगमगच्छ.	
अमररत्नसूरि	१५३२–१५३१
	१५२४–१५३५
	१५४७–१५३५
हेमरत्नसूरि	१५१२–१५०२
शीलरत्नसूरि	१५०७
देवरत्नसूरि	१५३१–१५११
जयानंदसूरि	१४८२
अमरसिंहसूरि प. हेमरत्नसूरि	१४८५
सोमरत्नसूरि	१५७२
आनंदसूरि	१५६४–१५१७
सिंहरत्नसूरि	१५०२
उदयरत्नसूरि	१५८७
आनंदरत्नसूरि	१५७१
सोमरत्नसूरि	१५७१
सिंहदत्तसूरि	१५२३
सिंहदत्तसूरि	१५१२
मुनिसिंहसूरि	१४९९
भ. शीवकुमारसूरि	१५८४–१५८०
विवेकरत्नसूरि	१५४४
अमरसिंहसूरि	१४७०
विजयमेरुसूरि	१५९९

For Private And Personal Use Only

आचार्य	सं.
आनंदप्रभसूरि	१५१६
पूर्णदेवसूरि	१५१७
महेंद्रसूरि	१५१७
जिनरत्नसूरि	१५०८

ब्रहद्तपागच्छ.

आचार्य	सं.
शान्तिसागरसूरि	१५२३
विजयधर्मसूरि	१८२८
हेमविजयसूरि	१६४९
भ. जिनरत्नसूरि	१५२२ –१५१६
लब्धिसागरसूरि प. श्रीधनरत्नसूरि श्रीसोभाग्यसागरसूरि	१५८४
उदयसागरसूरि	१५४३
रत्नशेखरसूरि	१५०७
रत्नसिंहसूरि	१५०४–१५१५
धर्मरत्नसूरि प. विद्यामंडनसूरि	१५९७

खरतरगच्छ.

आचार्य	सं.
जिनभद्रसूरि प. जिनचंद्रसूरि	१५३२–१५३६
जिनसागरसूरि प. जिनसुंदरसूरि	१५१६
जिनसुंदरसूरि प. जिनहर्षसूरि	१५१९
जिनराजसूरि	१४५८
जिनभद्रसूरि	१५१२–१४७९ –१५०५
जिनकुशलसूरि	१३८१
जिनचंद्रसूरि	१५२५
जिनहर्षसूरि प. जिनमाणिक्यसूरि	१५८३
जिनराजसूरि प. श्रीजिनभद्रसूरि	१५०९
जिनसागरसूरि	१५१०–१४९५
जिनचंद्रसूरि	१६१२
जिनचंद्रसूरि जिनशीलसूरि	१५९५
जिनहंससूरि	१५५७
जिनसुंदरसूरि	१५१५
जिनसुंदरसूरि प. जिनहर्षसूरि	१५५५
जिनचंद्रसूरि प. जिनसमुद्रसूरि	१५४७
विद्यादानसूरि	१६१३
जिनसिंहसूरि	१६१७

आचार्य	सं.
वृद्धतपापक्ष.	
ज्ञानसागरसूरि प. भ. उदयसागरसूरि	१५४२–१५३३–१५४६
उदयवल्लभसूरि	१५२१–१५१४
श्रीसूरि	१५०७
ज्ञानसागरसूरि	१५२२–१५२८–१५२७
रत्नसिंहसूरि	१५०८–१५०७–१५११–१४८७–१५१६–१५१४–१५१८
उदरसागरसूरि	१५३६
उदयसागरसूरि प. धनरत्नसूरि	१५०६
सौभाग्यसागरसूरि	१५७९–१५८४
जिनरत्नसूरि	१५३०–१५२३–१५२०
उदयवल्लभसूरि प. ज्ञानसागरसूरि	१५२७
विजयरत्नसूरि	१५३७
विजयदेवेंद्रसूरि	१५५३
धनरत्नसूरि	१५८७
उदयसागरसूरि प. लब्धिसागरसूरि	१५६६

आचार्य	सं.
मुनिसिंहगणी	१५५१
भ. धनरत्नसूरि	१५७२
ब्रहद्गच्छ (वडगच्छ)	
कनकसूरि	१३८३
माणिक्यसूरि	१३२७
देवकुंजरसूरि प. देवेंद्रसूरि	१५८१
भानदेवसूरि	१३१०
अमरप्रभसूरि प. सागरचंद्रसूरि	१४९९
रामचंद्रसूरि	१९१३
श्रीवीरभद्रसूरि	१४८८
अमरचंद्रसूरि प. देवचंद्रसूरि	१५३०
देवचंद्रसूरि प. देवकुंवरसूरि	१५४०
कमलचंद्रसूरि संताने देवचंद्रसूरि	१५१६
कमलप्रभसूरि	१९६९
जयमंगलसूरि सं. पूर्णचंद्रसूरि प. कमलप्रभसूरि	१५१८
अमरचंद्रसूरि	१४१४
चैत्रवाल.	
श्रीपद्मसूरि शि. श्रीशालिभद्रसूरि धर्मचंद्रसूरि	१३३५

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
श्रीशालिभद्रसूरि शि. श्री-धर्मचंद्रसूरि	१३२६
सोमदेवसूरि	१५४३
बीरचंद्रसूरि	१५९१
लक्ष्मीदेवसूरि	१५१७
रत्नदेवसूरि	१५२३

चतुर्दशी पक्षगच्छ.

आचार्य	सं.
पासचंद्रसूरि	१५०६
धनप्रभसूरि	१५०६

सागरगच्छ.

आचार्य	सं.
उदयसागरसूरि	१८४५
शान्तिसागरसूरि	१८९३–९२

पूर्णिमागच्छ.

आचार्य	सं.
गुणधीरसूरि	१५१९–१६१८
साधुसुंदरसूरि	१५२५–१७
राजतिलकसूरि	१५२९–१६
साधुसुंदरसूरि	१५२६
साधुरत्नपट्टे साधुसुंदरसूरि	१५३१
गुणतिलकसूरि	१५२४
जयचंद्रसूरि	१५१४–०२
विद्याप्रभसूरिपट्टे ललितप्रभसूरि	१५५४
पुन्यसूरि	१५१५
कमलप्रभसू. प. पुन्यप्रभसूरि	१६०८
सिद्धसूरि	१५३४
पासचंद्रसू. प. जयचंद्रसूरि	१५१६
गुणसमुद्रसूरि	१५०१–०७
राजतिलकसूरि	१५१२
महिमाप्रत्नसूरि	१७६८
उदयानंदसूरि	१४०६
ललितप्रभसूरि	१४२५
चारित्रचंद्रसूरि	१५३६
साधुरत्नसूरि	१४८६

गच्छपूर्णिमा.

आचार्य	सं.
जयसिंहसूरि	१४६८
विशालराजसूरि	१५३०
मुनितिलकसूरि	१४६२
श्रीसूरि	१४०१
जयप्रभसूरि	१५१६
मुनिसुंदरसूरि	१५१३
सोमप्रभसूरि	१४३२
मुनिचंद्रसूरि	१५६०
सावचंद्रसूरि	१५३३
पद्मशेखरसूरि पट्टे जिनहर्षसूरि	१५७२
विमलचंद्रसूरि	१४८५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
शीतलचंद्रसूरि	१४९८
साधुसुंदरसूरि	१५१८
श्रीसूरि	१५५८
सोमचंद्रसूरि धनवर्धनसूरि	१५४४
पुन्यरत्नसूरि	१५२८–२४
मुनितिलकसूरि शि. राज-तिलकसूरि	१५१९
दयासागरसूरि	१५०५
सौभाग्यरत्नसूरि पट्टे गुण-रत्नसूरि	१५८८
धर्मशेखरसूरि	१५२०
गुणसागरसूरि	१५०४

पिपलगच्छ.

आचार्य	सं.
भट्टारक आशालिप्रभसूरि	१५३६
भट्टारक गुणरत्नसूरि	१५१०
,, गुप्त समुद्रसूरिपट्टे शांतिसूरि	१४९४
उदयदेवसूरि	१५०४
शालिभद्रसूरि	१५३१
मुरिचंदसूरिपट्टे सोमचंद-सूरि	१४७६
भ० उदयदेवसूरि	१५१२
धर्मसागरसूरि	१४१३
उदयरत्नसूरि	१६१७

आचार्य	सं.
अमरचंद्रसूरि	१५१९
सोमचंद्रसूरि	१४८४
सागरचंद्रसूरि	१४६१
विनयसागरसूरि	१५७६–१५६६
श्रीसूरि	१५७९
धर्मसागरसूरि	१५२०–२०
रत्नदेवसूरि	१५२४–२७–१८
धर्मशेखरसूरि	१५०५
गुणरत्नसूरि	१५१३
पद्मानंदसूरि	१५४२
सोमदेवसूरिपट्टे उदयदेवसूरि	१५१७

पीपिलगच्छ.

आचार्य	सं.
उदयचंद्रसूरि	१४६१
कक्कसूरि	१३६८
मुनिशेखरसूरि	१४०९
पद्मप्रभसूरि	१४१७
प्रभानंदसूरि	१४७८

हुंबडगच्छ.

आचार्य	सं.
सिंहदत्तसूरि	१४७७

काशहृदीयगच्छ.

आचार्य	सं.
उमतनसूरि	१३७३

शशेरगच्छ.

आचार्य	सं.
वीरसूरि	१५८७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
वृद्ध थिरापद्रगच्छ.	
वादी वैतालशांतिसूरि	
पूर्णभद्रसूरि	१५००
शांतिसूरि शिष्यसर्वदेवसूरि	१३५६
तपा कुतुबपरागच्छ.	
सौभाग्यनंदिसूरि	१५९०
राजगच्छ.	
माणिक्यसूरि शिष्यहेमसूरि	१३२६
कच्छोलीडागच्छ.	
कच्छोलीवालगच्छ.	
सकलचंद्रसूरि	१५००
पूर्णिमापक्षे कच्छोलीवाल विजयराजसूरि विजयसागरसूरि	१५७३
नागरगच्छ.	
प्रद्युम्नसूरि	१३४१
किन्नरसगच्छ.	
पुण्यवर्धनसूरि	१०६१
जेरंडगच्छ.	
विजयसिंहसूरि	१४९२
गच्छ—साधुपूर्णिमा.	
आचार्य	सं.
सागरसूरिपट्टे सोमसुंदरसूरि	१५०९

आचार्य	सं.
धर्मतिलकसूरि	१५५७
पुन्यचंद्रसूरि	१५१२—०९
पुन्यसूरि प. विजयचंद्रसूरि	१५१३
उदयचद्रंसूरि तत्पट्टे मुनिराजसूरि	१५७२
विजयचंद्रसूरिपट्टे उदयचंद्रसूरि	१५५०
मुनिचंद्रसूरिपट्टे विद्याचंद्रसूरि	१५९६
जिनसिंहसूरि	१४५४
श्रीसूरि	१५२८
धर्मतिलकसूरि शि. धन्न. तिलकसूरि	१४३५
भावडारगच्छ.	
नागदेवसूरि	१५५९
विजयसिंहसूरि	१४७८
भावदेवसूरि	१५३६
भावसागरसूरि	१५२०
मंडाहडागच्छ.	
पासचंद्रसूरि	१४६६
शांतिसूरि	१३७०
सोमचंद्रसूरिपट्टे ज्ञानचंद्रसूरि	१४९३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.
सोमप्रभसूरिपट्टे श्रीसूरि	१५१६
धनचंद्रसूरि	१४९३

सिद्धांतिकगच्छ.

आचार्य	सं.
मुनिसिंहसूरि	१४९४
बृहद्गच्छे सैद्धान्तिक नाणचंद्रसूरिपट्टे अक्षतचंद्रसूरि	१४३२
सोमचंद्रसूरि	१५२७

जिरावलागच्छ.

आचार्य	सं.
उदयचंद्रसूरिपट्टे सागरचंद्रसूरि	१५२०
देवरत्नसूरि	१५५२

निगमप्रादुर्भाविकगच्छ.

आचार्य	सं.
इन्द्रनंदिसूरि	१५६३
आनंदसागरसूरि	१५८१

नाणंद्रगच्छ.

आचार्य	सं.
गुणसमुद्रसूरिप. गुणदेवसूरि	१५२५

कृष्णर्षिगच्छ.

आचार्य	सं.
नयचंद्रसूरिपट्टे जयसिंहसूरि	१५५७

पल्लीवालगच्छ.

आचार्य	सं.
यशोदेवसूरि	१५११–१०

सिद्दुणागच्छ.

आचार्य	सं.
आम्रदेवसूरि	१३०३

नाणावालगच्छ.

आचार्य	सं.
सिद्धिरत्नसूरि	१५८७
महेन्द्रसूरि	१५५९
बुद्धिसागरसूरि	१३८६
शांतिसूरि गुणसमुद्रसूरि	१२६४
शांतिसूरि	१५१०
मारुद्रसूरि	१५६९
पासदेवसूरि	८२–१

कोरंटा तपागच्छ.

आचार्य	सं.
सर्वदेवसूरि	१५२५

भिन्नमालगच्छ.

आचार्य	सं.
कनकप्रभसूरि	१५५२

नाणकीयगच्छ.

आचार्य	सं.
शांतिसूरि	१२४८

विद्याधरगच्छ.

आचार्य	सं.
विजयप्रभसूरि	१५०६
हेमप्रभसूरि	१५१५

महुकरगच्छ.

आचार्य	सं.
धनप्रभसूरि	१५२५
चारित्रप्रभसूरि	१५८०

भावदेवाचार्यगच्छ.

आचार्य	सं.
भावदेवसूरि	

चंद्रगच्छ.

आचार्य	सं.
वीरदेवसूरि	१५५२

For Private And Personal Use Only

आचार्य	सं.
अमरचंद्रसूरिपट्टे देवचंद्रसूरि	१५३३
श्रीसूरि	१५१५

धर्मघोषगच्छ.

आचार्य	सं.
विजयचंद्रसूरिपट्टे साधुरत्नसूरि	१५०८
महितिलकसूरि	१४८५
पद्मशेखरसूरिप. पद्मानंदसूरि	१५१७
मलयचंद्रसूरि	१४६१
महेन्द्रसूरि शालिभद्रसूरि	१५३३
हेमचंद्रसूरि	१४००
पुण्यवर्धनसूरि	१५५७
नमिचंद्रसूरि	१५६८
गुणसमुद्रसूरि	१३८९

रुद्रपल्लीयगच्छ.

आचार्य	सं.
श्रीसूरि	१४००
गुणचंद्रसूरि	१४१५
अभयदेवसूरि	१४३४
सिंहतिलकसूरि	१४३९
जिनराजसूरि	

भीमपल्लीयगच्छ.

आचार्य	सं.
जयचंद्रसूरि	१५०७
मुनिचंद्रसूरिप. विनयचंद्रसूरि	१५९८
चारित्रचंद्रसूरिप. मुनिचंद्रसूरि	१५७८

पूर्णिमागच्छ.

आचार्य	सं.
सुमतिसिंहसूरि	१४५९
सुमतिरत्नसूरि	१४८४
वीरप्रभसूरि	१५०६
जयप्रभसूरि	१५२५
ज्ञानकलशसूरि गुणसुंदरसूरि	१५२४
सर्वानंदसूरि	१४६४

नागेन्द्रगच्छ.

आचार्य	सं.
गुणसागरसूरि गुणसमुद्रसूरि	१४९२
विद्यासागरसूरि	१३७१
विनयप्रभसूरि	१५२२
पद्मानंदसूरिपट्टे विनयप्रभसूरि	१५१३
देवसूरि	१४६५
उदयदेवसूरि	१४४९
कमलचंद्रसूरिपट्टे हेमरत्नसूरि	१५२७
कमलचंद्रसूरिपट्टे देवचंद्रसूरि	१५०६
पज्जुन्नसूरि	१४३७

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य	सं.	आचार्य	सं.
गुणसमुद्रसूरि	१५१२	सूणादेवसूरि	१५४६
रत्नाकरसूरि	१२९१	गुणाकरसूरि	१४१९–२१
रत्नप्रभसूरि	१४४७	गुणदत्तसूरि	१५२३
हेमसिंहसूरि	१५७०	देवेन्द्रसूरि	१२९४
हेमरत्नसूरि	१५६७	विजयसेनसूरिपट्टे यशोदेवसूरि	१३०२
गुणसागरसूरि	१४८९	**मलधारीगच्छ.**	
कमलप्रभसूरिपट्टे हेमरत्नसूरिपट्टे	१५२९	गुणसुंदरसूरि	१५२२–१५१५–६–२१
सोमरत्नसूरिपट्टे हेमरत्नसूरि	१५५२	लक्ष्मीसागरसूरि	१५७५–१५४९
गुणदेवसूरि	१५२७–१५२५	राजशेखरसूरि	१४१८
शीलरुद्रगणी	९१०	गुणनिधानसूरि	१५३६
पाश्वलगणी	९१०	श्रीसूरि	१५५३
हरिभद्रसूरि शिष्य विजयसेनसूरिपट्टे उदयसेनसूरि	१३०५	पद्मसागरसूरिपट्टे गुणसुंदरसूरि	१५०५
विजयप्रभसूरि	१५११		

२ कया कया गच्छना आचार्योए कया गाम नगरमां प्रतिष्ठा करावी तथा ते वखते प्रतिमा करावनार श्रावको कया गामोमां वसता हता. साधुओनो, आचार्योनो, धातुप्रतिमानी प्रतिष्ठा करती वखते क्यां वास हतो ते धातुप्रतिमाना लेखोपरथी मालुम पडे छे. तेरमा, चौदमा अने पन्नरमा सैकामां गुजरात वगेरेमां कयां कयां गामो विद्यमान हतां. तेनापर प्रतिमाना लेखोपरथी सारुं अजवाळुं पाडी शकाय छे. आजथी पांचसे वर्ष पूर्वे, छसें वर्ष पूर्वे गुजरात, सौराष्ट्र वगेरे देशोमां कयां कयां गामो नगरो हतां ते जाणवाथी गुजरात वगेरे देशोना गामो नगर संबंधी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इतिहासपर विशेष अजवाळुं पाडी शकाय छे. केटलाक गामोनां हाल क्यां नाम संभवे छे ते जाणवा माटे ( ) चिन्ह करी तेनुं मळतुं नाम आपवामां आव्युं छे. धातुप्रतिमाओना लेखोथी अमुक गच्छोना आचार्योनो अमुक देशमां गाममां विशेष वास तथा विहार हतो एम स्पष्ट अवबोधाय छे. केटलांक गामो हाल विद्यमान न होय तोपण तेनां नामथी खंडेरो शोधी काढवामां तथा प्राचीन जैन मंदिरोना खंडीयरो शोधी काढवामां विशेष प्रकाश पाडी शकाय छे. आ पत्र पछी पाछळना पत्रोमां उपरना उद्देशथी गामोना नामनुं लीष्ट आपवामां आवे छे. गामोनां नाम लखतां भूल थई होय तो जैने साक्षरो सुधारशे अने भूलचूक माटे क्षमा करशे. लीष्टमां लखेला गामो संबंधी विशेष हकीकत लखी शकाय तेम छे परंतु तेम करतां प्रस्तावना ठेकाणे ग्रन्थ थवानो भय रहे छे. गाम वगेरेना ज्ञाताओ कयुं गाम क्यां आव्युं ते सहेजे समजी शके तेम छे एम अवबोधी ते संबंधी विशेष माहिती आपवामां आवी नथी. नीचे प्रमाणे गामोनुं लीष्ट आपवामां आवे छे.

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक	अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
१	आमलेश्वर	२	११	सहुपाला (सोपाला)	९
२	दर्भावती	२	१२	वल्लभीपुर	१०
३	वटपद्र (वडोदरा)	२	१३	गंधार	१०
४	अमदावाद	३	१४	सोलगाम	१०
५	वीसुअ	३	१५	अंबासण	११
६	नंदीशाला	४	१६	वीरमगाग	१३
७	सुरतिबंदिर	४	१७	कुतबपुर	१३
८	चंपकपुर	५	१८	जइतपुर (जेतपुर)	१४
९	डभोइ	६	१९	लसणपुर	१४
१०	वडुद्रा	८	२०	सहुआली	१६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
२१	महीसाज	१६
२२	उमापुरी	१६
२३	नुगर	१८
२४	पिपली	१८
२५	मेह्रूणा	२०
२६	पत्तन	२१
२७	लोहरवाडा	२१
२८	धंधुका	२२
२९	बह्रानपुर	२३
३०	चंद्रावती	२४
३१	चाणसमा	२५
३२	समीगाम	२६
३३	उढव (उंढाव)	२८
३४	उपह्रूरा	३०
३५	उंजा	३०
३६	श्रीपट्टण सह्रानगर	३०
३७	आबरंणी	३१
३८	उर्णाक	३२
३९	उंटवाल	३३
४०	जइतल वसाणा	३३
४१	छीनीआणा	३३
४२	बाउलुं	३३
४३	दशावाटक (दशाडा)	३४
४४	वीसलनगर	३४
४५	चुडीगाम	३५
४६	पिरीवाडा	३५
४७	निदीया	३६
४८	हुंड्री (उंडणी)	३६
४९	स्तंभतीर्थ (खंभात)	३८
५०	वडली	३९
५१	इड्री (इंद्रोडा)	४०
५२	नपाडावनुर (नेपाड)	४०
५३	दानक्रोडी	४२
५४	उमता	४३
५५	पाडला	४४
५६	कुकरवाडा	४४
५७	कुलुली (कलोल)	४५
५८	काकर	४८
५९	तालध्वज (तलाजा)	४८
६०	मुंडाडा	४९
६१	अणहिल्लपुर पट्टण	४९
६२	कुमरगिरि	५०
६३	धोलेरा	५०
६४	पाररी	५१
६५	छठीआडा	५३
६६	वुडकमाकुडा	५३
६७	रोजुआ	५४
६८	उदीरा	५४
६९	भीमपल्ली, कंबोद्र, रुद्रपल्ली	५३
७०	धारीआदी	५९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक	अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
७१	कंबोइवाला	५९	९६	धवलकपुर (धोळका)	९२
७२	मंजीगपुर	६०	९७	सलखणपुर (संखलपुर)	९२
७३	वृद्धनगर (वडनगर)	६०	९८	गालहंउ सैन्य	९६
७४	मलगपुरी	६१	९९	वटपली	९६
७५	पाल्णपुर	६३	१००	गोला	९६
७६	गंगेट	६६	१०१	रनेला	९७
७७	माणसा	६७	१०२	जाखील	९७
७८	विद्यापुर (विजापुर)	७०	१०३	अहीरोडा (इडर पासे)	९७
७९	इलदूर्ग (इडर)	७०	१०४	सदरपुर	९९
८०	उदलपुर	७१	१०५	दूणगाम	१००
८१	महीसाणा	७२	१०६	आरासण (कुंभारीया)	१०४
८२	कटी (कडी)	७२	१०७	रानेर	१०५
८३	हर्षपुर	७३	१०८	चाइसमाल	९८
८४	षेडा	७५	१०९	कयरवाडा (केरवाडा)	१०५
८५	सांबासण	७७	११०	मांडलीसीतापुर	१०८
८६	उंडा—(उंडाइ)	७८	१११	साणंद	११०
८७	लाडउलीनगर-(लाडोल)	७८	११२	निजामपुर	११२
८८	चांगउद्र (चांगोद)	८०	११३	पेथापुर	११२
८९	पीहज—पीज	८०	११४	बारेजा	११४
९०	वाली	८२	११५	ईडर	११७
९१	उनाउवा	८२	११६	देलवाडा	११८
९२	खेरालु	८७	११७	अधार (रामपुरा पासे)	११८
९३	बोबडासण	८९	११८	परांहातीज	१२१
९४	अजदरपुर	९०	११९	मधुडी—महुडी (पेथापुर पासे)	१२१
९५	छुली	९१			

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक	अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
१२०	पुनाद्रि	१२२	१४५	सीहर	१५४
१२१	प्रभादित्य	१२२	१४६	माकुणुरीया (मांकणज)	१५५
१२२	कुंधीरा	१२२			
१२३	दशाडा	१२३	१४७	कालहरी	१५५
१२४	मंडपदूर्ग	१२७	१४८	गोभलज	१५५
१२५	षानपुर	१२८	१४९	छत्रीआदी	१५६
१२६	विश्वलपुर	१२८	१५०	श्रीक्षेत्र	१५६
१२७	चांद्रसमीप घरोसाणा	१३७	१५१	चांद्रसमा	१५७
१२८	कुंडावरतर	१३९	१५२	जलेहर	१५७
१२९	सांकेत सांकाश्य	१४२	१५३	गलोडीआ	१५७
१३०	वडनगर	१४४	१५४	जाडडा	१५८
१३१	सहुआला	१४४	१५५	उन्नाड	१५९
१३२	लाडवली	१४६	१५६	त्रंसीगमपुर	१६०
१३३	मेशासूदपुर	१४७	१५७	चांद्रसमीया गवाडा	१६१
१३४	छात्रा (छतरासा)	१४८	१५८	पानसीना (लींबडी पासे)	१६१
१३५	उलक	१४८			
१३६	वला	१४८	१५९	खिरालुवा	१६२
१३७	वर	१४९	१६०	पुलगाम	१६२
१३८	महीगाल	१४९	१६१	वडुद्र	१६३
१३९	शणवहा	१५०	१६२	हडाला (लींबडी पासे)	१६३
१४०	कांकरीया	१५०			
१४१	सूर्यपुर	१५१	१६३	मंडपाचल	१६६
१४२	कक्कपुर	१५१	१६४	सेरीसा	१६६
१४३	गाणीज	१५३	१६५	केकरा	१६६
१४४	कुंवासूद्र	१५४	१६६	साकींत्रक	१६६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
१६७	काकरे	१६७
१६८	अछीआणा	१६७
१६९	पनान	१६८
१७०	जलालपुर	१७०
१७१	करणपुर	१७१
१७२	कारहाल (कलसार)	१७१
१७३	कर्पटवाणिजय (कपडवणज)	१७२
१७४	आशापली	१७२
१७५	पारकर (कच्छमां)	१७६
१७६	मोरबी	१७६
१७७	वलाद (वळाद)	१७७
१७८	सकरपुर	१७७
१७९	काकरिचार गुफा	१७७
१८०	शीरोही	१७८
१८१	आशाउली	१७८
१८२	कणसागर	१७९
१८३	कुगलीयागाम	१७९
१८४	मालवण	१७९
१८५	शापुर	१८०
१८६	कुपारि	१८०
१८७	तिमिरपुर (अंधेरी)	१८२
१८८	झींझुवाडा	१८२
१८९	रडाली	१८३
१९०	चांगउद्री	१८५
१९१	लीलापुर	१८७
१९२	जोटाणा	१९०
१९३	सीहुंज (सोजा)	१९०
१९४	पारकर	१९१
१९५	डडाण	१९२
१९६	बारोडी	१९३
१९७	देउली (देरोल)	१९३
१९८	वालासीण	१९३
१९९	भारुद्र(भाद्रण-भाद्रज)	१९४
२००	चंपकनेर, चांपानेर	१९४
२०१	बबुआणा	१९४
२०२	गुरुकाकरे	१९६
२०३	कालुपुर	१९७
२०४	नगवाडा	१९८
२०५	थीराद्र (थराद)	१९९
२०६	काहा	२०१
२०७	डालीला	२०१
२०८	वीरपुर	२०२
२०९	उगजगाम	२०३
२१०	प्रभापुरी	२०३
२११	डुंगरपुर	२०४
२१२	शनावड	२०४
२१३	देगवाल	२०५
२१४	फलोधी	२०५
२१५	शांतिज	२०५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक	अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
२१६	राजपुर	२०६	२४०	जयतपुर	२२९
२१७	अंबासण	२०६	२४१	वडनगर	२३०
२१८	आंबुद्र	२०६	२४२	थीरापद्र	२३३
२१९	गुंदी	२०६	२४३	सरखीज(सरखेज)	२३४
२२०	निजामपुर	२०७	२४४	करज	२३५
२२१	नलहरा	२०७	२४५	आमलेश्वर	२३५
२२२	कुणजीरा	२०८	२४६	बलासर	२३६
२२३	आजुली (आजोल)	२०९	२४७	वंद्रासण	२३७
२२४	वीसरोडा (वरसोडा ?)	२०९	२४८	वरमर	२३८
२२५	त्रीसीगम	२११	२४९	कडागाम	२३८
२२६	यारज	२११	२५०	दीयासाण	२३९
२२७	वसट	२१३	२५१	सीसाणा	२३९
२२८	देकावाटक (दिका-वाड)	२१४	२५२	मकणपुर	२४०
			२५३	सोनेपत्तन	२४१
२२९	कोतरवाडा	२१४	२५४	कोठारानगर	२४५
२३०	वाटइ	२१४	२५५	बलिनगर	२४५
२३१	मंडलीनगर	२१८	२५६	वालसासण	२४६
२३२	सवडकुतासी	२२०	२५७	डीसा	२४७
२३३	सिद्धपुर	२२२	२५८	सत्यपुरी	२४८
२३४	श्रमगाम	२२२	२५९	गाहला	२४८
२३५	नागड (नागदा)	२२२	२६०	जामली	२४८
२३६	वावडी (पाटण पासे)	२२४	२६१	पुरागव	२४९
२३७	साबली	२२५	२६२	प्रांतीज	२४९
२३८	मंडप महीदूर्ग	२२६	२६३	माकुरादेश	२५०
२३९	सुलक्षणपुर	२२८	२६४	शुडलाई	२५०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक	अंक	गामनुं नाम	पृष्ठांक
२६५	इलाइदुर्ग	२५१	२७८	बलदुठ	२६४
२६६	आलाई	२५१	२७९	नीदिया	३६
२६७	एलूली (इलोल ?)	२५२	२८०	धोलेरा	५०
२६८	कूयारक	२५२	२८१	मलगपुरी	६१
२६९	गिरिपुर(वागडदेशमां)	२५४	२८२	वडली	७२
२७०	पोसीनातीर्थ	२५५	२८३	इंद्रीग्राम (इंदरोडा ?)	७३
२७१	पाडवाडा	२५६	२८४	डाभी	७५
२७२	अहिम्मतनगर (अ-हमदनगर)	२५६	२८५	कमूभीयावड	८७
			२८६	कंठासण	१२४
२७३	मांग	२५७	२८७	देगाम, कडी-धोळका	१३०
२७४	अहमुदनगर	२५७	२८८	कुंआसूद	१५४
२७५	पंचासर	२६०	२८९	डांगरूआ	१८७
२७६	विठ्ठलपुर	२६०	२९०	काहा	२०१
२७७	मदासरा	२६१	२९१	सीसाणा	२३९

कया कया गामोमांथी शहेरोमांथी धातुप्रतिमाना लेखो लीधा ते शहेरो तथा गामनी यादी.

१ डभोई

२ गांभु

३ चवेली

४ वडावली

५ चाणसमा (चांद्रसमीय)

६ अमदावाद (चोमुखनुं देरु)

७ उंझा

८ पाटण

९ माणसा

१० विजापुर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११ लाडोल
१२ ब्रामणवाडा
१३ संडेसर
१४ करबटीया पेपरदर
१५ वालम
१६ वीसनगर
१७ वडनगर
१८ अहमदनगर
१९ सुरत
२० सादरा
२१ ओराण
२२ छारा
२३ अलुवा
२४ वासणा
२५ रायपर
२६ साणंद
२७ पामोल
२८ गवाडा
२९ कोलवडा
३० गेरीता
३१ प्रांतीज
३२ ओराण
३३ पेथापुर
३४ रांधेजा
३५ कलोल
३६ कडी
३७ भोयणी
३८ इंदरोडा
३९ खेरालु
४० वलाद
४१ कोबा
४२ पोर
४३ उवारसद
४४ अडालज अने तेनी वावनो लेख
४५ झुंडाल
४६ इडर
४७ डुंगरपुर
४८ पोसीना
४९ पेपरदर
५० गडकण
५१ दसाडा
५२ संखेश्वर
५३ वीरमगाम
५४ केसरीयाजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमदावादमां नीचे लख्या प्रमाणे पोळोना देरास-रोना लेखो लीधा.

१ चोमुखजीनुं दहेरु
२ सोदागरनी पोलनुं देरासर.
३ हठीभाइनी वाडीनुं देरासर.
४ झवेरीवाडो, संभवनाथजीनुं देरासर.
५ चोमुख शांतिनाथजीनुं देरासर झवेरीवाडामां.
६ रीचीरोड उपर आवेलुं माहावीर स्वामीजीनुं देरासर.
७ शेठनोपाडो, अजितनाथजीना देरासरना लेखो.
८ शांतिनाथना देरासरना लेखो.
९ देवसानापाडामां पार्श्वनाथना देरासरना लेखो.
१० धर्मनाथजीना देरासरना लेखो.
११ शांतिनाथजीना देरासरना लेखो
१२ दोसीवाडाना सीमंधर स्वामीना देरासरना लेखो.
१३ नीशापोळमां जगवल्लभ पार्श्वनाथना देरासरना लेखो.
१४ शांतिनाथना देरासरना लेखो.
१५ शांतिनाथनी पोळना देरासरना लेखो.
१६ सुतारनी खडकीमां अजितनाथना देरासरना लेखो.
१७ श्रेयांसनाथजीना देरासरना लेखो.

पाटणना जे जे पाडाना देरासरजीना लेखो लीधेला तेनी यादी.

१ भाभापार्श्वनाथजीना दहेरासरनी धातु प्रतिमाना लेखो.
२ खजुरीना पाडामां मनमोहन पारर्श्वनाथना दहेरासरजीनी प्रतिमाना लेखो.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ लींबडीना पाडामां शांतिनाथजीना दहेरासरजीनी प्रतिमाना लेखो.

४ कनासाना पाडाना मोटा दहेरासरनी प्रतिमाना लेखो.

५ महावीर स्वामीना गभारानी प्रतिमाना लेखो.

६ बाबु पनालाल पुनमचंदना दहेरासरनी धातु प्रतिमाना लेखो.

कया सैकाथी धातु प्रतिमाना लेखो मळी शके छे !

विक्रम संवत् ८ मा सैकाथी धातु प्रतिमाना लेखो मळी शके छे अने छेल्लामां छेल्ला वीसमा सैका सुधीना धातु प्रतिमाना लेखो मळी शक्या छे. अमारी पासे सत्समागमार्थे आवेल रावसाहेब केशवलाल हर्षदराय ध्रुव कहेता हता के विक्रम संवत् ७ मा सैकानी बौद्धदेवनी धातु प्रतिमा अमोए अडाणज गाममां प्राप्त करी हती ते प्रतिमा अमारी पासेथी एक मुंबाइना शेठ लइगया हता. कडीना लेखोमां एक प्राचीन लेख नीचे प्रमाणे छे.

शक संवत् ९१० आसीन्नागीन्द्रकुले शीलरुद्रगणि....पार्श्विल्लगणि....शक संवत् ९१० नी सालमां धातुनी प्रतिमा भरावेली आ लेख उपरथी मालुम पडे छे तेथी अनुमान कराय छे के धातुनी प्रतिमा १००० वर्ष रही शकेछे वा तेनाथी वधारे वखत पण रही शकेछे. हजी अमोए सर्व धातु प्रतिमाना लेखो अवलोक्या नथी तेथी चोकस अनुमान पर आवी शक्या नथी एक जुनो लेख विक्रम संवत् लगभगनो छे पण अमोने तेनो केटलीक बाबतोथी निश्चय थतो नथी.

कया गच्छना आचार्यो प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी शकता हता.

खरतर गच्छ, तपा गच्छ, वड गच्छ, जीरावला गच्छ, वृद्ध तपा गच्छ, सागर गच्छ, ब्रह्माण गच्छ वगेरे सर्व गच्छना आचार्यो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी शकता हता. फक्त विधिगच्छना आचार्यो प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी शकता नहोता. अञ्चलगच्छना आचार्योना उपदेशथी प्रतिष्ठा करवामां आवी हती एवुं लखाण आवे छे दाखला तरीके नीचे प्रमाणे लेखः—

संवत् १५६९ वर्ष मागसर वदि ५ शुक्रे प्रा. ज्ञा. शा. नाउ भार्या हासिपुत्र ठाकरसी भार्या आह्मा भ्रातृवरसिंह भार्या सलाखु पुत्र चांदा भार्या सोमीठाकु पुत्र जयसिंह सहितेन अञ्चलगच्छे जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन मूळनायक श्रीआदीश्वर प्रतिमा चतुर्विंशति जिनपट्टकः कारापितः आ लेख उपरथी एम मालुम पडे छे के अञ्चलगच्छ सिवाय बधा गच्छोमां जैनचार्यो प्रतिष्ठा करता हता फक्त ऐतिहासिक विषयो माटे आ विषय अमे चर्च्यो छे.

प्राचीनकालमां धातुनी प्रतिमापर गच्छो वगेरे लखवानी रीति हती के केम ?

प्राचीनछाळमां विक्रम संवत् ९ मा सैकानी जे धातुनी प्रतिमा मळी आवे छे तेना उपर गच्छ अने आचार्योना नाम आवे छे. अमोए कडीनो लेख रजु कर्यो छे, ते उपरथी वांचकोने ख्याल आवशे तथा दिगम्बरोमां पण प्रायः विक्रम संवत् नवनी सालमां जे धातुनी प्रतिमाओ भरावबामां आवती हती तेना उपर गच्छनुं अने आचार्योनुं नाम स्थापेलुं आपवामां आवतुं हतुं तेनो लेख नीचे आपवामां आवे छे.

ओराणनी दिगम्बर पाषाण प्रतिमा मूळनायकजीनो लेख. पत्र १२०

६७८. सं. ९५६ (?) वैशाख शुदि १२ शुक्रे श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसकलकीर्त्तिभिः तत्पट्टे अनुक्रमेण भ० श्रीचंद्रकीर्त्तिः तत्पट्टे भ० रामकीर्त्तिः तत्पट्टे सत्यकीर्ति तत्पट्टे................॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कया कया गच्छो अने कयी कयी ज्ञाती हाल लुप्त थइ.

हालमां जे गच्छो विद्यमान छे तेनो गच्छमतप्रबंधनी प्रस्तावनामां पण उल्लेख करवामां आव्यो छे. तेथी ते संबंधीमां विशेष कंई लखी शकाय तेवुं नथी. जैनश्वेताम्बर कोममां चोराशी ज्ञाति हती तेमांथी केटलीक ज्ञाति लुप्त थयेली छे. आखा हिंदुस्तानमां जैनश्वेताम्बरोमां जे जे ज्ञातिओ छे तेनो परिपूर्ण तपास करवाथी कइ कइ ज्ञातिओ हाल विद्यमान छे, तेनो निर्णय थइ शके छे अने कइ कइ ज्ञातिओ नष्ट थई अने कइ कइ ज्ञातिओ जैन धर्ममांथी अन्य धर्ममां गइ तेनो निर्णय थई शके तेम छे. अस्मदीय जैनोनी प्राचीन तथा अर्वाचीन स्थिति नामना पुस्तकमां वणिक्नी चोराशी ज्ञातियोनुं लीष्ट आप्युं छे. तथा अमोए आ पुस्तकमां ज्ञातिओनुं लीष्ट आपेलुं छे, तेनुं मनन करवाथी वाचकोने ते बाबतोनो निर्णय थई शकशे. जैन श्वेताम्बर कोममां विशा ओसवाल, दशा ओसवाल, विशा श्रीमाली, दशा श्रीमाली, विशा पोरवाड, दशा पोरवाड, विशाश्रीश्रीमाळ, कपोळ, गुर्जर, सोरठीया, लाडुआ श्रीमाळी, नेमा वाणिया, भावसार, ल्हेवा पाटीदार, भोजक, ब्राह्मण, रजपुत, क्षत्रिय, शाळवी, हुंबड, पोंचा वगेरे ज्ञातियो मुंबाइ इलाकामां मुख्यतया जैनधर्म पाळे छे. मारवाड, मेवाड, बंगाळ, दक्षिण, सिंध, मध्य प्रांतमां पण घणी ज्ञातिओ जैनधर्म पाळे छे पण चोक्कस तपास नहि करवामां आव्याथी परिपूर्ण लख्युं नथी जे जातियो जैनधर्म पाळे छे तेनुं लीष्ट पूर्वे आप्युं छे.

धातुप्रतिमा करवानी कारीगरी.

धातुप्रतिमा करवानी कारीगरी माटे आर्यशिल्पशास्त्रीओ प्रख्यात छे. केटलीक धातुप्रतिमाओनां परघर, कोरणीथी भरपूर होय छे. आर्य शिल्प शास्त्रीओनी अने शिल्प शास्त्रोनुं महत्त्व रक्षण करवामां जैन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोमे मुख्य भाग भजव्यो छे. आबु देलवाडनां जैन देरासरोनी कारीगरी देखीने युरोप अने अमेरिकाना कारीगरो दिङ्मूढ थइ जाय छे. बौद्धो करतां जैनोमां प्रतिमाओ बनाववामां कारीगरी विशेष अवलोकाय छे. अमदावाद अने पाटणनी केटलीक धातुनी प्रतिमाओ खास कारीगरी माटे जोवा लायक छे. अमदावाद अने पाटणमां धातुनी प्रतिमाओ घणी छे.

दिगंबरनी धातुप्रतिमाना लेखो.

आ पुस्तकमां केटलाक दिगंबरी धातुप्रतिमाना लेखो लेवामां आव्या छे. श्वेताम्बरोना मंदिरोमां कोई ठेकाणे दिगंबरी धातुनी प्रतिमाओ छे अने दिगंबर मंदिरोमां कोइ स्थाने श्वेतांबरी धातुप्रतिमाओ छे. श्वेतांबरी प्रतिमाओपर लेख लखवानी पद्धति अने दिगंबर धातुप्रतिमाओपर लेख लखवानी पद्धतिमां फेरफार लागे छे ते बन्नेना लेखो आ पुस्तकमां छे तेनो मुकाबलो करवाथी फेरफार जणाशे. दिगंबर धातुप्रतिमाओमां अने श्वेतांबर धातुप्रतिमाओमां पण कंइ कंइ फेरफार मालुम पडे छे.

धातुप्रतिमाओपरथी घसाइ गएला लेखो.

प्रायः विक्रम संवत् बारमा सैकानी पूर्वेनी धातुप्रतिमाओपरना घणा लेखो थोडाघणा अंशे घसाइ गया छे तेथी केटलाक लेखो तो पूर्ण रीत्या प्राप्त थता नथी. केटलाक लेखोपरथी आचार्यनां नामो भुंसाई गयां छे तो केटला लेखोमांथी गच्छोनां नामो भुंसाई गयां छे. बारमा सैका पूर्वेनी प्रतिमाओपर गच्छनुं नाम लखवानी निश्चय रीति अवलोकाती नथी.

लेखोमां आवेलां गृहस्थ जैनोनां नामो अने तेओनी पद्वीओ.

आ पुस्तकमां दरेक लेखमां धातुप्रतिमा करावनार श्रावक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्राविकानुं नाम आवे छे. संघवी पदवीने ठेकाणे सं. शब्द मूकवामां आवे छे. गृहस्थोमां आगेवानने श्रेष्ठी कहेवामां आवे छे अने तेने ठेकाणे श्रे० एवी संज्ञा लखवामां आवी छे. वखारीयाना ठेकाणे वखा० शब्द मूकवामां आव्यो छे. प्रधान महेताने ठेकाणे पूर्वे महंत शब्द वपरातो हतो. महंतने स्थाने लेखमां मं. शब्दनी संज्ञा लखवामां आवी छे. पूर्वे मोटा व्यापारीने व्यवहारी कहेवामां आवतो हतो, अने ते जाणवा माटे लेखमां व्य० व्य करीने आगळ मीडुं करवामां आवतुं हतुं. राजाना जेवी पदवी माटे मानवाचक शब्द ठक्कर, ठक्कुर शब्द, पूर्वे वापरवामां आवतो हतो, तेथी केटलाक राज्यमाननीयजनोने राजा तरफथी ठक्कर ठक्कुरनी पदवी आपवामां आवती हती तेथी तेमना लेखमां ठक्कुरने स्थाने ठ० ठ करीने आगळ मीडुं करी ते पद्वी जणाववामां आवती हती. मंत्रीने स्थाने केटलाक ठेकाणे मं० अने महन्तने स्थाने महं० संज्ञा वपराय छे. शाहने स्थाने शा० अने दोसीने स्थाने दो० मूकवामां आव्यो छे.

पत्र २९४ मां वागडदेशमां राजाना प्रधाने प्रतिमाओ भराव्याना लेखो छे. इडरमां इडरना राजा गंभीरसिंघना राज्यमां प्रतिमा भराव्यानो लेख छे. (पत्र २९९) अमुक समयमां अमुक देशमां अमुक राजा राज्य करतो हतो. ते धातुप्रतिमाना लेखोथी समजी शकाय छे.

आ लेख संग्रहमां अडालजनी वावनो लेख छे. पत्र १३९ थी अडालजनी वापिकानो लेख शरु थाय छे. गुजरातमां अडालजनी वाव वखणाय छे. वाव करावतां पांचलाखटंक उपर खर्च थयुं. आ वाव कराववामां. वाघेलराजा वयरसिंहना श्रीमालीज्ञाति महंत भीमा सुत मासणे अडालजनी वाव करावी ए उपरथी सिद्ध थाय छे के हालथी एक शतक पूर्वे जैन वणिको राजाओना, प्रधानो, महंतो, कारभारी अने महेताओ हता.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन गच्छाचार्यो अने जैनोनी झाहोझलाली.

श्री महावीर प्रभुथी विक्रम संवत् तेरमा सैका सुधी तो दिगंबर जैन कोममां अने श्वेतांबर जैन कोममां जैन राजाओ हता. अने जैन प्रधानो हता. विक्रम संवत् नवमा सैका सुधी तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए चारे वर्णो जैनधर्म पाळती हती. एम आचार दिनकर ग्रन्थमां कथित मंत्रोथी तथा चैत्य वासीओनी प्रवृत्तियोथी सिद्ध थाय छे वि. सं. ९९४ पूर्वे जुदा नामवाळा चोराशीगच्छो हता ते वखतनी झाहो-झलालीथी अन्य धर्मीओनुं जोर दबाई गयुं हतुं. चौदमा सैका सुधी पण जैनोनुं पूर्ण जोर अने तेओनी घणी झाहोझलाली हती एम अनुभवाय छे. वस्तुपाल, तेजपाल, समराशाह, करमाशाह, वगेरे धर्म प्रभावक जैन गृह-स्थोथी जैन कोमनी उज्जवल कीर्ति शोभी रही छे. मारवाड, मेवाड, गोल-वाड, गुजरात, कच्छ, काठीयावाड, सिंध, पंजाब, हिंदुस्थान, मध्यप्रांत, माळवा, खानदेश, महाराष्ट्र वगेरेमां जैन वणिको मंत्री, प्रधान, भंडारी, वगेरेनी मोटी पद्वीओपर हता. व्यापारथी धन्ना पोरवाड जेवा समृद्ध श्रेष्ठियो हता, राजाओना गुरु तरीके वडगच्छ, खरतरगच्छ, तपागच्छ, अंचलगच्छ वगेरे गच्छोना आचार्यो हता. हाल तेवी स्थिति जैनोनी अने जैनाचार्योनी रही नथी. जैनोनी पूर्वनी झाहोझलाली करतां हाल घणी पडती थइ छे अने अन्य कोमोनी चडती थई छे तेने देखी कया जैनधर्माभिमानी जैननी आंखमांथी बे अश्रुओ नहीं टपके !!! जैनोए हवे पडतीनी घोर निद्रामांथी पोतानी कोमने अने जैन धर्मने बचाववो जोईए अने अन्य कोमोनी हरीफाइमां जरा मात्र पाछा न पडवुं जोईए. हालना स्पर्धाशील जमानामां जे पाछो पडशे ते कदी आगळ जइ शकशे नहीं.

लेखो लेवामां थएली भूलो—क्षमा.

लेखो लेवामां अक्षर बराबर न वांचतां जे भूलो थइ होय ते माटे क्षमा याचवामां आवे छे. भण्यो भूले—तारो डूबे अने गमन करतां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्खल न थाय. ए न्यायथी अशुद्धिओ रही गइ हशे अगर जे लेखो नहीं वंचाया त्यां........टपकां करवामां आव्यां छे ते संबंधी सुधारो भविष्यमां स्पष्ट लेखो वंचातां करवामां आवशे.

छपायला लेखो विनाना बाकीना लेखो.

आ लेख संग्रहनां प्रथम विभागमां १५२३ पन्नरसें तेवीस लेखो आप्या छे अने हजी अमारी पासे पन्नरसो लगभग लेखो छपाववाना बाकी रह्या छे. इतिहासनावेत्ताओ तो लेखोनी सारी रीते उपयोगिता जाणी शके छे. जैनोनी ज्ञातियो अने साधुओ श्रेष्ठिवर्ग संबंधी अने आचार्यो संबंधी ज्ञान थवाथी तेमनामां आत्मोन्नति करवा माटे उत्साहशक्ति प्रगटवानी ए निर्विवाद छे. जैन गृहस्थोनी साहाय मळतां बाकीना लेखो छपाववा माटे प्रवृत्ति थशे. आणंदजी कल्याणजीनी पेढी वगेरे पेढीओ जो जैनमंदिरोना शिला लेखो, प्रतिमाना लेखो छपाववानुं कार्य उपाडी ले अगर तेवां पुस्तकोने खरीदी दरेक गामना देरासरना आगेवानोपर मोकले तो तेथी घणो फायदो थइ शके तेम छे. गृहस्थोनी साहाय्य विना लीधेला दोढ हजार लेखो हजी छपाया विना पडी रह्या छे माटे जे गृहस्थोनो भाव थाय तेओए साहाय्य माटे लखवुं.

धातुप्रतिमाना लेखो लेवाना हजी घणा बाकी रह्या छे. आखा हिन्दुस्थानमांनी जैन धातुप्रतिमाओना संपूर्ण लेखो मळतां ते उपरथी जैन धर्मपर सारुं अजवाळुं पाडी शकाशे तथा जैन कोमपर सारुं अजवाळुं पाडी शकाशे. दश पन्नर वर्षे संपूर्ण कार्य पार पाडी शकाय तेम छे. जो साहाय मळे तो.

लेख लेनारा मुनिवरोने धन्यवाद.

पाषाणनी प्रतिमाना लेखो लेवानो प्रयत्न अमारा मुनि मित्रो तरफथी प्रयत्न थइ चूक्यो छे. मुनिराज श्रीजिनविजयजी. प्रवर्तक श्रीकां-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिविजयजी वगेरे साधुओ पाषण प्रतिमाना लेखोने छपाववा अने जैन इतिहासपर प्रकाश पाडवा भगीरथ प्रयत्न करी रह्या छे. श्रीमान् विजयधर्मसूरि, उपाध्यायश्री इन्द्रविजयजी तथा मुनिराजश्री विद्याविजयजीनो जैन शिला लेखो संबंधी भगीरथ प्रयत्न शरु छे. तेथी तेमने धन्यवाद घटे छे. जैन मुनियो तथा साक्षर गृहस्थ जैनो हवे जैन इतिहास शोधवा जाग्रत् थया छे तेथी तेनुं भविष्यमां सारुं परिणाम आवी शकशे.

सहायकोने धन्यवाद.

धातुप्रतिमाना लेखो लेवामां अमने मुनिश्री जयविजयजीए, मुनिश्री सिद्धि मुनिजीए, तथा मुनिश्री महेन्द्रसागरजीए, पंडित जयचंद्रे तथा पं. लालचंदे साहाय्य आपी छे. तेथी तेओने धन्यवाद आपवामां आवे छ. लेखो लेवामां अमने कोइ उपयोगी सूचना आपशे तो तेओनो उपकार मानवामां आवशे.

वाचको मध्यस्थभावे वा गुणरागदृष्टिए धातुप्रतिमालेखसंग्रहने वांची तेमांथी उपादेय भागने ग्रहण करो एटलुं लखी प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. ॐ ३ अर्हम् शान्तिः ३

मुकाम पेथापुर. सं. १९७२ वैशाखवदि १

लेखक,

जैनश्वेतांबर वीरपरंपरागत तपागच्छे सागरशाखीय
श्रीनेमिसागरशिष्यश्री रविसागरजी तच्छिष्यश्री
श्रीमद् सुखसागरजी तत्पट्टे जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरि.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

શ્રીમદ્ બુદ્ધિસાગરજી ગ્રન્થમાળામાં પ્રગટ થયેલા ગ્રન્થો.

૧.	ક ભજન સંગ્રહ ભાગ ૧ લો. ...	પૃષ્ઠ ૨૦૦	૦-૮-૦
૧.	અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમાળા. ...	૨૦૬	૦-૪-૦
૨.	ભજનસંગ્રહ ભાગ ૨ જો....	૩૩૬	૦-૮-૦
૩.	ભજનસંગ્રહ ભાગ ૩ જો. ...	૨૧૫	૦-૮-૦
૪.	સમાધિ શતકમ્...	૩૪૦	૦-૮-૦
૫.	અનુભવ પચ્ચિશી.	૨૪૮	૦-૮-૦
૬.	આત્મપ્રદીપ.	૩૧૫	૦-૮-૦
૭.	ભજનસંગ્રહ ભાગ ૪ થો...	૩૦૪	૦-૮-૦
૮.	પરમાત્મદર્શન.	૪૩૨	૦-૧૨-૦
૯.	પરમાત્મજ્યોતિ. ...	૫૦૦	૦-૧૨-૦
૧૦.	તત્ત્વબિંદુ.	૨૩૦	૦-૪-૦
૧૧.	ગુણાનુરાગ. (આવૃત્તિ બીજી)	૨૪	૦-૧-૦
૧૨-૧૩.	ભજનસંગ્રહ ભાગ ૫ મો તથા જ્ઞાનદીપિકા.	૧૯૦	૦-૬-૦
૧૪.	તીર્થયાત્રાનું વિમાન (આવૃત્તિ બીજી)	૬૪	૦-૧-૦
૧૫.	અધ્યાત્મ ભજનસંગ્રહ	૧૯૦	૦-૬-૦
૧૬.	ગુરુબોધ...	૧૭૨	૦-૪-૦
૧૭.	તત્ત્વજ્ઞાનદીપિકા. ...	૧૨૪	૦-૬-૦
૧૮.	ગહુંલીસંગ્રહ.	૧૧૨	૦-૩-૦
૧૯-૨૦.	શ્રાવકધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧-૨ (આવૃત્તિ ત્રીજી)	૪૦-૪૦	૦-૧-૦
૨૧.	ભજન પદ સંગ્રહ ભાગ ૬ ઠ્ઠો.	૨૦૮	૦-૧૨-૦
૨૨.	વચનામૃત.	૩૦૮	૦-૧૪-૦
૨૩.	યોગદીપક.	૨૬૮	૦-૧૪-૦
૨૪.	જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા.	૪૦૮	૧-૦-૦
૨૫.	આનન્દઘન પદસંગ્રહ ભાવાર્થસહિત....	૮૦૮	૨-૦-૦
૨૬.	અધ્યાત્મ શાન્તિ (આવૃત્તિ બીજી)....	૧૩૨	૦-૩-૦
૨૭.	કાવ્યસંગ્રહ ભાગ ૭ મો. ...	૧૫૬	૦-૮-૦
૨૮.	જૈનધર્મની પ્રાચીન અને અર્વાચીન સ્થિતિ. ...	૯૬	૦-૨-૦
૨૯.	કુમારપાલ ચરિત્ર (હિંદી) ...	૨૮૭	૦-૬-૦
૩૦.	થી ૩૪. સુખસાગર ગુરુગીતા.	૩૦૦	૦-૪-૦
૩૫.	ષડ્દ્રવ્ય વિચાર. ...	૨૪૦	૦-૪-૦
૩૬.	વિજાપુર વૃત્તાંત. ...	૯૦	૦-૪-૦
૩૭.	સાબરમતી કાવ્ય ...	૧૯૬	૦-૬-૦
૩૮.	પ્રતિજ્ઞાપાલન.	૧૧૦	૦-૫-૦
૩૯-૪૦-૪૧.	જૈનગચ્છમત પ્રબંધ. સંઘપ્રગતિ. જૈનગીતા.		૧-૦-૦
૪૨.	જૈન ધાતુપ્રતિમા લેખ સંગ્રહ.		૧-૦-૦

નીચેના ગ્રન્થો પ્રેસમાં છપાય છે.

(૧) કર્મયોગ. (૨) ભજનપદસંગ્રહ ભાગ ૮ મો. (૩) ગદ્યસંગ્રહ. (૪-૫) શ્રીમદ્ દેવચંદ્રજી ગ્રન્થસંગ્રહ. પ્રથમભાગ-દ્વિતીયભાગ. (૬) મિત્રમૈત્રી (મિત્રધર્મ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैनप्रतिमा लेखसंग्रह.

डभोई (दर्भावती)ना देरासरनी धातुप्रतिमाना लेख.

श्री सामला पार्श्वनाथ मंदिरना लेख.

१. सं. १२०६ वैशाख सु........महावीरबिंबं सूरिभिः ......प्र० का० ....

२. सं. १२९८ वर्षे वैशाख सुदि २....ज्ञातिय ठ० सोभाकेन स्वपित्रोः श्रेयसे नेमिजिनबिंबं प्रतिष्ठितं तत् श्री वीरसूरि शिष्य जिणदेव सूरिभिः ॥

३. १३७३ हरपाल जगपाल पूता निमित्तं सिंहांकित (महावीर) बिंबं का० प्र० ....गच्छी (उकेशगच्छीय) देवेंद्रसूरिभिः ॥

४. सं. १४६२ वैशाख सुदि ५ शुक्र ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीर सूरिभिः आदिजिनप्रतिमा प्रतिष्ठिता ॥

५. १४९२ वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालीज्ञातिय राजा भार्या जसमादे सुत माहिराजे निजपितृमातृश्रेयसे श्रीसुविधिनाथ पंचतीर्थिकाबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नागेन्द्रगच्छे श्रीगुणसागरसूरि तत्पट्टे गुणसमुद्रसूरिभिः । उपलीप्रासर ग्रामः ॥

६. १४९२ वर्षे चैत्र वदि १ सोमे श्रीमूलसंघे तद्विसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य तत्पट्टे भ० श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्त्युपदेशात् नागेन्द्रज्ञातिय दो० विजयाणंद भा० चांपु सुत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेम भा० छानु सुत सोमाभाई भारूभाई सूराभाई एते श्रीशांतिनाथ-चतुर्विंशतिं नित्यं प्रणमंति ॥ *

७. सं. १५०९ वर्षे पोष वदि ५ रवौ प्राग्वाट ज्ञातिय वृद्ध सं० श्रेष्ठि सारंग भा० सहिजु पूत्रा काकी भातृ........श्रीनमिनाथबिंबं कारितं। साहुपूर्णिमापक्षिय सागरचंद्रसूरिपट्टे श्रीसोमचंद्रसूरिणा उपापदे प्रतिष्ठितं॥

८. सं. १५५६ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्री आमलेश्वरवासी लाडुआ श्रीमाली ज्ञातीय श्रेयार्थे नाकर भा० जीवी सुत श्रे० राकांकेन भा० ककु युतेन स्वश्रेयोर्थे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

९. सं. १७४९ गौतमगणधरप्रतिमा कारिता ॥

१०. सं. १८२९ वर्षे गणधरप्रतिमा............विजयसूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

११. सं. १८२९ वर्षे वैशाखसुदि २....देवसुरगच्छे विजयधर्म-सूरिराज्ये विजयप्रभसुरि पादुका गर्भित प्रतिमा चतुर्मुख.

१२. सं. १८३९ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधवासरे श्री दरभाति वास्तव्यश्राविकासमुदायेन रोहिणितप उद्यापननिमित्ते श्रीवासुपूज्य जिनबिंबं भरावितं स्वश्रेयार्थे प्रतिष्ठितं गीतार्थ तपगच्छे श्री विजयधर्मसुरि-राज्ये संघस्य शुभमस्तु ॥

१३. सं. १५४२ वर्षे माघ वदि नुमि शनौ श्रीवटपद्रवास्तव्य श्रीवायडज्ञातिय दोशी हापा भा० लिंगी सुत दो० मणोर भार्यया दोशी सहिस वीर भा० पावी सुतपा भातृ दोशी महिआ दो० गांग मेघ वर्धमान बुतयाणाई नाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीवृद्धतपापक्षे भट्टारकश्रीज्ञानसागरसूरीणां पट्टे भट्टारक-श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३-२. संवत् १३७१ वर्षे नागेन्द्रगच्छे विद्यासागरसूरिभिः....

१४. संवत् १५२१ वर्षे वैशाख वदि ६ बुधे उपकेशज्ञा० भ० संग्रामभार्यया रवीमाई नाम्न्या पुत्र हरीश्चंद्र तद्वधू कीकीबाई सहितया आत्मश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्य-संताने श्रीकक्कसूरिपट्टे श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१५. संवत् १५२२ वर्षे कारतिक सुदि २ गुरु श्रीमालज्ञा० श्रे० मुलासी भा० माल्हणदे सु० रतनाकमण भा० ऊमी सुत आसा भोजा कुजाकेन पूर्वज श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्र० श्रीचैत्रगच्छे चांद्रसमीय भ० मलयचंद्रसूरिपट्टे श्री श्रीमलक्ष्मीसागरसूरिभिः । जंबाहरी शाखां । श्रीरस्तु ॥

१६. संवत् १५२२ वर्षे पोष वदि १ गुरुवासरे................ प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे लक्ष्मीसागरसूरिशिष्यसोमदेवसूरिभिः............

१७. संवत् १५५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ गुरौ डीसावालज्ञातीय सं० नगराज भा० रामती सुत सं धनाकेन भा० लाली सुत लउआ श्रीपाल भा० रामदास माणोर वीरपाल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे पूज्य श्रीहेमविमल-सूरिभिः श्रीअहमदाबादनगरे ॥

१८. सं. १५२२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातिय व्य० मेरा भा० करणु पुत्र हापाकेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीशान्तिनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीविनयप्रभसूरिभिः काकरेवा गुरु ॥ वीसूअग्रामे ॥

१९. सं. १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीमा० श्रे० भीमा भा० हषु सु० लाखाकेन भ्रातृस्तपालनासहितेन पितृश्रेयसे श्री

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेयांसनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं विधिना नंदीशाला वास्तव्य ॥

२०. सं. १५२१ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ गुरु श्रीअमदावादनगरे वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय वषा० रत्ना भा० रत्नादे सुत वषा० देवाकेन भा० डूबी सुत मंगल आनंद प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वात्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्रीउदयवल्लभसूरिभिः॥

२१. संवत् १८३९ वर्षे वैशाखसुदि ६ बुधवासरे श्रीदर्भावती नगरवास्तव्य श्रीमाली वृद्धशाखायां धनजी गणजी श्रीपद्मप्रभजिनबिंबं भरावितं प्रतिष्ठितं विजयधर्मसूरिभिः ॥

२२. संवत् १८४९ वर्षे फागुनसुदि ३ दिने भ्रगु वृद्धशाखायां श्रीमालीज्ञातिय दर्भावतीवास्तव्य समस्तसंघप्रसोत्तम भूला उदेसितं श्रीआदिनाथबिंबं करावीतं श्रीविजयजिनेंद्रसूरि प्रतिष्ठितं ॥

२३. सं. १३१७ वर्षे पोषवदि ५ गुरौ श्रीपद्मनाभादि समग्र जिनप्रतिमा................

२४. संवत् १६७३ वर्षे पोषवदि ६ शुक्र तपागच्छाधिराज श्री प. श्रीहीरविजयसूरिपादुके सुरतीबंदीरवास्तव्य ओसवालज्ञातिय शा वस्ता भा० श्रीबाई सुत देवकरण भगिनी शा सहसकरण भार्या.........

२५. संवत् १६६७......तपागच्छे श्रीहेमसोमसूरिभिः........

२६. संवत् १४८४ वर्षे.........तपागच्छे रत्नसिंहसूरिभिः प्रतिष्ठितं (आदीश्वर भगवाननी प्रतिमा छे.)

२७. संवत १५२५ वर्षे पोषवदि ५ सोमदिने श्रीश्रीमाली ज्ञातीय ठ० पूनसींह सुत ठ० विसा भा० सुंदरी सुत शाह वीराकेन भा० हिराइ प्र० कुटुंबयुतेन श्रीश्रेयांसनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुसुंदरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२८. संवत् १७०६ वर्षे ज्येष्ठवदि ३ गुरौ स्तंभतीर्थवास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञातीय वृद्धशाखायां सं० धनजी भा० धनादे सुत सं० हेमजीकेन भा० हेमादेयुतेन श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्रीविजनानंदसूरिराज्ये विजयराजसूरिभिः ॥

२९. संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठवदि ७ गुरौ श्रीगुर्जरवंसे मं० साधा भार्या फकु पुत्र मं० परबत भार्या रतनु पुत्र मं० जगराज सुश्रावकेन भ्रातृ लाला वेणीदास पितृव्य मं० पामा बुधासिंघभाईया सहितेन पितामहपुण्यार्थं अंचलगच्छेश श्री जयकेशरीसूरि उपदे... शांतिनाथबिंबं प्रतिष्ठितं संघेन श्रीचंपकपुरे ॥

३०. संवत् १५३६ वर्षे वैशाख व० ३ गुरौ श्रीमा० श्रे० मेला भार्या मेलादे सुत सोमाकेन भार्या रंगा भ्रातृ दाकआनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं करावितं प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे भ० आशालिप्रभसूरिभिः॥

३१. संवत् १८४५ फागुण सुद ३........चंद्रप्रभजिनबिंबं श्री उदयसागरसूरिभिः ॥

३२. संवत् १५३७ वर्षे पोषवदि १० बुधे उ० श्रे० धर्मा भा० मेतु पुत्र रत्ना भा० दुबी पु० नाथाकेन भा० कुंयरी पु० हरसा पद्मा कीकादे सहितेन स श्रेयशा भा० वर्धननिमित्तं मूलनायक श्री श्रेयांसप्रमुखचतुर्विंशतिपट्टः करावितः उकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिभिः आचार्यश्रीघनवर्द्धनसूरिप्रमुखपरिवारसहितैः प्रतिष्ठितं.

३३. संवत् १५२९ वर्षे वैशाष सुदि ५ शुक्र श्रीश्रीमाली ज्ञा० व्य० संग्राम भा० करमी स्वपति आत्मश्रेयसे श्रीनमिनाथमुख्य श्रीपंचतीर्थिजिवितस्वामिबिंबं कारितं पूर्णिमा श्रीराजतिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

३४. १५३७ वैशाख सुदि १० सोमे गंधारवास्तव्य श्रीश्रीमाल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञातिय ठकर महिराज भा० लाडु पुत्र ठ० सहसा भा० वल्हादे ठ० सालिंग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई ठ० सहसा भा० वाल्ही सुत ठ० वर्धमान भा० कस्तुरई ठ० धनदत्त भा० हरसाई एते आत्म श्रेयोर्थं श्री आदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे विजयरत्नसूरिभिः॥

३९. संवत् १८२८ फागुन सुद २ शुक्रवासरे डभोईनगरे श्री वृद्धशाखायां श्रीमालीज्ञातीय परिख........श्री ऋषभजिनबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागरसूरि तस्य शिष्य पुण्यसागरसूरिभिः॥

लोढण पार्श्वनाथना देराना.

३६. संवत् १६८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरुवासरे श्री अहिम्मदावादवास्तव्य श्रीओसवालज्ञातीय सा० श्रीवछा भार्या गोरदे सुत सा० सहस्त्रकिरण भार्या कुआरबाइ बाइ सोभागदे पुत्रेण सुत सा पन्नजी प्रमुख कुटुंबयुतेन श्रीशत्रुंजयादितीर्थमहामह० पुरस्त रथयात्रासमवाप्तसंघपतितिलकेन सा० श्रीशान्तिदासनाम्ना स्वश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं स्वयं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे भट्टारक श्रीविजयसेनसूरिपट्टालंकार-भट्टारक श्रीविजयदेवसूरिवारके महोपाध्याय श्रीविवेकहर्षगणिनामनुशिष्य महोपाध्याय श्रीमुक्तिसागरगणिभिः ॥

३७. संवत् १५१० वर्षे फागुन वदि ३ शुक्रवासरे श्रीश्रीमाली ज्ञातीय ठ० फुला भा० बाइ रत्न ठा० परवत भा० बाइ लाली द्वि० भा० बाइ माणीकी प्रथमभार्यासुत धर्माणिक होब भोजा भूपति स्वकुटुंबश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमस्पिप्फलगच्छे नायक भट्टारक श्रीगुणरत्नसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३८. सं. १७९४ वर्षे माघ सुदि २ रवौ पद्मनाभबिंबं प्रेमबाइ कारितं.......

३९. संवत् १५२२ वर्षे पोष वदि १ गुरुवासरे पाल्हाऊतगोते शाह मुलराज भार्या मेलादे तत्पुत्र शाह सरपति भार्या सिंगरदे तत्पुत्र श्रीराजनपा हेमा तेजा सुराकैः पितृश्रेयोर्थं जीवितस्वामी चंद्रप्रभबिंबं कारितं प्र० श्रीमलधारीगच्छे भट्टारकगुणसुंदरसूरिभिः ॥

४०. संवत् १५२३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्रे स्तंभतीर्थवासि श्रीमालज्ञातीय गंगाधर भा० मल्हादे सुता० २ ताकनभा झटुभा वीराधीश प्रमुख स्वकुटुंबयुतेन आत्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृद्धतपा शांतिसागरसूरिभिः ॥

४१. संवत् १५०९ वर्षे वैशाखसुदि ७ रवौ प्राग्वाटवंश. श्रेष्ठी रत्न भार्या रत्नादे सुत मोखु भार्या मिणलादे सुत धणसि धरणि गमादा भार्या मागलदे सुहिरु हीरु गलु धनसी भार्या हांसल सुत राममोश्रुवारुसुत चांपु लांपु नाथु भूभवकेन स्वपितृमातृपितृव्यराउलगेलाभ्रातृश्रेयोर्थं श्री शान्तिनाथबिंबं चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः सूरिभिः सहुयालावास्तव्य.

४२. संवत् १८७७ माघ वदि २ वार चंद्रे देवबाइ भगवान् सकरमहावीरबिंबं प्रातिष्ठितं छाणीग्रामे........

४३. संवत १५२६ वैशाख सुदि ३ मूलसंघे भट्टारक श्रीभुवनकीर्ति रत्न भट्टारक श्रीज्ञानभूषणदेवाः हू० गां० साजया भा० सुतादि गां० माद्रिया माणीकदे गांदिया भा० दूबा जुग रांघी वाघा प्रणमंति. *

४४. संवत १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मूलसंघे भट्टारक श्रीसकलकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्ति उपदेशात् द्रं ग० ठा० नरसंग भार्या नरगदे सुत वीसल भार्या वांकु भ्रातृ वाघा भार्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरा भातृ वीरपाल भा० विसल सुत तेला एते श्रीसंभवतीर्थंकरचतुर्विंशातिकां नित्यं प्रणमंति. *

धर्मनाथना देरासरना लेखो.

४५. संवत् १५२६ वर्षे आषाड सुदि ८ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय ठ० बट्ट भा० हकु सुत कालकेन भा० पूतभिः स्वकुटुंब निजश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्र० पूनिमपक्षे श्रीसाधु सुंदरसूरिभिः । गंधार वास्तव्य ॥

४६. १८४३ माघ सुदि ११ दिने भट्टारक श्री १०८ उदयसागरसूरि श्रीअजितनाथबिंबं प्रतिष्ठितं दर्भावतीनगरे शा श्री ५ सा भुषण वधू बिंबं करावितं.

४७. संवत् १५३१ वर्षे कार्तिक सुदि १२ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातिय पितामह साद पितामही बुवा सुत पितृ लीबा मातृ चांपु श्रेयोर्थं सुत चांदा गणीया राघव एतैः श्रीधर्मनाथ मुख्य चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसाधुरत्नपट्टे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्रीवडुद्रागामवास्तव्य ॥

४८. संवत् १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ ऊकेशना० श्रे० वरु भा० झाली सुत श्रे० वेलाकेन भा० वमकु मातृ रुड़ा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुमतिबिंबं का० प्र० तपागच्छाधिराज श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । श्रीरस्तु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४९. संवत १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ प्राग्वाटज्ञातिय श्रेष्ठि मेघा भार्या वारु सुत लापाकेन स्वभार्यालिलादेश्रेयोर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिभिः । सहुपाला वास्तव्य.

५०. संवत् १५३२ वर्षे......सुदि ६ दिने श्रीमालज्ञातीय दक्क गोत्रे सं० तेजा सं० केशव पुत्र सुर्जन अर्जन रामा पु० सं० आंबा भार्या रमाई परिवारसहितेन सुर्जन भार्या सखीरी पुण्याय श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकारश्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

५१. संवत् १३८३ वर्षे महा वदि १ शुक्रे श्रीबृहद्गच्छे प्राग्वाट ज्ञा० सा० आसदेव भार्या लुणी पुत्र चाहुड ठहरा षेतारणमल्ल वीकलश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीकनकसूरिभिः ॥

५२. संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ७ दिने गंधारवासि प्राग्वाटज्ञातीय सं० वयरसी भा० जसु सुत सं० नरपालेन भा० भर्मादे सुत वर्द्धमान भ्रातृ सं० शीवराज भा० कर्मादे सुत वस्तुपालादियुतेन सुता हर्षाईश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः॥

५३. संवत १४५४ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ चाथा मातृ सदूभी पितृव्य संग्राम........श्रेयोर्थं श्रीअजितनाथपंचतीर्थी का० प्र० पिप्पलाचार्य श्रीगुणसमुद्रसूरीणां पट्टे श्रीशांतिसूरिभिः॥

५४. संवत १५६७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ शुक्रे श्रीओसवाल ज्ञातीय सा. पोपट भा० परगाई सुत० राणा भार्या सोभागीणि सुत बलिराज कान्हा वर्द्धमानादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीतपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥ ग० माणिक्यविमल ग० ॥

२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५५. संवत् १५१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ रवौ प्राग्वाटज्ञातीय पटील हिरा भा० देकुन तत्पुत्र ३ प्र० क्षमाकेन पुत्र गदा सदा श्रीवंत सहितेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीविनयप्रभसूरिभिः । बलभिवास्तव्य. ॥

५६. संवत् १२७४ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीखंडेरकगच्छे श्री० श्री० ऊहिलान्वाय भां० पाता पु० आसपाल जगदेवपाल पाता भार्या सांपू आत्मश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभबिंबं कारापितं श्रीशान्तिसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

५७. संवत् १५३२ वर्षे वैशाखमासे श्रीश्रीमालज्ञातिय मं० वीरम भार्या राजलदे सुत पांचाकेन भार्या लाडिकि स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथादिपंचतीर्थी श्रीआगमगच्छेशश्रीअमररत्नसूरिगुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना । सोल गाम वास्तव्य ।

५८. संवत् १५३७ वर्षे वैशाख सुदि १० सोमे गंधारवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय ठ० महिराज भा० लाछु सुत ठ० सहसा भा० वल्हादे ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई ठ० सहसा सुत ठ० धनदत्त भा० हर्षाई एतैरात्मश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपापक्षे श्रीविजयरत्नसूरिभिः ॥

५९. संवत् १८४९ ना वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे ३ त्रितिया वारशुक्रे श्रीदर्भावतीवास्तव्य श्रीमालीज्ञातिय वृद्धशाखायां श्रीसागरगच्छे परिख श्रीमदनजी भाणजी भार्या........भट्टारक श्रीउदयसागरसूरीश्वरेण प्रतिष्ठितं वज्रलंछन श्रीशान्तिर्भवतु श्रीकल्याणमस्तु शान्ति..........

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनिसुव्रतस्वामीजीना देरासरना लेखो.

६०. संवत् १५०३ वर्षे फागुण सुदि ८ सोमे श्रीभावडारगच्छे सगलीयावास्तव्य श्रीश्रीमा० महं जेसिंघ भा० सूदी सुत सं०नरसींहाभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीकालिकाचार्यसंताने श्रीवीरसूरिभिः ॥

६१. संवत् १५२१ वर्षे फागुण सुदि ९ श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० नीसल भा० नागलदे पुत्र सं० सहदेव भा० वाडली प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

६२. संवत् १९०३ शा० १७६८ प्रामाघ क्पाभृ । कपटवंत वास्तव्य शा नेमा शा कालिदास जीवणदा तत्भार्या जतनवहु सुत छोटालाल स्वश्रेयोर्थे श्रीअनंतनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीलोढापोसालना शान्ति सागरसूरिभिः ॥

६३. संवत् १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ शुक्रे श्रीउपकेशज्ञातीय सा० सालिग भा० सुत सचवीरनिमित्तं तसाई भार्या हर्षाई श्रीवस्त श्रेयोर्थे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृद्धतपापक्षे श्रीसूरिभिः ॥

६४. संवत् १५१६ वर्षे चैत्र वदि ४ गुरौ ओसवालज्ञातीय दोसी सींघा भा० मचकु पुत्र दो० जयताकेन भा० पूरि पुत्र भीमा सहादेभ्यां सहितेनात्मस्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्रीमद्विवंदनीकगच्छे भ० श्रीसिद्धसूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

६५. संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्रीमालज्ञातीय श्रे० कडुया भा० वन्न सु० बालाकेन भा० धनी भ्रातृ अजा भा० अल्हणदे सु० वस्ता तेजा मुंभचादि कुटुंबयुतेन श्रीचंद्रप्रभस्वाम्यादिपंचतीर्थी आगमगच्छेशश्रीअमररत्नसूरिसदुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना। अंबासण वास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६६. संवत् १५१६ वर्षे वैशाख सुदि १५ सोमे श्री मूलसंघे भ० सकलकीर्ति त० श्रीभुवनकीर्ति द्र० श्रे० कोपा भा० जाकु सुत अर्जन भार्या मघू भ्रातृ मलका भा० अमकु सुत नाथा जिनदास एते श्रीशान्तिनाथचतुर्विंशतिकां नित्यं प्रणमंति ॥ *

६७. संवत् १५०१ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० बडुआ भा० चांपु सुत आसधीर भार्या रमकु श्राविकया सुत श्रीपति स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीविजयतिलकसूरिभिः

शांतिनाथ भगवानना देराना लेख.

६८. संवत् १६३२ वैशाख सुदि ७ गुरौ मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसुमतिकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिगुरूपदेशात् कोटवास्तव्य नागद्राज्ञातीय काश्यपगोत्रे शा० वीरम भ० राणी सु० शा० कीका भा० लाली तयोः सु० शा० वाघा भार्या जमनादे द्वि० भा० नाइआ सा० सार्दुल भा० सिहजु सु० गणेश सुथावर एते श्रीवासुपूज्यं नित्यं प्रणमंति ॥ *

६९. १४९९ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० परबत पुत्र सा० हरंपति जयसिंहा भ्रातृ श्रीअंचलगच्छे कुडीशाखायां श्रीजयकीर्तिसूरीन्द्राणां उपदेशेन निजज्येष्ठभ्रातृ सिंघ भा० गांगीश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

७०. संवत् १५२५ वै० सुदि ६ सोमे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सायर भा० डाई लीलाई पुत्र व्य० हंसाजेन भा० रंगाईश्रेयसे स्वपुत्रभीमादि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटुंबयुतेन श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। वीरमगाम वास्तव्य ॥

७१. संवत् १५२३ वै० सु० १३ श्रीश्रीमालीज्ञातिय मेला भा० रूपिणि सुत मं. जावडेन सकुटुंबनिजपितृश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धरत्नसूरिभिः। वीरमग्रामे ॥

७२. संवत् १५०३ वर्षे मार्ग. सुदि ९ दिने श्रे० तत्रेश भा० सिरिआदे सुत श्रे० नाना भा० नागलदे सुत शिवादिपंचपुत्रयुतेन श्रे० नानकेन स्वश्रेयोर्थं श्रीमूलनायकश्रीशान्तिनाथबिंबयुता चतुर्विंशतिः कारापिता प्र० श्रीसूरिभिः ॥

गाम गांभू.

पंचतीर्थी.

७३. सं. १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ कुतबपुरवासी प्राग्वाट्व्य० काजा भा० चाइ पुत्र सरवणकेन भा० माणेक पुत्री वीरू पुहूती प्र० कुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयसे श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७४. सं. १९२४ वर्षे कार्तिक वदि १३ शनौ जइतपुरवास्तव्य श्रीवायडज्ञा० मं० माणिक भा० भली सुतया मं० हांसाभार्यया साधू-नाम्न्या आत्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथादिपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्न-सूरिगुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च ॥

७५. सं. १२१९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ लषणपुरवासी प्राग्वाट महा० समंधर भा० बावू पुत्र्या गां० भरम् पत्न्या गौरीनाम्न्या सुत राउल भा० लषी सुत साजणादियुतया श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० तपाश्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

७६. सं. १५२४ वैशाख शु. ३ श्रीमालज्ञातीय श्रे० धरण भा० करणू सुतकालाकेन भा० मकी सुत पाना भ्रातृ पंचायण स्वपूर्वज-श्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भट्टारकश्रीगुणतिलक-सूरीणामुपदेशेन प्र०........

७७. सं. १८९६ आसो शु. ८ बिंब शांतिनाथजीनो भराव्यो पं० अमृतविजय गुरु हीरविजयप्रभसूरिजी. ॥

धातुप्रतिमाजी.

७८. १. सं. १८९६ श्रीपार्श्वनाथ

७९. २. श्री. आदिनाथ........प्र. तपागच्छे

आरस प्राति. २०

धातु प्राति. २

पंचतीर्थीजी. ५

सिद्धचक्रजी. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपरने गभारे आरस प्रति०

८०. सं. १३४........

८१. सं. १२९२ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ८ शनौ........

पंचतीर्थी.

८२. सं. १३१४ माघ शुदि........श्रीमहावीरबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीपूर्णदिनसूरिशिष्यविजयसेनसूरिभिः ॥

आरस प्रति.	१९
चोमुखजी.	१
काउसगी.	२
पंचतीर्थी.	२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम चवेली.

पंचतीर्थी.

८३. सं. १४९५ ज्येष्ट वद ६ डीसावालज्ञातीय वा० धरणीग.... सद्रुआलीग्रामे श्रे० सागा भा० तिलकूपुत्र्या जासूनाम्न्या पु० नुला-युतया स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीसोमसुंदर-सूरिभिः। अस्या भ्राता धा० राजाकः। भ्रातृव्या राणा कुंरणलः सामल संघ शुभं ॥

८४. सं. १५१४ वर्षे माघ सुदि २ शुक्रे महिसाजवासि श्री श्रीमाली श्रे० अमरसिंह भा० सरसई सु० वाजरेण भा० विल्हणदे प्रमुख समस्तकुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीपूर्णिमापक्षे श्री जयचंद्रसूरिभिः ॥

८५. सं. १५०६ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ श्रे० षेता मातृ षेतलदे पितृव्य पुरुष आत्मश्रेयसे श्रे० जेसाकेन श्री. श्री. श्री. धर्मनाथबिंबं कारितं चतुर्दशीपक्षे डेडरिया श्री श्रीपासचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना मंगलं भवतु. ॥

८६. सं. १३३९ श्री चैत्रगच्छे उपकेशज्ञातीय सा. जागा पु. पद्मसिंह भा० हासल पु. लाहडेन बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीजिनेश्वरसूरि सं. श्रीवर्धमानसूरिभिः ॥

८७. सं. १५१९ माघ सुदि ५ शनौ रोहण्यां उमापुरीय ज्ञकश श्रे० सुरसी भा. सुरडादे पुत्र्या। श्रे० समरात्ताण कर्मो नाम्न्या श्रीमुनि-सुव्रतबिंबं का० प्र० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

धात—प्रतिमाजी.

८८. संवत् १६२१ वरष ॥ संवत् १६२१ वरष.

For Private And Personal Use Only

धातुप्रतिमा.

८९. संवत १५१० श्री श्रीमूलसंघ ब्रजिणिदास पदेशा उपरे (?) सकुटुंब ददति सा वीगा भा० कोबादे सुत वाजा भा० पटुमादे सुत लषमण राजु मीवराज श्रीपार्श्वनाथं प्रणमंति ॥ *

आरस प्रतिमाजी.

मूळ नायकजी.

९०. सं. १९०३ शा. १७६८ ....
....

जमणी बाजुए.

९१. ॥ सं. ॥ १९०३ । शा. १७६८ प्र माहा वदि ९ रवौ अमदावादवास्तव्य ओसवाल ज्ञातिय....भाइ सत्पुत्र नेमचंदभाइ........ दलसुखभाइ स्वश्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभजिनबिंबं कारापितं.

पद्मावती देवी.

९२. शा. १७६८ प्रवर्तमाने माघ वदि ९.... ....
....

सागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम वडावली.

धातुनी चोवीशी.

९३. सं. १४८९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेशज्ञातीय श्रीमंडोवरागोत्रे सा० सोनपाल भा० हीमादे पुत्र श्रवण भार्या दूल्हादे शिवादे लाछलदे पुत्र सा. सुरदास शवदास सिधरैः पितृमातृणां श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारापितः श्रीधर्मघो........मलयचंद्रसूरि....

धातु पंचतीर्थी.

९४. सं. १५१२ वर्षे वैशाख वदि १० गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० अर्जुनेन पितृव्य सरवण भा० दुसीश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

९५. सं. १५१२ वर्षे ज्येष्ट शुदि १० रवौ पिपलीवास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० धरण भा० धाधलदे सुत सहिसा भगिनी मटकू नाम्न्या आत्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना ॥

९६. सं. १५०८ वर्षे वै० व० ९ शनौ प्रा० मं० धना भा० ललितादे सु० वडूआ ठाकूर सीवा प्र० भा० कर्माइ द्वि० शाणी सुत काजा जिणा भा० पनी यु० मातृपितृभ्रात्रादिश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० उकेशगच्छे सिद्धाचार्यसंताने प्रति० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

९७. सं. १५०७ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मूलू भा० माणिकदे तयोः सुतः श्रे० लापा सु० टाकेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीशीलरत्नसूरिभिः । नुगर वास्तव्य.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नानी पंचतीर्थी.

९८. सं. १५३६ वर्षे माघ सुदि ६ शुक्रे आगमगच्छे.... ....सुत विजयसिंघ पं. उदयरत्न प. रुप..ला मेघ..ला वेली हर्ष..लावनी

९९. ....प्रतिष्ठितं श्रीशीलरत्नसूरिभिः पीपलीवास्तव्य........

१००. सं. १२८३ वर्षे........

आरस प्रतिमाजी.

जमणा काउसगीआजी.

अजितनाथ

डाबा काउसगीआजी.

शांतिनाथः

छूटां प्रतिमाजी आरसनां.

मिति बसाषसु....समत १७ स २२.... ....

मूळ नायकजी श्रीमहावीरस्वामीनो लेख सीमटमां पछाडी दबायलो छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम चाणस्मा.

धातुनी पंचतीर्थी.

१०१. सं. १६९४ वर्षे माघ वदि १ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी वीरपाल भार्या पुजी सुत दोसी रहिआकेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं श्रीपूर्णिमापक्षे प्रधानशाखायां श्रीविद्याप्रभसूरिपट्टे श्रीललितप्रभसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥

१०२. सं. १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ ओसवालज्ञातीय बृहत्संतानीय श्रे० वीरा भा० वल्हादे सुत षेता गुणीआ षेता भा० अधकू गुणीआ भा० गंगादे षेताकेन पितृव्यहीरानिमित्तं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीबिवंदणिकगच्छे श्रीदेवगुप्तसूरीणां पट्टे श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

१०३. सं. १३७४ वर्षे उवल (?) ज्ञातीय वसा षेता भार्या चांपल सुत रसिक भा० सलषणदे माहिणि वसा अजेसिंहेन बिंबं का० प्र....

१०४. सं. १४७८ वैशाख शुदि ८ प्राग्वाट ज्ञा० ....
....प्र० तपागच्छे सोमसुंदरसूरिभिः ॥
.... जयप्रभसूरीणामुपदेशेन.

१०५. सं. १५१२ वर्षे मार्ग. वदि १५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं. माला भा० माकूनाम्न्या सुत आनासहितया भर्तृश्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे जीवितस्वामि श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्रतिष्ठितं ब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमुनिचंद्रसूरिभिः । मेहूणा. ॥

१०६. सं. १५१५ वर्षे ज्येष्ट शुदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यवहारी पथा भा० प्रथमदे सु० व्य० पनागेन भा० जीवीणि भ्रातृजशिवतादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० पूर्णिमापक्षे श्रीश्री पुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० विधिना काकरया.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०७. सं. १५४३ वर्षे वै. शुदि ३ प्राग्वाट० म० ठाकूरसी भा० धनी पुत्र उणायग नारद् भा० रंजाइ नाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीपत्तनवास्तव्य प्र० श्रीदेवसुंदरसूरिभिः सिद्धांतिगच्छे ॥

१०८. सं. १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेशज्ञातौ बप्पणागोत्रे लघुशाखीय फोफलिया संज्ञायां मं. नामण भा० कह्ली पु० ४ मं. अमरसी भाणा भोजा भावड मं. अमरसिंहेन भा० अमरादेयुतेन स्वपुण्यार्थे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० उपकेशगच्छे ककुदाचार्यसंताने भ० श्रीसिद्धसूरिभिः । शुभं भवतु पूजकस्य पत्तनवास्तव्य ॥

१०९. सं. १५१६ वर्षे आषाढ सु० ३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठी लूणा भा० चमकू सुत मूलाकेन भा० लाडी सुत वर्धमानयुतेन आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथजीवितस्वामिबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० विधिना ॥

११०. सं. १५५४ वर्षे माघ वदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० जेसिंग भा० वाछू पु० सूरा भा० देमति पु० लषमण भावड सकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० तपा श्रीहेमविमलसूरिभिः । लोहरवाडा वास्तव्य ॥

१११. सं. १५२१ वर्षे वैशाष सु० ३ गुरौ ओसवालज्ञातीय बृहत्संतानीय श्रे० वीरा भा० वल्हादे पुत्र षेता गुणिआ षेता भा० अधकू स्वकुटुंबयुतेन स्वपितृमातृश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० विवंदणिकगच्छे श्रीदेवगुप्तसूरीणां पट्टे श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

११२. सं. १५३५ आसाढ सु० ६ ओसवालज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा. सरवण सा. सुरदास भा० सुहागदे पुत्र सा. सदरथ समरथ सा० सदरथ भा० रही सा. समरथेन पितृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीविजयचंदसूरिपट्टे श्रीसाधुरत्नसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११३. सं. १५०७ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सोम भा० गुंहवदे पुत्र सुरा भा० सुहागदे पितृमातृश्रेयसे सु० पांचाकेन श्रीसंभवनाथमुख्यपंचतीर्थी का० पूर्णिमापक्षे श्रीभीमपल्लीय श्रीपासचंद्रसूरिपट्टे भ० श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० विधिना ॥

११४. सं. १५३५ वर्षे वैशाष सु. ६ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० सं० जीवण भा० मीणू सुत भंजाकेन भा० अजी श्रेयोर्थं सुत लषा वीणा राणा युतेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरि गुरूपदेशेन । धंधूकावास्तव्य ॥

११५. सं. १५९३ फाल्गुन शुदि ४....प्राग्वाट सं. वीजा भा० मधू पु० सं० डुंगरसी भार्या लीलू पुत्र हर्षा कान्हादियुतेन श्रीशांतिबिंबं का० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीहेमविमलसूरि श्रीकमलकलशसूरिभिः प्र० ॥

११६. सं. १३७३ वर्षे चैत्र वदि ६.... ....
प्र० श्रीपद्मानंदसूरि.... ....

११७. सं. १४५७ वर्षे वैशाष सुदि ९ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे०....वजाल्हा भा० वाल्हणदे पुत्र टोआकेन पितृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीसाधु....पक्षे श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥

११८. सं. १२१४ वर्षे माघ.... ....

११९. सं. १३.. वर्षे आषाढ सुदि ३ उकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने श्री.... ....श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१२०. सं. १६९७ वर्षे शाके १५६२ प्रवर्तमाने फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे सप्तमीतिथौ सूर्यवासरे श्रीश्रीमालज्ञातीय वीसा श्री. रवाग्रहे भार्या कपूरा सुत विंसर श्रीसोमाकेन श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२१. सं. १५७३ वर्षे फा० सु. २ रवौ श्रीश्रीवंशे सा. आसा भार्या रजाइ अपरभा० मेघी पुत्र सांकलमलसी भा० वीराइ पु० सा. श्रीकर्ण सुश्रावकेण भा० सिरिआदे पितृव्य सं. अचू भ्रातृव्य सं. दिनकरसहितेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छे श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

१२२. सं. १५१३ वर्षे वैशाषवदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय ....भा० राजू पुत्र मयलाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिपट्टे श्रीविनयप्रभसूरिभिः । काकर ॥

१२३. सं. १५०३ वर्षे मा० व. ५ प्रा० व्य० सरवण भा० सहजलदे सुतराजाकेन भा० लषी पुत्र महिराज सायरादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुबिंबं का० प्र० तपा श्रीजयचंद्रसूरिभिः ॥

धातुनी चोवीशी.

१२४. सं. १६०८ वर्षे वैशाषसुदि १३ शुक्रे कुमरगिरिवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय लघसजानेश्रुष्टेवणी सुत श्रे० सूरा मिलुसु श्रे० लहुआ भा० हीरा पुत्रपौत्रसहितेन स्वपुण्यार्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीकमलप्रभसूरिपट्टे श्रीपुण्यप्रभसूरिभिः । पूज्यमानं चिरं नंदतु ॥

....प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीरत्नसागरसूरिभिः ॥

धातुना सिद्धचक्रजी.

१२५. सं. १८२४ वर्षे शाके १६८९ प्रवर्तमाने महासुदि १० गुरु श्रीबह्रानपुरे श्रीश्रीमालज्ञाते श्राविका तेलबाइ श्रीसिद्धचक्रकारापित परोपकारार्थं कल्याणमस्तु शुभमस्तु इति श्रे० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२६. सं. १७८९ मार्गसिर सुदि ४ वार शनि चंद्रावतीनगर्यां तपागच्छीयश्रीसमस्तसंघेन सिद्धचक्रपट्टः कारितः श्रीविजयदयासूरीश्वरविजयति राज्ये ॥

धातुनी पंचतीर्थी.

१२७. १५५९ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ प्रा० ज्ञा० मं० मेघा भा० ....रत्नाकेन भा० रही पुत्र कान्हा नाना कूरा सहितेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेंद्र.... ....

१२८. सं. १४६९ कार्तिक सुदि १३ गुरौ.... ....नागेंद्रगच्छे....देवसूरिभिः॥

उपरने गभारे सर्व आरसप्रतिमाजीना अग्रलेखमां नाम सहित **श्रीतपागच्छे** ए पंक्ति सर्वत्र छे. विशेषमां **मुक्तिसागर** ए अधिक पंक्ति पण घणी प्रतिमाजी पर छे. सर्व आरसप्रतिमाजी १६८२ ना संवत्‌नी छे तेनी प्रतिष्ठा करनार श्रीमुक्तिसागरजी तपागच्छीय छे.

आरसचोमुखजी चार प्रतिमाजीनो लेख.

(दरवाजाथी डाबी बाजूनी प्रतिमानो)

१२९. सं. १९०३ वर्षे शाके १७६८ प्रवर्तमाने माघमासे कृष्णपक्षे ५मी तिथौ भृगुवासरे अमदावादवास्तव्य श्रीमालीज्ञातीय लघुशाखायां सा. दामोदर सुत प्रेमचंद तत्भार्या फुलीदे पुत्र कर्मचंद तेन स्वश्रेयसे श्रीऋषभदेवबिंबं कारापितं श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयनरेंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं । श्रेयोऽस्तु शुभं भवतु ॥ श्री ॥

(मुख्य दरवाजे सन्मुख बिंबनो)

१३०. सं. १९०३ वर्षे शाके १७६८ प्रवर्तमाने माघमासे कृष्णपक्षे ५ मी तिथौ भृगुवासरे अमदावादवास्तव्य श्रीमालीज्ञातीय ल०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाखायां सा. दामोदर सुत प्रेमचंद सुत कर्मचंद तत्भार्या सुर्यबाइ तत्पुत्र सा. मोतीलाल तेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअभिनंदनाबिंबं कारापितं तपागच्छे श्री नरेंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं.

(दरवाजाथी जमणीबाजूना भगवान पर)

सर्व प्रथमलेखवत्

(पृष्टभागना भगवंत पर)

सर्व प्रथमलेखवत् परंतु श्रीशांतिनाथबिंबं का०

धातुना जंत्र

१३१. सं. १९९७ चैत्र शुदि १३ गुरुवासरे पत्तननगरे श्रीनिशापाटके समस्तश्रीश्राविका कारिता तपागच्छनायककुतबपुरीशाखायां श्रीपरमगुरु श्रीसौभाग्यनंदीसूरी श्रीहंससंयमसूरी विजयराज्ये पं० श्रीपंचहर्षराजगणीसपरिवार चातुर्मासिक स्थिता ग० हंसलब्धिगणी सपरिवार सुपदेशेन श्रीपंचतीर्थपट्टः कारितः श्रीसंघकस्य श्रेयोर्थं ॥ शुभं भवतु ॥

१३२. सं. १८२८ वर्षे फाल्गुन सुदि २ भृगुवासरे श्रीपाणसमानगरे श्रीश्रीमालीज्ञातीय वृद्धशाखायां घ० जीवराज तत्पुत्रमाण....
....कुटुंबयुतेन पंचतीर्थपट्टः कारितोऽयं श्रीबृहत्तपागच्छे भट्टारक श्रीश्रीविजयधर्मसूरीश्वरराज्ये.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमदावाद.

चौमुखजीनुं देरुं.

(धातुनी पंचतीर्थी)

१३३. सं. १५०४ वर्षे फागण शु. ९ बुधे उ० ज्ञा० आदित्यनागगोत्रे सा० डूंगर भा० लाछिणि पु० सा० साल्हा भा० सरसतिपुत्रसलषाभ्यां आत्मश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं. का० उ० गच्छे कुकदा प० सं० प्र० श्रीककसूरिभिः ॥

१३४. सं. १३९४ वर्षे चैत्र वदि ८ सोमे समीग्रामे वा० श्री० षडपहिपउ भा० रूपिणि पु० खिमसीहेन मातृपितश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीमुनिचंद्रसूरिभिः ॥

१३५. सं. १५१४ वर्षे वै. व. ९ शनौ श्रीश्री० ज्ञा० श्रे० सरवा भा० वाबू सु० लांपा भा० सांपू सुत बलराज हराज हूबाकेन पितृ मा० जीवितस्वामिश्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नसिंघसूरिभिः । अहिमदावादवा०—॥

१३६. सं० १४८१ वर्षे फा. व. ६ गुरौ.... ....
सुत लाखा भा० झबकू.... ....सूलेसरि सुत मेरा लखमण धनमाल्युतेन....श्रीशांतिनाथबिंबं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन श्रेयोर्थं का० प्र० ॥

१३७. सं. १३२७ फा. शु. ८....पलीवालज्ञातीय....कुमरसिंघ भार्या कुमरदेवि सुत सामंत भार्या सिंगारदेवि पित्रोः पुण्यार्थं....विक्रमसिंह ठ० लूणा ठ. सांगाकेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० वडगच्छे कूत्रडे.... श्रीपडोचंद्रसूरिशिष्य श्रीमाणिक्यसूरिभिः ॥ (मोटी पंचतीर्थी.)

१३८. सं. ११७७ ज्येष्ठ शु. बुधे नमात् वनणांगनिमित्तं शांतिनाथप्रतिमा कारिता ॥

१३९. सं. ११५९ महलच्छि स्राविकया करापिता ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४०. सं. १४८७ वर्षे माघ शु. ७ दिने वायड ज्ञा. श्रे. रवीमसी भा० लहकू सुत श्रे. सादा॰॰न भा. सूहवदे पु० मादा गोवलमाला सहसा बिजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुपार्श्वबिंबं का० प्र० तपागच्छनायक-श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१४१. सं. १५२२ वर्षे फागुण शु. १३ सोमे स्तंभतीर्थ वा० ओसवाल ज्ञा० सा. माणिक भा० सुहासिणि सुत सा. महिराजेन भा० रंगाई सुत वरजांगप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीशांतिनाथरत्नमयबिंबं का० प्र० श्रीज्ञानसागरसूरिभिः श्रीवृद्धतपापक्षे. ॥

१४२. सं. १६५४ वर्षे श्रीअकबरप्रवर्त्तित सं. घर व० मादव १२ बुधे सा. भीमजीकेन स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥

१४३. सं. १५०८ वर्षे वैशा. शु. ३ ऊ० ज्ञा० रांका सखा वांसउना गो० से० कमला भा० कमलसिरि पु० समाकेन भा० रामादे सं. श्रीसुपार्श्वबिंबं का० प्र० संडेरगच्छे श्रीश्रीशांतिसुरिभिः ॥

१४४. ....सोहीनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसर्वदेवसूरिभिः ॥ कासूआग्रामे. (खंडितपंचतीर्थी)

१४५. सं. १५०१ वर्षे आ० सुदि २ उपकेशगच्छे आदित्य-नागगोत्रे सा० देवसीह भा० मेवू पु० सोनपालेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीककसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

१४६. सं. १५१२ वर्षे माघ बदि ५ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० महि-पाकेन भा० मट्ठू पु० पद्मा वाला रत्ना हाला मका ४ कपिनादिकुटुंबयुतेन निजपितृ....श्रे० आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(पांच पंचतीर्थी उपर बिलकुल लेख नथी.)

[संभवनाथना देरा पासेना चौमुखजीना देराना—फक्त अंदरना एक गभाराना आ लेख ।]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाम उंझा.

पंचतीर्थी.

१४७. सं. १४९६ वर्षे.......प्राग्वाट ज्ञा...सहजदत्त भा० वीणलदे पुत्र रुदास्तनाकेन पितृ.......श्रेयसे श्रीशांतिबिंबं का० प्र० श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥

म ९ ॥—वर्षे । मे । खुसाल तथा वो ॥ हरपाकेन कारापिता ॥ (सिद्धचक्र)

सं. १६४२ वर्षे श्राविका स. जंबुन । श्री.

१४८. सं. १५६१ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० मं० धूंजा भा० भली पुत्र मं० चांपाकेन भा० छांळी पुत्र लक्ष्मिदास भ्रातृधांगा भा० सोनाई पुत्र जयवंत भगिनी अधकू पुत्री वाछी सुकुटुंबयुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र०—श्रीसूरिभिः श्रीपत्तने ॥

१४९. सं. १५१२ वर्षे फाल्गुन व. १ रवौ वृद्ध प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सूद भा० सहजलदे सुत चांपाकेन भा० यापू पुत्र लीवायुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं. का० प्रति० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः उढवास्तव्य. ॥ (पंचतीर्थी.)

(लेख भूसाई गयो छे प्रतिष्ठापक श्रीसोमसुंदरसूरि)

१५०. सं. १४०६ वर्षे प्रा० ज्ञा० श्रे० पाल्हा भा० माणिकि सुत श्रे० भीमाकेन भा० चांपूयुतेन स्वपितामहकान्हडश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वबिंबं का० प्रति० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

१५१. सं. १५२३ वर्षे वैशाख वदि ९ ओस० ज्ञा० भंडारीगोत्रे सा. बाहड पु० दोल्हड पु० धना सा. दाधीना भा० पद्मू पु० पाल्हाकेन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छेशश्रीमहेन्द्रसूरि प० भ० श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

१५२. सं. १४२७ वर्षे ज्येष्ठ शु. १५ श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्य-संताने....साजण भा० लखमादे सुत गोगन भा० नागलदेसहितेन पितृ-मातृश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

१५३. सं. १५३५ वर्षे पोष शु. ६ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सहेद भा० सलखणदे सुत पूजाकेन भा० मापुरी सुत अदादेइ आदिकुटुंबयुतेन सुतश्रंगी भा० रहीश्रेयोर्थं श्रीशीत[ल]बिं० का० प्र० तपागच्छे....॥

१५४. सं. १३९७ वर्षे फागुण शु. १३ गुरौ श्रीकोरंटकगच्छे श्रे....कुरण भा० कूरादे पु० विजिसिह विजिपाल....तृपितृश्रेयसे श्रीमहावीरबिं० का० प्र० श्री नन्नसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

(एक प्रतिमाजीनो लेख तद्दन भूसाइ गयो छे. ॥)

१५५. सं. १४५१ ज्येष्ठ शु. ४ रवौ श्रीमाल ज्ञा० देपाल भा० देवलदे पितृ थरतउ विजिसउ पितृलखमा भा० लखमादे सु० कर्मसिहेन श्रीशांतिपंचतीर्थी का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीपासदेवसूरिभिः ॥

१५६. सं. १३७६ वर्षे माघवदि १२ बुधे प्रा० ज्ञा० ठ० झांसा भा० खेतलदे सुत भणसालि पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिं० का० प्रति० (पंचतीर्थी.)

चोबीशी.

१५७. सं. १५५२ वर्षे वैशाख शु. ३ शनौ ओसवालज्ञा० मं० दामा भा० रंगी सुत थावरकेन भा० २ पुहुती माणिकिदे सुत गेला वेला किकादिभिः सहितेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतचतुर्विंशतिपट्टः का० श्रीवीवंदणिकगच्छे सिद्धाचार्यसंताने प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥ ऊना....वास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५८. सं. १५१६ वर्षे वैशा. शु. ११ श्रीमालगुजर ज्ञा० बहंकटागोत्रे सा० जइता पुत्र सा० साधा तद्भार्यया सूदीश्राविकया स्वपुण्यार्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिभिः ॥

१५९. सं. १५२५ वर्षे फाल्गुन शुदि ७ शनौ उपहूरा वा० प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० मेघा भा० मटकू सु० लीबाकेन लाडीयुतेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीलक्ष्मीसागरसूरिप्रवरैः ॥

१६०. सं. १४३८ वर्षे ज्येष्ट शुदि ८ बुधे....वीसरीश्रीआंचलिक सं० कुरा सुत सं० लींबाश्रेयोर्थं भा० सं० तेजूश्राविकया श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

धातुप्रतिमाजी मोटां.

१६१. सं. १८७३ माघ शु. ७ शुक्रे श्रीपार्श्वबिंबं उजावा। सा अ श्रीविजयजिनेन्द्रसूरि प्र० तपा.

१६२. सं. १८७३ वर्षे माघ शु. ७ शुक्रे श्रीवासुपूज्यजिनबिंबं ग्रामउजा वा०.......दुलमजी मांडण भ० श्रीविजयजिनेंद्रसूरि प्र० तपागच्छे. ॥

१६३. (श्रीवासुपूज्यप्रतिमा पूर्ववत् सर्व। श्रीपार्श्वबिंबं पूर्ववत् सर्व रामचंद फूलचंद उजा ए विशेष.)

१६४. सं. १५७६ वर्षे चैत्र वदि ९ शनौ प्राग्वाटवंशे श्रे० लखमण भा० लखमादे पु० श्रे० जागा भा० कीवाई तोह पुत्र श्रे० गदा लघुभ्रातृ श्रे० सहिजाकेन भा० सोभागिणि संप्र तथा अपरमातुर्वृद्धभ्रातृ श्रे० रामाप्रमुखकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन श्रीपत्तन. सहानगर. ॥ (चोवीशी.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६५. सं. १४९९ वर्षे माह शु. ६ सोमे प्राग्वाटवंशे श्रे० राजड भा० झबकू पुत्र श्रे० आका भा० मनी सुत श्रे० रत्नियाकेन भा० लीलू भ्रा० माहिपादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे मूलनायकश्रीकुंथुनाथयुतश्चतुर्विंशतिजिनपट्टकः का० प्रति० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥ (चोवीशी.)

१६६. सं. १५१८ वर्षे आषाढ शु. ३ गुरौ श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० वेला भा० वर्जू सु० णालाकेन भा० गंगादे द्वि० भा० सखीयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथादिजीवितस्वामिचतुर्विंशतिपट्टः श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन का० प्रति० विधिना ॥ आबरणिग्रामवास्तव्य. ॥ (चोवीशी.)

१६७. सं. १५२९ वर्षे फा. शु. ७ शनौ नागरज्ञातीय मं० भामा भा० दूबी सुत वाला मांडण भा० लाका रंगी पीताश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्रति० श्रीसंघे. ... दिने दिने. ॥ (चोवीशी.)

१६८. सं. १...१३ वर्षे ज्येष्ठ वद ७ भोमे वृद्धप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० नला भा० नागलदे सुतैः बाला माला देवदास सूदा प्रभृतिकुटुंबयुतैः पितृमातृश्रेयोर्थं श्र.शीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपू० श्रीपूज्यश्री पुण्यचंद्रसूरिपट्टे आचार्यश्रीविजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः श्री स्तंभतीर्थवास्तव्य. ॥ (चोवीशी.)

१६९. सं. १५१९ वर्षे वैशाख व. ११ शुक्रे ओसवालज्ञा० नाहटागोत्रे सा. सारंग भा० ग्रहगदे पुत्र सा. चापा भा० बाइ मांजू पुत्र सा. श्री... । या आत्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे भ० श्रीजिनसागरसूरि भ० श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिनहर्षसूरिभिः॥

१७०. सं. १५३६ वर्षे फागण वदि....दिने श्रीऊकेशवंशे राकागोत्रे श्रे० जेसिंघपुत्र श्रे० घिल्ला भा० करणू पु० श्रे० हरिपाल भा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हासलदे पुत्र श्रे० हर्षा भ्रा० जिणदत्तेन भा० कमलादे पुत्र सधरेण सोन पालादिपरिवारेण स्वपितृपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

पंचतीर्थी.

१७१. सं. १५१३ वर्षे वै. शु. ३ प्राग्वाटव्य० सहदे भा० सलखणदे सुत पुंजाकेन भा० पुरि सुत वरजांगादियुतेन श्रीसंभवबिंबं का० प्र० तपाश्रीउदयनंदिसूरि शिष्यश्रीसुरसुंदरसूरिभिः ॥

१७२. सं. १५१९ वर्षे माघशु. १ शुक्रे प्रा० ज्ञा० दोसी.... भा० मटकू तत्पुत्र दो. वाछा भा० चंगाइ पुत्र पद्मसाहेन पितुः श्रे०: भ्रातृसधारणाश्रेयसे च श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्रति० मलधारीगच्छीय भ० श्रीगुणसुंदरसूरिभिः श्रीपत्तनवास्तव्य. ॥

१७३. सं. १५७५ वर्षे माघव. २ सोमे श्रीमालज्ञा० लघुसंता- नीय वु. अरजन भा० रंगी पु० वु० माला भा० पूगी पुत्र वु० पताइ भा० प्रीमलदेभ्यां सहितैः स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० मलधारगच्छे प्रति० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ ऊर्णाकग्राम.... ....

१७४. सं. १२४१ वैशाख शुद १० शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे कदंब- कूवे पुडरियसुता नानूश्रेयोर्थं प्रतिमा का० (आ प्रतिमाजी पर प्रतिष्ठा- कारनो उल्लेख मूळथीज लखायलो नथी तेम भगवाननुं नाम पण नथी.)

१७५. सं. १५५२ वर्षे वैशाख वदि २ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० पना भा० देपू पुत्र पहिराज भा० हेमादे पुत्र कान्हा कमा लघुभ्रातृवीर- धवल भा० धर्मिणी पुत्रथावरभाई अ। तृतीयभ्रातृचुडा भा० चांपलदे सकलकुटुंबयुतेन स्वपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० भीनमालगच्छी- यश्रीकनकप्रभसूरिभिः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१७६. सं. १५१३ वर्षे वैशा. शु. दिने व्य. मोका भार्या वारू-पुत्र सिंघाकेन भा० सहजू पुत्र नरसिंघ भ्रातृज भांडा देवादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुपार्श्वबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यगच्छेशश्री-रत्नशेखरसूरिभिः ॥

१७७. सं. १५२५ वर्षे वैशाख शु. ६ सोमे ऊंट्वाल का० प्राग्वाट ज्ञा० व्य० नरसिंह भा० चांदू सु० लालाकेन भा० राजू हलू कडू सु० पोपटादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१७८. सं. १५२८ वर्षे फा. शु. ८ सोमे जइतलवसणा वा० प्राग्वाट ज्ञा० मं० मूला भा० पूरी सुत मं० सहिसाकेन भा० सुहासिणि सु० जगा गपदिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीवद्धतपापक्षे भट्टा० श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ॥

१७९. सं. १५४० वर्षे वै. ३ श्रीमाली श्रे० वेला भा० सारू पुत्र श्रे० डूसाकेन भा० हर्षू पु० श्रे० झांझण माला धर्मसीप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। छीनीआणाग्रामे ॥

१८०. सं. १४८७ वर्षे माघ शु. ९ गुरौ श्रीमाल ज्ञा०....भा० चांपलदे सुत डामरेण....स्वपुण्यार्थं पितृमातृ....श्रीधर्मनाथबिंबं श्रीअंचल-गच्छनायकश्रीजयकीर्त्तिसूरीणामुपदेशेन का० प्र० श्रीसंघेन. ॥

१८१. सं. १५१८ वर्षे श्रे० रामा भा० सांकू सुत आल्हाकेन भा० झलू भ्रातृ राघव भा० टीबू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्य-बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री....रत्नशेखरसूरिपट्टप्रभाकरश्रीलक्ष्मीसागर-सूरिभिः। बाउलूग्रामे ॥

१८२. सं. १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे प्रा० ज्ञा० व्य०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कडूआ सुत व्यव० समरा भा० पठू....सुत व्यव० सोमदत्तेन भा० देमाइयुतेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० श्रीआगमगच्छेशश्रीदेवरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्र० च श्रीअहम्मदावादवास्तव्य ॥

१८३. सं. १५८१ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरौ ओसवाल ज्ञा० साह रत्ना भा० रत्नादे पुत्र वाघा सौधलगोत्रे भा० पूतली आत्मश्रेयसे पितृनिमित्तं श्रीचंद्रप्रभाबिंबं का० श्रीबृहद्गच्छे भ० श्रीदेवकुंजरसूरिपट्टे श्रीदेवेन्द्रसूरि प्रतिष्ठितम्. ॥

१८४. सं. १५२९ वर्षे वै. शु. २ शनौ प्रा० दसावाटकवसि सा० नीणा भा० राउ पुत्र झांझणेन भा० नाथी पु० मांडण भा० राणी प्रमुखकुटुंबयुतेन पितृव्यमेघाकृते स्वश्रेयोर्थं च श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छनायकश्रीसोमसुंदरसुरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१८५. सं. १५०३ वर्षे मार्ग. शु. ६ ऊके० सं० पद्मा भा० सारादे मचकू पुत्र धमा वीसलनगर वा० हीरा पर—न भा० हीरु पु० लखमा जिणदत्तादियुतेन श्रीधर्मबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१८६. सं. १५८४ वर्षे चैत्र वदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० लघुशाखायां विशलनगर वा० श्रे० नारद भा० रत्नादे पुत्र श्रे० रामाकेन भा० लीलाइ पुत्र राजपालयुतेन श्रीसुमतिजिनबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसौभाग्यहर्षसूरिभिः ॥

१८७. सं. १५०४ वर्षे ज्येष्ठ शु. ९ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञा० गां० घूला भा० सांकू सुत रत्नूकेन पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥

१८८. सं. १५२१ वर्षे माह वदि ९ गुरौ उप० आववाणगोत्रे लघु० पारेख नाथा भा० माहू पुत्र कडूआ भा० राणी पु० सहदे आत्मश्रे० श्रीनमिनाथबिंबं का० बिबंदनीकगच्छे प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः ऊना उ.॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१८९. सं. १४६२ वर्षे ऊकेशवंशे श्रे० लाला भा० जाल्हणदे सु........श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनरचंद्रगुरुभिः ॥

१९०. सं. १३२९ वर्षे फाल्गुन शु० ८ सोमे पितामह ठ० मामत श्रे०....पितृ ठ० प्तेगा मातृसूमलश्रेयोर्थं भ्रातृरत्नाश्रेयोर्थं च ठ० विजलेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१९१. सं. १४०० वर्षे वैशाख शु. १० रवौ उपकेशज्ञा० माए....भा० धांधलदेवि द्वि० भा० कणकूश्रेयोर्थं वणसिंहेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का प्र० रुद्रपल्लियपक्षे श्रीसूरिभिः ॥

१९२. सं. १९८४ वर्षे चैत्र वदि ९ गुरौ प्रा० ज्ञा० चूडीग्राम वा० श्रे० नाथा भा० नाइ विरुआकेन भ्रातृ मटा लटा भा० हासी पुत्र माधवप्रमुखसमस्तकुटुंबयुतेन निजश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१९३. सं. १९१७ वर्षे माघ शु. ४ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० भम्रवं भा० व्यंदू द्वि० तारु सुत मदमीप्रपदसुदेवधनुश्रीसंभवनाथबिंबं प्रति वृ। तंथफल (?) गच्छ भ० श्री अभयचंद्रसूरिभिः व।षु इतव्य.॥

१९४. सं. १९१९ वर्षे माघ शु. ९ शुक्रे श्रीउपकेशज्ञा० सा० डाडा भा० चाहणदे सुत भोजा सुश्रावकेण भा० भावलदे सुत रादेनेमा जागा वस्तासहितेन भा० सिघाश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन. ॥

१९५. सं. १९३४ वर्षे फाल्गुन शु. १० गुरौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० धर्मसी भा० लाडी पु० विणायकेन भा० धनी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

१९६. सं. १९३४ वर्षे वै. वदि १० प्राग्वाटज्ञा० व्य० नरसींग भा० धर्मिणि सुत गोपा भार्यया माइना स्वश्रे० श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ पीरीवाडावास्तव्य. ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९७. सं. १५२३ वर्षे माघ शु० ६ प्राग्वाटज्ञा० रत्ना भा० माल्हणदे पुत्रव्य० समराकेन भा० सहजदे पुत्र डूंगर जइना विजा दूदादि-कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखर-सूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । नीदियाग्रामे ॥

१९८. सं. १५७२ वर्षे फा. व. ४ गु. उपकेशवंशे खांटडगोत्रे मं० केल्हा भा० ललतू सुत मं० हराज भा० २ प्र. वीरू द्वि० लीलादे. भगिनी हेमाइ श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० भावडरागच्छे श्रीविजयसिंह-सूरिभिः ॥ ढूंढीग्राम. ॥

१९९. सं. १६२४ वर्षे माघ शु. ६ सोमे वृद्धप्राग्वाटज्ञा० मं० समरा भा० पुहुताइ सुत मं० ठाकरनाम्ना भा० कमलाइ सुत देवचंदादि कुटुंबयुतेन श्रीऋषभदेवबिंबं का० तपागच्छेशश्रीहीरविजयसूरिभिः प्र० ॥

२००. सं. १५०८ वर्षे आषाढ शु. २ सोमे विसलनगरवा० प्रा० ज्ञा० रा. हूदा सुत संघसायर भा० आसलदे सुत सं. हरिराजनाथाभ्यां निजपितृश्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंह-सूरिभिः ॥

२०१. सं. १५११ वर्षे........वदि ९ रवौ श्रीकोरंटकगच्छे उप-केशज्ञा० सिधा भा० धारू सु० डुंगर भा० देन्हू सं० कान्हा भा० दकू डुंगरकान्हानिमित्तं सं. वानरमाधवेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाव-देवसूरिभिः ॥

२०२. सं. १४८६ वर्षे माघ शु. ४ शनौ प्रा० ज्ञा० श्रे० खेता भा० तिलकू पुत्र सा. कामदेवेन भा० धरणूयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीवर्धमान-बिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसुरिभिः ॥

२०३. सं. १५२७ वर्षे ज्येष्ट वदि ७ सोमे प्रा० ज्ञा० सं. सायर भा० आसलदे सुत सं. नाथाकेन भा० पीताणदे सु० शिवराज प्रमुख-कुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२०४. सं. १५३६ वर्षे माघ शु. ८ दिने श्रीश्रीमालज्ञा० म० वीरा भा० मूलेसरि सुत म० गणीआकेन भा० गंगादे सुत लखमण लालु मदन रंग। वेल। नदल तृप्तूचर अमरादिकुटुंबयुतेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

२०५. सं. १५१८ वर्षे वैशाख शुदि ९ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० से. सामल भा० माकू पु० झांडण भा० सुहासिणी पु० शिवराजेन भा० जीविणियुतेन स्वश्रे० श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीसर्वसूरिभिः ऊ० गच्छे ॥

२०६. सं. १५३३ वर्षे माघ वदि १० गुरौ प्रा० ज्ञा० सा० सरबत भा० माइ पुत्र सांडाकेन भा० तेजू पुत्र रामादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि. ॥

२०७. १४८८ सं. वर्षे प्रा० ज्ञा० मं. कर्मा सुत लीबा भा० ऊनकू सुत कडुआकेन पितृश्रेयसे श्रीमहावीरबिंबं का० प्रति० श्रीसुविहितसूरिभिः ॥

२०८. सं. १६४९............श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० बृहत्तपागच्छे श्रीहेमविजयसूरिभिः ॥

२०९. सं. १८७३ वर्षे माघ शु. ७ शुक्रे उनावास्तव्यसमस्त संघेन भ. श्रीविजयजिनेंद्रसूरि प्रति० तपागच्छे श्रीमहावीरबिंबं ॥

घर देरासरना.

२१०. सं. १५०१ वर्षे ज्येष्ठ शु. १० उपकेशज्ञा० श्रे० आजड भा० लाखू सुत लखमण भा० राणी सुत साह छूटाकेन भा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीविणियुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीमुनिसुंदर-सूरिभिः । स्तंभतीर्थवा० ॥

२११. सं. १४....ज्येष्ट....प्रा० ज्ञा० श्रे० वयरसी भा० लाखू ....सुत........श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० घोषपुरीगच्छे श्रीहेमचन्द्र-सूरिभिः ॥

२१२. सं. १५०६ वर्षे महावदि ६ प्रा० ज्ञा० रुहा भा० मचकू पुत्र देवसिंहेन भा० चमकू स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० स । वुवू० गच्छे श्रीहीराणंदसूरि प० श्रीदेवचंद्रसूरिभिः ॥

शांतिनाथना देराना.

२१३. सं. १५५८ वर्षे माघ शु. ५ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० सं. वयरसी सुत सं. झांझण भा० मापरि सुत सं. जेलाकेन सुत नरबदतमित्रं भा० इणियुतेन श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीगुणदेव-सूरिसंताने श्रीरत्नदेवसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

२१४. सं. १५१५ वर्षे माघ शु. १ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० दो० मांकड भा० मेचू तत्पुत्र दो० जाऊआ देऊआ काला धरणाकैः मातुः श्रेयसे जीवितस्वामिश्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छीय श्रीगुणसुंदरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाटण.

भाभापार्श्वनाथजीना देरासरनी धातुप्रतिमाना लेखो.

२१५. सं. १५१६ वर्षे माग. वदि १ वडलीवासि श्रीश्रीमालि श्रे० वरपा भा० वीजलदे सुत आहूभा भा० मवकू सुत आसाकेन भा० अमकू भमी भ्रातृसहसा भा० धनी सुत महिराजादिकुटुंबयुतेन श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ श्रीराजतलकसूरिः (चोवीशी)

२१६. संवत् १५१६ वर्षे वैशाख शुदि ५ गुरौ ओसवालज्ञातीय श्रे० सिंघा भा० जसमादे पु० डामर भा० धर्मिणि पितामहपितामहीपितृमातृश्रेयसे सुतमोह्लाकेन भा० रानू सु० वेलासहितेन श्रीआदिनाथमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीयभ० श्रीपासचंद्रसूरिपट्टे भ० श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

पंचतीर्थी.

२१७. संवत् १४८३ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय व्य० मेघा भार्या मेवूसुतेन व्य० आमसिंहेनात्मश्रेयसे आगमगच्छेशश्रीजयानंदसूरीणामुपदेशेन श्रीपार्श्वनाथादिपंचतीर्थी कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्रीसूरिभिः ॥ शुभं भवतु श्रीसंघस्य ॥

२१८. सं. १४९३ वर्षे वैशाख शुदि ५ बुधे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० गोवल सुत काला भार्या कांकु सुत रत्ना भार्या रणखतिसहितेन मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं कारापितं प्र० श्रीजज्झग (श्रीजहुग) सूरिपट्टे श्रीपजूनसूरिभिः ॥

२१९. संवत् १७६८ वर्षे वैशाख सुदि ५ तिथौ बुधवासरे उपकेशज्ञातीय लघुशाखरें। भंडारी रूपजी तद्भार्या बाई लाडकी सुत भंडारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूख भार्या बाई लाछि तत्सुत भंडारी लालचंद भार्या मलदे सुत भंडारी जगजीवन समशेलं श्रीऋषभदेवजिन बिंबं कारापितं प्रीतीरा (?) गच्छे भट्टारकश्रीविजय स सूरि........विजयप्रतिष्ठिता पत्तनमध्ये श्रीशांतिनाथ-पंचतीर्थी.

२२०. सं. १४४९ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० टीकम भार्या वीजलदेवि आत्मश्रे० श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥

२२१. ॥ स्वस्तिश्रीः ॥ संवत् १५७९ वर्षे वैशाखवदि १ गुरौ श्रीश्री० वंशे श्रे० मेघा भार्या पद्माई पुत्री कर्माई सुश्राविकया दो० सीहपाभार्यया भ्रातृ भीमा भगिनी देमि सहितया स्वश्रेयसे । श्रीविधिपक्षे श्रीसूरीणामुपदेशेन श्रीनमिनाथबिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

२२२. सं. १४८५ वर्षे वै. व. ८ उकेशज्ञा० सा० गुणदत्त भा० पूनादे पु० रामाकेन भा० रमादे पु० समधर खीमधरादियुतेन स्वभार्याश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

२२३. संवत् १५७२ वर्षे फा. वदि ४ गुरौ उकेशवंशे खांटड-गोत्रे मं. तारा भार्या रमाई पु० मं. जगा भा० अछबादे सु० लक्ष्मी-धरनोना वातर्त्ताश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र. भावडहरागच्छे श्रीवि-जयसिंहसूरिभिः ।। ईडरीग्रामे ॥

२२४. संवत १६८१ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १३ बुधे पाटणवास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञातीय दो० सुरा भार्या सपु सुत वधकु । श्रे० ॥ तपागच्छालं० श्रीविजयदेवसूरि दा० वधुआनामाकतष्वांब श्रीआदिनाथ.... ....

२२५. संवत् १५०१ वर्षे वैशाख शुदि १३ गुरौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० मेहाजल भार्या तेजू सुत धरणा भार्या जीविणि श्रीसंभवनाथ-बिंबं कारापितं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना प्रतिष्ठितं नपाडावनूरग्रामे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२२६. सं. १३१०........शुदि ८ शुक्रे प्राग्वाटज्ञातीयश्रे० उदा भार्या आल्हादेवि...........श्रीशांतिबिंबं कारितं श्रीबृहद्गच्छे श्रीभानदेवसूरिभिः ॥

२२७. संवत् १४१८ वर्षे द्वितीय वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीश्रीमाल महं. माला पुत्र देमाक........श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० मलधारिश्रीराजशेखरसूरिभिः ॥

२२८. सं. १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० देसल भा० मेवू सू० मं० सलखाकेन भा० खीमी सू० हर्खा मेघा जागा आणंदादिस्वकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथादिपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरिगुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता ॥

२२९. संवत् १५१५ वर्षे शावरवासि । व्य० मुंजा भा० माजूसुतवाछाकेन भा० रामति भ्रा० गोधा भा० वरजू सांडादेवादिकुटुंबयुतेन स्व भ्रा० साडाश्रेयसे श्रीशंभवनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

२३०. संवत् १५०२ वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० गांधी मूला भा० लाडिकिनाम्न्या परोक्षपुत्रिकालखमाईपुण्यार्थे श्रीसंभवनाथमुख्यपंचतीर्थी कारिता श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लियश्रीपासचंद्रसूरिपट्टे श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठिता ॥

२३१. सं. १५०७ वर्षे माघ शुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० धना भा० साजणि सु० हरिभ्रमकरणाभ्यां पि० भ्रा० होलानिमित्तं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपू० भ० श्रीवीरप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥ (पंचतीर्थी.)

२३२. संवत् १४३४ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाटज्ञातीय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रे० सोढा भार्या मेपू पुत्र महणसिंहेन पित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं कारितं........श्रीवयरसेणसूरिपट्टे श्रीकमलचंद्रसूरिः ॥

२३३. सं. १५३५ वर्षे मा. शु. ९ गु. डीसा० श्रे० जूठा भा० अमकू सुत मं० भोजाकेन भा० बडूया स्वभार्या मवकू सुत नाथादिकुटुंब श्रे० श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

२३४. सं. १२०८...............श्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा कारिता श्रीउद्योतनसूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥ (पंचतीर्थी)

२३५. संवत् १५१७ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय लघुसंतानीय दोसी महिराज भा० रूपिणि तया स्वभर्त्राऽऽत्मश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं द्विवंदनीकगच्छे भ० श्रीसिद्धसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ दांनक्रोडीग्रामे. ॥ (पंचतीर्थी)

२३६. संवत् १३८० वर्षे कार्तिक शु. १३ खरतरश्रीजिनभद्र (चंद्र) सूरिपट्टालंकार............श्रीजिनकुशल .... प्रतिष्ठितं. ॥

२३७. संवत् १३२३ माघशुदि ६.... .... श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

२३८. सं. १५३१ वर्षे माघ व. ८ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० कुरसी भा० वरजू सु० दो० लाडण भा० राणी सु० कर्मण पहिराजकुटुंबयुतेन आत्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥ श्रीपत्तने ॥

(श्रीआमदेवसूरिए प्रतिष्ठा करेली एक धातुप्रतिमाजी छे, पण अक्षर बराबर न बेसवाथी लेख लीधेल नथी. तेमज त्रण बीजी प्रतिमानो पण लेख वांची शकातो नथी. एक उपर लेख नथी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२३९. सं. १५२४ वर्षे म. व. ९ रवौ पत्तनीयश्रावकसमुदायेन श्रीचतुर्विंशः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीतपागच्छनायकश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः॥ (पाषाणनी चोवीशी उपरनो लेख).

(आचार्यनी मूर्ति उपर १४२१ नो लेख छे.)

खजुरीना पाडामां मनमोहनपार्श्वनाथजीना गभारानी प्रतिमाना लेखो.

२४०. संवत १६६४ वर्षे पोष बहुल ७ बुधे........तपागच्छे [भगवाननी पाछळना भागमां लेख होवाथी, वांची शकाय तेम न होवाथी संपूर्ण लखेल नथी].... ....
(बीजी पाषाणनी प्रतिमाओने पण तेज सालनो लेख छे तेओने पण पाछलना भागमांज लेखो छे. तेथी अडधो भाग भींत लगतो होवाथी वंचाय तेम नथी.)

२४१. संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शनौ उमतावासि--ऊकेशज्ञातीय सा. वीसल भार्या टीबू सुत सा. धर्मीकेन भार्या हेमाई पुत्रमहिपादिकुटुंबयुतेन स्वपितुः श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपाश्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि---श्रीसोमदेवसूरिभिः ॥ (चोवीशी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२४२. संवत् १५७० वर्षे माघ शुदि १० शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीयमं० पाल्हणसी भा० माउ पु० मं० अंबोडा भा० गुरदे पुत्र शाणा भा० कर्मी पु० ३ मं० गणीया माणिक गांगा एतेषां गांगाकेन भा० टबकू पु० कान्हा पञ्चसीसहितेन स्वपुण्यार्थं श्रीनमिनाथमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारितः । प्रतिष्ठितः श्रीसर्वसूरिभिः । पाडलावास्तव्य ॥

२४३. संवत् १५३६ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे कूकरवाडावास्तव्य श्रीनागरज्ञातीयश्रे० राजा भा० राजलदे सु० श्रे० नाथाकेन भार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीसंभवनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः । प्रतिष्ठितः श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरि—श्रीउदयवल्लभसूरि—श्रीज्ञानसागरसूरिपट्टे श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥ (चोवीसी)

२४४. सं. १४८५ वर्षे वैशाख शुदि ८ सोमे प्राग्वाटज्ञा० श्रेष्ठि पातल भार्या कील्हणदे सुत देवीकेन भार्या देवलदेसहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं पूर्वसूरीणामुपदेशेन विधिना श्रावकैः ॥ (पंचतीर्थी)

२४५. सं. १३५० वर्षे ज्येष्ठ शुदि २ शुक्रे .... श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयप्रभसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

२४६. सं. १४९९ वर्षे माह शुदि ६ उपजातीयसूरोठागोत्रे सा० सोनपाल भा० सिंगारदेनाम्न्या निजपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रति० श्री बृहद्गच्छे श्रीअमरप्रभसूरिपट्टे श्रीसागरचंद्रसूरिभिः ॥श्रीरस्तु॥ (पंचतीर्थी)

२४७. सं. १५०८ वर्षे आ० व० सोमे श्रीमालिज्ञा० सा० गोवल भार्या उत्तिगदे. श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं ॥ (पंचतीर्थी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२४८. सं. १५०६ वर्षे वैशा० शु० ६ सोमे श्रीपत्तनवास्तव्य-मोढज्ञातीय ठ० गणीया भा० पाती सु० हेमराजकेन भा० सोनाई प्र-मुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं श्रीरत्नसिंहसूरिसंताने श्रीउदयसागरसूरिपट्टे श्रीधनरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरस्तु । श्रीवृद्ध-तपापक्षे ॥ (पंचतीर्थी)

२४९. सं. १२७१ वर्षे.... .... प्राग्वाट-ज्ञातीय पितृसाजण मातृ जाषणदेवि पुत्र तिहुणसिंह .... कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

२५०. सं. १५२८ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० धारा भा० बालीनाम्न्या पुत्र महिराज भा० माल्हणदे कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः कुलुलिवास्तव्य ॥ (पंचतीर्थी)

२५१. सं. १४२२ वर्षे वैशाख शुदि ११ बुधे नागरज्ञा० काठीयावीगोत्रे श्रे० खीमसीह भा० आल्हणदे पाल्हणदे श्रेयोर्थं सुत धाधलेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं .... ॥ (पंचतीर्थी)

२५२. सं. १५३० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे प्राग्वाटज्ञा० श्रे० खीमा भार्या अरघू पु० पंचायण गिरूआ भा० सोही पु० वछादि-कुटुंबसहितेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं । उवएसगच्छे सिद्धाचार्यसंताने प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

२५३. सं. १४६६ वर्षे वैशा. शु. ३ सोमे श्रीअंचलगच्छेश श्रीमे-रुतुंगसूरीणां उप० श्रीपत्तनीय शा० सं० जयसिंह पु० आसा... कांउना-म्न्याः स्वमातुः श्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीसूरिभिः ॥

२५४. सं. १५९२ वर्षे आषाढ शुदि २ रवौ वडलीवास्तव्य-प्राग्वाटज्ञातीय व्य० डोसा भार्या डाही सुताश्रीमल्हीनाम्न्या स्वश्रेयोर्थं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छनायकपरमगुरुप्रभुश्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

२५५. सं. १३९४ वर्षे चैत्र वदि ६ प्राग्वाटज्ञा० .... प्र० श्रीराजशेखरसूरिभिः (बाकीना अक्षरो बांची शकाया नथी.

२५६. सं. १३०४ (एक प्रतिमा उपर वंचाय छे.)

लींबडीमापाडामां मूलनायक श्रीशांतिनाथजीना गभारानी प्रतिमाओना लेखो.

२५७. सं. १५०४ महिसाणावासिप्राग्वाट सं० देवराज भार्या वर्जू पुत्र रणसी वाछा कौरणसी भार्या पूरी पुत्र रहिआकेन भ्रातृमाणिकादिकुटुंबयुतेन निजपितृश्रेयसे श्रीशांतिचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीजयचंद्रसूरिभिः ॥

२५८. सं. १२८७ वर्षे फागण शु० १० गुरौ भमेवु....सं० लखमदे सुत सं० पदम भा० हीरूडा लघुभ्राता वाघा प्रणमति ॥ *

२५९. सं. १४९९ वर्षे फा० शु० २ प्राग्वाटज्ञातीय सं० पदमा तिहुणा कीका गदाभार्यया वीरुनाम्न्या स्वसुतथावरुश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

२६०. सं. १५२७ वर्षे पौष वदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीयश्रे० देसल भा० हर्खू पुत्र २ गणीयु काला भा० धरणू स्वपितृलखमणनिमित्तं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालाकेन श्रीनमिनाथबिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीकमलचंदसूरिपट्टे श्रीहेमरत्नसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

२६१. सं. १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० बुधे पूज्यश्रीजयकीर्त्तिसूरिपट्टे श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीप्राग्वाटज्ञातीय सा० गांगा भार्या गंगादे पुत्र सा० आमा भार्या उमादे पुत्र सा० सहसा सुश्रावकेण भार्यासंसारदेसहितेन स्वश्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० श्रीसंघेन प्र० ॥ (पंचतीर्थी)

२६२. सं. १२४८ वर्षे वैशाख शुदि २ बुधे श्रीनाणकीयगच्छे पुंनूड भार्या कडूयनिमित्तं पउवदेवादिपुत्रैः चन्द्रप्रभप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीशांतिसूरिभिः ॥ छ ॥

पंचतीर्थी.

२६३. सं. १५१० वर्षे फागण व. ३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० बाइधरमणि सतभाषर सतप्रथमां आत्मश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० सद्गुरूपदेशेन प्र० विधिना व्य० थरसी पूजति ॥

२६४. सं. १५१८ वर्षे माघ शु. ९ बुधे उकेशशुभगोत्रे श्रे० पूनड भा० फनी पुत्र सा० करमणेन भार्या कर्मादे धर्मपुत्र सा० समरा भार्या सहजलदे सुत तेजादिकुटुंबयुतेन श्रीप्रथमतीर्थंकरबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥ श्रीसिद्धपुरवा० ॥

२६५. सं० १६२४ वर्षे फागण शुदि ३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० गोधा भा० बाई हीराई पुत्र श्रेष्ठि रतना भार्या बाई कीबाई पुत्र श्रेष्ठि रायमल भार्या बाई मंगाई स्वकुटुंबेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० तपागच्छे श्री६हीरविजयसूरिभिः प्र० श्रीपत्तनवा० ॥

२६६. सं. १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० भीम भा० भरमादे सु० लखमण भा० रतनादे श्रेयसे सुतपांपवेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्रति० पिप्पलगच्छे श्रीमुनिचंद्रसूरिपट्टे श्रीसोमचंद्रसूरिभिः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(एक पंचतीर्थी उपरथी अक्षरो उडी जवाथी. बराबर वांची शकाय तेम नथी.)

२६७. सं. १५२२ वर्षे माह शु. ९ शनौ श्रीप्राग्वाटज्ञा० सं० चांगा भार्या गोरी सु० सं० भावडकेन भार्या धनाईसहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहत्तपापक्षे भट्टा० श्रीजिनरत्नसूरिभिः ॥ श्रेयो भवतु. ॥ (पंचतीर्थी)

२६८. सं. १५१२ वर्षे फागण शु. १२ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० धर्मसी भा० सपूरदे सुत वस्ता वानरजांजणसहितेन पितृमातृसर्वपूर्वजश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र०.... ....पिप्पलगच्छे भट्टा० श्रीउदयदेवसूरिभिः । काकरवास्तव्य. ॥

२६९. सं. १५०६ वर्षे माघ शुदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० सं० गोसल भा० बा० मटकू सु० सं० भोलाकेन पित्रोः श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० विद्याधरगच्छे श्रीविजयप्रभसूरिभिः ॥

२७०. सं. १५२५ वर्षे फागण शुदि ९ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० पोवा भा० रूडी सु० मोकलकालाभ्यां पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० महूकरगच्छे भ० श्रीधनप्रभसूरिभिः॥ ताल्ध्वजनगर ॥

२७१. सं. १६७९ वर्षे वैशाख शु० ६ शुक्रवारे पत्तनवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय सा. पदमा भा० वावी सु० सा. अचा भा० सुरमदे स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीबृहत्तपापक्षे भ० श्री...............

२७२. सं. १६७२ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीपत्तनवास्तव्य वृ० श्रीमालज्ञा० दो० मेघा भा० धनाई सु० दो० जीवा दो० कुंअरजीभ्यां स्वपितृश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे भ० हीरविजयसूरिपट्टे भ० श्रीविजयसेनसूरिपट्टे भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२७३. सं. १६३२ वर्षे वैशाख शुदि १० शुक्रे श्रीश्रीवंशे श्रे० कउजा भा० लाछू पुत्र श्रे० माणिक भार्या रूपिणिसुश्राविकया देवरवजीगिपहिराजसहितया स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

२७४. सं. १६७२ वर्षे माघ शु. १२ रवौ पत्तनवा० वृ० श्रीमालिज्ञा० दो० मेघा भा० भनाई सु० दो० कुंअरजीकेन भा० सपूरदे सु० दो० ऋषभदास इडजी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छ भ० श्रीविजयसेनसूरिपट्टे श्रीविजयदेवसूरिभिः॥

२७५. सं. १५१९ वर्षे माघ शु० ६ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० मडलिक भा० हासू सुत नरसाकेन पितृमातृश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीमुनितिलकसूरिपट्टे श्रीराजतिलकसूरीणाम्........

२७६. सं. १४५८ वर्षे माघ शुदि.... .... श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिभिः ॥

२७७ सं. १४८४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० बुधे प्राग्वाट० श्रे० विजा सुत माला देवा भा० बाईधरणूनाम्न्या श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

२७८. सं. १५०२ वर्षे माघ शु. २ दिने शुक्रवारे मुंडाडावास्तव्य सं० कुंभा भा० सितादे पु० सं० चोंत्ताधेन पु० सं० जाला गांमा गहिदा करसी हमीर जगमालयुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं तपागच्छे श्रीपूज्यश्रीजयकल्याणसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

२७९. सं. १५४९ वर्षे वैशाख शु. ५ रवौ श्रीअणहिल्लपुरपत्तने श्रीश्रीमालिज्ञातीय साकरीआ रत्ना भा० मूजी पु० वस्ता भा० वल्हादे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु० रीडा धरणा नारद संघा श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीमलधारगच्छे भ० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः प्र० साकरीआ चांगा ॥

२८०. सं. १५१६ वर्षे चैत्र वदि ४ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि वरसा भार्या वानू....तत्पुत्र डाहाकेन मातृपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारापितं........श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीकमलचंद्रसूरिपट्टे श्रीदेवचंद्रसूरिभिः ॥

२८१. सं. १५७९ वर्षे वै. शु. ६ सो. श्रीपत्तनवास्तव्य श्रीश्रीमालिज्ञातीय दो० हासा भा० लखी सु० दो० कीका भा० माल्हणदे सु० लटकणकेन ज्ये० भ्रा० दो० भादा अवज भ्रातृ दो० सहस्रकिरणयुतेन भा० मटकी प्रमुख कुटुंबपरिवृतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं वृद्धतपापक्षे भट्टा० श्रीधनरत्नसूरि....श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

२८२. संवत् १५३३ वर्षे पोष शुदि पूर्णिमा सोमे प्राग्वाट को० भादा भा० सोमी पुत्र को० हादाकेन भा० राजू सुत महिपा जीवा जांजणादियुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः कुमरगिरिनगरे ॥ ....

२८३. सं. १५३० वर्षे माघ शु. २ दिने प्राग्वाटज्ञा० श्रे० वाघाकेन भा० कपूरी पु० गेला जावड वीरा हरदास भा० मानू शाणी वींजू हांसलदे पौत्र वरजांग प्रमुखकुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ कुमरगिरौ ॥

२८४. सं. १५२७ वर्षे कार्त्तिक वदि २ शनौ श्रीमालज्ञातीय श्रे० भादा भार्या लालू सु० काचरेण भार्या मानू पु० महिराज सहितेन स्वभ्रातृपितृ व्यपूर्वजनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रति० चैत्रगच्छे धारणपद्रीयभट्टारकश्रीज्ञानदेवसूरिभिः ॥ धोलेराग्रामे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२८५. सं. १५१५ वर्षे माघ शुदि १ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० वइरसी भा० लष्मादे सु० वानर भा० मेठू सु० गहगाकेन पितृमातृ आत्मश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीमुप्रकरगच्छे भ० श्री धनप्रभसूरिभिः। पाररीवा० ॥

२८६. सं. ११८८ वर्षे फागणशुदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मेघा भा० राय....माणकदे स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारापितं ब्रह्माणगच्छे श्रीपततुटसूरिभिः ॥

२८७. सं. १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० आल्हा भा० करणू सुत व्य० मेहाख्येन भा० धनी सुत ५ हासा सहसा सालिग वडूखा रत्ना प्रभृतिकुटुंबयुतेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं पू० श्रीपुण्यरत्नसूरीणामु० का० प्रति० विधिना ॥

२८८. सं. १४१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० खद्धमे भा० मंसूणी पू० सोबा भा० सूगिरि पितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मसबरसूरिपट्टे श्रीधर्मसागरसूरिभिः ॥

२८९. सं. १५२३ वर्षे फा. शु. ८ बुधे श्रीमालज्ञातीयसा. रत्ना भा० पूरी सुता पहुती नाम्न्या भर्तृवज्रांगसहितया आत्मश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ॥

२९०. सं. १४९१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० सिंघा भा० माधलदे सुत सं० जांजणेन सुत सं. बाहड भा० तिलकूसहितेन पितृपितृव्यनिमित्तं स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० पू० श्रीसाधुरत्नसूरिभिः ॥

२९१. सं. १५५७ वर्षे वैशाख शुदि ६ शुक्रे श्रीओसवाल ज्ञा० मंडोवरागोत्रे सा० कमला भा० कमलादे। पु० सा० कुंरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भा० कपूरदेव्या आत्मश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धनसूरिभिः ॥

२९२. सं. १५२७ वर्षे पोष वदि ५ शुक्रे श्रीऊकेशवंशे कालागोत्रे सा० जगसी भा० जयतलदे पुत्र सा० देपतिसुश्रावकेण भा० चापलदे पुत्र सा० रूपा सा० मांडा सा० श्रीचंदमुख्यकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

२९३. सं. १४४८ वर्षे कार्तिक वदि सोमे.... .... श्रीआदिनाथबिंबं.... ..सुहडा सुहडादे स्वमातापित्रोः श्रेयसे का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

२९४. सं. १४६५ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय व्य० पूना भार्या पूनादे सुत व्य० देवाकेन स्वपित्रादिश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं श्रीदेवसुंदरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

२९५. सं. १५३६ वर्षे वै० व० ११ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० बागाकेन भा० रबकूश्रेयोर्थं द्वि० भा० जीवादेसुतेन श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० मलधारगच्छे श्रीगणनिधान सू०

कनासाना पाडाना मोटा देरासरमां मूलनायक श्रीशांतिनाथजीना गभारामांनी धातुप्रतिमाना लेखो.

२९६. सं. १४०५ वर्षे ज्येष्ठ शु० २ शनौ वायटज्ञा० व्य० गोवल भा० रूपनंद सुत जयसिंह भ्रातृमहुणा वरसि पित्रोः तथा स्वयं श्रोत्तरभाकहाय्यां स्वश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभप्रमुखचतुर्विंशतिपट्टः कारापितः । नागेन्द्रगच्छे श्रीर..........लसूरिभिः प्र० ॥ (चोवीशी.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२९७. सं. १६१७ वर्षे पोष शुदि १३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० महं. नारद भार्या नायकदे सुत महं० गेला भा० रमादे द्वितीयभार्या वना देकेन श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० छठीयाडा वा० ॥ (चोवीशी).

२९८. सं. १५८० वर्षे ज्येष्ठ शुदि १३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० पोवा भा० श्रीमलदे सु० भीमा भा० जासमभतुः विणिसुत। नेणउ रुडउ श्रीपाल भाणु रूडा भा० रमादे आत्मकुटुंबश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीखरतरमद्दूकरगच्छे भ० श्रीमुनिप्रभसूरि तत्पट्टे श्रीचारित्रप्रभसूरिभिः प्रति. ॥ वुडकमांकडा. ॥ (चोवीशी).

२९९. सं. १५२० वर्षे का० व० २ शनौ ओसवालज्ञा० वीरगोत्रे व्य० देवा भा० देवलदे सु० चांगा भा० लाछी पितृमातृ आत्मश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिं० का० पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय श्रीपासचंद्रसूरिपट्टे श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० विधिना श्रीअहिम्मदावादवा० प्र० नरपति उदराज सिंघराज ॥ (पंचतीर्थी)

३००. सं. १३१६ वैशाख वदि ११ शुक्रे देवश्रीपार्श्वनाथबिंबं कुरसीहश्रेयोर्थं. (पंचतीर्थी).

३०१. सं. १५१९ वर्षे माघ शुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० षोमा सुत लपा भा० साडू सुत खेता नरबदयो पितामह पितृव्य माडणश्रे० श्रीनमिनाथमुख्यपंचतीर्थी का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीराजतिलकसूरीणामुप० प्रति० श्रीसूरिभिः उदिरा वा० ॥ (पंचतीर्थी)

३०२. सं. १५१५ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० मीणा भा० महणादे पु० माला भोजी देवासहितेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० मातृपितृश्रेयसे श्रीपू० कालिकाचार्यसंताने पू० श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२०३. सं. १५५२ वर्षे माघ व. १२ बुधे प्रा० ज्ञा० श्रे० महिराज भा० अधकू पुत्र श्रे० हांसाकेन भा० चंगी पुत्री रूपाई सोनाई कीबाई भ्रा० हलादिकुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचंद्रगच्छे श्रीवीरदेवसूरिभिः श्रीमति पत्तननगरे ॥ (पंचतीर्थी).

२०४. सं. १५१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ वायडज्ञा० श्रे० गोइंद भा० सूहवदे सु० श्रे० वरसिंग पुत्र० श्रे० देपा पत्न्या श्रीनाथीनाम्न्या श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीमुनिसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखर-सूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ पत्तने वास्तव्य. ॥ (पंचतीर्थी).

२०५. सं. १५२३ वर्षे वैशाख वदि १ सोमे उपकेशज्ञा० वृती पितृ जाणा मातृ मंदोअरि वृद्धभ्रातृनगानिमित्तं घृतिनाथाकेन भा० नारिंगदे पु० विजादियुतेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भीम-पल्लीय भ० श्रीपासचंद्रसूरिपट्टे श्रीजयचंदसूरीणामुपदेशेन प्र. श्रीपत्तन वा० ॥ (पंचतीर्थी.)

२०६. सं. १५०९ वर्षे का. व. ३ शनौ श्रीनागरज्ञा० श्रे० राणा भा० रत्नादे सु० श्रे० पाताकेन भा० हीरु पु० आंबा खीमा हरिदासलयसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीसंभ-वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥ (पंचतीर्थी.)

२०७. सं. १५१९ वर्षे वैशाख वदि १० शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञा० श्रे० क्षीमा भा० तिलू सुत....धणपाल भा० पुहतीसहितेन स्व-पितृमातृभ्रातृश्रेयसे श्रीनमिनाथपंचतीर्थीबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे भ० श्रीमुनिसिंघसूरिपट्टे श्रीअमरचंद्रसूरिभिः ॥ रोजुआग्रामवास्तव्य. ॥

२०८. १५०७ वर्षे वै. वदि २ गुरौ प्रा० ज्ञा० सं० सेउ भा० मानू पु० कर्मसी भा० संपूरी....पितृमातृभ्रातृराउलश्रेयसे श्रीनमि-नाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपागच्छे श्रीरत्नसिंघसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३०९. सं. १५०६ वर्षे वैशाख शु. १२ गुरौ गूर्जरज्ञा० दो० गोपाल भा० साई पितृमातृश्रेयसे सुत धर्मासायराभ्यां श्रीशीतलनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भ० श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥ (पंचतीर्थी).

३१०. सं. १५५१ वर्षे पोष शु. १३ शुक्रे श्रीपत्तने श्रीश्रीवंशे श्रे० चांपा भा० भरमी पुत्रवनाकेन भा० धनी पुत्र प० कर्मसी प० लटकण भा० पूराई पु. कर्मसी भा० कर्मादे पुत्रतिहुणसी प० महुणप्रमुखपरिवारयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं श्रीअंचलगच्छेशश्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० श्रीसंघेन चिरं नंदतात् ॥ (पंचतीर्थी)

३११. सं. १५११ ज्येष्ठ वदि ९. श. श्रीपत्तने प्रा० ज्ञा० श्रे० सामल राकु सु० पाल्हा भा० कुतिगदे सुत कुंभा पासण सूरायुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपा श्रीरत्नसिंहसूरिभिः—

३१२. सं. १३७९ वर्षे आषाढ वदि ८ श्रीउपकेशगच्छे व्य० जगपाल भा० जासलदे पु० भीम भा० माणल पु० जाला जगसीह जयतायुतेन कुटुंबश्रेयसे चतुर्विंशतिपट्टः कारितः ॥ प्र० श्रीककुदाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिभिः ॥

३१३. सं. १४८८ वर्षे वैशाख सुदि ६ प्रा० श्रे० साल्हा भा० सलखणदे सुतमांडणेन भा० मवी सुत गोधा देवादियुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः श्रीतपागच्छाधिराजैः ॥ (पंचतीर्थी).

३१४. सं. १५०० वैशाख शु. ३ गुरौ उकेशज्ञा० सं० वरजू सुत शिवराजेन भा० फांई भ्रातृमहिराजादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअनंतनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३१५. सं. १३०० श्रीआदिनाथपंचतीर्थी का० प्र० (बराबर अक्षरो वंचाता नथी.)

३१६. सं. १२२२ माघ शु. ८ पार्श्वनाथपंचतीर्थी....,,

३१७. सं. १२७९ माघ वदि ६ ... .

.... श्रीआदिनाथबिंबं.

३१८. सं. १४६६ वर्षे वैशाख शुदि २ सोमे प्रा० ज्ञा० व्य०.... ....थिरपालेनात्मश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० मंडागच्छे श्रीपासचंद्रसूरिभिः ॥

३१९. सं. १३१४.... .... श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुणाकरसूरिशिष्यैः श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥

३२०. सं. १४९४ वर्षे वैशा. शु. २ शनौ प्राग्वा० व्य० सांल्डा भा० मूहनंद सुत राजा हापाकेन पितृनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० सिद्धान्तिकगच्छे श्रीमुनिसिंहसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

.... श्रीमहावीरबिं० का० प्रतिः ॥

३२१. सं. १४३२ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे ओसवालज्ञा० श्रे० भाहा भार्या तेजलदे सुत पदमसी सांगा तेषां श्रेयसे सुतदेवसहितेन श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छे सैद्धान्तिकश्रीनाणचंद्रसूरिपट्टे श्रीअक्षतचंद्रसूरिभिः ॥ श्राकस्थ. (पंचतीर्थी).

३२२. सं. १३१७ वर्षे वैशाख वदि........शनौ वद्येह श्रीमदणहिलपाटके श्रीमवडादगच्छे श्रीमालज्ञा० रत्नपुरीय श्रे० जसकुमार सु० श्रे० उदाश्रेयोर्थं पुत्र सोमाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीभावदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३२३. सं. १५०९ वर्षे माघ शु. १० शनौ प्रा० ज्ञा० श्रे० भीमा भा. मल्ही पुत्र श्रे० छांछाकेन भार्यामाणिकियुतेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीरामचंद्रसूरिपट्टे श्रीपुण्यचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्रावकैः ॥ (पंचतीर्थी).

३२४. सं. १४१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ९ गुरौ प्रा० ज्ञा० पितृ ठ० हरपाल श्रेयोर्थं सुत ठ० धरणिकेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीमानदेवसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

३२५. सं. १२१२ फागण शु. ६.... .... श्रीब्रह्माणगच्छे का० प्र० श्रीवीरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

३२६. सं. १४०९ वर्षे फाल्गुन वदि २ बुधे श्रीआंचलगच्छीय श्रे० पांचश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ श्रीमालज्ञातीयेन सुतआसाकेन ॥ (पंचतीर्थी).

३२७. सं. १२४०....................गूर्जरज्ञातीय............................ श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरीणामुपदेशेन............

३२८. सं. १३७१ वर्षे आषाढ शुदि ८ रवौ श्रीपल्लीवालज्ञा० ठ...........श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० ॥

३२९. सं. १३७४ ज्येष्ठ शुदि १३ श्रीमालज्ञातीय नरसोम भा० चांपलदेविश्रेयसे सुत अर्जुनेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० ॥

३३०. सं. १३०५ वर्षे ज्येष्ठ शु. १९ रवौ प्रा० ज्ञा०........ ....का० प्र० श्रीकमलाकरसूरिभिः ॥

३३१. सं. १४४० वर्षे पोष शु. २ बुधे श्रीमालीयश्रे० पासवीर भा० सिग्व सुत साडलेन जीवितस्वामिश्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनरप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३३२. सं. १७६८ वर्षे वैशाख शुदि ६ गुरौ अणहिल्लपुर वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीयवृद्धशाखायां सा० श्रीसुंदरदास सुत कपूरचंद्र निजपितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० पूर्णिमापक्षे भ० श्री० ५ श्रीमहिमाप्रभसूरिभिः प्रति०.... ॥

३३३. सं. ....

३३४. सं. १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ कंबोद्रवा० श्रीमालज्ञा० पितृव्य वयरा भा० वउलदे श्रे० सुत....पुनाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीउदयाणंदसूरीणामुपदेशेन प्रति० ॥

३३५. सं. १३८० वर्षे वैशा. शु. १० रवौ श्रे० महा भा० महणदे पुत्र कर्नसीह कडूआकेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

३३६. सं. १३७९ ....कमलप्रभसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिं० का० प्र० ....

....का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

३३७. सं. १९१३ वर्षे........वदि ८ शुक्रे.... ....
....श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीबृहद्गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिपट्टे श्रीरामचंद्रसूरिभिः ॥

३३८. सं. १४३७ वर्षे माघ शु. २ सोमे श्रीमाल पितृ सज्जन मातृ आमल पितृव्य नरपाल खीमउ....श्रीपार्श्वबिंबं सुत भरणेन का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीपजूनसूरिभिः ॥

३३९. सं. १४२९ वर्षे वैशाख शुदि ११ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० परीक्ष्य पेथडेन भा० प्रथमदेविश्रेयोर्थं श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीललितप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३४०. सं. १४१५ वर्षे ज्येष्ठवदि १३ ओसवालज्ञा० विनायक।५। गोत्रे सा० सुहडसीह भा० सुहागदेवि ससारदे पु० वीकमेन भ्रातृ खीमनिमित्तं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्रति० रुद्रपल्लीयश्रीगुणचंद्रसूरिभिः॥

३४१. सं. १४३३ ....श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीमुनिचंद्रसूरिभिः॥

३४२. सं. १२९३ वर्षे ककसूरि (गच्छे) श्रेष्ठि जासधर सुत सहदेव पार्श्वनाथबिंबं का० ॥

३४३. सं. १३७० वर्षे मडाहडीयगच्छे श्रे० उदा भा० जासल पु० अभयसीहनिमित्तं गाहपा भा० पाल्हणदेयुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीहृयाशीदेवसूरिपट्टे श्रीशांतिसूरिभिः ॥

३४४. सं. १५३६ वर्षे माहवदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं. माडण भा० माल्हणदे सुत मं. भाषर भा० करमी पित्रोः श्रेयसे पुत्र मं. देवसीकेन श्रीविमलनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमागच्छे भीमपल्लीयभ० श्रीभावचंद्रसूरिपट्टे भ० श्रीचारित्रचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रति० पाडलाग्राम वास्तव्य. ॥

३४५. सं. १५१७ वर्षे फागुण शु. ३ शुक्रे श्रीमालज्ञा० पितृव्य कान्हा ला. पितृ पातश्रेयोर्थं भ्रातृ पु० जावडेन श्रीनमिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीसाधुरत्नसूरीणां पट्टे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन प्रति० श्रीसंघेन ॥ वासीयाद्रिा० ॥

३४६. सं. १५२८ वर्षे महा शुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० खेता भा० रांउ सुत सहिसाकेन भा० लाछू सु० वर्द्धमानादिकुटुंबयुतेन भा० जाटाश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं पूर्णिमा० श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना । कंबोईवालाग्रामे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३४७. सं. १३४९ वर्षे वै. शु. ११ ....
श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० धना पुत्र श्रे० विजयसीह श्रीपाल्हदेवसूरिशिष्य श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३४८. सं. १५१२ वर्षे फागण शुदि ८ शुक्रे श्रीमालज्ञातीय श्रे० मांईआ भा० माणिकदे सु० मातिगकेन पितृमातृश्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्रति० श्रीनागेन्द्रगच्छे भ० श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३४९. सं. १५१६ वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञा० सं० भीमा भा० भावलदे सुत जांजणेन भा० धारु सुत अदादिकुटुंबयुतेन पितृव्यनायकश्रेयसे श्रीमहावीरबिंबं का० प्रति० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ मुंजिगपुरवास्तव्य. ॥ (पंचतीर्थी.)

३५०. सं. १५१८ का. शु. ११ गुरौ उकेशज्ञा० सं० माधव पत्न्या सा० नोंडा भा० हमीरी सुतया मारुनाम्न्या सुत सोनपाल ज्ञानर वस्ता सायरा स्वकुटुंबयुतया श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्री सोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । वृद्धनगरवा० ॥

३५१. सं. १४९३ वर्षे ज्येष्ठ शुदि २ सोमे उपकेश० कनउजगोत्रे धूपीया शाखीया व० पता सुत सोनाकेन निजमातुः समाऊक्षा निमित्तं श्रीआदिनाथबिंबं का० उप० ककुदाचार्यसंताने प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३५२. सं. १२९४ वर्षे चैत्र व. ८ शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० आसपा भा० प्रागलदे पुत्र गोराकेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीमहावीरबिंबं का० श्रीविजयप्र...सूरीणामुपदेशेन प्रति० ॥

३५३. सं. १२९१ वर्षे प्राग्वाटज्ञा० कुरपाल मातृ आशा श्रे०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु० पाल्हाकेन श्रीऋषभनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीरत्नाकरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३५४. सं. १२८८ वर्षे ज्ये० शु. १३ बु. गुर्जरज्ञा० ठ० काकू सुत ठ० रतनाकेन पितृश्रेयोर्थं [पार्श्वनाथ] बिंबं का० प्र० श्रीचंद्रप्रभसूरिशिष्यैः श्रीजिनेश्वरसूरिभिः ॥ ....

३५५. सं. १४३९ वर्षे पोष वदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० आसा भा०........दे श्रेयदो० सुत हादाकडूआभ्यां श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ मलगपुरी. ॥

३५६. सं. १३८० वर्षे ज्येष्ठ शु. १० प्रा० ज्ञा० श्रे० बूटा पुत्र साल्हाबांगणाभरीपित्रोः श्रे० आदिनाथबिंबं का० प्र० बृ. श्रीभवदि....सूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३५७. सं. १४०९ वर्षे वैशा. शु. २....पीपायगोत्रे ठ० लाला पुत्र ठ० सांडा ठ० उदेमलेन माता नीमलदे श्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीधर्मदेवसूरिभिः ॥

३५८. सं. १२९९.... ....

३५९. सं. १४४७ वर्षे फागण शुदि ८ सोमे प्रा० ज्ञा० संघवी मेघा भा० मीणलदेवि श्रेयोर्थं सुत सं० परबतेन पितृमातृश्रेयसे श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीरत्नाकरसूरिपट्टे प्र० श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३६०. ... .
श्रीपार्श्वनाथबिंबं.

३६१. सं. १६८३ वर्षे ज्येष्ठ शु. ६ गुरौ श्रीपत्तननगरे श्रीश्रीमालज्ञातीय संविशवर्धद भार्या सोभागदे पुत्र करमसी भार्या टबका तस्याः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र पदमसी नाता तथा समस्तकुटुंबयुतेन श्रीआगमगच्छे भ० श्रीकुलवर्द्धनसूरीणामुपदेशेन श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० ॥

३६२. सं. १४५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ सोमे उपकेश० ज्ञा० महं० मांगण भा० सींगारदे पु० मलयसिहेन भ्रातृ बाहू भ्रातृजाया वल्हणदे श्रे० श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नसूरिभिः ॥

....[श्रीपार्श्वनाथ].... ....

३६३. सं. १५५५ वर्षे मार्ग शु. १२ शुक्रे श्रे० बाला भा० रगी पुत्र वेला भा० मरत्व स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसंघेन. ॥

३६४. सं. १४८४ वर्षे वैशाख शुदि ८ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० साह माल्हाकेन स्वभार्याअमकूश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्रसूरिभिः ॥

३६५. सं. १४३७ वर्षे फागुण शु. २ शुक्रे ओसवालज्ञा० श्रे० देल्हा० भा० देबला पुत्र धरणिगनिमित्तं श्रीनमिपंचतीर्थी का० प्र० श्रीनन्नदेवसूरिभिः ॥

३६६. सं. १४६१ ज्येष्ठशुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० काल्हू भा० कपूरदे सुत नुणाकेन पित्रोः श्रे० पितृव्यधुध भ्रातृ मेहरु पुत्र अरसीश्रेयसे च श्रीवासुपूज्यबिंबं का० पिप्पलगच्छे प्र० श्रीसागरचंद्रसुरिभिः ॥

३६७ सं. १४८६ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० ....मातृभावलदेश्रेयोर्थं सुतक्षीमाकेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीमाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः ॥

३६८. सं. १४९९ वर्षे वैशाख व. ५ ऊकेशवंशे पत्तनवास्तव्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भण० पेथड भा० हमीरदेव्या पुत्रीअवीकर्माईसहितया निजभर्तृश्रेयसे श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

....श्रीपार्श्वनाथबिंबं

३६९. सं. १५१३ वर्षे वैशाख शुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० ठाकुरसी सुत रत्ना भा० हा. हीदु जीवितस्वामिश्रीशांतिनाथपंचतीर्थी का० प्र०.... ... .

३७०. सं. १५१५ वर्षे ज्येष्ठ शु. ५ प्रा० व्य० श्रीसाकेन भा० रांकु पुत्र पुजा कुजा भा० जीविणि देउ प्रमुखकुटुंबयुतेन निजश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीमुनिसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः पाल्हणपुरग्रामे. ॥

३७१. सं. १२२८ फा. शु. २.... ....
भ्रात जसर्का.......जाल्हकेन महावीरबिंबं का० प्र० ॥

३७२. सं. १४८२ वर्षे वैशाख शु. ६ रवौ उपकेश० रोयगण गो० सा० वाला पु० रत्ना भा० पांची पु० देपाडेलसाजणमेघापुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे भ० श्रीमलयचंद्रसूरिपट्टे श्रीपद्मशेखरसूरिभिः ॥

३७३. सं. १३६४ वर्षे श्रे० कान्हा भा० सुहडादे पुत्र सिरपाल देवधर तेजायुतेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० रत्नपुरीयश्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥

३७४. सं. १४६८ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे भावसार........ ....नांपाकेन पित्रोःश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० पूर्णिमा प० श्रीजयसिंहसूरीणामुपदेशेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३७५. सं. १५६३ वर्षे आषाढ शु. ७ गुरौ पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० व्य० नाथा भा० वीरु सुत व्य० सोना भा० सोनाई सुत व्य० कडूआकेन निजकुटुंबयुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीनिगमप्रादुर्भावक—परमगुरुश्रीइंद्रनंदिसूरिभिः ॥

....

(मूलनायक शांतिनाथना मोटा देरासरना गभाराना धातुप्रतिमाना लेखो संपूर्ण थया).

महावीरस्वामिना गभारानी प्रतिमाना लेखो.

३७६. सं. १५१२ वर्षे........श्रीऊकेशवंशे माल्हूगोत्रे सा० मालगहांसू पुत्र सा० लालाकेन भा० ललतादे पुत्र चाचां वउडा हर्षा-प्रमुखपरिवारयुतेन श्रीविमलबिंबं का० प्रति० श्रीखरतरश्रीजिनभद्रसू-रिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

३७७. सं. १४४१ वर्षे फागुण शु. १० सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृमंडलिकमातृमाणिकदेविभ्रातृचाहडश्रेयोर्थं ठ० वणदेवरामाभ्यां श्रीशी-तलनाथबिंबं का० श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन.

३७८. सं. १३८१ वर्षे आषाढ वदि........खरतरश्रीजिनकुशल-सूरिभिः श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रेयोर्थं देहसुतेन धामासुश्रावकेण. ॥ (पंचतीर्थी.)

....श्रीऋषभबिंबं का० प्र० यशोदेवसूरिपट्टे श्रीशांतिसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीआदीश्वरजीना गभारानी धातुप्रतिमाना लेखो.

पंचतीर्थी.

३७९. सं. १३७६ वर्षे मार्ग. शुदि ९ बुधे भर्थजश्रेयोर्थं श्रे० वसेरे मालेन कुटुंब........कारितं......स्वामिश्रीमदनसूरिप्रतिष्ठितं ॥

३८०. सं. १३३८ वर्षे फागण शु. ७ सोमे पितृ वस्तपाल मातृ पुनी पुत्र जाजाकेन पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० ॥

३८१. सं. १४०५ वैशा. शु. ३ भोमे प्राग्वा० पिता जांजण माता मूहदेवि तयोः श्रेयसे तथा ठ० वउलाश्रेयसे ठ० वीसलेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ॥

३८२. सं. १३९४ वर्षे चैत्र वदि ६ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० हलका भा० हीरादेवि पुत्र........सरवणेन मातृपितृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० ॥

बाबू पन्नालाल पूर्णचंदजीना देरासरना मूलनायकजीनो लेख.

३८३. स्वस्तिश्रीः। संवत १५९८ वर्षे पोष वदि १ सोमे श्रीऊकेशवंशे व्यव० परवत भा० फदकू सत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्रीपालपरिवारेण सोक्तं (?) वित्तेन कर्मनिर्जरार्थं स्वाप्तपरिवारश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्रति० श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीयभ०श्रीमुनिचंद्रसूरिपट्टे श्रीविनयचंद्रसूरीणामुपदेशेनेति भद्रं ॥

३८४. सं. १५११ वर्षे आषाढ वदि ९ ऊकेशवंशे भ० गोत्रे आभूसंताने सा० पारस भा० पांचू पुत्र कम्मा भा० साधू पु० वज्रांग-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावकेण भा० गांगी लखमाई भ्रा० जीवा वज्रांगद प्रमुखपरिवारसहितेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकृतिभिः श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥ (चोवीशी.)

३८५ सं. १५७८ वर्षे माघ वदि ९ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० नारद भा० रंगी पु० मं० वरजांगेन भा० जीवू पु० मं० कान्ह मं० मेघराजादिसमस्तकुटुंबयुतेन काकरवास्तव्या धर्मभगिनी श्रा० मांजूश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीयभ०श्रीचारित्रचंद्रसूरिपट्टे भ०श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० पत्तनवा० ॥ (पंचतीर्थी.)

३८६. सं. १६३० वर्षे पोष वदि ४ सोमे श्रीगंगेटवास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञातीय से० देवदास भा० छा. देवलदे सु० से० भजा श्रीपद्मप्रभबिंबं कारापितं श्रीतपागच्छे श्रीहीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं. ॥

[पाटणना लेखो पूर्ण थया.]

(वाघपुरना देरासरमांनी एक प्रतिमा उपर सं. १४९३ गुणप्रभसूरि एटलुं वंचाय छे.)

माणसा.

मोटा देरासरनी प्रतिमाओना लेखो.

३८७. संवत १८९३ वर्षे आश्विन शु. १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां सा. हीराचंद जोइताराम तस्य भार्या धमरुचर कारापितं श्रीवासुपूज्यजिनबिंबं प्रतिष्ठितं श्रीअंचलगच्छे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२८८. संवत् १७८९ वर्षे मार्ग. शु. ९ अंचलगच्छे प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० वल्लभदास पुत्र माणिक्यचंद्रेण श्रीविमलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं........श्रीविद्यासागरसूरीणामुपदेशेन ॥

२८९. सं. १६१० वर्षे श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ॥

२९०. सं. १८९४ वर्षे माघ शु० ५ माणसानगरे सा० मलुकचन्द भार्या दरसन तया श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं कारितं ॥

२९१. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां सा० मानचंद वखतचंद तद्भार्या पुंजी तया श्रीमहावीरजिनबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे संविग्नरूपविजयगणिभिः ॥

२९२. सं. १६७० वर्षे वैशाख शु. ८ श्रीमालज्ञातीयवृद्धशाखायां सा० लाला भा० ललता सुत कानजी तेन श्रीमुनिसुव्रतजिनबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः ल: आचार्यविडसार.

२९३. सं. १५१६ वर्षे वैशाख व. ४ श्रीपद्मप्रभजिनबिंबं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकारश्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

२९४. सं. १५२९ वर्षे माघ शु. ५ गुरुवासरे श्रीमालिज्ञातीय ....श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनाणंद्रगच्छे गुणसमुद्रसूरिपट्टालंकारगुणदेवसूरिभिः छत्रीआरीग्रामे ॥

२९५. सं. १४७९ वर्षे पौष व. ५ शुक्रे अंचलगच्छे कीर्त्तिसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीमालज्ञा० परि धना भ्रा० आदिसुजन परि हीरा कानजी. पितृमातृपुण्यार्थं श्रीचन्द्रप्रभजिनबिंबं स्थापितं ॥

२९६. सं. १३८७ वर्षे माघ शु. ५ श्रीचंद्रप्रभजिनबिंबं. ॥

२९७. सं. १३५५ वर्षे गुर्जरज्ञा० पितृमातृपुण्यार्थं श्रीशांतिनाथजिनबिंबं स्थापितं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३९८. सं. १६८७ वर्षे माघ शु. ५ श्रीसकलसंघेन श्रीचंद्रप्रभजिनबिंबं कारापितं पद्मानंदीगुरूपदेशात् ॥

३९९. सं. १६८१ वर्षे फाल्गुन शु. १० श्रीमहावीरजिनबिंबं ॥

४००. सं. १८९४ वर्षे माघ शु. १० श्रीमालज्ञा० श्रीशांतिनाथजिनबिंबं ॥

४०१. सं. १८९४ माघ व० ५ श्रीपद्मप्रभजिनबिंबं ॥

(मोटा देरासरनी धातुप्रतिमाना लेख पूरा थया.)

नाना देरासरजीनी प्रतिमाओना लेखो.

४०२. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे राजनगरे ओसवालज्ञातीयवृद्धशाखायां सा० कमा सा. मोन....श्रीअभिनंदनजिनबिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीशांतिसागरसूरिभिः ॥

४०३. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे राजनगरे ओसवालज्ञा० वृद्धशाखायां सा० मुषणदासस्य पुत्री मंछी तया श्रीसुविधिनाथजिनबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

४०४ सं. १७२६ वर्षे वैशाख शु. ६ शुक्रवासरे अहमदावाद वा० ओसवालज्ञा० सा० सिजा भ्रा० मुजाणचंद्र तत्पुत्र देवजी भा० जीवी....तया श्रीशांतिनाथजिनबिंबं कारापितं ॥

४०५. सं. १४८८ वर्षे वै. व. २ गुरौ हुंबडज्ञा० श्रे० श्रीआदिनाथजिनबिंबं प्रतिष्ठितं श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

४०६. सं. १८९३ शाके १७५८ वर्षे माघ शु. १० बुधे ऊंझाग्रामवा० रामकुंवर तया वासुपूज्यजिनबिंबं कारापितं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४०७. सं. १५२३ वर्षे वैशाख व० १३ आशापल्लीवा० उकेशज्ञा० गांधी वरसिंह गांधी समधर भ्रा० आदिकुटुंबयुतेन व्हालीश्रेयसे श्रीसुमतिनाथजिनबिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

४०८. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे ओसवालज्ञा० वृद्धशाखायां सा० कपूर सा० चतुर भा० भूरा श्रीविमलनाथजिनबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं सागरगच्छे ॥

४०९. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे राजनगरे ओसवालज्ञातीय........सा० भूषणदास तत्पुत्री सांकली तया श्रीकुंथुनाथजिनबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सागरगच्छे. ॥

४१०. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे ओसवालज्ञा० जेठा माणेकचन्द इत्यनेन श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं का० ॥

४११. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे राजनगरे ओसवालज्ञा० वृद्धशाखायां सा० मुषणदास भा० वाली श्रेयोऽर्थं श्रीधर्मनाथजिनबिंबं का० प्रतिष्ठितं सागरगच्छे श्रीशांतिसागरसूरिभिः ॥

४१२. सं. १६९९ वर्षे पौष शु. १५ सा० जेठा शवराजेण चंद्रप्रभजिनबिंबं कारितं ॥

४१३. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे राजनगरे ओसवालज्ञा० वृद्धशाखायां सा० दलीचंद अभेचंद श्रीविमलनाथजिनबिंबं कारितं प्र० अंचलगच्छे शांतिस्वामि प्रतिकरा (?) ॥

४१४. सं. १५०५ वर्षे माघ शु. १० श्रीपद्मप्रभस्वामिबिंबं प्र० श्रीअंचलगच्छे श्रीप्रजा—श्रीगच्छनायक श्रीजयाकरसूरीश्वराणामुपदेशेन ॥

४१५. सं. १५४४ वर्षे वैशाख शु. २ श्रीअनंतनाथजिनबिंबं का० प्र० तपागच्छे सुमतिसाधुसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजापुर.

पद्मावतीना देरासरना धातुप्रतिमाना लेख.

४१६ सं. १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शनौ माता शोपु श्रेयसे सुत सेलोकेन श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं श्रीपासडसूरिभिः॥ (पंचतीर्थी.)

४१७. सं. १६८७ वर्षे तपागच्छे लघुशाखायां पूज्यहेमसोमसूरिप्रतिष्ठित. श्रीविद्यापुरवास्तव्य दो० विमलशील लखमशी दो० देवसी वासिआ दोशी नाथा दो० वछुपाल दो० रतनसी दो० वजीया दो० लहुजी दो० शिवजी जयचंद दो० माणिक राजपाल शा० वर्धमानमणि वीरजीना माणिक्य वारदासणे उंअरी आरामदासक कुअरिआ सा० वासीआ कीका श्रीसंघेन कारितम् ॥

४१८. सं. १४७१ वर्षे माघ शु. १० रवौ श्रीमालज्ञातीय सं. सामल भा० माघलदे सं० गोआ भा० रणादे सुत तजीव उह प्र० परवतश्रेयसे सुत पांचाकेन पितृव्य–पितृ–मातृ–भ्रातृनिमित्तं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमुनिचंद्रसूरिपट्टे श्रीवीरसूरिभिः ॥ (चोवीशी.)

४१९. सं. १५१३ वर्षे माघ शु. ६ रवौ इलदुर्गवास्तव्यश्रीश्रीमाल ज्ञा० श्रे० विरु सुतपांचाकेन भा० चांपू सूत नाथा नारदादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० आसापुरे.... ....सूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

४२०. सं. १५२७ वर्षे माघ शु. १३ ओसवालज्ञा० मं० पतापण भा० पासू सु० मणोर भा० अमरादे. शालिग भा० अहिवदे. कामा भा० कमलादे. कोका भा० समाई. कामा पु० देवदास कुटुंबयुतेन कामाकेन पितृश्रेयोर्थं स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥(पंचतीर्थी.)

४२१. सं. १५७५ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वीसल भा० मेघू सुत सा० भाभा सेतू सु० मना गणपति महिपति लहूया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माणिक डाहाया रहीया श्रे० लटूया भा० लखमादे भा० राजलदे सुत मांगायुतेन श्रीपद्मप्रभस्वामिचतुर्विंशतिपट्टः का० श्रीआगमगच्छे श्रीमुनिरत्नसूरिपट्टे श्रीआनन्दरत्नसूरिभिः प्र० श्रीपडायत अधुना वीजापुरवास्तव्य. ॥ (चोवीशी.)

श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथना देरासरना लेखो.

४२२. सं. १४६५ वर्षे माघ शु. २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० सं० गेलासुतेन सं० रामाकेन श्रीशान्तिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० आगमिक श्रीअमरसिंहसूरीणामुपदेशेन प्र० विधिना. ॥ (पंचतीर्थी.)

४२३. सं. १४८५ वर्षे ज्येष्ठ मासे उदलपुरे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वरदे भ० रूपी सु० डुंगर भ्रा० हीरा वीसा भा० जसमादे आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० श्रीआगमगच्छेशश्रीअमरसिंहसूरिपट्टे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना. ॥

४२४. सं. १४८८ वर्षे ज्येष्ठ व. ९ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० नोडा भा० रूदी पुत्र शिवाकेन भा० तेजू भ्रा० अर्जनादि कुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयोर्थं श्रीसुपार्श्वबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ (नानी पंचतीर्थी)

४२५. सं. १५०७ वर्षे ज्येष्ठ शु. ६ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० पाषा सु० मिंत्रा भा० सुहवदे सु० श्रे० कीता भा० सुहूली सु० श्रे० देवाकेन वृद्धपितृश्रे० अर्जनश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः पूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना. ॥ (चोवीशी).

४२६. सं. १५११ वर्षे पोष शु. १३ दिने श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जसा भा० जसमादे सु० डुंगरकेन पितृमातृश्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्रीसुवि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थिनाथबिंबं का० प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीमुनिचंद्रसूरिभिः महिसाण वास्तव्य. ॥ (पंचतीर्थी.)

४२७. सं. १५४१ वर्षे प्राग्वाटज्ञा० व्य० राजा भा० नीणू सु० कला भा० बाई रक्षिमिणि सु० वलाप्रमुखयुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥ (नानी पंचतीर्थीनो लेख.)

४२८. सं. १५४७ वर्षे माघ व० १३ रवौ श्रीमंडपे श्रीमालज्ञा० सं० गोल्हा भा० सामा पु० सं० मेघा पु० सं० राजा भा० भांगु पु० सं० तावकेन भा० ४ बाईजीवादे सुहागदे सक्रादे धनाई सु० सं० हीरा भा० रमाई सं० भोलादि कुटुंबयुतेन १०४ बिंबं कारयित्रा निजश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्रति० तपागच्छे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

४२९. सं० १५७२ वर्षे वैशाख शु. ९ सोमे वृद्धउपकेशज्ञा० श्रे० भोजा भा० लषमाई सु० लप....र भा० कुतिगदे सु० लहुआ स्वपितृमातृश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीउदयचन्द्रसूरिभिः तत्पट्टे श्रीमुनिराजसूरिभिः विधिना कटीवास्तव्य शुभं भवतु. (पंचतीर्थी.)

४३० सं. १५७६ वर्षे वैशाख शु. ६ सोमे विद्यापुरवास्तव्यश्रीश्रीमालीज्ञा० मं० देवा भा० अमरी सु० माकाकेन भा० रूपाई सु० चांगा आनन्द धर्मसी रत्नसी कमलसी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० पिप्पलगच्छे भ० श्रीविनयसागरसूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु. श्रीरस्तु. (चोवीशी.)

४३१. सं. १६०३ वर्षे ज्येष्ठ शु. ४ गुरौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीशुभचन्द्रोपदेशात् ज्ञा० टीडगोत्रे सा० लहुआ भा० प्रेमी सु० सं० भाणा सं० राणा भा० रामती सु० सं० रवा भा० रजादे भ्रा० जूठा रणधा खीमा रं....एते श्रीसुविधिनाथबिंबं प्रणमंति. (चोवीशी.) *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमहावीरस्वामीना देरानी प्रतिमाओना लेखो.

४३२. सं. १५५३ वर्षे ज्येष्ठ शु. २ दिने ओसवालज्ञा० सा० जिणदे भा० राणी पु० धना भा० कुअरि पहिराज भा० प्रेमलदे भ्रातृवना-निमित्तं स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृ० बोकडीयाव-टंके भ० श्रीमुनिचंद्रसूरिभिः ईंद्रीग्रामे ॥ (पंचतीर्थी.)

४३३. सं. १५७३ वर्षे फागण शुदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० आसा सुत सं० रंगा भा० रंगादे सुत डूंगर सं० ठाकर प्रमुख कुटुंबयुतेन आत्मश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथचतुर्विंशतिपट्टः श्रीआगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरि तत्पट्टे श्रीसोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना. विजापुर वास्तव्य. ॥ (चोवीशी.)

४३४. सं. १५८४ वर्षे चैत्र व. ५ गुरौ श्रीहर्षपुरवास्तव्य श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय सं० हांसा भा० हांसा सुत सं० अर्जुन भा० अमरादे नाडर्पा स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीधनरत्न-सूरि श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः ॥ (चोवीशी).

४३५. सं. १....वर्षे वैशाख शुदि १० दिने श्रीश्रीमाली व्य० बवा भा० सारू सुतेन........पिहिराज देवा गोपीयुतेन व्य० प्रथमाकेन भा० हे........त्र नर्बदप्रमुखकुटुंबसहितेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीभा-वडारगच्छे श्रीभावदेवसूरिभिः वडलीवास्तव्य. ॥ (उपरनी खंडित पंचतीर्थी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीशान्तिनाथना देरानी प्रतिमाना लेखो.

४३६. सं. १४८७ वर्षे माघवदि ८ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० विजापुर वेडा वास्तव्य श्रे० गोवल भा० गुरदे सु० सहदे लघु भ्रातृकनाकेन भ्रातृज मेला—मांइया—भोलादि—सहितेन स्वमातृश्रेयसे श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीवृद्धतपागच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥ (चोवीशी).

४३७. सं. १५१७ वर्षे माघ शुदि प्रा० श्रे० पथा भा० शाणी सु० मालाश्रेयोर्थं भ्रातृभीलाकेन भ्रातृतेजपाल—मेलादि—कुटुंबयुतेन श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

४३८. सं. १५३१ वर्षे माघ व. ८ ऊकेश सा० समधर भा० पादू पु० हरदासेन भ्रातृ जूठा शाणा भा० धनी जसमादे रमाई पुत्र हीरा धीरादिकुटुंबयुतेन श्रीआदिबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीमद्लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

४३९. सं. १५६४ वर्षे फागण वदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धणसी भा० गोमती सु० लाला पद्मा चांपाकेन स्वपितृभ्रातृसामलश्रेयोर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीआणंदसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

श्रीकुंथुनाथना देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

४४०. सं. १४८९ वर्षे माघवदि २ शुक्रे धंधूकावास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मुंटा भा० लीलू सुतआसाकेनागमिकगच्छे श्रीअमर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंहसूरिपट्टे श्रीहेमरत्नसूरिगुरूपदेशेन श्रीपार्श्वनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः तयोः श्रेयसे कारितो विधिना प्रतिष्ठितः ॥ (चोवीशी).

४४१. सं. १५५३ वर्षे आषाढ शु. २ रवौ श्रीश्रीमालीज्ञातीय सा० सीधर भा० सोही सु० सा० जूठा भा० जसमादे सु० सा० महिपति भा० पद्माई सु० सा० डाहीआ--पोईआ--वखानामकैः श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्र० मलधारगच्छे श्रीसूरिभिः । सा० डाहीआ पूजनार्थं ॥ (पंचतीर्थी).

श्रीऋषभदेवना देरानां प्रतिमाओना लेखो.

४४२. सं. १५१० वर्षे आषाढ शु. २ वीसलनगरे ऊकेश क० वीरूआ भा० विल्हणदे पु० मुंभवेण भा० भरमादे पु० हेमा भा० हेमादे पु० ईसरादिकुटुंबयुतेन श्रीशीतलबिंबं का० प्र० तपागच्छेश-श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

४४३. सं. १५१४ वर्षे माह शुदि ६ बुधे उपकेशज्ञातीय लघुसंतानीय मं० सामल भा० लाडी पु० केल्हाकेन भा० केल्हणदे पुत्र धीर सहितेन आत्मश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीउपकेशगच्छे श्रीद्विवंदनीकवृद्धशाखायां श्रीसिद्धसूरिभिः ॥ डाभीग्रामे । श्रीः (पंचतीर्थी).

४४४. सं. १५६६ वर्षे पोष वदि ९ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० देवा भा० देवलदे सु० हांसा भा० हांसलदे सुत कामा कोका वीरा वरदे हांसाकेन स्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथचतुर्विंशतिबिंबं कारितं पिप्पलगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिपट्टे श्रीविनयसागरसूरिप्रतिष्ठितं । वीजापुर वास्तव्य. ॥

[एक प्रतिमा उपर सं. १२६० एटलुं वंचाय छे..........]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीअरनाथना देरानी प्रतिमाना लेखो.

४४५. सं. १५७८ वर्षे माघ वदि ८ रवौ श्रीमालीज्ञा० व्य० ओधरेण भा० मटू पुन्या पत्तनवासि व्य० झबा भा० पोमी पुत्र डुंगर भा० धरमीनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्री-हेमविमलसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु. (पंचतीर्थी).

४४६. सं. १५८२ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १२ ऊकेशवंशे कूकडा चोपडा गोत्रे मं० गणीया भार्या तारू पुत्र मं० पंचायणेन पत्तनवास्त-व्येन भा० कूआरि पुत्र मं० मंगलादिसहितेन पुण्यार्थं श्रीविमलनाथ-बिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिपट्टे श्रीजिनमाणिक्य-सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं ॥

४४७. सं. १६३६ वर्षे फागण शुदि १० गुरौ वृद्धनगरवास्तव्य ओसवंशीय वु० धना भा० भजाई पुत्र देवीदास भा० देवलदे प्रभृति-कुटुंबैः श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छाधिराजश्रीहीरविजय-सूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

श्रीगोडीपार्श्वनाथना देरानी प्रतिमाना लेखो.

४४८. सं. १५०३ वर्षे माह वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० रतन सुत मं० राउल भार्या रमादे तयोः सुत० मं० हरिदासेन मं० लूंढा पातायुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रति० आगमगच्छे श्रीसिंहरत्नसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४४९. सं. १५१० वर्षे मागशर शु. १५ दिने प्राग्वाटज्ञा० व्य० देवराज भा० रत्नू सुत हालाकेन भा० कमिणि सु ....कादिकुटुंबयुतेन स्वमातृश्रेयोर्थं श्री-आदिनाथचतुर्विंशतिपट्ट: का० प्रति० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः सांबोसण-ग्रामे ॥ (चोवीशी).

४५०. सं. १५१६ वर्षे आषाढ शु. ९ शुक्रे वेडावास्तव्य श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० पाता भा० पाल्हणदे सुत सालिगनाम्ना भा० धनी-सुत नरपालरामाप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृद्ध-तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

४५१. सं० १५३० वर्षे माह शुदि १२ रवौ प्राग्वाटज्ञातीय दोसी तुला भा० नामनदे सुत दो० सालिगेन भार्या रमी तथा भार्या जसो भ्रातृपुत्र सधारणसहितेन भ्रातृसीधरश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० वृद्धतपापक्षे भ० श्रीजिनरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ (उपरनी पंचतीर्थी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाडोल.

श्रीपार्श्वनाथजीना देरासरनी प्रतिमाओना लेख.

४५२. संवत् १५७९ वर्षे वैशाख शुदि ५ सोमे श्रीविद्यापुरवास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञातीय मं० हांसा भार्या हमादे सुत मं० वरदे भार्या नाथी सुत जगमाल जद्रता अदा प्र० कुटुम्बयुतेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारापितं स्वश्रेयसे पीप्पलगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

४५३. सं. १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ८ बुधे श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्य श्रीओसवंश्य सो० जेसिंग भा० जासलदे सु० भुजबल भा० सांतू तथा हंसाई सु० सो० (भा) लाईयाडेन भा० धांडु सु० सो० लटकण हता मेधा सचवीर पंचायण पासवीरगोत्र श्रीचन्द सूरचंद प्र० कुटुम्बयुतेन लटकण भा० ललितादे सु० देवचन्दश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंडेरगच्छे श्रीईसरसूरिभिः ॥

४५४. सं. १५१० वर्षे प्राग्वाट (तुंडा) उंडावास्तव्य व्य० गांगा भार्या टीबू सुत व्य० गहिदाकेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेश्वरैः श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

४५५. सं. १५९५ वर्षे माघ वदि १२ लाडउलिनगरवास्तव्य ओसवालज्ञातीय शा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र नरसिंगेन भार्या नायकदे पुत्र सा० जयवन्त श्रीवन्त देवचंद सूरचंद–हरिचंदप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कोरंटगच्छे श्रीकक्कसूरिभिः ।

(नवी नीकळेल आचार्यनी मूर्ति नीचेनो लेख.)

४५६. सं. १३२५ वर्षे चैत्र वदि ५ रवौ चैत्रवालगच्छे श्रीपद्म-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्द्रसूरिशिष्यश्रीशालिभद्रसूरिमूर्त्तिः। शिष्यरविचंद्रेण कारिता। प्रतिष्ठिता श्रीधर्मचंद्रसूरिभि. ॥

नवी नीकळेल मूल नायक शांतिनाथनी डाबी बाजुनी प्रतिमानो लेख.

४५७. सं. १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० संघवइजाकेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे चतुर्थशाखायां श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना ॥

मूल नायकजी नीचेनो लेख.

४५८. सं. १५३० वर्षे माघ व. २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० भोजाकेन श्रीशान्तिनाथबिंबं कारितम्. ॥

डाबी बाजुनी प्रतिमानो लेख.

४५९. सं. १५३० वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० तेजाकेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं ॥

मूल नायकनी जमणी बाजुनी प्रतिमानो लेख.

४६०. सं. १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० तेजाकेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना ॥

४६१. सं. १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० देवदासेन विमलनाथबिंबं कारितम् ॥

४६२. संवत् १३२६ वर्षे चैत्र वदि १२ शुक्रे पल्लीवालज्ञातीय श्रे० धणपाल भा........का० चित्रावलगच्छे श्रीशालिभद्रसूरिशिष्यैः श्रीधर्मचन्द्रसूरिभिः श्रीशान्तिनाथबिंबं प्र० ॥

४६३. संवत् १३२६ वर्षे चैत्र वदि १२ शुक्रे पल्लीवाल ज्ञा०.... ....श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चित्रावलगच्छे शालिभद्रसूरिशिष्यैः श्रीधर्मचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४६४. सं. १५१६ वर्षे वैशाख शुदि १ सोमे हुंबडज्ञातीय श्रे० देपाल श्रे०.... ....चन्द्रप्रभस्वामिचतुर्विंशतिबिंबं कारापितं स्वपुण्यार्थं । प्रतिष्ठितं बृहत्तपागच्छे भ० जिनरत्नसूरिभिः ॥

४६५. सं. १४९७ वर्षे वै. व. ४ श्रीमालज्ञा० श्रे० कर्मा भा० वर्जू सुतनिरिआकेन भा० अमरी पुत्र जातड भ्रातृ नाना तद्भा० सइभू पु० राघव भ्रातृ हरिराजादियुतेन नांपा भ्रात्रा आत्मश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा० श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ॥

४६६. सं. १५३० वर्षे माघ व. २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० शिवा भा० सिरियादे पु० धीरा भार्या ढोलू पु० मातृ २ पद्मासहितेन आत्मपुण्यार्थे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे चतुर्थशाखायां श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना । छ ॥ लाडउल वास्तव्य०

४६७. सं. १५१० फा. व. १० उकेशज्ञातीय मं० जेसा भा० सारु सुत मं० पोचाकेन भा० वाहूली सुतनाथारत्नादिकुटुंबयुतेन श्रीपद्मप्रभबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश्वरैः श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिपुरंदरैः । चांगउडग्रामे ॥

४६८. संवत् १५८७ वर्षे माघ वदि ८ गुरौ श्रीवीजापुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय म० हर्षा भार्या लाड म० रूपाकेन भार्या जीवादे सुत सोमायुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं श्रीआगमगच्छे श्रीउदयरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितम् ॥

४६९. सं. १५६६ वर्षे पोष वदि ५.... .... श्रीसुमतिनाथबिंबं कारापितं प्र० श्री पू० श्रीपद्मशेखरसूरीणामुपदेशेन । लाडोल वास्तव्य. ॥

४७०. सं. १५१७ वर्षे फा. शु. २ शुक्रे.......श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ पीहज ग्रामे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बामणवाडा.

४७१. सं. १५११ वर्षे माघ वदि ९ शुके.... ....
श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीपल्लीवालगच्छे श्रीयशोदेवसूरिभिः ॥

४७२. सं. १४८८ वर्षे....श्रीअचलगच्छे श्रीनयकीर्त्तिसूरिभिः नागरज्ञातीय परीक्ष वीरपाल भार्या वील्हणदे सुत समधरश्रेयसे भक्तु श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितम् ॥

४७३. सं. ११६३ वैशा. शु. १३ पल्वाल.... ....

(मूल नायक अजितनाथनी डाबी बाजुनी पाषाणनी मूर्ति.)

४७४. सं. १७८४ मागशिर वदि ९ दिने श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितम् ॥

संडेसर.

आदीश्वरजीना गभारानी अंदरनी प्रतिमाओ पंचतीर्थीना लेख.

४७५. सं. १५२७ वर्षे महिगालवासि प्राग्वाट गां० परवत भा० रूला सुतनरपालेन भा० नागलदे वृद्धभ्रातृझांगटधर्मिणि सुतसहसादियुतेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० तपा० श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

११

For Private And Personal Use Only

४७६. सं. १५०७ वर्षे प्रा० ज्ञातीय श्रे० वरसिंग भार्या वील्हणदे सुतश्रे० लांपा भा० सूदीप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

४७७. सं. १४८९ ज्ये. शु. १२ प्राग्वाट सा० सोजा भा० पाल्हू पुत्र सा० जयताकेन भा० जयतलदेव्यादिकुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

४७८. संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १२ शुक्रे प्राग्वाटज्ञातीय वालिवाडव्य गदा भा० हली सुत बडूआ भार्या कमली सुत देवदासकेन भार्या सोनाई भ्रातृगेरा प्र० कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

चंद्रप्रभुजीना गभारानी पंचतीर्थी.

४७९. संवत् १५२१ वर्षे पोष शु. ११ शनौ उपकेशज्ञातीय लघुसंतानीय मं० भोजा भार्या टीबू पुत्र नागा धर्मसी खीमा भा० भली पुत्र रतनासहितेन खीमाकेन पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं श्रीविवंदनीकगच्छे वृद्धशाखायां प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धसूरिभिः उनाउआवास्तव्य. ॥

४८०. सं. १५३३ वर्षे पोष शु. २....प्राग्वाट श्रे० आभा भा० वांई पुत्र श्रे० घुरकण भा० जीविणिप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्रति० श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करबटीया पेपरदर.

अभिनंदन भगवानना देरासरनी प्रतिमाओना लेखो.

४८१. संवत् १५२७ वर्षे पो. ब. १ सोमे इडियग्रामवासि मं० गांगा भार्या गंगादे सुत मं० हांसाकेन भा० रंगू सुतदिनकरप्रमुखकुटुंब-युतेन स्वश्रेयसे सूपूर्व (सूरुत्तर्व) भार्या राजू धर्मव्यये श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

४८२. सं. १५१४ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय मेहतावासि श्रे० सोमा भा० वारु सुत श्रे० आसाकेन भा० गोमति भ्रा० समधर पु० शिवा-दिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखर-सूरिगुरुराजैः ॥

४८३. सं. ११०१ श्रीवर्द्धमानाचार्य संगां उतमया ....

४८४. सं. १५१४ वर्षे माघ शु. २ शुक्रे स्तंभतीर्थवासि ओस-वालज्ञातिसाह रामा भा० रमाईसु सा० माणिकमालाभ्यां भा० माणि-कदे—मल्हणदे प्रमुखकुटुंबयुताभ्यां स्वसुकपूराहर्षाय श्रीअजितनाथचतु-र्विंशतिपट्टः कारितः । प्रतिष्ठितः श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

४८५. सं. १४६२ वर्षे वैशाख शुदि ९ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय-व्यव० वाछिग भार्या पाल्हणदे भ्रयासस्रुतसरवणे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीमुनितिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितम् ॥

४८६. सं. १६१९ व. वै. शु. ३२०५० श्रीगौतमस्वामिबिंबं प्र० ....(अक्षर वंचाता नथी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पार्श्वनाथजीना देरानी सामे शांतिनाथजीना देरामांनी प्रतिमाना लेखो.

४८७. सं. १५८७ वर्षे माघ व. ८ गुरौ वीजापुर वा० श्रीओसवालज्ञातीय दो० धरणा भा० धरणादे...........(शनसि) शान्तिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नाणावालगच्छे श्रीसिद्धिरत्नसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

४८८. सं. १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० शिवा भा० शरियादे सु० देवसी भा० धरमणि सु० साजण धरणासहितेन आत्मपु० श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमाप० श्रीधर्मशेखरसूरिप० श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना. ॥

४८९. संवत् १५८९ वर्षे जे० वदि २ रवौ ओसवालज्ञातीय मं० साईया भा० रारीयादे पु० गांगा भा० हांसी द्वितीय भा० एगादे स श्रेयोऽर्थं बिंबं कारितं श्रीसुविधिनाथ [स्य] प्रतिष्ठितं श्रीदेवप्रभसूरिभिः ठाबडवास्तव्य....

शांतिनाथजीना देरासरना प्रतिमाना लेख.

४९०. सं. १५२३ वर्षे माघ शु. ६ रवौ रेवतीनक्षत्रे प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० केल्हा भार्या हांस सुत श्रे० खेता भार्या खेतलदे सु० श्रे० भीमसीकेन भा०....श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे तपागच्छाधिराजश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः पं० पुण्यनंदनगणिनामुपदेशेन प्रसा. गथाघडाडे.

४९१. सं. १५२७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० सारंग भार्या अकु सुत मं० भोजा भ्रातृ मं० तेजाकेन भार्या तेजलदे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु० जावड भा० हांसी तथा लघु भ्रातृ लटकण—नगराज—गोरा—प्रमुख-कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यचतुर्विंशतिजिनपट्टः कारितः । प्रति० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीउदयवल्लभसूरिपट्टे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ॥

उपरनी प्रतिमानी बीजी बाजुए.

४९२. श्रीअहम्मदनगरवास्तव्य .... श्रीचारित्रसुंदरसूरि श्रीउदयसागरसूरियुतैः ....

श्रीवालमतीर्थ.

नेमनाथ भगवानना देरासरमांना पंचतीर्थी प्रतिमाना लेख.

४९३. सं. १४०९ वर्षे फागुण वदि २ बुधे हुंबडज्ञातीय मातृ-पूनिणिश्रेयसे ठ० वारमेन श्रीमहावीरबिंबं कारितं । प्रति० श्रीसर्वानन्द-सूरिसाहितैः श्रीसर्वदेवसूरिभिः ॥

४९४. संवत् १५४६ वर्षे माघ शु. १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कान्हा भा० रंगाई सुत श्रे० सूराकेन भार्या वाल्ही सु० मांडण-प्रमुखकुटुंबयुतेन भगिनीनाथीश्रे० श्रीअरनाथबिंबं तपा० श्रीसुमतिसाधु-सूरीणामुपदेशेन कारितं । प्रतिष्ठितम् ॥

४९५. संवत् १५४९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ७ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० समधर भा० अमरी सु० भाचा जाल्या भाचा भा० रमाई सु० सखा जाल्हा भा० मरगदि मंत्रि भावाजाल्हाकेन स्वपूर्वजपितृभ्रातृश्रेयोर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीसनगर.

श्रीकल्याण पार्श्वनाथजीना मेडा उपर श्रीगोडीपार्श्वनाथजीना गभारानी प्रतिमाना लेखो.

(सं. १२२० व. व. वदि ९ एक प्रतिमा उपर एटलुं वंचाय छे.)

४९६. सं. १४०१ वर्षे वैशाख वदि ३ बुधे श्रीमालज्ञातीय मंत्रिवसु (वस्तु) पाल भा० ललितादेवि पुत्र मं० गांगाकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं । प्रति० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीसूरीणामुपदेशेन ॥ छ ॥

४९७. संवत् १५५९ वर्षे महा शु. ११ रवौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीसकल कीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्त्तितत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीविजयकीर्त्तिगुरूपदेशात् ह० श्रे० खीमा भा० मरगदि श्रे० गणपति भा० मटी सु० जांइया भा० पूगा भ्रा० गांगा भा० गंगादे सुत हरखा भा० हरखमदे एते नित्यं श्रीनेमिनाथं प्रणमंति ॥ *

४९८. सं. १५११ माघ व० ४ श्रीउपकेशगच्छे आदित्यनागगोत्रे सा० धरणिग भार्या सोनलदे पु० चाहडेन पितृश्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीकु० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

४९९. सं. १४९१ वर्षे माघ शुदि ९ बुधे भणसालीगोत्रे उकेशवंशे सा० जयता (नयता) पुण्यार्थं पुत्र सा० जोलाकेन श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रति० श्रीजिनसागरसूरिभिः ॥

५००. सं. १४८८ वर्षे महा शुदि ९ सोमे उपकेशज्ञा० वेगडगोत्रे सा० जूला पुत्र सा० हरध भार्या पेतलदे पु० वीढ भा० वीमलदे पित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छेशश्रीवीरभद्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९०१. संवत् १५४७ वर्षे माग. शुदि ९ दिने श्रीमालज्ञातीय सा० जांजण भार्या सलखणादे पुत्र सा० पनाकेन..........कुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

९०२. सं. १५२९ वर्षे माघ व० ६ प्राग्वाटव्य० काजा भार्या राजू पुत्र व्य० महणाकेन भा० माणिकदे पुत्र करणादियुतेन श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरि सं० श्रीलक्ष्मीसागरसूरि श्रीसुधानंदनसूरिभिः ॥

शांतिनाथजीना देरासरनी प्रतिमा उपरना लेखो.

९०३. सं. १५५७ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभषणस्तत्पट्टे भ० श्रीविजयकीर्त्तिगुरूपदेशात् हूबडज्ञातीय उत्तरेश्वरगोत्रे महं गोधा भार्या लाछू सु० महं देवा भा० रत्नु सु० महं श्रीपाल भा० लाली सु० महं वस्ता भा० लीलादे भ्रा० हरखा भा० हरखमदे भ्रा० वेला भा० विमलादे । एते श्रीशांतिनाथं नित्यं प्रणमन्ति ॥ खेरालूवास्तव्य. (चोवीशी) *

९०४. सं. १५१२ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे श्रीश्रीउपकेशज्ञातीय श्रे० आसा सुत श्रे० अमरा भा० हेमादे सुत गोईआ सा० पूंजासहितेन स्वश्रेयसे चतुर्विंशतिपट्टकं विमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीगुणदेवसूरिसंताने श्रीजिनदेवसूरिपट्टे श्रीरत्नदेवसूरिभिः । श्रीपत्तनात् कसूभीयावडे ॥

९०५. सं. १५१७ का. व. ६ उपकेशज्ञातौ आदित्यनागगोत्रे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा० धर्मा पु० माल्हा भा० गोरी पु० समदासघ—षीमाकभ्रातृसायर श्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे कुंदकुंदाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

(सं. १२११ वै. वदि २ बुधे अक्षर वंचाता नथी.)

९०६. संवत् ११९० श्रीवल्हाणगच्छे महाडसुते चाहिल सायण-आसदे बि० कारितम् ॥ ....

९०७. संवत् १५०८ ज्येष्ठ शु. ७ बुधे श्रीबीरवंशे सं० नरदा भार्या धणदेवि पुत्र सं० ठाकुरसुश्रावकेण भा० चमकू पुत्र सं० मांडण-पौत्रकर्मणसहितेन श्रीअंचलगच्छे गुरुश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रे-यसे श्रीपद्मप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन चिरं विजयतां ॥

९०८. सं. १५०९ वर्षे मार्गशीर्ष शु. ७ उकेशवंशे व्यवहारिगोत्रे सा० जांउण सा० भट्टा भा० रत्नादे पु० सोमाकेन भा० हीमादे पु० सा० माका सा० जगमाल सा० पूनपालप्रमुखपरिवारयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छेश—श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः । चिरं नंदतु ॥

९०९. सं. १९३६ वर्षे वैशाख सु. ३ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभवन-कीर्त्ति स० भ० श्रीज्ञानभूषण देवनाग हू० ज्ञातीय श्रे० पवा भा० वर्जू श्रे० टोइया हरदास सिवा माडंणचावानरीघअरजनश्रे० स्वामसीश्रे० धारीयाधारा. *

९१०. सं. १५६५ वर्षे वैशाख वदि १० रवौ श्रीअहम्मदावाद-वास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञातीय सो० भोजा भार्या चंगाइ ॥ सुतसोनीश्रीरंग ॥ भा० पद्माई सुत हेमराज द्वितीयसुतठाकरसुश्रावकेण स्वश्रेयोर्थं श्रीअंच-लगच्छाधिराजश्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(चोवीशी. शांतिनाथ मूल छे—एक पंचतीर्थीना उपर लेख नथी.)

५११. संवत् १५३५ वर्षे माघ शुदि ९ सोमे प्राग्वाटज्ञातीय मं० रामा भा० हेमाइनाम्न्या पंचम्युद्यापने प्रतिमापंचकं कारापितं श्रीअरनाथबिंबं प्रति० श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥

५१२. संवत् १२८४..........कारितं प्र० अमरप्रभसूरिशिष्यैः श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ॥

५१३. सं. १५२५ वर्षे मागशिर शुदि १० शुक्रे मूंडहटासमीपे बोबडासणग्रामवास्तव्यषांटहडगोत्रे। सा० ४ रणिंग पु० पूंजा भा० हाजू पु० रसहजासागा । सहजा भा० कोरे सुतपानासहितेन । श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं । प्रति० श्रीकोरंटातपागच्छश्रीसर्वदेवसूरिभिः । पं० तपोरत्नउपदेशेन॥ (मूलनायक शांतिनाथना गभारानी प्रतिमाओना लेखो संपूर्ण.)॥

शांतिनाथजीनी भमतीमां पेसतां—

५१४. संवत् १३०० ज्येष्ठ शुदि ५ गुरावद्येह श्रीमत्पत्तनवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय ठः ठाडात्मज ठ० धींधाननुजमहः आसादे.... महं वैरिसिंहसुतमहं रणसिंहभार्यया ठ० जगसाहसुतया महं वयजलदेव्या पुत्र ठ० राजसिंहवरदेव........आत्मश्रेयोऽर्थं धवलक्कके जाल्योधरदेवगृहे श्रीनंदीश्वरवरद्वीपुर श्री.... ....

शांतिनाथना देरा उपरना गभाराना—

५१५. संवत् १५७० वर्षे माघ शुदि १३ भोमे प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० अमा भा० उमादे सु० जिवा सुरा भा० मूहवदे सुतहराजमातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीहेमसिंघसूरिभिः ॥ कणसा गरठा सं०

५१६. सं. १५७५ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीवि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयकीर्तिगुरूपदेशात् मं० श्रीपाल भा० लाली सु० वस्ता० भ्रा० रख.... ....(बाकीनो भाग भागी जवाथी अक्षर पण नथी). ॥

(श्रीदीपडाना श्रीसुमतिनाथना देरासरमां एक चोवीसवटो छे तेमनो लेख घसाइ गयो छे.)

५१७. सं० १५२४ वै० शु० ३ प्राग्वाटश्रे० वाछा भा० जसमादे पु० श्रे० सूंटा भा० हीरु पु० श्रे० गुणिआकेन भा० रामति भ्रा० नानावीरादिकुटुंबयुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदर सूरिश्रीमुनिसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसारसूरिभिः ॥ श्री अजदरपुरवा० ॥

दीपडामां शांतिनाथना गभारामां पंचतीर्थी प्रतिमानो लेख.

५१८. सं. १५८१ वर्षे माघ व. १० शुक्रे श्रीप्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखायां श्रीपत्तनवास्तव्यश्रे० आसा भार्या लहिफू सुत दो० गांगा भा० पद्माई द्वितीं० हीराई सुत वीसलसी भा० विमलादे सुत श्रीचंद्रप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीनिगमप्रभावकश्रीआणंदसागरसूरिभिः श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं ॥

गांजावाडामां ऋषभदेवना देरामांनी पंचतीर्थीनो लेख.

५१९. सं. १२९७ श्रे०........पुत्र जाल्हणेन आदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवेंद्रसूरिभिः ॥

(पार्श्वनाथजीना मोटा देरासरमां नवा नीकळेल नेमनाथ भगवान बहार जाली करीने बेसारेल छे तेमांनी प्रतिमानो लेख.)

५२०. संवत् १४७९ वर्षे माघ शुदि ४ दिने श्रीउकेशवंशे मंत्रि पद्मा पुत्र मंत्रिजिणा पुत्र मं० वरजांगसुश्रावकेन भ्रातृ समरसिंह प्रमुखपरिवारसहितेन श्रीआदिनाथबिंबं निजपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेमनाथना गभारानी प्रतिमा उपरना लेख.

५२१. सं. १४७४ फा०..............धा भार्या माल्हणदे सुत वाल्हाकेन स्वश्रेयसे श्रीसुपार्श्वबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

५२२. सं. १५१७ का० व० ६ उपकेशज्ञा० काकरीयागो० सा० श्रीपाल भार्या खेमी पु० सं० सोढभेन स्वश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं। प्रति० श्रीकृष्णर्षिग० श्रीनयचंद्रसूरिपट्टे श्रीजयसिंहसूरिभिः॥

५२३. सं. १६५५ ॥ श्रीअकबर प्रवर्तित ४३ वर्षे वैशाखव. ५ सोमे ओसवालज्ञातीयवृद्धशाखायां उबितवालगोत्र सा० जंपम० सा० जमणादे सुत सा० सरमाकेन श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृद्धतपागच्छे भट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वरपट्टालंकार भट्टारकश्रीविजयसेन सूरिभिः ॥ श्री. ॥

५२४. सं. १५०४ ज्येष्ठ सु. १२ उकेशवंश सा० पूना प्रीमलदे पुत्र सा० क्रमा भा० हर्खू पुत्र सा० तेजाकेन भा० तेजलदे पुत्र सोमदत्तडूंगरादियुतेन श्रीपार्श्वबिंबं कारितं प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरि शिष्यश्रीजयचंद्रसूरिभिः ॥

५२५. सं. १५२३ वर्षे माघ शु० ६ लुलिवासि सा क० अजयपाल भा० वारू सुत देवाकेन भा० वाल्ही स्वश्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० तपागच्छाधिराजश्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ छ ॥

५२६. सं. १५१० वर्षे ज्येष्ठ शुदि द्वितीयादिने उकेशवंशे वडुरागोत्रे। सा० राजा भार्या वइजलदे। पुत्र सा० मल्हूकेन कलत्ररूपणि सुत कर्म्मसी प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरिभिः ॥ श्री ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५२७. सं. १५३७ वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे धवलकपुर-वास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञातीय मं० सूर भा० हीरु पुत्र । पं. विजयकलश-गणिना मातृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपापक्षे भ० श्रीविजयरत्नसूरिभिः ॥

कल्याणपार्श्वनाथना गभारानी प्रतिमाना लेखो.

५२८. सं. १५१९ वर्षे माग० शुदि ७ दिने श्रीउकेशवंशे दोसीगोत्रे मं० ढूंडा पुत्र सा० नरबद भार्या सांल्हू तत्पुत्र सा० नगराजेन पुत्र खीमराजहांसासहितेन श्रीमहावीरबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः स्वश्रेयोऽर्थं ॥ छ ॥

५२९. सं. १५२४ व. वैशाख शुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० नरसिंह भा० नागलदे पु० श्रे० जयता भ्रा० पाना भा० हीरु पु० माहराज जिणदासादिकुटुंबयुतेन श्रे० पानाकेन पितृ० मालाप्रमुखस्वपूर्वजश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ सलखणपुर.

५३०. सं. १४९३ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय वहिवराशाखायां श्रे० कूपा भा० कपुरदे पु० मामणपोचाभ्यां पितृमातृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं ब्रह्माणगच्छे श्रीबुद्धिसागरसूरि प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥ श्री. ॥

५३१. सं. १६१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ सोमे लघुशाखायां प्राग्वाटज्ञातीय महंगोगा भार्या जयवंती सुनाबाई मजांशवपुण्यार्थं श्रीश्रेयांस-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचतीर्थीबिंबं कारितं प्र० तपापक्षे भ० श्रीआणंदविमलसूरिपट्टे श्रीविजयदानसूरिभिः ॥ श्रीपत्तननगरवास्तव्य ॥ श्री ॥

५३२. संवत् १५२४ वर्षे वै. शु. तृ. प्राग्वाटव्य० पातल भार्या चांपू सुत व्य० गुणाकेन भार्या नागू पुत्र टील्हा निजश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छनायकश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

५३३. सं. १४८४ वर्षे वैशाख शुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० सामल भा० उमादे तयोः सुत सा० डूंगर तद्भा० जबकू तत्सुत सा० गोधाकेन भा० कर्मिणि गोधा भ्रातृ रामा तद्भार्या राणी बंधुवादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

५३४ सं. १४८४ वर्षे वै. शु. ११ रवौ तीर्थंकर ॥ २३ ॥ मूजिंगपुरवास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० पांपव भा० प्रीमलदे सुत संघवी सूंटाकेन भा० होसाहगदेवि मेलू सु० पूंनादिकुटुंब (यु) सुतेन स्वश्रेयोऽर्थं कारितं अनागतचउवीसी श्रीदेवतीर्थंकरप्रमुखचतुर्विंशतिपट्टकः श्रीचैत्रगच्छे श्रीजिनदत्त (देव)सूरिभिः ॥ श्री ॥

कल्याणपार्श्वनाथना मेडा उपरनी प्रतिमाओना लेखो.

५३५. सं. १४८८ व० श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० पद्मनंदिदेवाः तत्सिक्षगुणचंद्रनागहृदज्ञातीय सा० खीमा भा० रूपी पुत्र सा० पेथा भा० गोरी पु० सा० महणा भार्या रत्नू पुत्र शिवा श्रीपार्श्वनाथबिंबं नित्यं प्रणमन्ति ॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५३६. सं. १३३७ वर्षे माघ सुदि ९.... ....शिष्यैः श्रीविनयभद्रसूरिभिः ॥ (पहेलाना अक्षर बराबर वंचाता नथी.) ॥

बीजी पंचतीर्थीओ चोंटाडेल होवाथी—लेख लइ शकाय तेम नथी. गोडीपार्श्वनाथजीनी प्रतिष्ठा संवत् १८६१मां विजयजिनेंद्रसूरिए करी छे.

वडनगर.

श्रीआदीश्वरजीना मोटा देरानी प्रतिमाओना लेखो.

५३७. सं. १४७७ व. हुबडगच्छे श्रीपार्श्वबिंबं प्र० श्रीसिंहदत्तसुरिभिः । व्य० वीरम भा० हीरु सु० तंता पितामह आल्हा भा० आल्हणदे उभयोर्निमित्तं ॥ श्री. ॥

५३८. संवत् १५१० फा. व. २ शुक्रे श्रीउकेशवंशे कूकडागोत्रे मं० लखमसी पुत्र मं० वयरसी पु० संपिग्रमा मं० कालाभ्यां म० धणपतिपुण्यार्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं। श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे ॥

५३९. संवत् १५१९ वर्षे माघ शु. १३ दिने प्राग्वाटज्ञातीय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रे० महिपा भा० माणिकदे पुत्र श्रे० वेलाकेन भा० वनी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

९४०. संवत् १४२९ वर्षे माघ वदि ७ दिने........श्रीआदि.... हीरापल्लीगच्छे श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ॥

९४१. संवत् १४८९ वर्षे चैत्रवदि ८ सोमे श्रीनागरज्ञातीय गोवी साजण भार्या सहजलदे सुत गोठी सिवाकेन श्रीमहावीरबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं सुविहितश्रीसूरिभिः श्रेयोर्थं ॥

९४२. सं. १५२२ वर्षे फागण सुद ३ रवौ........श्रीशीतल-नाथबिंबं का० प्र० श्री कक्कसूरिभिः ॥

श्रीमहावीरस्वामिना देरामांना प्रतिमाजीना लेख.

९४३. सं. १५२६ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीवीरवंशे सुगाल-गोत्रे श्रे० वरपाल भार्या वपजी पुत्र श्रे० धनाकेन भार्या माकू पुत्र शिवा पौत्र देवासहितेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेश्वर श्रीजयकेसरिसूरी-णामुपदेशेन श्रीशीतलनाथबिम्बं का० प्रतिष्ठितम् ।

मोटा आदीश्वरजीना गभारानी प्रतिमाओना लेखो.

९४४. सं. १५११ माघ सु० ४ विद्यापुरवासि श्रीमालज्ञातीय श्रीश्रे० जयिता भा० जयितलदे सुत सामा भा० लाछि सुत श्रे० वर्द्ध-नेन भ्रा० गदा भोजा भा० देमति सुत जावडादिकुटुंबयुतेन स्वमातृश्रेयसे श्रीसंभवनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीशीलसुंदरसूरिभिः॥ तपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ श्री. ॥

९४५. सं. १५८४ वर्षे चैत्र वदि ५ गुरौ श्रीविसलनगरवास्तव्य व्य० प्राग्वाटज्ञातीय धर्मा भा० नाउ सू० व्य० जोगा भा० गोमती सु० व्य० भरणाकेन वृद्धभ्रातृ व्य० हर्षायुतेन भा० मणकी सु०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्य० जयिता व्य० जसा व्य० जयवन्त पौत्र जयचंदप्रमुखकुटुम्ब-परिवृतेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं। प्र० बृहत्तपापक्षे श्रीलब्धिसागरसूरिपट्टे श्रीधनरत्नसूरि श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः ॥

५४६. सं. १५५९ वर्षे वैशाख सु. ३ शनौ प्रा० ज्ञातीय श्रे० गोपाल भा० अघु सुत श्रे० बोवा भा० जाणी सुत श्रे० जेसिंगेन भा० जसमोद सुत पोपट प्रघमाकुटुम्बयुतेन श्रेयोऽर्थं श्रीधर्मनाथबिम्बं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥ गालहउसैण्यग्रामे ॥

५४७. सं. १५२७ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी वस्ता सुत दो० पर्वत भार्या पोपटी पुत्र वज्राङ्गत भा० पद्दुति सुत तेजपालसहितेन पितृनिमित्तं श्रीसंभवनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं सिद्धानिगच्छे भ० श्रीसोमचन्द्रसूरिभिः श्रीपत्तनवास्तव्य ॥

५४८. सं. १५५७ वर्षे वैशाख सुदि १३ शनौ प्राग्वाटज्ञातीय दो० धर्मपा भा० लखमायी पु० दो० कुंरा भार्या चम्पायी पुत्र महिरराजप्रीत्यर्थं श्रीपद्मप्रभबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

विसलनगरे.

५४९. सं. १६२८ वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे वटपल्लीवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय वु० जगमालकेन भार्या बा० अजाई सुत पुंजा प्रमुख-कुटुम्बयुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छ भ० श्रीहीरविजयसूरिराज्यमहोपाध्यायश्रीकल्याणविजयगणिभिः ॥

५५० सं. १५५४ वर्षे माघ वदि २ बुधे प्राग्वाटज्ञातीय व्य० भादा भा० हीरु सुत व्य० जांटाकेन भा० टीहिकूप्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः गोलावास्तव्य ॥

५५१. सं. १५१९ वर्षे फा. सु. १२ प्राग्वाट.... ....
श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीमुनिसुन्दरसूरि पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरि गच्छाधिपैः महिषानाका ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९९२. सं. १५७१ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय मंत्री पूना भार्या प्रिमलदे सुत आना भोजा आना भार्या सहिजलदे सुत कर्मणधर्मणसमस्तकुटुम्बयुतेन भ्रातृ। कीया बडूआश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्य-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीआगमगच्छे श्रीआनंदरत्नसूरिभिः रनेलावास्तव्य॥

९९३. सं. १५१२ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे....श्रीसुमतिबिंबं का० प्र० भावडहगच्छे श्रीवीरसूरिभिः॥ उकेशगच्छे श्रीकक्कसूरिः॥

९९४. सं. १५५९ वर्षे फा० सु० २ सोमे प्राग्वाटव्य० सोढा भा० देमती सुतव्य० हापा देपा भा० कर्मी सुत लटकण भा० लीली प्र० युतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोमसुन्दरसूरिसंताने श्रीहेमविमलसूरिभिः। महिषानके॥

९९५. सं. १५९७ वर्षे वैशाख सु. ३ प्राग्वाटज्ञा० व्य० सीहा भा० तीलू सुत सैदाकेन भा० धती भ्रातृ जेसा भा० रुपिणी राजा भीमादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्री रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः॥ जाखिल

९९६. सं० १५३१ वैशाख सुदि ३ शनौ उप० छाज० गोत्रे उगम भा० सीति पुत्र सा० जिदाकेन भा० भावलदे पुत्रपरिवारसहितेन आत्मश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीखरतरश्रीजिनधर्मसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः॥

९९७. सं. १५१९ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ गुरौ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० रुद्रा भार्या टहकू सुत खेता भा० खेतलदे सु० फोदा पोपट भ्रातधनाबाउनामितं श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं प्र० श्रीविमलसूरिभिः। अहिरोडावास्तव्य इडरपार्श्वे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौमुखजीना देरानी प्रतिमाओना लेखो.

५५८. सं. १४८९ वर्षे आषाढ सुदि २ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० हूवसरसी भा० वजू सुत सारंगेन भार्या सोल्हीयुतेन श्रीसुपार्श्वबिंबं कारितं प्र० श्रीसोमसुन्दरसूरिभिः ॥

५५९. सं. १५२१ वर्षे माघ......श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । चांईसमाय ॥

५६०. सं. १५०५ वर्षे पौष वदि ३ रवौ प्राग्वाट.......श्रीसंभवबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीवीरचन्द्रसूरिभिः श्रेयोर्थं ॥

५६१. श्रीसंभवबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरि स्तत्पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ श्री

५६२. सं. १३७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ श्रीकाशह्रदीयगच्छे बहुसीहनय श्रीआदिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीउमेतनसूरिभिः (उत्मेतनसूरिभिः) ॥

५६३. सं. १५०४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ भौमे प्रा०ज्ञातीय मह्रं मोला भार्या पुराई पुत्र बालाकेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेशगच्छे सिद्धाचार्यसंताने देवगुप्तसूरिभिः ॥

५६४. सं. १४८४ वर्षे वै. सु. ३ दिने प्रा०ज्ञातीय श्रे० मणसी भार्या गच्छरदे सुतनरदेवेन स्वपितृश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छनायकश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदीश्वरजीना गभारानी प्रतिमाओना लेखो.

५६५. सं. १५१६ वर्षे कार्त्तिक वदि २ सोमे ढंढेर श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी सायर सुत दोसी नरचंद भा० लखी तत्पुत्र दोसी तेजाकेन भा० रहीसहितेन पितृमातृआत्मश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्रधान श्रीपूर्णिमापक्षे भट्टा० श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितम् ॥

५६६. सं. १५६७ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे श्रीमालज्ञातीय श्रे० बडुआ भार्या रूपदे पु० कान्हा भा० मुनिसहितेन स्वपूर्वजनिमित्तं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारापितं प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे भ० श्रीहेमरत्नसूरिभिः ॥

५६७. संवत् १५१२ ज्ये. सु. २ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० अर्जन भा० अहिवलदे लघुपुत्र लक्ष्मण भा० लखमादे श्रेयसे वृद्धसुत धूरकर्णेन भा० वरजूसहितेन श्रीमुनिसुव्रतस्वामिमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः का० पूर्णिमापक्षे गंधारीया भ० श्रीधनप्रभसूरिपट्टे भ० श्रीमुनिसुंदरसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

५६८. सं. १३२९ वर्षे वै. सु. ११ शुक्रे प्रा० ज्ञा० श्रे० आसल सुत सिद्धपालेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाणाम (?)॥

कुंथुनाथजीना गभारानी प्रतिमाओना लेखो.

५६९. सं. १४९४ वर्षे प्राग्वा० श्रे० लाखा भा० जासु सुत श्रे० आसा......श्रे० श्रीकुन्थुनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेश श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

५७०. सं. १५७६ वर्षे वैशाख सु. ६ सोमे सदरपुरवास्तव्य प्रा० ज्ञातीय श्रे० तोडा भा० लाच्छी पु० श्रे० झाणाकेन भा० जीवी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र राजा हीरादि पितृव्य श्रे० नरबदादिकुटुंबयुतेन श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः॥

९७१. सं. १५३३ मा. व. १०..........श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० तपागच्छे रत्नशेखरसूरिपट्टे लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

९७२. सं. १४७९ वर्षे माघ वदि ४ हुंबडज्ञातीय.......सुपार्श्वबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः॥

९७३. सं. १४०६ (१४८६) वर्षे शाके १३५१ वै. व. १० गुरुवारे.......श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीजिनवर्धनसूरिभिः ॥

९७४. सं. १३६२ वर्षे.......श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० बृहद्गच्छीय श्रीमदनसूरिपट्टे श्रीसिद्रथ (साद्रथसूरिभिः) ॥

९७५. सं. १४०९ वर्षे फा. व. २....आदिनाथबिंबं का० प्र० वृद्धगच्छीयश्रीविजयभद्रसूरिभिः ॥

९७६. सं. १३३७ व..........यशोभद्रसूरिसंताने..........

९७७. सं. १५५७ वर्षे पोष सुदि पूर्णिमा मं० हीरा भा०.... श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः॥

९७८. सं. १५२१ वर्षे माघ पूर्णिमा गुरु श्रीश्रीमालज्ञा० दो० सायर सुत राणा भा० कर्माइ जीवित स्वामी सुत गुणिया महीराजेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे प्रधानभट्टारकश्रीजयसूरीणामुपदेशेन ॥

९७९. सं. १५३५ वर्षे मा. सु. ५ गु. डासा श्रे० जुग भा० अमकू सु० म० भोजाकेन भ्रा० वंडूआ स्वभार्या मवक सुत नाथादि कुटुंबश्रे० संभवबिंबं का० प्र० त० ग० रत्नशेखरसूरिपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि ॥

९८०. सं. १२९७ वर्षे चैत्रवदि ५ सोमे डूणग्रामे महं. रतनू सुत मं. धणपालश्रेयोर्थं सु० महणसिंह का० प्र० सुविहितसूरिभिः ॥

९८१. सं. १४५६ व. ज्ये. व. १३ शनौ श्रीवीरवंशे सा० मदन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वभार्या लाडु सुत शंकर देवसिंह आल्हा सुत श्रीअंचलगच्छेश मेरुतुंगसूरींद्राणामुपदेशेन निजमातृपितृश्रेयसे चंद्रप्रभस्वामिबिंबं का०प्र० श्रीसूरिभिः॥

९८२. सं. १३९४ वै. शु. १० गुरु गुणभद्रसूरीणामुपदेशेन. ॥

९८३. सं. १२९७ व. चै. ९ भोमे....................श्रेयोर्थं सुत महणसिंह का० प्र० सर्वदेवसूरिभिः ॥

अहमदनगर.

महावीर देरासरना प्रतिमाना लेखो.

९८४. सं. १५७१ पोष वदि १ सोमे कुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे हेमविमलसूरिभिः ॥ (चोवीशी)

९८५. सं. १५८७ ब. माघ वदि ८ गुरौ भावड शसेरगच्छे श्रीवीरसूरिभिः ॥

९८६. श्रीविजयसेनसूरिगुरुभ्यो नमः। श्री० म० सं. १६६२ वर्षे श्रीसुविधिनाथ ॥

९८७. सं. १५०४ वर्षे माघ वदि ९ रवौ प्राग्वाटज्ञा० सा० देवराज भार्या कर्मादे पुत्र सहसराजेन मा० चमकू पुत्र सायरारायणायरमाणिक्यमंडनधर्मादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशान्तिबिंबं प्र० श्रीतपागच्छाधिराज श्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५८८. सं. १८७३ माघ सुदि ७ शुक्रे श्रीअम्हदनगरवास्तव्य ....हलचंद्रसकलतेन श्रीसिद्धचक्रं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः श्रीतपागच्छे चतुर्दशीव्रतोद्यापने ॥

५८९. सं. १५३० वर्षे माघ बदि २ शुक्रे मुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीधर्मशेखरसूरीणां पट्टे श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना ॥ (पंचतीर्थी).

५९०. सं. १५१० वर्षे ज्येष्ठ सु. ३ गुरौ श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपागच्छ नायकभट्टारक श्रीरत्नसिंहसूरिभि (पंचतीर्थी).

५९१. सं. १३८८ वर्षे वैशाख शु. १५ श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० अउढरथेत्यश्रीवैरसेनसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

५९२. सं. १६५३ माघ सु. १० प्र० युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः आचारयसंघसूरिभिः ॥

५९३. सं. १६५३ माघ सु. १० प्र० वृद्धतपागच्छेशश्रीविजयदेवेन्द्रसूरिभिः पार्श्वजिनबिंबं ॥

५९४. सं. १६२२ वर्षे आसो सु. ४ सपरिकरं–पार्श्वनाथबिंबं प्र० श्रीसूरिभिः ॥

घरदेरासरनो.

५९५. सं. १५१६ वर्षे चैत्र वदि ५ गुरौ श्रीपद्मप्रभबिंबं काष्ठासंघे बाघ. भ० श्रीधर्मशेखरसूरिभिः प्र० ॥ (पंचतीर्थी)

अजितनाथना देरानो.

५९६. सं. १५०४ वर्षे आषाढ सु. २ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० चंपा भार्या हमीरदे सुत पूराकेन भार्या माजु सुत दलादिकुटुंबयुतेन भ्रातृसायर स्वश्रेयोर्थं श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीजयचंद्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरत.

नेमुभाइनी वाडीना देहरासरनी प्रतिमा उपरनो लेख.

५९७. १५०५ वर्षे वैशाख नागरज्ञातीय दो० हीरा भार्या मेत्रू पुत्र दो ॥ राज्जाकेम भा० रमादे सुत विजायुतेन निजपितृमातृस्व श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभि- र्वृद्धशाखा. ॥

एक पीतळनी प्रतिमा सैयदपरामां छे तेनो लेख.

५९८. सं. १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे कपोलज्ञा० श्रे० सरवण भा० आमू सुत सं० नाना भा० सं० कडतिगडेनाम्ना निज- श्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्रति० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे श्रीसुमति- साधुसूरिभिः ॥

सगरामपुराना देहरासरनी प्रतिमानो लेख.

५९९. सं. १५४७ वर्षे माघ शु. १३ रवौ श्रीगूर्जरज्ञातीय म० आसा भा० टबकू सुत मं० वयजा भा० मली सु० म० भ० भा० कर्माइ म० भूपति भा० अकू सुत मं. सिवदास भा० कीबाई प्र० कुटुंबयुतेन श्रीअंचलगच्छे श्रीसिद्धांतसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

नवसारी.

६००. सं. १४७० वर्षे वायडज्ञातीय पितृमहं खीमसीह सुत- महं गोलाकेन श्रीअंबिका कारापिता. ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६०१. सं. १६७९ वर्षे माघ शुद्ध ४ शनौ श्रीउपकेशवंशीय वृद्धशाखीय सा० त्राहिया भार्या तेजलदे सुत गोरदे सुत सानानियाकेन भार्या नामल्देव सुत सोमजीयुतेन श्रीमहावीरबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छे भट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वरपट्टालंकार भ० श्रीविजयसेनसूरि पट्टालंकारभट्टारकश्रीविजयदेवसूरिभिः श्रीआरासणनगरे ठू. राजपलो दामेन.॥

६०२. संवत् १६६९ वर्षे माघ धवलेतर शनौ उपकेशवंशीय-वृद्धसज्जनीय सा० जगडु भार्या जमानादे. ॥

६०३. संवत् १६७९ वर्षे माघ वदि ४ श्रीश्रीमालीज्ञातीय-वृद्ध-शाखीय० शा० रंगा भार्या किला....आदिनाथबिंबं कारितं तपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिभिः पंडितश्रीकुशलसागरगणिपरिवारयुतैः प्रतिष्ठितम् ॥

६०४. सं. १५९१ वर्षे पोस वदि ११ गुरौ श्रीपत्तने उसवाल-लघुशाखायां दो० टाउआ भा० लिंगी पुत्र लका भा० गुराइनाम्ना स्वश्रेयोऽर्थं पु. वीरपाल अमीपाल यु. अंचलगच्छे श्रीगुणनिधानसूरीणा-मुपदेशेन. कुंथुनाथबिंबं का० प्र०

मोटी देशाइ पोळना देहरानी प्रतिमा.

६०५. सं. १५४३ वर्षे ज्येष्ठ शु. ११ शनौ श्रीवीसलनगर-वास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय श्रे० रामसी भार्या धर्मणि सुत श्रे० आसाकेन भा० कस्तूरी सुत तेजपाल भ्रातृ थाइआ कुंरा अमीपालयुतेन श्रीसंभव-नाथबिंबं का० प्र० बृहत्तपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरि प्रति० श्रीउदयसागर सूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६०६. सं. १६१९ वर्षे पोष वदि ६ शुक्रे श्रीवीसलनगरवा० श्रीहूंबडज्ञातीय गांधी रत्ना भा. रत्नादे सु० गां शीभा सुभा भा० सांगा कांगा कीका सोनूनाम्नी श्रीसुमतिनाथबिंबं कारापितं श्रीतपागच्छे भ० श्री ५ विजयदानसूरि प्र० श्रीगंधारबंदिरे ॥

६०७. सं. १६९९ वर्षे माघ वदि १२ लाडउलि नगर वास्तव्य–उसवालज्ञातीय सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० नरसिंगेन भार्या नायकदे पुत्र सा० जयवंत–श्रीवंत–देवचंद–सुरचंद–हरिचंद–प्रमुख-कुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कोरंटे गच्छे श्रीकक्कसूरिभिः ॥

६०८. सं. १६७८ वर्षे का. वदि । रानेरवास्तव्य सा० राघव भा० लालादे सुत सा० पूजाकेन विमलनाथबिंबं कारितं प्रति० विजय-देवसूरीणामुपदेशेन रत्नचंद्र श्रीतपागच्छे ॥

६०९. संवत् १६८३ वर्षे फा. वदि ४ शनौ साहिश्रीसलेमराज्ये कयरवाडावास्तव्य लाडुआश्रीमालीज्ञातीय सं० मेघ भा० इंद्राणी सुत सं० ठाकरनाम्ना स्वपितकारितप्रतिष्ठायां श्रीधर्मनाथबिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयसेनसूरिपट्टालंकार भ० श्रीविजय-देवसूरि तथा श्रीविजयतिलकसूरिपट्टालंकार भ० श्रीविजयाणंदसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सादरा.

जैन देरासरनी पंचतीर्थी उपरनो लेख.

६१० सं. १४८९ वर्षे वैशाख शु. ६ रवौ श्रीओसवालज्ञा० ॥ ....सुत सुडाकेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीगुणसागरसूरिभिः सर्वदोषहरणनिमित्तं ॥ छ.

ओराण.

श्वेतांबर देहरुं सुमतिनाथनुं.

६११. सं. १५१७ वर्षे फा. शु. ३ शुक्रे भावडहरगच्छे श्रीश्रीमालीज्ञातीय मं. भोट भा० रूपिणी पुत्र मं० सलखउ भा० गागती पुत्र मं० नापा भा० चंपाई पु० सहजपालजसपालसहितेन स्वपुण्यार्थं पूर्वजश्रेयोर्थं च श्रीमुनिसुव्रतस्वामिमुख्यतीर्थंकरचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीकालिकाचार्यसंताने श्रीभावदेवसूरिभिः ॥

६१२. सं. १५२८ वर्षे महा व. ५ बुधे श्रीनाणावालगच्छे ओ० जसमजोसणे भा० गोत्रे सा. रेडा भा० माहणदे पु० जेसाकेन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भार्या जीवादे........आत्मश्रेयसे पितृनिमित्तं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ॥

६१३. सं. १४३२ वै. व. ९ गुरौ श्रीकाष्ठासंघे हुंबडज्ञा० भजपाल........कलशकीर्त्ति. श्रीमहावीरबिंबं.... .... ॥ *

छारा.

६१४. ॥ १५०७ ज्येषु व. ९ गुरौ उएसवंशे मं. दूदा भा० माधलदे पुत्र मं. आंबासुश्रावकेण भा० भोली भ्रातृ सीधरदेधरसहितेन श्रीअंचलगच्छे जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ (पंचतीर्थी).

अलुवा.

६१५. संवत् १३०२ वैशाष सुदि ४ बुधे नारसिंहान्वये आ० षेखतसा भा० माल्हणि सुता हांसी प्रणमति ॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासणा.

६१६. सं. १५८८ वर्षे फागण शु. ८ बुधे श्रीश्रीमालीज्ञातीय सा० लखा भा० मनी सुत देवदासकेन भा० सहवदे सु० कीका हापा मंगलयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधनरत्न-सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

घडकण.

६१७. सं. १५२५ वर्षे महा शु. ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय-नातकमा भार्या कस्मिदे सुतखेतकेन तद्भ्रमा भा० विमलीनिमित्तं आत्म-श्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारापितं श्रीकमलप्रभसूरिणा प्रतिष्ठितं ॥

६१८. सं. १५३० वर्षे पोष वदि २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रेष्ठितेजा भार्या कर्पुरी सुत मद्रिराज पद्माजागा तथा पातेः स्वपूर्वजश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं कारापितं प्र० श्रीसूरिभिः । मांडलीसीतापुरवास्तव्य

६१९. सं. १५९५ वर्षे माघ व. २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० सा० जिनदास तत्सुत सा० गोरा तद्भार्या बाइ गंगादे सुत सा० सागरदेवचंद-नाम्ना निजपितृश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं कारापितं श्रीतपागच्छनायक-श्रीआणंदविमलसूरिभिः प्रतिष्ठितश्चतुर्विंशतिजिनपट्टः श्रियेऽस्तु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रायपर.

६२०. सं. १५२१ वर्षे माघ शु. १३ प्रा० श्रे० बाबा भा० हर्षू सुत श्रे० जिनदासेन भा० शाणी सुतहरराजहेमादिकुटुंबयुतेन निजश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे सोमसुंदरसूरिसंताने श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

६२१. सं. १८२३ शा. १७९८ माघ शु. १० बुधे राजनगरश्रीमालीज्ञा० सा० वखतचंद भार्या.... ....सा० प्रेमचंद तत्पुत्र सा० करमचंद तत्पुत्र शा० मगनभाई तद्भार्या जेकोरबाइ श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारापितं तपागच्छभट्टारक.... ....

६२२. सं. १५१८ वर्षे माघ शुदि १० भोमे श्रीऊकेशवंशे सा० वीजा भा० सनख तत्पुत्र सा० भीमा भा० हेमाइनाम्ना स्वश्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० श्री....वृद्धतपापक्षीयश्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

साणंद.

श्रीपद्मप्रभुजीना देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

६२३. सं. १५२८ वर्षे चैत्र वदि ११ शुक्रे श्रीमालज्ञा० मं० राऊल भा० झमकु सुत समधरेण भा०...............आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० श्रीमद्........करगच्छे श्रीधनप्रभसूरिभिः प्र० गांफवास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६२४. सं. १६६७ वर्षे वैशाख शुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० मोटा सुकामा सेवा साजण झांझण कामा भा० बा० लाडीकी सु० धरण श्रे० कुटुंबश्रेयसे आगमगच्छे सोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन श्रीमुनिसुव्रतस्वाम्यादिपंचतीर्थी कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना उदल (य) पुरवास्तव्य.... ....॥

६२५. सं. १२५८ ज्येष्ठ शुदि ९ रवौ.... .... पूर्णभद्रसूरिसंताने... ....श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीशांतिभद्रसूरिभिः ॥

६२६. सं. १५२९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ भोमे श्रीमालीज्ञातीय श्रे० वेला भार्या अरघु पुत्र खेताकेन स्वश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीकमलप्रभसूरीणां पट्टे श्रीहेमरत्नसूरिभिः ॥ श्रीः ॥

६२७. सं. १८९२ वर्षे श्रीमाघमासे शुक्लपक्षे १० तिथौ बुधे श्रीश्रीमालीज्ञातीय मेता चांदा देवकरण..........सागरगच्छे भ० श्रीशांतिसूरिभिः प्रतिष्ठितम् ॥

६२८. सं. १८९२ वर्षे माघ शुक्लपक्षे १० दिने प्रतिष्ठितं बाइ जवल.... ....॥

६२९. सं. १९०३ महा वदि ५ शुक्रे बाई धोली स्वश्रेयोर्थं आदिनाथबिंबं का० प्र० च तपागच्छे ॥

६३०. सं. १८९२ वर्षे माघ शु. १० साणंदग्रामे भ० श्रीशांतिभद्रसूरिभिः प्र० ॥

६३१. सं. १८९३ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे २ बुधे साणंदग्रामे श्रीश्रीमालीज्ञा० मेता देवकरण तत्पुत्र चांदा तेन सिद्धचक्रं का० सागरगच्छे भ० शांतिसागरसूरिभिः प्र० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपार्श्वनाथजीना देरासांनी प्रतिमाना लेखो.

६३२. सं. १५१० वर्षे ज्येष्ठ शुदि ३ गुरौ दिसावालज्ञा० श्रे० अमरा भार्या टमकु पुत्र श्रे०....कालाकेन भा० जइतु पुत्र अंबाराम वाघादिकुटुंबयुतेन स्वपितृव्यश्रे० देवाश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः श्रीभवतु बिराजुश्रेयोर्थं ॥

६३३. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधे श्रीसाणंदनगरश्रीसंघसमस्त श्रीमहावीरबिंबं का० आणंदसूरगच्छे ॥

६३४. सं. १९२० फागण शु. २ वाघेला प्रतापसिंह भार्या महेता वक्तरका श्रीपेढालजिनबिंबं (भ० भा०) श्रीअमृतचंदसुरिराजे श्रीसागरचंद्रेण प्र० ॥

६३५. सं. १७६८ माघपंचमी अमदावादवास्तव्य बाइ तासा स्वश्रेयोर्थं श्री।।सुपूज्यस्वामिबिंबं कारितम् ॥

६३६. सं. १५११ वर्षे माघ व. १ सितकेशज्ञा० व्य० सहसा भा० सहमलदे सुत व्य० समधर--रत्ना--डुंगर--कमाकैः भा० सदुरत्नादिसलझट--सुत साणा--हासा--वच्छा--युतैः ज्येष्ठबंधुव्य० वसताश्रेयसे श्रीसुमतिबिंबं प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीजयचंद्रसूरिभिः । अहेम्मगरवा० ॥

६३७. सं. १५०९ ज्येष्ठ वदि ५ प्रा० सा० जेसा भा० पदमी पुत्र सा० पोचाकेन भा० फदकु पुत्र....समरादियुतेन श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० तपागच्छे बृहच्छाखायां श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

६३८. सं. १८०७ वर्षे शाके १७७१ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे पौषमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवासरे श्रीवीसाश्रीमाळिज्ञातीय सा० उत्तमचंद सुत सा० पानाचंद तस्य भार्या नवल श्रीसिद्धचक्रं कारापितं तपागच्छे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६३९. सं. १९२३ वर्षे माघ वदि ७ रवौ प्रा० ज्ञा० श्रे० जेसिंग भा० लांपु सुत श्रीकाला धरणा भ्रातृ श्रे० गेलाकेन भा० सारूप्रमुख-कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथमूलनायकादिचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। निझामपुरवा० ॥

६४०. सं. १५१४ वर्षे माघ शुदि २ शुक्रपक्षे पेथापुरवासि-नागरज्ञातिय दो० हीरा भा० मेतु पुत्र दो० राणाकेन भा० पूरीप्रमु-खकुटुंबयुतेन वृद्धभार्या झालीश्रेयसे श्रीसुमतिजिनबिंबं का० प्र० श्रीवृ-द्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

६४१. सं. १८९३ वर्षे माघ शु. १० बुधवासरे श्रीसाणंदनगर—श्रीसंघसमस्तश्रीवासुपूज्यबिंबं का० श्रीअणसुरगच्छे ॥

६४२. सं. १६२२ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे भ० श्रीसुमति-उपदेशात् ह० गा०........मां धर्मदास तां प्रणमति ॥ *

६४३. सं. १७१२ सीदाघटीयगच्छे श्रीजिनदत्त....संताने पाजा आंवाकेन आत्मश्रेयसे कारिता ॥

(उपरनी प्रतिमा घणी जीर्ण छे)

६४४. सं. १३४८ फागण शु. १० श्रीमालज्ञातीय आणंदेन पुत्र जेता जीमात्री व्य० श्रीधनादिश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० ....सूरिभिः ॥ (घणी जीर्ण छे.)

६४५. सं. १८९३ माघ शु. १० प्रतिष्ठा साणंदग्रामे ॥

६४६. ... .वडीपोसाल.... ....श्रे० जाला सुत श्रे० हीरा लघुभ्रातृ व्य० श्रे० पासा कसा भार्या प्रेमला-देव्या श्रीसिद्धचक्रं का० श्री पं० विनयराजगणिनामुपदेशेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पामोल.

जैन देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

६४७. सं. १५१८ वर्षे ज्येष्ठ शु. २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० महं० गेदा भा० लादी सुत शिवा भा० वाघू महं. सहिसा भा० रत्त महं० पौत्रा महिराज पाणपात समस्तकुटुंबसहित मातृपितृश्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्रीअभिनंदनचतुर्विंशातिपट्टः का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे गुणसमुद्रसूरिशिष्य आचार्यश्री....॥

६४८. सं. १४३२ वर्षे फाल्गुन शुदि २ शुक्रे दिशावालज्ञा० श्रीश्रेष्ठिपाल्हण भा० पाल्हणदे तत्सुता सांडा भा० भावलदे मातृपितृ-श्रेयोर्थं सुतश्रे० विरूआकेन श्रीआदिनाथपंचतीर्थी का० पूर्णिमाश्रीसोम-प्रभसूरीणामुपदेशेन प्रति० श्रीसूरिभिः ॥

६४९. सं. १३२९ ज्येष्ठ वदि १ शनौ ज्ञा० वासरिदेणं ला संग पूर्वजश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गवाडा.

६५०. सं. १५६० वर्षे वैशाख शु. ३ दिने श्रीश्रीमालिज्ञा० मं० वइजा भा० वइजलदे सु० मं० नगा भा० राजूसहितेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीमुनिचन्द्रसूरिभिः। बारेजा-वास्तव्य ॥

६५१. सं. १८७७ माघ वदि २ वार चन्द्र बाई कुसल श्रीऋषभदेवजीबिंबं. ॥

६५२. सं. १२५२ वर्षे वैशाख शुदि १२ ज्ञातिश्री.... श्रे० जेता सुत.... ....श्रीशांतिनाथबिंबं. ॥

६५३. सं. १३६७ वर्षे फाल्गुन शु. २ रवौ श्रीमद्भावाचार्य श्रीतिहुणकीर्त्तिगुरूपदेशेन श्रेष्ठिसाहडदेव सुत श्रे० साजणथ सुत जोखड
.... *

६५४. सं. १६६४ वर्षे पौष वदि १ बुधे विजापुरवास्तव्य श्रीमालिज्ञा० दो० जगपाल सुत काहनजेकेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपा० भ० श्रीविजयसेनसूरिभिः श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

६५५. सं. १३८४ वर्षे माघ शु. ११ सोमे तपा० पद्मणादि-मालसप्रवस्ता जासलदे संगड राजलदे मंडलंक वीजलदे मेघा काह्ना वना कारापितम् ॥

६५६. सं. १२५२ वर्षे माघ वदि ९ शुक्रे श्रीविमलनाथबिंबं का० बाई झवेर. ॥

६५७. सं. १५३९ वर्षे पोष वदि ९ शनौ श्रीओशवालज्ञातौ चिंचटगोत्रे श्रीदेशलान्वये सा० समरसिंह पु० सा० डुंगर तत्पुत्र सा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिरपति पु० सा० जाटा भा० जयसिरि पु० सा० समर्थ भा० मणकांइ पु० श्रीहांसन भा० हांसलदे भ्रा० शिवदास पु० शिवचंद श्रीगजपरिवारयुतेन पितुः श्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे कुकुद....श्रीदेवचंद्रसूरिभिः ॥

कोलवडा.

श्री जैन देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

६५८. सं. १५५३ माघ शुक्ल ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० सोनी राज भा० अमरी सु० सोनी कुंरा भा० मं० मेवा भा० माणेकिदे सुता रूपाई तया स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः अंचलगच्छे श्रीसिद्धान्तसागरसूरिगुरूपदेशेन का० प्रति० च विधिना अहम्मदावादवास्तव्येन.॥

६५९. सं. १३८८ वैशाख वदि २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृ महं लखमसिंह श्रेयोर्थं मातृ बा० अमीदेविपुण्यार्थं सुत महं. गोदामहेबानाभ्यां श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीहरिचंद्रसूरिभिः ॥

६६०. सं. १५१० वर्षे ज्येष्ठ शु. ३ गुरौ वीरवंशे श्रीचांपा भा० जासु पुत्र अजाकेन भा० डाही भ्रातृमालायुतेन श्रीअंचलगच्छनायकश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्रति० श्रीसंघेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६६१. सं. १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे प्रा० श्रे० काला भा० वानू पुत्र श्रे० धनाकेन भा० मेघा सुतमहिराज सोढा जिणदासादिकुटुंबयुतेन निजश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यगच्छनायकश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । महीशानकनगरे ॥

६६२. सं. १५२७ वर्षे माघमासे मांडलिवास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धांगा भा० हीमी सुतधनाकेन भा० माणिकियुतेन श्रीविमलनाथबिंबं स्वश्रेयसे प्रति० श्रीअमररत्नसूरिगुरूपदेशेन ॥

६६३. सं. १४२२ वर्षे वैशाख शुदि १२ बुधे श्रीभावडारगच्छे श्रीमालज्ञा० साहूना भा० सोनल पु० यजाकेन पितृपितृव्यदेलूण भा० हाजानिमिते श्रीवासुपूज्यपंचतीर्थी का० प्र० श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥

गेरीता.

श्री जैन देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

६६४. सं. १५४९ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे १ सोमे कर्णावतीवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० प० सहसा भा० सहसादाढ प० आसधीरकेन भा० रमादश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६६५. सं. १५३३ वर्षे माघ वदि १० उपकेशज्ञा० हीरा भा० भीबी पुत्र व्य० आसाकेन भा० आमलदे पुत्र हदा नासण ठासण भ्रातृव्य नगा भा० कोई प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीसाधचंद्रसूरिभिः । इडरनगरे ॥

६६६. सं. १५३५ वर्षे आषाढ शु. २ भोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जोगा भा० कद्गु सुत वीराकेन भा० रामति सुत पद्रिराजादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथादिपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरिगुरूपदेशेन का० प्र० विधिना अहम्मदावादे. ॥

६६७. सं. १५७२ वर्षे फाल्गुन शु. ३ भोमे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० गरथा भा० माद्रणदे सु० दो० भीमा अंजन भीमा भा० भरमदे सुसंघपतिशंकरसहितेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीपद्मशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनहर्षसूरिभिः। चतुर्थशाखायां लाडुलिवास्तव्य. ॥

६६८. सं. १५५९ वर्षे माघ शु.....गुरौ ओसवालज्ञा० लउ-कडगोत्रे सा० गणीया भा० डाही पु० देवदास भा० पुत्राई पु० महीपाल कुंरायुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं श्रा० पुनाई स्वपुण्यार्थं का० प्र० श्रीनाणवालगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः ॥

६६९. सं. १५२४ वर्षे वै. शु. ६ प्राग्वाट श्रे० सहसा भा० राणी सुत प्रयसाधकेसव वेणाजिणदासादिभिः भा० प्रथूप्रमुखकुटुंबयुतैः स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे परमगुरुश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

६७०. सं. १५७१ वर्षे चैत्र व. ७ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रीझां-झण भा० प्र० सुत आनंदाब्धि भा० राणी सुत शीदा सिंघा प्रमुख-पुत्रपौत्रादिसहितया श्रीराणीनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यादिपंच-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीर्थी श्रीआगमगच्छे श्रीसोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन का० प्र० च विधिना देलवाडावा० ॥

६७१. सं. १५३४ वर्षे माघ शु. ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० डुंगर भा० फलां सुत भीमा भा०....अमलकेन सुत वस्ताआकेन आत्मश्रेयसे आगमगच्छे श्रीआणंदप्रभसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः । अग्रारवास्तव्य ॥

प्रांतीज.

दिगंबर मंदिर.

६७२. संवत् १५२५ वर्षे महा शु. १० सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीविमलेन्द्रकीर्ति मं० श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिका प्रतिष्ठिता हुंबडज्ञा० मं० नासण भा० अमरकु सुत जोगा भा० जैतलदे भ्रा० राउल भा० रामलदे सुजिणंदा.... .... *

६७३. संवत् १५०९ वर्षे वैशाख शु. २ बुधे श्रीमूलसंघे भ० श्रीसकलकीर्ति भ० श्रीभुवनकीर्त्युपदेशात् हुंबडज्ञातीय सा० करमशी भा० हुली सुवडीरा भ्रा० हीरादि सुत चांचा जाइआ राजा नमीदासजी मासुतजी साणंत श्रीरत्नत्रय सउति संतिका नित्यं प्रणमन्ति ॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओराण.

दिगंबर मंदिरनी प्रतिमा उपरना लेखो.

६७४. सं. १५३५ वर्षे पोष व. १३ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ० श्रीसकलकीर्त्ति. तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषण-गुरूपदेशात् हुंबडज्ञातीय श्रे० गोवाल भा० भूरी सुत डुंगर भा० डुली सं. पूरी सुत हरदास भा० मादा अरी भ्रा० बीजा—चीवा—काना—कोदा एते नित्यं प्रणमन्ति ॥ चतुर्विंशतिका. *

६७५. सं. १५२६ वर्षे वैशा. शु. ३ श्रीमूलसंघे भ० श्रीसकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविमलेन्द्रकीर्तिभिः प्रतिष्ठितं श्रीआदिनाथबिंबं हुंबडज्ञा० श्रे० हापा भा० हांसलदे सुत मेघा भा० धरणु सुत भूचर कोचर भा० पूरी—कर्मी सुत.... ....॥ *

६७६. सं. १३४३ वष माघ शु. १२ सोमे श्रे० ऋषिल भा० श्रेयसे जयतात्॥ *

६७७. सं. १६११ वर्षे माघ व. ७ श्रीमूलसंघे नंदिसंघे सरस्वती-गच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीविजयकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्र तत्भ्रातृ घुकं....श्रीअभयचंद्रोपदेशात् हुंबडज्ञा० सा० हरपाल भा० हमीरदे तत्पुत्र सा० श्रे० हरखा भा० हरखमदे तत्पुत्र सं० श्रीवंत भा० सोनादे तत्पुत्र वीरपाल भा० जावाज सं० सत्रंत तद्भगिनी बा० श्रीपा० बू० छा० पार्श्वजिनप्रतिमा कारापिता ॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाषाण प्रतिमा मूल नायकजीनो लेख.

६७८. सं. ९९६ (?) वैशा. शुदि १२ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीसकलकीर्त्तिभिः तत्पट्टे अनुक्रमेण भ० श्रीचंद्रकीर्त्तिः तत्पट्टे भ० रामकीर्त्तिः तत्पट्टे सत्यकीर्ति तत्पट्टे.... .... ॥ *

पेथापुर.

बावन जिनालय प्रतिमाना लेखो.

६७९. संवत् १५३३ वर्षे फागण शु. २ बुधे श्रीकाष्टासंघे नंदीतटगच्छे भ० श्रीसोमकीर्ति शिष्य आचार्य विरसेन युक्तैः प्र० नारसींह ज्ञातीय तुलुडगोत्रे देवराज भा० झाज पु० महिराज भा० माधलदे पु० समधर श्रीपद्मप्रभबिंबं महं० महिराज आत्मश्रेयोर्थं का० ॥ *

६८०. संवत् १५१९ वर्षे जे. शु. १३ सोमे ओसवालज्ञातिय शा. धनपाल भा० धनाढ्यदेव्या पु० देवा सुत पु० राजप्रभृतिकुटुम्बसमन्वितया सपुत्रे चंपतश्रेयसे शीतलनाथबिंबं का० प्र० उकेशगच्छे सिद्धाचार्यसंताने देवभद्रसूरिणा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६८१. संवत् १४८९ वर्षे मा० शु० ११ शनौ श्रीमालज्ञा० महं. पुनसी भा० धरणु सु० हापा भा० विहुनदेवी पितृव्यवयरशा श्रेयोर्थं जेसासमधराभ्यां श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टारक-श्रीविमलचंद्रसूरिभिः ॥

६८२. संवत् १५१९ वर्षे जे० शु० ३ शनौ पराहातीजवासी ओशवालज्ञा० श्रे० हापा भार्या हीरादे सुत धीराकेन भा० सारु सुत सहजा भोजा प्रमुखकुटुम्बयुतेन भा० विरम श्रे० श्रीशांतिनाथबिंबं प्र० सुविहितसूरिभिः ॥

६८३. सं. १५३३ वर्षे पोष सु० १५ सोमे मघुडीवास्तव्य श्रीश्रीमालीश्रे० राउल भा० अधकु सुत श्रे० तेजाकेन भा० आसि पू० मूलाप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० वृद्ध तपापक्षे ज्ञानसागरसूरिपट्टे उदयसागरसूरिभिः ॥

६८४. सं. १५२५ वर्षे वैशाख शुदि ६ सोमे प्राग्वाटज्ञा० दोशी महिया भा० लाछु पुत्र व्यव० धरणाकेन भा० हांसु प्रमुखकुटु-म्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपापक्षे लक्ष्मीसागरसूरिभिः॥

६८५ सं. १५०२ वर्षे माघ शुदि ३ शुक्रे श्रीउकेशज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चांपलदे पुत्र वीरायानाम श्रे० खीमाकेन भा० रही ऋअरखु पुत्रकेन पितुर्निमितं श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० उकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्र० श्रीकक्कसूरिभिः॥

६८६. सं. १५४३ वर्षे जे. शु. १३ सोमे उकेशवंशे श्रवगोत्रे कोगरिशाखायाम् शा. पुनपाल पुत्र शा० वछराज भा० चांपु पु० जीवराजेन भा० पद्माई पु० शा. रत्ना शा. हेमा शा. मंबा प्र० परि-वारयुतेन पितृव्य शा. देवाश्रेयोर्थं प० खरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरि-पट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे पूज्य....

१६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६८७. सं. १५०७ वर्षे जे० शु० २ सोमे ओसवालज्ञा० श्रे० अमरसिंह भा० राणी सुत श्रे० रामसिंहनाम्ना भा० लाखुकुंवर सुत अदामहिराज्यप्रभृतिकुटुंबयुतेन निजपितृमातृश्रेयोर्थे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० बृहत्तपागच्छेशश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

६८८. सं. १५१७ वर्षे फा० श्रीवीरवंशे श्रे० चांपा भार्या जासु पुत्र मालाकेन भ्रा० पद्मिजीभाई सहितेन अंचलगच्छे जयशेखरसूरीणा-मुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० ॥

६८९. सं. १५६४ वर्षे जे. ११ शनौ श्रीश्रीमालज्ञातिय शा. वस्ता भार्या पुतली नाम्ना पुत्र पा० कान्हा भा० मानु पुत्र सकलचंद सहजा राजा वइजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे संभवबिंबं का० प्रतिष्ठितम् तपागच्छे हेमविमलसूरिभिः ॥

६९०. सं. १५१४ वर्षे माघ शु. २ शुक्रे प्रभादित्यपुरवासि श्रीश्रीमालज्ञातियश्रे० संघवी आशा भा० अहिवदे सुत जिनहासेन भा० लक्ष्मादे सुत वना विजपाल अमीपाल भोलादियुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपागच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

६९१. सं. १५२२ माघ शु. १३ बुधे श्रीमालज्ञातियश्रे० कांधिल भा० मारू सुत भीमा भा० संयधि पुत्र नर्मदे पद्मा झांझण सहितेन मा० पि० पितृव्य गुजर सोमा भा० धनीश्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयदेवसूरिपट्टे श्रीरत्नदेवसूरिभिः पूनाद्रि वास्तव्य ॥

६९२. सं. १५८७ वर्षे वैशाख शु. ७ सोमे कुंधिरावास्तव्य श्रीमालज्ञातियव्य० नगा भार्या सोनाई पुत्र गांगा भार्या गोराधि पुत्र मेघा समस्तकुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं आदिनाथबिंबं का० वृद्धतपापक्षे प्र० श्रीधनरत्नसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६९३. सं. १५६१ चैत्र वदि ८ शुक्रे मूलसंघे प्र० ज्ञानभूषण भट्टारक श्रीविजयकीर्ति उपदेशात् हुम्बड श्रे० देवसी भा० माजासु० श्रे० समधर भा० टाबु सुत श्रे० नासण भा० जावणी सुत नाथा भा० पुरि भ्रा० पेथा भ्रा० कडुआ श्रीनेमिनाथबिंबं ॥ *

६९४. सं. १५८९ वर्षे वै. शु. ५ सोमे हासपुरे श्रीमालज्ञातिय महं. सहजा भार्या सहजल सुत महं. हरसाकेन भा० रत्नादे सुत श्रीपाल भार्या अहिवदे सुत सिंहपति प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० स्वश्रेयसे वृद्धतपागच्छे धनरत्नसूरिभिः श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः प्र० ॥

६९५. सं. १५०५ वर्षे चैत्र शु. १३ प्राग्वाटज्ञातिय शा. चौडा भा० गौरि पुत्र देल्हाकेन भार्या देल्हाणदे भ्रातृ उगमे ततपुत्र कालु चांपा खिन्द्रादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपट्टकः कारितः प्र० तपापक्षे श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीजयचंद्रसूरिभिः ॥

६९६. सं. १५१७ वर्षे पोष वदि ५ गुरौ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धना भा० आशु सुत गांगा रामा भा० सोहासिणाकेन स्वभर्तृनिमित्तं श्रीकुंथुनाथबिंबमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिपट्टे श्रीविमलसूरिभिः। दशाडाग्रामवास्तव्य ॥

६९७. सं. १५१९ वर्षे जे. शु. १३ शनौ पाशालेवागोत्रे शा० माला सुत खीमा द्वितीयभार्या नाथी पुत्र शा हेमा पुत्र लालू सुत वांछा शृंगराज इत्यादिसमस्तकुटुम्बेन श्रीसंभवनाथस्य चतुर्विंशतिजिनानां पट्टः कारितः श्रीकोरंटगच्छे भ० श्रीषजूनसूरिभिः प्र० श्रीस्थंभतीर्थे श्रीलालुकर्मक्षयोर्थं ॥

६९८. श्री १५६९ वर्षे मागशर शु. ५ शुक्रे प्रा० ज्ञा० शा० नाउ भार्या हासि पुत्र ठाकरशी भार्या आल्हा भ्रातृ वरसिंह भार्या सलाखु पुत्र चांदा भा० सोमी ठाकु पुत्र जयसिंहसहितेन अंचलगच्छे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन मूलनायकश्रीआदीश्वर प्र० चतुर्विंशतिजिन-पट्टकः ॥

६९९. संवत् १५५९ वर्षे असाड सु. ८ बुधे राजनगरवास्तव्य पोरवाडज्ञातिय वृद्धशा० बीथसवजी भा० रामबाई सु० शा वीरा भा० सेवत्री सुत जेठादिपरिवारयुतेन श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीविजयप्रभसूरिपट्टे संविग्नपक्षे विमलशाखायाम् श्रीज्ञानविमलसूरिभिः ॥

७००. सं. १५०७ वर्षे जेठ वदि ४ बुधे दा० सा० भृ० अभिनन्दनबिंबं काउ० सिद्धाचार्यसंताने प्रति० श्रीककसूरिभिः ॥

७०१. सं. १५५२ वर्षे वै. शु. १२ भोमे प्राग्वाटज्ञा० गोपा भा० सुलेसरी सु० देवदास भा० शोभा गुणीया मातृश्रे० श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे भ० श्रीसोमरत्नसूरि तत्पट्टे श्रीहेमरत्नसूरिभिः ॥

७०२. सं. १५४३ वर्षे वै. शुदि ९ भू० श्रीब्रह्माणगच्छीय उकेश ज्ञातिय महं. षमायम भा० वेजलदे सु० धना भा० धूकी सू० राजा-हासा सांपतेन मातृपितृश्रेयोर्थं धर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिपट्टे श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः कंठासणग्रामे. ॥

७०३ सं. १५२७ पोष वदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० व्यवहा-रिरत्न भा० रत्नादे सुत खेता भा० साधसहितेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥

७०४ सं. १५०७ वर्षे माघ शु. ५ गुरुवारे उकेशदेच्छुगोष्ठीक वहुरागोत्रे शा० मेता भार्या पालणदे पुत्र महनसीकेन भा० हमीरदे पुत्र जगमाल जेतपाल विसलयुतेन स्वश्रे० सुमतिनाथबिंबं का० प्र० चैत्रगच्छे श्रीमुनितिलकसूरिभिः ॥

७०५. संवत् १५०७ वर्षे माघ शु. ११ श्रीश्रीमालज्ञा० महं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हर्या भा० हीरादे सुत तेजाकेन पितृश्रे० श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० भावडारगच्छे श्रीवीरसूरिभिः ॥

७०६. सं. १३८८ वर्षे माघ शुदि ६ सोमे उकेशगच्छे आदित्यनागगोत्रे शाखीरदेवात्मज शा भंडुक भा० मुरवाहि पुत्र ऋदपाल लक्ष्मणाभ्याम् भ्रातृधनसिंह देउसिंह पासचंद्र पुनसी सहिताभ्यां कुटुम्बश्रे० शांतिनाथबिंबं का० प्र० ककुदाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिभिः ॥

७०७. सं. १५६८ वर्षे मागशर सुदि ७ श्रीउकेशवंशे साधुशाखायां शा देल्हा भार्या देल्हणदे सुत शा कडुआकेन भ्रातृ सिंघा शा० महिराज शा प्रथमा भ्रातृव्य जागा परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छाधिराजश्रीजिनभद्रसुरियुगप्रवरागमे ॥

७०८. सं. १६१६ वर्षे असाड सु. ५ गुरु श्रीमाहिता आणपुत्र सहसकीरण भार्या रंगादे श्रीखरतरगच्छे जिनसिंघसूरिभिः शांतिनाथबिंबं प्र० का० ॥

७०९. सं. १७५१ वर्षे आषाढ शुदि ८ बुधे राजनगरवास्तव्य पोरवाडज्ञातिय वृद्धशाखायां सा० बवली भा० रामबाई सुत साविरा भा० सेवत्री सुत जेवादिपारिवारयुतेन श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरिपट्टे संविग्नपक्षे विमलशाखायां भ० श्रीज्ञानविमलसूरिभिः ॥

७१०. संवत् १८९३ शाके १७५८ वर्षे माघ शुदि १० बुधे श्रीराजनगरे पोरवाडवृद्धशाखायां सा० सौभाग्यचंद तत्पुत्र सा० विजयचंद श्रीअजितनाथबिंबं कारापितं श्रीविजयआणंदसूरिगच्छे भ० श्रीधनेश्वरसूरिभि प्र० ॥

७११. सं. १३८० महा शुदि ६ भोम उकेशगच्छे आदित्यनागगोत्रे सा० षिरदेवात्मज स० मंडुक भा० मोषाहि पुत्र रुद्रपाले

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भा० लक्ष्मणा भ्रातृधणसिंह देवसिंह पासचन्द्र पूनसिंह सहिताभ्यां कुटुंब-श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीककुदाचार्यसंताने श्रीकक्क-सूरिभिः ॥

७१२. सं. १५३२ वर्षे वैशाखमासे श्रीश्रीमालज्ञातिय मं. राजा भा० हर्षू तथा स्वसुत मं० राघवप्रमुखकुटुंबयुतेन आत्मश्रेयसे श्रीशांति-नाथादिपंचतीर्थी आगमगच्छे अमररत्नसूरिगुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता॥

७१३. सं. १५२३ वर्षे वैशाखशुदि १३ गुरौ........सलखा भा० सलषणदे सुत समस भार्या साति भोजा जोगा एतोः रुडा काला श्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। आगमगच्छे श्रीसिंहदत्तसूरिभिः॥

पानाचंद जेरामना देरासरनो प्रतिमानो लेख.

७१४. सं. १४६८ वर्षे का. व. २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जसा भा० बाई हांसू श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः॥ श्रे० हापा सुत वापा मथाकेन कारा० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रांधेजा.

शांतिनाथजीनुं देरुं.

७१५. सं. १४८१ वर्षे वैशाख वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे आचार्यश्रीपद्मनंदि तत्पट्टे श्रीशुभेन्द्रदेवाः। हुंबडज्ञातीय रणिग सा० प्रीमल सुत इराकेन श्रेयोर्थं....कारापितं श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं ॥

७१६. सं. १५२० वर्षे वैशाख शु० ९ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जागा भा० षोनी सु० धरणासहितेन आत्मश्रेयसे भ्रातृ ठाकुरसीनिमित्तं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्फलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मसागरसूरिभिः ॥

घरदेरुं बलाखीदीपचंदनुं.

७१७. संवत् १६४८ वर्षे माघ शुदि ४ अनंतमे श्रीमंडपदुर्गे श्रीश्रीवंशे सोनी श्रीमांडण भार्या भोली पुत्र सोनी श्रीसिंघराज भार्या संसारादसुश्राविकया समस्तकुटुंबसहितया स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेश-श्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन मूलनायकश्रीचंद्रप्रभस्वामिमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः कारापितः। प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलोल.

७१८. सं. १५११ वर्षे आषाढ शुदि ६ शुक्रे षानपुरवास्तव्य भावसार ठाकुरसी भार्या मांजू सुत भा० माईआकेन भार्या माई सुत भा० नाईआदेवी नषाधण पालवाछा (ला) दि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यादिपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरीणामुपदेशेन कारिता। श्रीसंघेन प्रतिष्ठिता ॥

७१९. संवत् १५९० वर्षे पोषवदि १२ रवौ विश्वलनगरवास्तव्य प्रा० ज्ञातीय दो० रामा भा० रमादे पु० ठाकुरकेन भा० अछवादे पु० हीरा भ्रा० नाकर भा० जीवी पु० जयवंत भ्रा० वछा भा० अवी पु० जागा भ्रा० रंगा भा० कनकाई प्रमुखकुटुंबयुतेन। श्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं तपागच्छे लघुशाखायां श्रीहेमविमलसूरितत्पट्टालंकरणश्रीआनंदविमलसूरिश्रीसौभाग्यहर्षसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ (चोवीशी).

कडी.

श्रीचिंतामणिपार्श्वजिनमंडळी वाळा देरानी प्रतिमा उपरना लेखो.

७२०. सं. १५२० वर्षे वैशाख वदि २ श्रीनाणगच्छे उ० ठाकुरगोत्रे श्रे० हीदा भा० हांसलदे पु० मोषाकेन भा० शाणी पु० गांगायुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७२१. संवत् १५९६ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ६ सोमवारे श्रीऊकेशज्ञा० श्रीअहिम्मदावादवास्तव्य सा० जीवा भार्या कीबू सुत सा० सीचा भार्या सागू युतेन आत्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः ॥

७२२. संवत् १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० विरूआ सुत मं० गागा भार्या मार सुत सा० महिराजेन भार्या देमति सुत गोविंद धीवर भावडविजादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं श्रीआगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरिगुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितं अहम्मदावादवास्तव्य ॥

संभवनाथजी मूलनायकवाळा देरासरनी प्रतिमाना लेख.

७२३. संवत् १५१२ वर्षे माघ शुदि १० शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीय । वुहरा ठाकुरसिंघ भार्या हांसू तयोः सुत वुहरा वीरपाल भार्या हर्षू राजू रंगादेवि वल्हादेवि श्रा० वीरी स्वकुटुंबश्रेयोर्थं मूलनायकश्रीशांतिनाथसहितश्रीचतुर्विंशतिजिनपट्टः कारितः । प्रतिष्ठितः विधिना भट्टा० श्रीसिंघदत्तसू....आगमगच्छे. ॥

७२४. सं. १५२६ वर्षे श्रीमूलसंघे भ. श्रीसकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविमलेन्द्रकीर्त्ति प्र० हुंबड० श्रे० सामल भा० वाछू सु० हेमा सहिदे राजा भा० तिलू सु० धरमा भा० धनी स्वकुटुंबश्रेयोर्थं ॥ ॐनमः ॥ (पार्श्वनाथनी पंचतीर्थी)

१७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७२५. संवत् १५७७ वर्षे ज्येष्ठशुदि ५ तिथौ शनिवासरे पुष्यनक्षत्रे कटीनगरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि मेघा भा० लषीनाम्न्या स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं श्रीतपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

७२६. संवत् १५६७ वर्षे वैशाख वदि १० गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० श्रीराज भा० सिरीआदे देभाइ सु० सा० सिंघराज भा० पाटीपुण्यार्थं श्रीपद्मप्रभस्वामिबिंबं कारितं श्रीअंचलगच्छे श्रीवमागरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

७२७ सं. १५१४ वर्षे माघ शु० १ शुक्रे कडीग्रामवास्तव्य ओसवालज्ञातीयश्रे० धामा भा० सलषू सुत परबतेन भा० चंपाई सुत लषानाकर तथा भ्रातृ नरबद सालिग काहूना नारदप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीश्रेयांसबिंबं श्रे० सामलश्रेयोर्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरिभिः ॥

७२८. सं. १७०५ वासुपूज्यबिंबं ॥ सं. १९२१ अजितनाथबिंबं ॥

७२९. सं. १७७८ वर्षे माघ शुदि श्रीशांतिनाथबिंबं ॥ श्रीनेमिनाथबिंबं ॥

७३०. सं. १४८१ वर्षे माघ शुदि ५ प्राग्वाटज्ञा० श्रीविमलनाथादिचतुर्विंशतिकापट्टः कारितः । प्रतिष्ठितः श्रीसूरिभिः ॥

७३१. सं. १५१८ वर्षे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपा० श्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीमुनिसुंदरसूरिशिष्यश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

७३२. सं. १५१६ वर्षे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ धोलकावा० ॥

७३३. सं. १५२४ वर्षे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्रति० पिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयदेवसूरिपट्टे भ० श्रीरत्नदेवसूरिभिः । देगामवास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७३४. सं. १५७७ वर्षे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीहारीजगच्छे भट्टारकश्रीशीलभद्रसूरिभिः ॥

७३५. सं. १५१६ वर्षे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

७३६. सं. १५१३ वर्षे श्रीधर्मनाथबिंबं श्रीकोरंटगच्छे श्रीकक्क-सूरिपट्टे प्र० श्रीसावदेवसूरिभिः

७३७. सं. १५७९ वर्षे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे भ० श्रीवीरदेवसूरिपट्टे भ० श्रीपासदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ कडीग्रामे ॥

७३८. सं. १५०६ वर्षे श्रीसुमतिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगु-णसमुद्रसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना श्रीस्तंभतीर्थे ॥

७३९. सं. १५७७ वर्षे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीहारीज-गच्छे भ० श्रीशीलभद्रसूरिभिः ॥

७४०. सं. १६१२ वर्षे श्रीआदिनाथबिंबं खरतरगच्छे प्रति० श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥ श्रीस्तंभतीर्थवा०

७४१. सं. १५५४ वर्षे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे धारणपद्रीय भ० श्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

७४२. सं. १५३६ वर्षे श्रीधर्मनाथबिंबं प्र० श्रीजिनरत्नसूरिभिः॥

७४३. सं. १४२९ वर्षे श्रीशांतिनाथपंचतीर्थी प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः ॥

७४४. सं. १३९० वर्षे श्रीपार्श्वनाथबिंबं प्र० श्रीसोमतिलकसूरिभिः॥

७४५. सं. १४०५ वर्षे श्रीसुविधिनाथबिंबं प्र० श्रीशुभदेवसूरिभिः॥

७४६. सं. १५६१ वर्षे तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः प्रति०।

७४७. सं. १५०४ वर्षे अंबिकादेवी प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीचे भोंयरामांनी प्रतिमाना लेख.

शक संवत् ९१० आसीन्नागेन्द्रकुले शीलरुद्रगणि पार्श्विल्लगणि....

सं. १६८९ कलिकुंडयंत्र कुदकुंदाचार्यान्वये

सं. १६६२ यंत्र श्रीसलीमराज्ये....

सं. १५५२ श्रीसुमतिनाथबिंबं श्रीउकेशगच्छे ककुदा० स० भ० श्रीकक्कसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

(आठ प्रतिमाओ चोंटाडेल होवाथी तथा एकना उपर लेख नहीं होवाथी लख्यो नथी.)

भोयणी.

सं. १५१५ वर्षे पंचतीर्थी प्र० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

सं. १५१५ वर्षे ,, ,, ,,

,, ,, ,, पद्मनंदिपट्टे भ० नंदिवर्धनसूरिभिः॥

सं. १५०३ ,, ,, आगमगच्छेशहेमरत्नसूरिभिः ॥

सं. १५७२ ,, ,, प्र० देवगुप्ताचार्यैः ॥

सं. १५३१ ,,

सं. १५४९ ,,

सं. १५६२

(पंचतीर्थीनो लेख खंडित थएल छे. रुद्राचार्य एवुं नाम वंचाय छे.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इंदरोडा.

७४८. सं. १५१३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टा० श्रीसकलकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा एते श्रीशांतिनाथचतुर्विंशतिकां नित्यं प्रणमन्ति ॥ *

खेरालु.

श्रीआदीश्वरजीनुं देहरुं.

७४९. सं. १४९३ वर्षे...........जीवणलाल नाहाल....स्वश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपा० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

७५०. सं. १५९६ वर्षे वैशाखशुदि २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० सर्वणु भार्या सिरियादे पुत्र मं० ल्यनणा भार्या हर्षू पुत्र ठाणायाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभबिंबं कारापितं । प्र० श्रीसुविहितसूरिभिः ॥

७५१. सं. १५१५ वर्षे माघ शुदि ११ रवौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीसकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्त्तिस्तत्पट्टे शा. हूंबडज्ञातीय ठा० हापा भा० वज्जू सुत धर्मसी भा० भोली एते नित्यं प्रणमन्ति ॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७५२. सं. १५६० वर्षे वैशाखशुदि १५ शनौ नी (वी) रवंशे॥ सं० षोषा भार्या चाई पुत्र सं० समधर सुश्रावकेन भार्या रही पुत्र सं० सूरा वीरा भाइश्रीसहितेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेश्वरश्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं संघेन श्रीपत्तननगरे ॥

७५३. सं. १४९५ वर्षे प्राग्वाटज्ञा०....स्वश्रेयसे घवं वकेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

७५४. सं. १५५९ वर्षे माघ व. २ गुरौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० बाघा भा० वमकू सु० सीहा भा० राणीनाम्न्या भ्रातृव्य० नाथा भा० जसमादे प्रमुखकुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः। गोलावास्तव्य० ॥

(एक लेख भूसायलो छे ने अस्पष्ट छे. १३ मी सदीना संभवे छे.)

७५५. सं. १४९९ वर्षे कार्तिक सुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० साजण भार्या भावलदे तस्य सुता का० पाल्हाण सीवगासंघ.... श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं। आगमगच्छे श्रीमुनिसिंहसूरीणामुपदेशेन प्रति० बिडालं वीक्रसंघ ॥

७५६. सं. १२९२ वर्षे वैशाख शु० १२...................... श्रीश्रेयांसबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। (आगल अक्षर घसाइ गया छे.)

७५७. सं. १६३० वर्षे चैत्र वदि ५ श्रीमूलसंघे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीबलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीवीरचंद्र भ० श्री ज्ञानभूषण भ० श्रीप्रभाचंद्रोपदेशेन सिंहपुराज्ञातीय सा० पामा भा० लाएमा तयोः पुत्रौ सं० साभाइ भा० गोरदे सं० नीर्घा पुत्री राजबाइ। सं० कीका भ० फूलबाइ। सं० लाछलदे पुत्र सं० श्रीचमा पुत्री माना भगिनी गंगाइ एतेषां मध्ये मं. कीका प्रणमति। श्रीचंद्रप्रभस्वामिने नमः॥ *

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७५८. सं. १५१६ वर्षे वैशाख शुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालवंशे श्रे० धना भार्या नाइ पु० सरवण भार्या सूएवदे पुत्र जागा सुश्रावकेण भा० झबू भ्रातृ जेसा जाणा पुत्र देवराजसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

७५९. सं. १९४४ वर्षे वैशाख वदि ९ खेरालूवा० श्रीवासुपूज्यबिंबं कारापितं ॥

७६०. सं. १४९९ वर्षे माघसित १३ दिने श्रीउकेशवंशे शा० देवराज पुत्र सा० नासश्रावकेण पुत्रवज्जादि सहितेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० श्रीखरतरश्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

७६१. सं. १४६६ वर्षे श्रावण शुदि १० दिने प्राग्वाटज्ञा०.... सुत षाहडन भ्रातृ सुविधिबिंबं का० प्र० श्रीदेवसुंदरसूरिभिः । तपागच्छे ॥

७६२. स. १४९६ माघ शु० ५ प्रा० ज्ञा० श्रे० आंबड भा० माल्हणदे सुत वरसिंहेन सुत मूलासि मणोर सु० मांकूयुतेन भा० हिमीश्रेयसे श्रीवीरबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

सं. १६१७ पोष वदि १ श्रीपार्श्वबिंबं ॥

सं. १६२४ श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीहीरविजयसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपार्श्वनाथनुं देरुं.

७६३. सं. १६९६ ज्येष्ठ व० ७ सोमे........अमरीश्री भार्या अमरादे सुत प० देवजीकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

७६४. सं. १४१७ वर्षे ज्येष्ठ शु. ३ प्रा० ज्ञा० व्य० मेला भा० माणिक्यदे पुत्र जावडप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छनायकश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

७६५. सं. १२९७ वर्षे...
श्री पार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्री........इसूरिभिः ॥

वलाद.

७६६. सं. १५६६ वर्षे माघ शु. ५ सोमे श्रीस्तंभतीर्थवास्तव्य ऊकेशवंशीय वृद्धसोनीशाखायां मिघटगोत्रे सो० पहिराज भा० पूरी पुत्र सो० देवचंद भा० देवलदेनाम्न्या पुत्र सो० सहिसधीर पासबीरसहितया श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे भ० श्रीउदयसागरसूरिपट्टे भ० श्रीलब्धिसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७६७. सं. १५०९ वर्षे वैशाख शु. १३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय महं० रामा भा० मांकू पुत्र मं. बलिराज सुश्रावकेण भार्या वहलादे० वृद्धभ्रातृ महं० आसा लघुभ्रातृ महं० धना भ्रातृ पुत्र वीरा प्रमुखकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छगुरुश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन आचंद्रार्कं विजयताम् ॥

(कूबा) कोबा.

७६८. सं. १५०८ वर्षे वैशाख शुदि ५ शनौ प्राग्वाटज्ञा० लघुशाखायां....करणा भा० लीलादे सुत लाडा भा० ओतम श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० द्विवंदनीकपक्षे प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

७६९. सं. १५२० वर्षे पोष वदि १३ भौमे श्रीश्रीमालज्ञा० गार्गेयगोत्रे महं० सिंघा भा० सहजलदे सुत वाघू भा० वोइ सुत षाना नरबद हीरू मूलू वनू हीरा भार्या २ प्र० हीरदे द्वि० पूणीसहितेन पूर्व०. श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे मलयचंद्रसूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः । चांद्रसमीयधरोसीणावास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोर.

७७०. संवत् १५२१ वर्षे वैशाख वदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० करमसी भा० लामी पु० मेघु भ्रातृ गोपा जयता मेघा भा० भानु पु० मातरसालिगडुंगरभूगर पित्राही भ्रातृ भीमुसालिग भा० लखी पु० सुरा कामासुतेन पितृपितृव्य....स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं....गच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

उवारसद.

७७१. सं. १५१९ वर्षे वैशाख मासे वदि ११ श्रीपंचतीर्थी श्रीमालज्ञातीय श्रे० वाछासुतश्रीतत्रान पुत्र सा तेजा भा० बाइ रुपाइ तया श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भावडहरागच्छे श्रीनाग-देवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अडालज.

७७२. सं. १५३१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीसोमकीर्तिभिः शिष्यश्रीवीरसेनयुक्तैः प्रतिष्ठितं हुंबडज्ञातिय बुधगोत्रे श्रे० लिबा भार्या नाई सुत देवा भा० विहिन सिवा भा० जीवणि सहजा भार्या सहतल सारंग भार्या प्रोढुतिश्रीश्रेया सहितं श्रीपार्श्वनाथबिंबं ॥ *

७७३. सं. ११७८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ सोमे जिनयुग्मप्रतिष्ठा संजाता । कुंडावरतरग्रामे वीरनाथस्य मंदिरे धर्मशांतितीर्थंकरौ ॥ (पाषाण काउसग्गीया).

अडालज वापीलेख.

सं. १५५५ वर्षे माघमासे पञ्चमीदिने पादसाहश्री महीमुद्राजा । ॐनमो....विनायकाय नमः ॥

यस्यान्वये मोकलसिंह आसीद्, दण्डाहिदेशाधिपतिर्नरेन्द्रः ।
वाघेल आखण्डलतुल्यधामा, योद्धाहियो भागवतप्रघातनम् ॥१॥
तस्याभवत् सूनुरतुल्यवीर्यः, कर्णो नृपः कर्ण इव क्षितीशः ।
सङ्ग्रामभूमिं महतीं हि लब्ध्वा, हता विपक्षाश्च धनुष्मता ते ॥२॥
उन्मूलयिता परेषां, मूलराजाऽवनीश्वरः ।
तस्मादजायत नृपाद्, रैणुकेयो यथा भृगोः ॥३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महीपतीनां प्रवरो, महीप इति विश्रुतः ।
तस्य सूनुरभूत् पाण्डोर्युधिष्ठिर इवापरः ॥ ४ ॥
महीपतनयो ह्यासीद्, वीरसिंहो धराधिपः ।
लीलागृहीतदेहोऽसौ, रामो दशरथादिव ॥ ५ ॥
अभूतां नृपती यौ तु, भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
वरसिंहश्चाजैत्रश्च, महीपतनयावुभौ ॥ ६ ॥
दण्डाहिदेशाधिपतिर्वीरसिंहो धराधिपः ।
वल्ल्यवल्लीं समासाद्य, स्वशोभत पुरंदरः ॥ ७ ॥
तस्य श्रीवीरसिंहस्य, राज्ञो राज्ञी रमेव या ।
वापिकां शिल्पिमुख्यैश्च, रूडादेवी व्यचीकरत् ॥ ८ ॥
स्वस्तिश्रीनृपविक्रमार्कसमयातीते कलौ साम्प्रतं,
संवत् पञ्चदशे तु पञ्चमिलिते वर्षे च पञ्चाशति ।
वीरश्रीवरसिंहदेवनृपते राज्ञी हि रूडाऽभिधा,
वापीं देवधुनीसमां सुतनया निर्माति वेणेशितुः ॥ ९ ॥
कौबेरीं दिशमाश्रिते दिनपतौ मासे च माघाभिधे,
पक्षे शुक्लतमे तिथौ फणभृतो वारे बुधस्योत्तरा ।
नक्षत्रे बवसंज्ञके च कर्णे योगे च सिद्धौ परे,
रूडाऽऽख्या पतिदेवता तु महतीं वापीमकार्षीच्छुभाम् ॥ १० ॥
मानसाऽऽख्यं सरो दीव्यं, किंवा स्वर्गापगा किमु ? ।
कैलासो वेति सर्वेषां, विभ्रमं विदधाति या ॥ ११ ॥

या वापिकेति तनुते विषयं सुराणां,
वातायनैः सुरवधूसमधिष्ठितैश्च ।
स्वर्गोऽप्यसौ किमुत वाऽसुरसद्मभूः सा,
सा किं नु जह्नुतनयाऽप्यथवेयमुच्चैः ॥ १२ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपांसुलानां प्रथमाभिधेया, या रूडराज्ञी कलिकल्पवल्ली ।
श्लाघ्यैश्चरित्रैः स्वकुलं च पत्युर्विभासयन्ती किल मैथिलीव ॥ १३ ॥
कोटीधनं तृणमिव प्रसभं यथा तु,
क्षिप्तं नृपेषु विबुधेषु तुलां तु तस्याः ।
का नाम राजदयिता न च कामधेनु—
र्नोप्येति कल्पलतिका किल रूडराज्याः ॥ १४ ॥
टंककानां तु लक्षाणि, पञ्च क्रीतानि काशतः ।
वापीकृतेऽनया राज्या, रूडादेव्येति संश्रुतम् ॥ १५ ॥
अडालिजे वरग्रामे, वीरसिंहस्य वल्लभा ।
रूडाराज्ञी व्यधाद् वापीं, भूषितां वल्लभीशतैः ॥ १६ ॥

स्वस्तिश्रीमन्नृपविक्रमसमयातीत—आषाढादिसंवत् १५५५ वर्षे शाके १५२० प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये शिशिरर्त्तौ माघमासे शुक्लपक्षे पञ्चम्यां तिथौ बुधवासरे उत्तराभाद्रपदनक्षत्रे सिद्धिनाम्नि योगे बवकर्णे मीनराशिस्थिते चन्द्रे पादसाहश्रीमहमुदविजयराज्ये दण्डाहिदेशाधिपतिर्नृपतिचक्रचूडामणिवाघेलश्रीमहीपतनयराजश्रीवरसा धर्मपत्नी राणीश्रीरूडबाइए भर्त्तीने परलोकार्थे अडालिज वावी करावी ॥ श्रीमालिज्ञाति० महं० भीमा सुत मासण वावी निपजावी ॥ टंका लाख पांच १११ अंके ५००१११ थया. ॥

आचन्द्रार्कं स्थिरस्थायिनी भवतु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झुंडाळ.

सं. ११०६ पार्श्वनाथ.

७७४. सं. १२०१ वर्षे नागेन्द्रगच्छे श्रीमानतुङ्गाचार्यसंताने ग्रामे साकेतसांकाश्ये तीर्थे कारिता श्रीपार्श्वनाथ ॥

७७५. सं. १९८४ वर्षे वैशाख शुदि ४ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय शा. वमा भार्या वह्लादे पु० सा० जणीआ भार्या भीमी सु० हांसा हीरा आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीआगमगच्छे भट्टारक श्रीशवकमारं (शिवकुमार) सूरिभिः । वटपद्रनगरे ॥

अमदावाद.

हठीभाईनी वाडीना बावन जिनालयनी प्रतिमानो लेख.

७७६. सं. १९०४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० सोमे श्रीअहिम्मदावादवासि श्रीप्राग्वाटज्ञातीय मं० गेला भा० रयकू तयोः सुतया आपूनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७७७. सं. १५६१ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० केल्हा भा० काल्हणदे सुत मालु भा० कडू सा० भोगा भा० अनूयतेज पूर्वजनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीविमलसूरिभिः प्र० ॥

सोदागरनी पोळना देरासरनी प्रतिमाना लेखो.

सं. ११६६ वर्षे माघ शुदि ५ (पंचतीर्थी.)

७७८. सं. १५०८ वर्षे वै० वदि १ गुरुवारे उकेशज्ञा० नाहर गो० श्रे० रेडा पु० समरशा भा० दमाइत पु० सेदिवदत्तेन मातृरमाह श्रेयसे श्री ि.वबिंबं का० प्र० धर्मघोषगच्छे विजयचंदसूरिपट्टे भ० श्री साधुरत्नसूरिभिः ॥

७७९. सं. १५०३ वर्षे श्रीऊप० ज्ञा० नाहरगोत्रे सोनी रेडा सुत सोन चांपशी भा० धांउ पुत्र मालदेन पितृमातृश्रेयसे श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० श्रीराजगच्छे ॥

७८०. सं. १५४५ वर्षे ज्ये. शु. १० श्रीश्रीवंशे श्रे० नरपति भा० जीविणि पु० श्रे० लखराजकेन निजकुटुंबसहितेन निजश्रेयोर्थं अंचलगच्छे सिद्धान्तसागरसूरीणामुप० शांतिबिंबं का० प्र० अमदावादे॥

सं. १६९३ वर्षे विजयसिंहसूरिभिः तपागच्छे ॥

७८१. सं. १६७० वर्षे माघ शुदि ५ वणोदवा० व्य० श्रीमाली ज्ञा० कान्हा भा० कमलादे सु० रतनजी रूपजीकेन मुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० त० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७८२. सं. १५७२ वर्षे फा. शुदि ८ सोमे श्रीविद्यापुरवा० श्रीमालज्ञा० मं० हर्षा भा० सांकू सु० मं० हाथीया भा० हीरादे सु० मं० भाया मं० भाखा मं० कपाप्रमुखेन मं० हर्षा रचनेन स्व० श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे राल्द्रागच्छे ॥

७८३. सं. १५८५ वर्षे वै. शुदि २ शनौ ओ० सं० खीमाकेन भा० कनकाइ पु० ठाकरशी टोकरशी डुंगरशी डुंगरशी पद्मशीप्रमुख-कुटुंबयुतेन भगिनीभवकुश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः वडनगरवा० ॥

७८४. सं. १४५८ वर्षे वै. वदि २ बुधे प्रा० ज्ञा० व्य० कुंदा भा० खांती मातृनिमित्तं सु० गोवलेन श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे शीतलचंद्रसूरिभिः ॥

७८५. सं. १३८६ वर्षे भा० वदि २ श्रीमाघ वदि श्रीमाल ज्ञा० पितृ सादल मातृ देउश्रेयसे पु० रुओराकेन श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० नाणगच्छे बुद्धिसागरसूरिभिः ॥

७८६. सं. १५२३ वर्षे वै. वदि ४ शुक्रे प्रा० ज्ञा० श्रे० गांगा भा० रूपीणि सुताबाइ वाडू नाम्न्या....स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे जिनरत्नसूरिभिः सद्दुआलावास्तव्य.... .... ॥

७८७. सं. १५१५ वर्षे मा. शुदि ७ मु. विजापुरनि० ओ० ज्ञा० दो० जेसा भा० जसमादे सु० दो० भावडेन भा० भरमादे सु० राघवयुतेन श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० बृ० त० रत्नसिंहसू० ॥

७८८. सं. १३०५ वर्षे ज्ये. शुदि ७ प्रा० ज्ञा० .... नागेन्द्रगच्छे हरिभद्रसूरिशिष्यविजयसेनसूरिपट्टे उदयप्रभसूरिभिः ॥

७८९. सं. १४८१ वर्षे फा. शुदि ३ प्रा० ज्ञा० दो० सूरा भा० पोमी सुत दो० आशाकेन भा० रूपिणी सु० सारंगादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० सोमसुंदरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७९०. सं. १५९५ वर्षे मा. वदि ३ ऊपकेशवंशे प्रागूवाटगोत्रे सा० कानउ पुत्र सा० बाहड सु० सा० नाथा भा० सांकु पुत्र भीमा भा० करमादे पुत्र सिंघा सिंहा मातृयुतेन वाघाकेन भा० रत्नादे भा० वासद्धायुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे जिनचंद्रसूरिपट्टे जिनशीलसूरिभिः ॥

७९१. सं. १६२४ वर्षे मा. शुदि ६ सो० वृद्धकुकेश सा० गो० रुंओ सा० सुरा भार्या सोहागदे सु० सा० रुडीनाम्न्या निज .... शांतिबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहीरविजयसूरिभिः ॥

सं. १६२८ वर्षे वै. शुदि ११ ....

७९२. सं. १५४६ वर्षे मा. शुदि २ श्रीमालज्ञा० महेता मांउढा भार्या सारु सुत म० ठूसा भा० राजु सु० म० लवाकेन भा० धर्मिणी सु० पद्मा प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसंभवबिंबं का० प्र० वृद्धतपागच्छे ज्ञानसागरसूरिपट्टे उदयसागरसूरिभिः ॥

७९३. सं. १५९८ वर्षे वैशाख शुदि ६ शु. श्रीमालज्ञा० श्रे० कडुआ भा० पहुती सुत श्रे० आजनभीमा वीमा अंजन भा० अजादेभीमा भा० रमादे स्वकुटुंबश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसूरिभिः ॥

७९४. सं. १५३० वर्षे मा. शुदि ५ शु. प्रा० ज्ञा० श्रे० परवत भा० संपूरी सु० मोल्हाकेन भा० धनी भा० रुहिजा सुत नाथा-हाथी सहितेन आत्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीसर्वसूरिभिः ॥

७९५. सं. १५६८ वर्षे मा. शुदि ५ गुरौ उपकेशवंशे मीढं-डीआशाखायां सा० पांसा भा० रुपाइ पु० सा० उदासुश्रावकेण भा० लाछलदे पुत्र० सा० नोखु पुत्र नारिंगसहितेन श्रीअंचलगच्छे भावसा-गरसूरीणामुपदेशेन श्रीसुविधिबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सं. १३९९ वर्षे ....

७९६. १४७९ वर्षे पो. वदि ५ शुक्र ओ० ज्ञा० श्रे० भादा भार्या लाखु सुत बीसल भा० विल्हणदे सु० चुंडाकुटुंबसहितेन ठा० विसलेन बिंबं का० प्र० द्विवंदनीकगच्छे देवगुप्तसूरिभिः ॥

७९७. सं. १५१० वर्षे चैत्र वदि १० लाडवूलिवासी श्री० ज्ञा० श्रे० गुणपाल भा० वाली पु० श्रे० डुंगर सुत० छाबापत्न्या कमीनाम्न्या स्वश्रेयसे मुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

७९८. सं. १५१० वर्षे माघमासे देकावाटकीय प्रा० श्रे० सता भा० सूदी पु० जेसाकेन भा० सइसु पु० माणिक रंगादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यरत्नशेखरसू०॥

७९९. सं. १५५२ वर्षे महा शुदि १ बुधे उवएसवंशे सा० पहिराज भा० मकू पुत्र सा० तणपनिसुश्रावकेण. भा० हीरादे पु० सा० लखा सदयवच्छसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

८००. सं. १५०९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ९ बुधे श्रीहुंबडज्ञा० ऊकेशगोत्रे श्रे० आभादा भार्या हिरु सुत साइया मेरापांवा पांपोकाला-परवनसाईया भा० मटकू सुत मनोमहा भा० सुहासिणि सुत कान्हा साइयाकेन समस्तकुटुंबसहितेन सा तृणवा भार्या वीजूनिमित्तं श्रीचंद्रप्र-भस्वामिबिंबं का० प्र०.... .... सूरिभिः । शुभं भूयात् ॥

८०१. सं. १५२५ वर्षे मार्गशीर्ष शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञा० मं० चांपा भार्या चांपलदे पुत्र मं० सारयाकेण भा० सहिजलदे इजलदे पुत्र हेमराज धनराजादे कुटुंबयुतेन पितृव्यधागाश्रेयसे,..श्रीआ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागच्छेशश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे....श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । अमदावादनगरे ॥

८०२. संवत् १५०९ वर्षे माघ शुदि ९ रवौ ओसवालज्ञा० महं० सायन भा० नाहीपत डुंगर भा० छुमहि.... ....वलादे ससवदास आत्मश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० भट्टारक.... ....॥

८०३. संवत् १५३३ वर्षे पोष शुदि ९ उकेश सा० पदमा भा० लाडी सुत सा० सहजाकेन...........

झवेरीवाडो–संभवनाथजैनदेरासरनी प्रतिमाना लेखो.

८०४. सं. १५३० वर्षे माघ वदि ७ बुधे प्राग्वाटज्ञातीय मंत्रि गांगा भा० लहकू पुत्र मं० वीसाकेन भा० घरव्वति सहितेन पि० मा० तथा भ्रा० रंगा अद्रामहिपा नि० आत्मश्रे० श्रीशांतिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्रति० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मसुंदरसूरिपट्टे श्रीधर्मसागरसूरिभिः। मषसूदपुरवास्तव्य.

पंचतीर्थी.

८०५. सं. १५२४ वर्षे वैशाख शुदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० भूता भार्या देमति पु० आसि भा० साजणा तत्पुत्र सा० सोढा भा० माणिकि सहितेन श्रीअनंतनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुरुभिः ॥

८०६. सं. १५०५ वर्षे वैशाख शुदि ७ दिने ऊकेशवंशे सा० नाथू पुत्र सा० अमराकेन भ्रा० वधा पु० दशरथ पुजा कुसलायुतेन श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८०७. सं. १५२७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० टाहा भा० शाणी सुत पंचायणेन भार्या हीरु सुत वीरा जीवणादि-कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुप० का० प्र० विधिना छात्राग्रामे ॥

८०८. सं. १५०५ वर्षे वैशाख शुदि २ शुक्रे श्रीमालज्ञा० श्रे० प्रथमा भा० जासलदे सुत श्रे० षोनाहापाभ्यां पितृमातृनिमित्तं आत्म-श्रेयसे श्रीआदिनाथपंचतीर्थीबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे त्रि० श्रीधर्मशे-खरसूरिभिः ॥ उलक

८०९. सं. १५०८ वै. शुदि ३ प्रा० श्रे० भीम भा० वाबू पु० मं० गोइंद भा० झबकूनाम्न्या श्रे० चांपा भा० रूपीपुत्र्या स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः । श्रीअहम्म-दावादे ॥

८१०. सं. १५८० वर्षे वैशाख शुदि १२ शुक्रे प्रा० ज्ञा० वृद्धसंताने श्रे० अरजन भा० आलूणदे सु० श्रे० देवराज भा० लखाइ पु० लहूया भा० वीरीसहिताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० आमगच्छे श्रीशिवकुमारसूरिभिः ॥ वलावा०

८११. सं. १५३० वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्रीकोरंटगच्छे उप० ज्ञा० सा० आसा भा० आसलदे पु० सा० माधवेन स्वश्रेयसे श्रीसुम-तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनन्नाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिपट्टे श्रीसावदेव-सूरिभिः ॥

८१२. सं. १५५७ वर्षे वैशाख शुदि ४ भोमे ओ० ज्ञा० सा० उदयसी सुत मांडा सा० देऊ सुत ३ बाहड १ कुंदा २ मेहामांडा ३ भा० देऊतिस्ति श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे भ० श्रीजिनहंससूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८१३. सं. १५१३ वर्षे फा. वदि ११ प्रा० ज्ञा० सा० पाना भा० नागिणि सु० सा० महिराजपहिराजाभ्यां भा० पञ्चाई आसू पुत्र पूनसी प्रमुखकुटुंबयुताभ्यां स्वमातृपितृश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपा-श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी)

८१४. सं. १५१९ वर्षे माघ शुदि १३ सो. वरवासि प्रा० श्रे० मूंजा भा० मांजू सुत श्रे० चावाकेन भ्रातृ गोपा देवा भां० रामति वजू नीतू प्र० कुटुंबयुतेन श्रेयसे श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

८१५. सं. १५१९ वर्षे माघ शुदि १३ प्रा० श्रे० केल्हा भा० करेणु सुत खात्रड भा० अघ्रू सुत सोमाकेन भा० मेघू सुत जइता खेता-दिकुटुंबयुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

८१६. सं. १५२५ वर्षे माघ शुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा मं० झाटा भा० झमकलदे सुत हीराकेन भा० मानूसह पितृमातृ-श्रेयोर्थं च आत्मश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

८१७. सं. १५०१ वर्षे आषाढ शुदि २ प्रा० ज्ञा० व्य० ऊगम भा० गुरी सुत धर्माकेन भा० लींबीयुतेन स्वभ्रातृदेवाश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीमुनिसुंदरसूरिभिः । श्रीमहिगांलवा०

८१८. १५०८ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ श्रीमालज्ञा० श्रे० राघव भा० लाडी सुत त्रासणवरदे राघव भ्रातृ राणा भा० रांभलदे सुत नानाकेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० थिराद्रगच्छे श्रीविजयसिंहसूरिभिः ॥

८१९. सं. १५०९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ७ बुधे अंचलगच्छे श्रीज-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीनीमाज्ञा० श्रे० षयसकेन भा० पोई पु० भोजा राजा राणासहितेन निजश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

८२०. सं. १५१५ वर्षे माघ शुदि १ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० महं० सारंग भा० मापरि सुत देवाकेन मातृपितृपितृव्यनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० पूर्णिमा० श्रीवीरप्रभसूरिपट्टे....कमलप्रभसूरिभिः प्रति० । शणवहाग्रामे वा० ॥

८२१. सं. १५१३ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० हीमाला भा० संभलदे सु० डूंगरकेन भा० मटी सु० सालिंग महिरामकमासहितेन पितृमातृस्वश्रेयसे च जीवित स्वामिश्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीशांतिसूरिपट्टे श्रीगुणरत्नसूरिभिः ॥ कांकरयावा० ॥

८२२. सं. १५११ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० केल्हा भा० कील्हणदे पुत्र समधरकेन मातृपितृश्रे० श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीविजयप्रभसूरिभिः ॥

८२३. सं. १४६६ वर्षे माह शुदि १२ रवौ श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुङ्गसूरीणामुपदेशेन प्रा० ज्ञा० मं० कडूण भा० ललती सुत केल्हाआल्हाभ्यां श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी).

८२४. सं. १५४४ वर्षे फागण शुदि २ शुक्रे श्रीप्रा० ज्ञा० व्य० पेथडसंताने व्य० गणीआ सु० व्य० भूपतिकेन सा० भा० साधू सु० सचवीरढूंढादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं श्रीआगमगच्छे श्रीविवेकरत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० चेति शुभं ॥ (पंचतीर्थी).

८२५. सं. १५४७ वर्षे मा. शुदि १३ रवौ श्रीओसवंश० श्री स्तंभतीर्थवा० सा० वीरा भा० रत्नादे सुत सा० जिनदत्तेन भा० इंद्राणी सुत शिवदास प्र० कुटुंबयुतेन सुतगंगाश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीसर्वसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८२६. सं. १४७० वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कर्मसीह भा० कर्मादे सु० श्रे० राउलेन आत्मश्रे० श्रीआगमिकाचार्यसंताने श्रीमदमरसिंहसूरीणामुपदेशेन श्रीशांतिनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० विधिना ॥ (चोवीशी.)

८२७. सं. १५०८ वर्षे माघ शुदि ५ सोमे उपकेशज्ञा० हातीं सांगा भा० मदोअरिनाम्न्या सुत सोमासहित स्वश्रेयसे श्रीजीवितस्वामिश्रीसुमतिनाथबिंबं का० पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय .... श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥ (पंचतीर्थी.)

८२८. सं. १४९३ वर्षे वैशाख शुदि ५ बुधे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० पासादा भा० प्रीमल्दे सुत षीमा भा० खेतल्दे सुत कमलारादीभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीनेमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीजज्जगसूरिपट्टे श्रीपजूनसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

८२९. सं. १४८५ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे ओछत्रवालगोत्रे सा० पचूणसीह पु० नाथू पु० सा० काल्रू मेवा सिवगणयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीमहीतिलकसूरिभिः ॥

८३०. सं. १५१३ वर्षे पोष शुदि १० बुधे सूर्यपुरवासि श्रीमालज्ञा० मं० पेथा भा० सेगृ पुत्र मं० हरराजेन भा० जइती सुत मालादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपा .... श्रीरत्नशेखरसूरिगुरुभिः ॥

८३१. सं. १५२७ वर्षे पोष वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० ऊगम भा० मरगदि सुत सहसाकेन पितृश्रेयसे आत्मश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयदेवसूरिपट्टे श्रीरत्नदेवसूरिभिः । कक्करपुरवास्तव्य. ॥

८३२. सं. १५०२ वर्षे वै. वदि ४ शुक्रे ऊके० श्रे० धर्मसीह भा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मादे पुत्र धूताकेन भा० धांधलदेयुतेन स्वमातृपित्रादिश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० ऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने भ० श्रीकक्कसूरिभिः॥

८३३. सं. १५१३ वर्षे माघ शुदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० मं० महिपा द्वि० भा० देवलदे सु० लाडनकेन भा० ललतादे पितृमातृश्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः ॥

८३४. सं. १५२० वर्षे अहम्मदावादे ऊकेश. सा० सोमा भा० सोमसिरि पुत्र सा० रत्नपालेन भा० मरगदि पुत्र डुंगर प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्रति० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिश्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

८३५. सं. १५१० वर्षे प्रा० श्रे० पर्वत भा० मनी सुत साजणेन भा० अमकू सुत नरपाल मातुलधारादिकुटुंबयुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

८३६. सं. १५३५ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कुंता भा० भरमी सुत देवा भा० मानू हीरा भा० डाही मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीपिप्पलगच्छे भ० श्रीधर्मसुंदरसूरिपट्टे श्रीधर्मसागरसूरिभिः ॥

८३७. सं. १५१० वर्षे माहवदि ५ दिने उ० बलाहडीया गोत्रे सा० वीसल भा० धाली पुत्र लखो भा० लखमश्री पु० हालूभिः सहसा ओधरणनिमित्तं श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपल्लिकीयगच्छे श्रीयशोदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु.

८३८. सं. १५३१ वर्षे नीमा ज्ञा० श्रे० पाता भा० अरघू सुत जेसा राणा सामल पांचादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८३९. सं. १५२१ वर्षे माघ शुदि १३ गुरौ गाणिजवासि प्रा० ज्ञा० श्रे० हीगा भा० रूपिणि सुतवरसिंगेन निजश्रेयोर्थं श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिश्रीरत्नमंडनसूरिभिः ॥

८४०. सं. १५०८ वर्षे कार्तिक वदि ९ प्राग्वाटमहं० जीजा सुत पाता भा० हीरू सुता अंकी भर्त्तुः चांइयाश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना पं० जयसुंदरेण कारापितं ॥

८४१. सं. १५१६ वर्षे वै. वदि १२ शुक्रे महिसाणावासि सा० नउला भा० राणी पुत्र राघवेन भा० सारू सुततेजपाल भा० रंगाई प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्रीरत्नशेखरसूरिराजैः ॥

८४२. सं. १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ भोमे उ० वीराणेचागोत्रे सा० वीरा भा० धरणू पु० डाहा भा० लाधू पु० मीनाई लातस्ना जोगा । मातृनिमित्तं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे भ० श्रीसोमकीर्त्तिसूरिपट्टे प्रतिष्ठितं श्रीचारुचंद्रसूरिभिः ॥

८४३. सं. १५२४ वर्षे आषाढ शुदि १० गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० गोदा भा० रामतिनाम्न्या पुत्र भलारहीपायुतया श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीपूज्यश्रीपुण्यचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

८४४. सं. १५३७ वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रत्ना भा० रामति पुत्र अदा भार्या कपूरी सुत कुंरासहितेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० द्विवंदनीकगच्छे भ० श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

(एक प्रतिमा उपरना अक्षरो वंचाता नथी. ॥ धर्मनाथजी मूलनायकवाळा गभारानी प्रतिमाना लेखो संपूर्ण)... ....

२०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महावीरस्वामी मूलनायकवाळा गभारामांनी प्रतिमाना लेखो.

८४५. सं. १४८७ वर्षे मार्ग. शुदि ९ प्रा० श्रे० देवड भा० देल्हणदे सुत श्रे० हीराकेन भा० पूरी सुत राजावजादिकुटुंबयुतेन श्रीशांतिबिंबं का० प्र० तपाश्रीदेवसुंदरसूरिशिष्यश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

८४६. सं. १५४९ वर्षे वैशा. शुदि ३ शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमालज्ञा० श्रे० पोचा भा० शाणी सुत जाईआकेन भा० भलीयुतेन सुतजीवावीरासहितेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः॥ कुंआसुद्रग्रामे. ॥

८४७. सं. १५२१ वर्षे वै. शुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० नरसिंह भा० तेजू सुत वाघाभार्यया अरघूनाम्न्या आत्मश्रेयसे आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन श्रीअभिनंदनस्वाम्यादिपंचतीर्थी का० प्र० सीहस्ग्रामवा. ॥

८४८. सं. १७०५ वर्षे वैशा. वदि २ दिने राजनगरवा० श्रीश्रीमालीज्ञा० सा० समरथ पुत्र सा० वेल्लनाम्ना श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिभिः श्रीविजयसिंहसूरिप्रभः........ परिवारपरिकरितैः ॥

८४९. सं. १५०८ वर्षे वैशा. वदि १ गुरौ ऊकेशज्ञा० मंडोवरागोत्रे सा० महिराज भा० महणश्री पुत्र जगाकेन गंगाईभार्यायुतेन स्वपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीविजयचंद्रसूरिपट्टे श्रीसाधुरत्नसूरिभिः प्र० ॥

८५०. सं. १५२५ वर्षे फा. शुदि ७ शनौ ओसवालज्ञा० साजण भा० मरमदि पु० देवराजेन भा० जासू पुत्रलखमसीयुतेन स्वमातृश्रेयसे श्रीविमलजिनबिंबं का० कोरंटगच्छे प्र० श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८९१. सं. १५२८ वर्षे वैशाख शुदि ९ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० साभा सुत श्रे० वर्धा भोजा गदा भा० गुरी भ्रातृठाकुरसीश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्रति० श्रीसोमचंद्रसूरीणामुपदेशेन । मांकुणुरीयाग्रामे ॥

८९२. सं. १४७० वर्षे चैत्र शुदि ८ गुरौ श्रीमाली श्रे० सांसण भार्या सुहागदे सुतेन श्रे० बाजाकेन निजश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुङ्गसूरीणागुपदेशेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० ॥

८९३. सं. १५०९ वर्षे माघ शुदि ५ सोमे प्रा० श्रे० आका भार्या धरणू सुत सं० नरसिंग भा० माकू सुतपासाकेन भा० चंपाई भ्रा० सचादियुतेन निजश्रेयसे श्रीशीतलबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

८९४. सं. १४७८ वर्षे माह वदि ७ शनौ श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० धरणा भा० धांधलदे पुत्रपूंजाझाझणाभ्यां भ्रातृमेहाभीमाराजानिमित्तं मातृपित्रोः श्रेयसे श्रीशीतलपंचतीर्थी का० प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभिः ॥

८९५. सं. १५४९ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमालज्ञातीय दो० वाछा भा० हरषू सुतहेमा भ्रातृआषर भा० सोभागिणि सं. गणपतिसहितेन स्वपितृमातृनिमित्तं.... .... आत्मश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिपट्टे श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः श्रीकाल्हरीवा० ॥

८९६. सं. १५४२ वर्षे कार्तिक वदि २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० झांझण भा० नाई सुतदेवाकेन पितृभ्रातृजेसाश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे भ० श्रीपद्माणंदसूरिभिः । गोभलजवा० ॥

८९७. सं. १५०५ वर्षे माहा शुदि १० रवौ श्रीप्रा० ज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रे० आका भा० मेघू सुत जोगा भा० धांइनाम्न्या आत्मश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीजिनरत्नसूरिभिः ॥

८५८. सं. १५१० वर्षे चैत्र वदि १० शनौ प्रा० ज्ञा० श्रे० सारंग भा० सांरू पुत्र जाला तलका प्र० सामलादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

८५९. सं. १५०३ वर्षे माघ शुदि ४ गुरौ श्रीश्रीमा० श्रे० समरा भा० रांभलदे सुतपेथाकेन स्वश्रेयसे जीवितस्वामिश्रीपद्मप्रभबिंबं सुगुरूपदेशेन का० प्र० श्रीछत्रीआदिवा० ॥

८६०. सं. १५९९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने श्रीश्रीक्षेत्रवास्तव्य प्रा० ज्ञा० मं० वेला भा० अदकू सुत मं० शिवा मं० भाणा मं० शिवा भा० चंपाई सुतसुश्रावक मं० सहसाकेन भ्रातृमं० सुरा तथा स्वभा० नाकू सुत मं० मांकाप्रमुखसमस्तकुटुंबयुतेन श्रीआदिनाथप्रमुखजिनबिंबचतुर्विंशतिपट्टः श्रीआगमगच्छे गच्छनायकश्रीसंयमरत्नसूरिआचार्यश्रीविनयमेरसूरीणामुपदेशेन प्र० चिरं नंदतु श्रीरस्तु. ॥

८६१. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीमंडपे श्रीमालज्ञा० सं. ऊडा भा० ....
सं. जगसी भा० माकू पुत्र सं० गोल्हा भा० सामा० पुत्र सं० ॥ मेघा पुत्रीशाणी लघुभ्रातृ सं० राजा भा० सांगू पुत्र सं० जावड भार्या धनाई जीवादे सुहागदे सक्कादे धनाई पुत्र सं० हीरा भा० रमाई सं. लालादिकुटुंबयुतेन १०४ बिंबं कारयित्वा निजश्रेयसे श्रीअनंतवीर्यबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिश्रीलक्ष्मीसागरसूरिः तत्पट्टे श्री.... ....

८६२. सं. १५ चैत्रादि ५२ वर्षे आषाढ शुदि १ रवौ श्रीको-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशवंशे शंखवालेवागोत्रे श्रे० खेता भा० खेतलदे पुत्र नाथा पहिराज हरिराज नामलिखितं श्रीअजितनाथ-बिंबं का० प्र० श्रीसावदेवसूरिपट्टे भ० श्रीनन्नसूरिभिः श्रे० नाथापुण्याय॥

८६३. सं. १५०६ वर्षे वैशाख शुदि ६ शुके श्रीश्रीमालज्ञा० पितृ मांकड मातृ मेलादे भ्रातृ गांगागेलानिमित्तं सुतलालाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० चतुर्दशीपक्षे मडूकरगच्छे भ० श्रीधनप्रभसूरिभिः ॥

८६४. सं. १५१९ वर्षे पोष वदि १३ भोमे श्रीलक्ष्मीसागर-सूरिपट्टे लघुशाखायां व्य० लीबा भा० लखी सुतपेथा भा० मानू आत्मश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० चैत्रगच्छे श्रीसूरिभिः ॥ चांद्र-समावा. ॥

८६५. सं. १५११ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० षाना भा० खेतलदे सुत सा० लग भा० सुहागदे भर्त्तृश्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभ-बिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसोमदेवसूरिपट्टे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः॥ जलेहरवास्तव्य. ॥

८६६. सं. १४५७ वर्षे आषाढ शुदि ९ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० संघवी भीम भा० जमकू श्रेयोर्थं सुत गांगाकेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे धारणप्रद्रीयश्रीपासदेवसूरिभिः ॥

८६७. सं. १५३४ वर्षे फा. शुदि.... .... भ० श्रीभुवन-कीर्त्तिस्तत्पट्टेश्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हूंबड श्रे० हीरा भा० गांगी सुत नारद भा० तारु सुतआना प्रणमन्ति । गलोडीयाग्रामवा० ॥ *

.... वैशाख शुदि १० बुधे....प्र० श्रीदेवगुप्त-सूरिभिः ॥ बारेजा ग्रामे.... .... (बाकीनो भूंसी नाख्यो छे.)

८६८. सं. १२०२ जिणमति जसलंभश्रेयोर्थं देववरेण कारितं ति....

८६९. सं. १५४४ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्रीमालीज्ञा० मं०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा भा० झमकू सु० रूपा परबत मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे भ० श्रीजिनरत्नसूरिभिः नायणिगोत्रदेव्यासूलडजक्ष सलषणपुरवा० ॥

८७०. सं. १३६९ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ ऊ० ज्ञा० व्य० धरणिग भा० सुहागदेवि पु० व्य० देपालेन पितृमातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० .... ॥

८७१. सं. १५२३ वर्षे वै. शुदि ३ सोमे प्रा० ज्ञा० श्रे० लाषा भा० वइजू पुत्र देवाकेन भा० वानूयुतेन निजश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । प्रासरावा० । श्रीशुभं भवतु ॥

८७२. सं. १५१५ वर्षे मार्ग. शुदि १० गुरौ श्रीओसवाल ज्ञा० कूकडागोत्रे सा० सहसा भा० सोमसिरियुतेन नगराजेन भा० करणू सुत नाथा सहजादियुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनसुंदरसूरिभिः ॥ ....

....

प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

८७३. सं. १५४६ वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जासण भा० साधू सुत आनाकेन....प्रसिनाम तागानाम भा० तामल सुत जिनदास पितृमातृश्रेयोर्थमात्मश्रेयसे....श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीसुणादेवसूरिभिः ॥

८७४. सं. १५१८ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ श्रीमालज्ञा० श्रे० सोमा भा० श्रीयादे सुत पितृ वीका भा० माई सु. जूठा–शाणा–मूला एतैः श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन विधिना प्र० श्रीसंघेन जाडडावा० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सं. १५१९ वर्षे माह शुदि १ दिने श्रीसुपासबिंबं प्र० ॥

८७५. सं. १६८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ उन्नाडवा० श्रीश्रीमालज्ञा० वृद्धशाखायां सा० गोविंद भा० बाइ गंगाई श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

महापा० श्रीमुक्तिकर्मारसूरिभिः ....

(ज्यां कांइ न लख्युं होय त्यां पंचतीर्थी उपरनो लेख छे तेम समजवुं. ॥ महावीर स्वामी मूलनायकवाळा गभारामांनी प्रतिमा पंचतीर्थीओना लेखो पूरा थया.)

भोंयरामांनी पंचतीर्थी प्रतिमा उपरनो लेख.

८७६. सं. १५१३ वर्षे चैत्र शुदि ६ गुरौ उप० आदित्यनागगोत्रे सा० वछराज भा० सनपत पु० लषम भा० लाखणदे पुत्र समधरसहितेन मातृपितृपुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० उकेशगच्छे कुक० श्रीककसूरिभिः ॥

सुपार्श्वनाथमूलनायकवाळा गभारामांनी प्रतिमाना लेख.

८७७. सं. १४८८ वर्षे फाल्गुन वदि १ दिने श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्री....जिनभद्रसूरिगुरुभिः श्रीसुमतिनाथबिंबं प्र० का०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमालवंशे बाहुकटागोत्रे सा० पद्मसंताने सा० जय भा० सौआ सु० माणि....श्रावकेण मातृ.... .... ॥

(श्रीसंभवनाथजीना देरानी प्रतिमाओना लेख पूरा थया.)

श्रीचौमुखशांतिनाथनुं देरुं गभारानी प्रतिमाना लेखो.

८७८. सं. १५५८ वर्षे फाल्गुने मासे शुक्लपक्षे ८ सोमे प्राग्वाट वंशे को० पेथा भा० वर्जू पु० को० गेला भा० कीकी पु० को० थावर को० भाईआ को० रत्ना तेषां मध्ये को० थावर भा० जामी पु० को० हराज को० रामादियुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः । त्रंसीगमपुरे श्रीपूर्णिमापक्षे. ॥ (पंचतीर्थी.)

८७९. सं. १४७१ वर्षे आषाढ शुदि २ रवौ श्रीश्रीमाली परी० अमरसीह भा० रूपादे पुत्र परी धांपा भा० धांधलदे पुत्र परी भोजणभोलाभ्यां श्रीअंचलगच्छे श्रीजयतिलकसूरीणामुपदेशेन स्वपितुः पितृपितृव्यपरीलाखाकम्य च श्रेयसे श्रीकुंथुनाथमुख्यचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० ॥

८८०. सं. १५२४ वर्षे वै. शुदि ३ सोमे मं० गांगा भा० टमकू पु० मं० वाघा भार्यया मटीनाम्न्या मं० सिवा भार्या आसू पुत्र्या भ्रातृभोजायुतया श्रीसुमतिबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ (पंचतीर्थी.)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८८१. सं. १५०१ वर्षे ऊकेशलोढागोत्रे सा० समरसी भा० समरसिरि पु० सा० वीरदेव सरसी मनुजवरसिंग भा० वीकमदे पु० सा० वीरपाल जंबूराजाभ्यां सकुटुंबाभ्यां स्वपितृश्रेयसे श्रीसंभवबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

८८२. सं. १६४३ वर्षे फा. शुदि ११ श्रीधर्मनाथबिंबं प्र० तपागच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥ (नाना चौमुख.)

८८३. सं. १५१९ वर्षे वै. वदि ११ शुक्रे श्रीमालज्ञा० श्रे० माडण सुत मुलासी भा० सूदी श्रेयसे सुत लासा कईयाभ्यां श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० पूनिमगच्छे श्रीसाधुरत्नसूरिस्तत्पट्टे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन ॥ (पंचतीर्थी.)

८८४. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० हला भा० हटकू सु० नीमल भा० पवू सु० जावड भावड सुतासोभागिणि भावड भा० भरयाद सु० वस्ता भा० सोभागिणि तेन श्रीश्रेयांसनाथजीवितस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । चांद्रसमीयाग्वाडाग्रामे ॥

८८५. सं. १५१७ वर्षे ज्ये० व० ५ शुक्रे श्रे० श्रीमालज्ञा० पितृ गंगा मातृगंगादेयश्रेयोर्थं सुत डोसाकेन भा० हात्री सुत नरपति गणीया सहितेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन प्र० संघेन पानसीनावास्तव्य ॥

८८६. सं. १५४४ वर्षे ज्ये. शुदि ५ गुरौ ऊकेशज्ञा० मं. सायर भा० संपूरदे पु० शालिगकेन भा० सहदे भ्रातृहांसाकान्हादियुतेन स्वश्रेयसे पितृश्रेयोर्थं च श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीसोमचंद्रसूरिभिः श्रीधनवर्धनसूरिः सदा वंदते ॥ (श्रीखिराडुवास्तव्यः)

८८७. सं. १५२८ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रे० सामल भा० नूटी सुतश्रे० मनाकेन भा० टीबू सुत श्रे० आला नारद भा० लहीकु....लीलूप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वमातृश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं. श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ॥

८८८. सं. १५२६ वर्षे पौष वदि ५ सोमे श्रीउकेशवंशे सा० सायर भा० महिरी पुत्र सा० गेगासुश्रावकेण भा० कडनिगदेसहितेन वृद्धभा० गउरदेपुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छे गुरुश्रीजयकेसरीणामुपदेशात् श्रीकुन्थुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

८८९. सं.१५९३ वर्षे माघ शुदि ५ रवौ प्रा० श्रे० सरसा भा० करमी पुत्र सा० धरणेन भा० सहजलदे भ्रातृकरमसीप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

८९०. सं. १५१५ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १० गुरो उपकेशज्ञा० वृद्धसंतानीय श्रे० तेजा भा० तेजलदे पु० तापा भा० चांपलदे तया निजश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० उपकेशगच्छे सिद्धाचार्यसंताने भ० श्रीसिद्धसूरिभिः प्र० पूलग्रामे श्रीशुभं भवतु ॥

८९१. सं. १५०९ वर्षे का. शुदि १३ गुरौ उकेशवंशे बालडगोत्रे सा० तुणसी भा० जसमादे पुत्र सा० वीरमेण पत्नी देविणि पुत्र सा० जूठा सा० पापा पौत्रकुंरा करणा हर्षा हरिराज पहिराज बहूआदिपरिवारेण श्रीचंद्रप्रभबिंबं का० खरतरश्रीजिनभद्रसूरिभिः प्र० ॥

८९२. सं. १५०८ वर्षे चैत्र वदि १२ सोमे श्रीमूलसंघेन भ० श्रीविजयकीर्तिस्तत्प० भ० श्रीशुभचंद्रगणिगुरूपदेशात् पषेश्वरगोत्रे हुं० ज्ञा० श्रे० महिराज भा० लाली सु० श्रे० मारद भा० जीमी सु० वस्ता भा० पूरा भ्रातृसामल एते ॥ *

८९३. सं. १४९९ ज्ये० शुदि १४ दिने ऊकेशवंशे शाह-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाखायां शा० मंडलिक सुत सा० डुंगर भा० बूल्हादेव्या पुत्रयोनाजी-वाभ्यां सहितया श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनसागर-सूरिभिः ॥

८९४. सं. १४९८ वर्षे अहमदावादवासि श्रीश्रीमालज्ञा० सा० जेसिंग भा० सात्त पुत्र सा० मालाकेन भा० मगी भ्रातृ सा० हीरा गण-पति लाच्छादिकुटुंबयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

८९५. सं. १५१२ वर्षे पौष वदि ५ शुक्रे ऊकेशज्ञा० माह-जनीरामा भा० रमादे सुत लखमण पितृपोपटनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीशी-तलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसर्वसूरिभिः मांडलिग्रामे चैत्रगच्छे श्रीमुनि-तिलकसूरिभिः ॥

८९६. सं. १५०३ वर्षे ज्ये. शुदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० सा० श्रे० पूनड भा० सरसइ सु० धरण भा० मेघू सुत कडूआकेन मातृ .... जीवितस्वामिश्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे भ० श्रीबुद्धिसागरसूरिपट्टे श्रीविमलसूरिभिः वडुद्रवा० ॥

८९७. सं. १५२८ वर्षे आषाढ शुदि २ ऊकेशवंशे साधुशा-खायां सा० देयणा भा० डाही पुत्र सा० देवकेन भा० देवलदे पुत्र जगपाल सोमसहितेन श्रीअनंतनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिन-चंद्रसूरिभिः ॥

८९८. सं. १४९७ वर्षे ज्ये. शुदि २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० केल्हा भा० वील्हणदे पुत्र लीलाकेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीसुविधि-नाथबिंबं का० नागेन्द्रगच्छे प्र० श्रीब्रह्माणंदसूरिभिः ॥

८९९. सं. १५२४ वर्षे वै. शुदि २ सोमे हडालाग्रामे श्रीवंशे श्रे० वाच्छा भा० पुरी पुत्र्या मं० हीरा भा० वछू सुत मं० सहसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भा० रांभलदे श्राविकया श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वमातृपितृपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

पार्श्वनाथमूलनायकवाळा गभारामांनी प्रतिमाना लेखो.

९००. सं. १४८४ वर्षे मार्ग. शुदि ९ रवौ श्रीश्रेयांसबिंबं महं० आंबा भा० .... रुदे पुत्र खेमा भा० लाड पुत्र वरदत्त आरनासंघदासेन आत्मश्रेयसे आगमगच्छे श्रीअमरसिंहसूरीणां पट्टे श्री .... रत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० ॥

९०१. सं. १४७२ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ११ शनौ भाव० सोमा भा० लाखूश्रेयोर्थं सु० भाव० कडूआकेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० आगमगच्छे श्रीजयानन्दसूरीणामुपदेशेन ॥

९०२. सं. १४४९ वर्षे वैशाख शुदि २ शुक्रे प्रा० ज्ञा० व्य० धूंधा भा० चांपलदे पुत्र देदा वेला पितृमातृश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

९०३. सं. १५४७ वर्षे ऊकेशज्ञा० सा० सहसा भा० अमरादे पुत्र सा० पहिराजेन स्वभा० रहीश्रेयोर्थं पुत्र देवचन्द्र लटकणप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः ॥ चिरं जीयात् श्रीः

९०४. सं. १५०५ वर्षे माघ वदि ७ गुरौ ऊकेशज्ञा० सा० लखमण भा० लखमादे पु० भोजाकेन निजपितृमातृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० ऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९०५. सं. १५१६ वर्षे आषाढ शुदि ३ रवौ ऊकेशवंशे भं० गोत्रे भं० सादा भा० सहजलदे भं० देवराज भा० फदू स्वपुण्यार्थं पुत्र धणपति रत्ना गुणीयायुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिभिः प्र० ॥

९०६. सं. १४६० वर्षे प्रा० ज्ञा० श्रे० करणा भा० करमी सुत खीमसिंह चांपादिभिः स्वश्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं.... .... का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

९०७. सं. १४९९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ रवौ ओसवालज्ञा० सा० वेला पु० गुणसी भा० हासू पु० सा० संजलेन पिता पु० श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीनाणगच्छे श्रीशांतिसूरिभिः ॥ शुभम् ।

९०८. सं. १४९३ वर्षे फा. वदि ११ गुरौ प्राग्वंशे सा० खेता भा० ऊमादे सुत भीडाछत्र धरणकेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकीर्तिसूरीणामुप० श्रीशीतलनाथबिंबं का० ॥

९०९. सं. १४९२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० साजण भा० माकु (ऊ) पितृमातृश्रेयसे सुतसहसाकेन श्रीकुंथुनाथमुख्यपंचतीर्थी का० पूर्णिमापक्षे श्रीभीमपल्लीयश्रीपासचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

९१०. सं. १५०७ प्राग्वाटव्य० सिंघा भा० सिंगारदे पुत्रव्य० वसुकेन भा० लहकू पु. देल्हा....करणाकर्मादियुतेन श्रीसंभवबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

९११. सं. १५१३ पोष वदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० देवड भा० वमकू पु० धर्मसीह पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीविनयप्रभसूरिभिः । काकरिगुरं ॥

९१२. सं. १४९० वर्षे वैशाख शुदि ७ गुरौ श्रीब्रह्माणगच्छे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीश्रीमा० व्य० लाखणसी सुत....मंडलिक भा० मीलणदे सुत हीरालेन पित्रोः श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीपजूनसूरिभिः ॥

९१३. सं. १५४० वर्षे वैशाख शुदि ५ गुरौ दिनेश्री उपकेशज्ञा० गांधीगोत्रे सं. आसराज भा० अहिवदे पु० सं० जगसी भा० नाथी द्वि० भा० तेजू पु० सं० मालजी तेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छे भ० श्रीगुणनिधानसूरिभिः । श्री मंडपाचले ॥

९१४. सं. १५२४ वै. शुदि ३ श्रीश्रीमाली सा० कीका भा० मांजू पुत्र सा० भीमा भा० वारू पुत्र सा० वनाकेन भा० रमाई पु० सहसकिरणप्रमुखकुंटुबयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः । अहम्मदावादे ॥

९१५. सं. १५४३ वैशाख शुदि ९ भोमे ब्रह्माणगच्छे श्रीमालज्ञा० मं० हीरा भा० वाई सुत सहिसा भा० रूपिणि सुत सूराकेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिपट्टे श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः । सेरीसाग्रामे ॥

९१६. सं. १५१३ वर्षे चैत्र वदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० गोवल भा० गुरदे तत्पुत्र सिवा भा० तेजू....जीवितस्वामिश्री [illegible]सुपूज्यपंचतीर्थी का० [illegible] पीपलगच्छे त्रिभवीया विजयी श्रीधर्मसु[illegible]सूरिपट्टे श्रीधर्मसागरसूरि[illegible] केकरावा० ॥

९१७. सं. १५२२ वर्षे प्रा० श्रे० लींबा भा० नांकु पुत्र श्रे० [illegible]ना भा० जीविणीनाम्न्या ज्येष्ठ श्रे० वाघा वीरा देवरधन देवृजाया [illegible]पाई प्र० कुटुंबयुतया श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्री[illegible]लक्ष्मीसागरसूरिभिः । श्रीसोमदेवसूरिश्रीसुधानंदनसूरिश्रीरत्नमंडनसूरिपरिवृतैः । साकींत्रके ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९१८. सं. १५६८ वर्षे वैशाख वदि २ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० बु० महिराज भा० पूरी पु० सालिग भा० रूडी पु० वासा चुला मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे भ० श्रीहेमसिंहसूरिभिः । काकरेवासमीग्रामे ॥

९१९. सं. १५४३ वर्षे वै. वदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० माईआ भा० सूदी पु० पौत्रयुतेन श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० चित्रावालगच्छे श्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

रीचीरोड उपरना श्रीमहावीरस्वामिना देराना लेखो.

९२०. सं. १५५७ वर्षे फा. शुदि २ शुक्रे अहम्मदावादवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० चोवसु० श्रे० सदिज भा० अती तत्पु० भोजा भा० चंपाई तत्पु० वर्धमान प्रमुखसमस्तकुटुंबसंततिश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिभिः ॥

९२१. सं. १५३० वर्षे फा. शुदि ७ बुधे ऊकेशज्ञा० सा० पोमा भा० लीलाई सा० मदन भा० नीकीसुश्राविकया श्रेयसे पु० सा०....प्रमु० कुटुंबश्रेयोर्थं अंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९२२. सं. १५१६ वर्षे वैशाख वदि २ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० घोटा भा० गंगादे सु० भीमाकेन पितृव्य गदा भा० जमनादे श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः । अछीआणावा० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९२३. सं. १६६४ वर्षे माघ शुदि ३ सोमे प्राग्वाटज्ञा० मं० वेगड भा० चलहणदे पु० देवजीकेन भा० धनबाई पुत्र मुरारि मुकुंद भाणजी प्रमुखसहितेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० बृहत्खरतरगच्छाधिप-श्रीजिनमाणिक्यसूरिपट्टे युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

९२४. सं. १५१९ वर्षे माघ शुदि ९ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा.... ....श्रेयोऽर्थं वधूमरगदेश्रेयसे जीवितस्वामिबिंबं श्रीसुमतिनाथ-बिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीमुनितिलकसूरिपट्टालंकारश्रीराजतिल-कसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

९२५. सं. १५३६ वर्षे पोष वदि ९ रवौ श्रीश्रीवंशे सो० सामल भा० चांपू सु० सो० सिंहासुश्रावकेण भा० पु० आसपाल पीसा सहि-तेन वृद्धभ्रातृआसापुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरि उप० श्रीअ-भिनंदनस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९२६. सं. १५७२ वर्षे फालगुन वदि ४ गुरौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रत्ना भा० जासू पु० माईआकेन भा० हर्षाई पु० सांडायुतेन श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः । श्रीपनान-वास्तव्य ॥

९२७. सं. १५७७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ९ अहम्मदावादवास्तव्यश्री प्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखायां श्रे० वरसिंग भा० श्रा० रूडि पुत्री श्रा० पूहती नाम्न्या पु० अजा भा० धनाई प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

९२८. सं. १५९५ वर्षे वैशाखशुदि ३ दिने प्राग्वाटवंशे श्रे० कमा भा० अमरी पु० श्रे० हीराकेन भा० हीरादे पु० श्रे० रामाभीमादिसहितेन श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्री जिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिनहर्षसूरिभिः। कडिग्रामे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९२९. सं. १२४० ज्येष्ठ शुदि १० सोमे श्रीनाणकीयगच्छे पातू पु० पोपाकेनजेला श्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा का० श्रीजसवीरेणसह श्रीशांतिसूरिभिः प्र० ॥

९३०. सं. १५१९ माघ शुदि १३ बुधे सूर्यपुरे श्रीश्रीमाली गां० वरसिंग भा० टबकू पु० गां० देवाकेन भा० देवलदे भ्रातृहेमा क्षया सहराज मदनयुतेन पु० श्रीपतिश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदयवल्लभसूरिभिः ॥

९३१. सं. १५०९ वर्षे माघ शुदि ५ सोमे प्राग्वाटज्ञा० व्यं० धरणा भा० रांकु सु० माईयाकेन भ्रातृवृद्धीश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० भीमपल्लीय भ० श्रीजयचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ॥

९३२. सं. १५४७ वर्षे वैशाख वदि ८ रवौ वीरमगामवासि प्राग्वाटज्ञा० व्य० सिंघा भा० अमरी सु० व्य० नाथाकेन भा० टबकू सु० आना शाणा सहुआ भ्रातृजावडादिकुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रत-बिंबं का० ॥

९३३. सं. १५०७ ज्ये. वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालवंशे सो० सांगा भा० वरजू पुत्र्या सो० सामल भा० चांपू पु० सो० आसापत्न्या कडूसु श्राविकया देवरसो० वाघा सहितया श्रीअंचलगच्छेश्वरश्रीजय-केसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० श्रीसंघेन प्र० ॥

९३४. सं. १५१६ वर्षे प्रा० ज्ञा० गां० जगसी भा० सोभा गिणी सु० भावडेन भा० गदू पुत्रदेवदत्तयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः । अहम्मदावादे ॥

९३५. सं. १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ईद्रीग्रामे ऊ० ज्ञा० सा० वेला भा० चांपू पु. रामा भा० जयतू पु० सा० वरजांगेन भा० नाथीयुतेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० मडाहडगच्छे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजयचन्द्रसूरिभिः श्रीजांगलगोत्रे श्रीगोत्रदेव्या अछोत्रआ० श्रीजयरत्नसूरि उप० ॥

९३६. सं. १४९३ वर्षे ओसवालज्ञा० मूलराज भा० महिगलदे तयोः सु० वीराकेन स्वकुटुंबयुतेन सा० रीनाश्रेयोऽर्थं श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे भ० श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

९३७. सं. १५१६ वर्षे वैशाख शुदि ९ गुरौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० डूंगर भा० लाडी सु० अमरी भा० वाल्ही महिराज भा० कडू स्वकुटुंबश्रेयसे श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

९३८. सं. १५१३ वर्षे आषाढशुदि ३ उ० ज्ञा० सा० सहजा भा० सिंगार पु० सा० भलाकेन भा० आल्हदे पु० जिताजिनदत्तादियुतेन सा० वीरा भोजा पर्वत भीमा निजश्रेयसे श्रीसुविधिबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छनायकश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

९३९. सं. १४९३ वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे उपकेशज्ञा० व्य० झांझण भा० कपूरदे पु० धनाकेन भा० धनादे पु० लोढा वउलानीमासहितेन भ्रातृशिवानिमित्त श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीमड्डाहडगच्छे श्रीसोमचन्द्रसूरिपट्टे श्रीज्ञानचन्द्रसूरिभिः ॥

९४०. सं. १५२० वर्षे वैशाख शुदि १२ बुधे श्रीश्रीमालीज्ञा० श्रे० परबत भा० वाल्ही सु० अलपाकेन स्वसावाछूनाम्न्या भा० वीमलदे सु० षीमायुतेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीजिनरत्नसूरिभिः । जलालपुरे ॥

९४१. सं. १५१५ वर्षे माघ शुदि ७ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सिंघा भा० सहजलदे सु० श्रे० चोटाकेन पु० पौत्रादिस्वकुटुंबयुतेन निजमातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीनेमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९४२. सं. १४१९ वर्षे फाल्गुन २ दिने बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० झांझण श्रेयोर्थं सु....देवेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीनागेन्द्रसूरिश्रीगुणाकरसूरिभिः ॥

९४३. सं. १५२३ वर्षे वैशाख शुदि ६ दिने श्रीश्रीमालज्ञा० सं० जइता पु० सं० मांडण भा० लीलादे पु०....जावडयुतेन श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

९४४. सं. १५२४ वर्षे चैत्र वदि १ शुक्रे वि० लषमा भा० राणी सु० वि० साभा भा० अमकू वि० काकन भा० जासी भा० वरसींग भा० लाडी तया श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्री सोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

९४५. सं. १५६४ वर्षे ज्ये० शुदि १२ कर्णपुरवास्तव्य प्रा० व्य० केल्हा भा० चांई पु० धरणाकेन भा० कडू पुत्रपुत्रीयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने गच्छनायकश्रीकमलकलशसूरिपट्टे गच्छनायकश्रीजयकल्याणसूरिभिः प्र० ॥

९४६. सं. १४९३ वैशाख वदि १३ शुक्रे परी खेता सु० लखा तयोः श्रीअंबिका कारिता ॥

९४७. सं. १३७४ वर्षे आषाढ वदि ३ सावदेव भा० सावीति पु० गोगो प्र० का० ॥

९४८. सं. १४२७ वर्षे वैशाख शुदि १० शुक्रे कारटाड वास्तव्य प्राग्वाटव्य० जगसीहशाखायां व्य० झांझा पु० व्य० दिपाकेन निजगोत्रदेवी अंबिका का० ॥

९४९. सं. १६१५ वर्षे पोष वदि ६ शुक्रे श्रीओसवालज्ञा० खेरालुवास्तव्य सा० देवदास भा० अरघाई सुत सा० दिधर भा० देड-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदे सु० सा० महिराज सीनीनाम्ना श्रीवर्धमानबिंबं का० प्र० श्रीविजयदानसूरिभिः प्र० ॥

९५०. सं. १५०० वर्षे वैशाख सु० ९ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० मं. पाल्हणसी भा० मांकु पितृमातृश्रेयोर्थं सु० मं० अंबोडाकेन श्रीवासुपूज्यमुख्यपंचतीर्थी का० वृद्धथिराद्रागच्छे श्रीपूर्णभद्रसूरिभिः प्र० सर्वसूरिभिः ॥

९५१. सं. १५१२ वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीवीरवंशे श्रे० रामा भा० गउरी पु० श्रे० नाईआसुश्रावकेण भा० धनी पु० धर्मसी भ्रातृ भाणा प्रमुखसमस्तकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छे गुरुश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे सुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९५२. सं. १४८८ वर्षे कार्त्तिक शुदि २ सोमे कर्पटवाणिज्यवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सीहा भा० संसारदे तयोः सु० श्रे० माईआकेन भा० चांपु सु० वाछा भ्रातृ श्रे० सोमा भा० राऊ गोधागुणिआदिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्रीसोमसुदरसूरिभिः ॥

९५३. सं. १५३६ वर्षे ज्ये. वदि ८ आसापल्लीवास्तव्यश्री श्रीमालज्ञा० मं० समधर भा० रूपिणि सु० सा. वीरपाल भा० अधकू सु० सिंहदत्त प्र० कुटुंबयुतेन श्रीशंभवनाथबिंबं का० स्वश्रेयसे प्र० श्रीसूरिभिः ॥

९५४. सं. १५८० वर्षे वैशाख वदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमालीज्ञा० मं० हीरा भा० सखी सु० मं० हेमा भा० हमीरदे पु० भचा भा० वनी पु० अमरायुतेन स्वश्रेयसे श्रीपद्मप्रभस्वामिबिंबं श्रीपू० श्रीपुण्यरत्नसूरिपट्टे श्रीमुनिरत्नसुरीणामुपदेशेन का० प्र० ॥

९५५. सं. १५३१ वैशाख वदि ११ चन्द्रे श्रीओसवंशे मं०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूल्हा सु० मं० नाथा भा० गोमति पु० मं० जाणाकेन भा० पुहती पु० हर्षामनादिकुटुंबश्रृंगारितेन मातृपित्रोःश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० श्री कोरंटगच्छे श्रीकक्कसूरिपट्टे श्रीसावदेवसूरिभिः प्र० ॥

९५६. सं. १५२४ वर्षे वैशाख शुदि २ शनौ श्रीमालज्ञा० पितृधरकण भा० धरण सु० कालू भा० कूतीकरमा सु० सहिसायुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० ब्रह्माणगच्छे प्र० श्रीविमलसूरिभिः वटपद्रवास्तव्य॥

९५७. सं. १२२३ वैशाख शुदि १ .... मं. माणिक्य-पुत्रेन .... श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा का० प्र० श्रीसिंहसूरिभिः ॥

९५८. सं. १५१७ वर्वे वैशाख शुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सामंत भा० सीहगदे पु० हरीआ कोचार भा० काल्हणदे द्वि० भा० कुतिगदे पु० लष्माकेन पितृमातृसर्वपूर्वजननिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीशान्तिनाथपंचतीर्थी का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीगुणरत्नसूरिउपदेशेन गुणसागरसूरिभिः ॥

९५९. सं. १५१२ वर्षे वैशाख वदि १० गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० महं० वीरम भा० वीउजलदे सु० मं० मांडणेन मातृपितृश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० सोलग्राम-वास्तव्य ॥

९६०. सं. १५१६ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीमालज्ञा० श्रे० बादा सु० उदयसीह भा० छाछु सु० सोमाकेन भा० सहिजलदे-युतेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीमतां श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ॥

९६१. सं. १६६३ वर्षे वैशाख शुदि ६ बुधे प्राग्वाटज्ञा० वृ० पा० तेजपाल सु० पा० सहजपालकेन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० तपा-गच्छे श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९६२. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १३ श्रीमालज्ञा० श्रे० चांपा भा० पांचू सु० श्रे० हेमा भा० धर्म्माई सु० श्रे० कालिदासेन भा० हर्षाई सहितेन श्रीअंचलगच्छे श्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९६३. सं. १५२० वर्षे वैशाख शुदि ३ दिने प्राग्वाटज्ञा० सा० अलवा भा० धरणू सु० रामाकेन भा० खेतु सु० जाणादिकुटुंबयुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः पं. लाभसागरगणिउपदेशेन ॥

९६४. सं. १४९२ वर्षे वैशाख शुदि २ प्राग्वाट श्रे० नरसिंह भा० हांसू सु० श्रे० पर्वतेन भा० छूसी सु० धरणादियुतेन श्रीवर्धमानबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

९६५. सं. १४६६ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्रीहारीजगच्छे उपकेशज्ञा० व्य० भालू भा० प्र० रमादे द्वि० सोनी पु० हांसा सहसा एतेषां आत्मश्रेयसे श्रीआदिनाथपंचतीर्थी का० प्र० श्रीशीलभद्रसूरिभिः ॥

९६६. सं. १४४२ वर्षे ज्ये. वदि १४ शुक्रे श्रीनायलगच्छे ओ० ज्ञा० सा० तील्हा भा० तारादे पु० मोरा भा० ललतादे पु० देवराजसहितेन पितृमातृश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीरत्नसिंघसूरिपट्टे श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥

९६७. सं. १४९६ मार्ग. शुदि ९ प्राग्वाटव्य० पूना सु० रूदा भा० धांई सु० सं० महिराजेन भा० रामल्यादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छीयश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

९६८. सं. १५१६ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेशज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा० नासण भा० नीमलदे सु० खीमावछाभ्यां लघुभ्रातृनिमित्तं श्रेयोऽर्थं च श्रीनमिनाथबिंबं का० मंडाहडगच्छे श्रीसोमप्रभसूरिपट्टे प्र० श्रीसूरिभिः।

९६९. सं. १३६८ वर्षे माघ शुदि १० बुधे वायडज्ञा० मातृ मोहिणीदेवीश्रेयोऽर्थं सु० मंडलिकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीजिनदत्तसूरिभिः ॥

९७०. सं. १४९३ वर्षे माघ शुदि १३ ऊकेश सा० मांकड पु० सा० धना भा० मेलू द्वि० भा० ठाकुरसी चांपू पुत्री श्रा० साल्ही नाम्न्या पु० भोजादियुतया श्रेयोऽर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

९७१. सं. १६५९ वर्षे वैशाखसित १३ बुधे श्रीश्रीमाल सु० .... श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥

९७२. सं. १३८६ वर्षे माघ वदि १ सोमे श्रीमालज्ञा० सु० मंडलि... म... ली... दे श्रेयोऽर्थं सु० कुरपालेन श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीगुणसागरसूरिभिः ॥

९७३. सं. १४५४ वर्षे माघ शुदि ८ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० मं. सुहडसी भा० रामादे पु० तिहूण भा० सिरिआदे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० श्रीब्रह्माणीयगच्छे प्र० श्रीहेमतिलकसूरिभिः ॥

९७४. सं. १५४४ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे थिराद्रगच्छे श्रीमालीज्ञा० श्रे० वीरा भा० हानू सु० गणमालहाजी भा० भोलीहासी सु० चापाचाइयासहितेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीशान्तिसूरिभिः ॥

९७५. सं. १४२१ वर्षे वैशाख वदि ५ शनौ श्रीश्रीमा० पितृ रत्नपाल मातृ लाखणदे द्वि. लाछि श्रे० सु० दोआकेन श्रीमहावीरबिंबं का० नागेन्द्रगच्छे प्र० श्रीगुणाकरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९७६. सं. १३७० वर्षे फागुणशुदि २ रवौ श्रे० धीरा पुत्री नयणू आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वबिंबं का० प्र० श्रीवीरदेवसूरिभिः ॥

९७७. सं. १४७३ ज्ये. शुदि ४ गुरौ प्राग्वाटव्य० करणा भा० कस्मीरदे सु० देल्हाकेन मातापित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं श्रीलक्ष्मीचन्द्रसूरि उपदेशेन का० प्र० ॥

९७८. सं. १९४८ वर्षे माघ शुदि ९ सोमे पारकरवा० उएसवंशे महाशाखीय सा० पादा भा० मेचू पु० ईसरकेन भा० अहिवदे पु० मुहणाडगरयकरसीसहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन मोरबीग्रामे॥

९७९. सं. १७८३ वर्षे वैशाख वदि ९ गुरौ शकंदरपुरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखायां सा० वाघजी भा० नाथबाई सु० सा० पासवीर सा० समरसिंगयुक्त बाई नाथीनाम्न्या श्रीनमिनाथबिंबं का० श्री बृद्धतपापक्षे भ० श्रीभुवनकीर्त्तिसूरिभिः प्र० ॥

९८० सं. १३७९ वर्षे आषाढ शुदि ३ गुरौ श्रीमालज्ञा० पितृश्रे० जाला मातृ देल्हणदे श्रेयसे सु....श्रीपत्तनऊलुवेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

९८१. सं. १३७५ वर्षे माघ शुदि ९ शनौ श्रीओसवालज्ञा० श्रे०....भा० पाल्हू श्रेयसे पु० सिंहेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं प्र० श्रीमाणिक्यसूरिभिः ॥

९८२. सं. १४८९ वर्षे प्राग्वाटश्रे० झांझण भा० चांपू सु० धनाकेन भा० झमकू भ्रातृ गांगाचेलायुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

९८३. सं. १३२० वर्षे माघ शुदि ९ शनौ जसमल भा०.... श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० सूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९८४. सं. १५१५ वर्षे आषाढ शुदि ४ सोमे श्रीमालज्ञा० षोबडागोत्रे सा० सोमा पु० सा० बल्हु भा० बल्हादेश्राविकया स्वपुण्यार्थं श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीज्ञानसुंदरसूरिभिः ॥

९८५. सं. १५६५ वर्षे ज्ये. शुदि ६ शुक्रे वलाद्रवास्तव्य श्रीश्रीवंशे मं० लषा भा० लषमादे सु० शाणाकेन भा० ललितादे वृद्ध भ्रातृ मका, महिया, राणा, प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीलब्धिसागरसूरिभिः ॥

९८६. सं. १५६४ वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे श्रीश्रीवंशे मं० कर्मण भा० गोरी पु० सा० धना भा० गेली पु० सा० मेघासुश्रावकेण भा० दूबी पु० पंचायणप्रमुखकुटुंसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन श्रीअहम्मदावादे ॥

९८७. सं. १५८१ वर्षे पोष शुदि ५ शकंदरपुरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० व्य० धर्मा भा० धर्मादे पु० व्य० पोपटकेन भा० प्रीमलदे पु० कुंरजीप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीहेमविमलसूरिभिः॥

९८८. सं. १५६० वर्षे वैशाख शुदि २ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० वुरा मना भा० साधू सु० करणा भा० हांसी पु० गंगदास पाश मातृपितृआत्मश्रेयोऽर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीहेमसिंहसूरिभिः । काकरेचामगुणाग्रामे ॥

९८९. सं. १६८२ वर्षे ज्ये. वदि २ गुरौ श्रीअमदावादवास्तव्य ओसवालज्ञा० सा० हंसराजकेन सु० सा० हरजीयुतेन श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० च श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयसेनपट्टालंकारभ० श्रीविजयदेवसूरिवारके उ० श्रीमुक्तिसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९९०. सं. १७२१ वर्षे ज्ये. शुदि ३ श्रीसीरोहीनगरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखीय सा० मेहीजल सु० सं० कमाकेन श्रीनेमिनाथबिंबं का० प्र० च तपागच्छे भ० श्रीविजयानंदसूरिपट्टे भ० श्रीविजयराजसूरिभिः ॥

९९१. सं. १३८० ज्ये. शुदि १४ गुरौ ब्रह्माणगच्छे श्रीमालीयपितृमेलिगमातृमाल्हणदेवीश्रेयसे सु० देवसिंहेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः ॥

९९२. सं. १५०६ वर्षे वैशाख शुदि ६ दिने श्रीश्रीमालज्ञा० सा० सरपण भा० टीबू सु० सदाकेन भा० वल्हादे भ्रातृ हेमराज भा० मटकू भ्रा० देवराज भा० देवसिरिप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

९९३. सं. १५१७ वर्षे माघशुदि ४ शुक्रे असाउलिवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० सा० धना भा० धनादे पु० सा० महिराज भा० चंगाइ पु० नरपाल हरपाल तेजपाल स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

९९४. सं. १५०९ मार्गशीर्षशुदि श्रीश्रीमालज्ञा० देवसी भा० देवलदे सु० सा० सर्वण भा० टीबू सु० सा० सदा भा० वल्हादे श्राविकया स्वदेवर सा० हेमा भा० मटकू देवा भा० देवसिरिप्रमुखकुटुंबयुतया स्वश्रेयोऽर्थं श्रीशंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीमुनिसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः अहमदावादनगरे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(शेखनो पाडो) श्रीअजितनाथजीना देराना लेखो.

९९५. सं. १५८३ वर्षे वैशाखशुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धरणा भा० चांपलदे पु० ५ सु० कोल्हा भा० कमलदे मातृपितृ भ्रातृआत्मश्रेयोऽर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे भ० श्रीहेमसिंघसूरिभिः कणसागरवास्तव्य. ॥

९९६. सं. १५२५ वर्षे माघ शुदि १३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धना भा० वाल्ही सु० नाथा भा० रंगाईनाम्न्या सु० हांसा भा० रामति सु० वीरपालयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९९७. सं. १५२६ वर्षे माघ वदि ७ बुधे श्रीओएसवंशे मीठडीयाशाखायां सा० नरपति भा० नायकदे पु० नरबदसुश्रावकेण भा० हीराई सु० कान्हा ठाकुरसहितेन निजश्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

९९८. सं. १५०७ वर्षे वैशाखवदि ११ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० मेला भा० नयणादे सु० बाहडेन पित्रोः पूर्वजश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० चैत्रगच्छे धरणपद्रीयभ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः कुगलिआग्रामे ॥

९९९. सं. १५१७ वर्षे फागुणशुदि ३ मालवणग्रामे प्राग्वाटज्ञा० मं० माईआ भा....सु० रत्नाकेन भा० रानू प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः॥

१०००. सं. १४७९ वर्षे वैशाखवदि ४ अनंतर ५ शुक्रे श्रीनाणकीयगच्छे श्रीऊकेशज्ञा० व्य० सोला भा० सरियादे सु० वरपालेन पितृव्यसा रशनिल श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० श्रीशान्तिसूरिभिः प्र० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१००१. सं. १५१५ वर्षे ज्ये० शुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० रत्ना भा० रही सु० हापासाजणाभ्यां पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीविद्याधरगच्छे श्रीहेमप्रभसूरिभिः। सापुरवास्तव्य ॥

१००२. सं. १५९१ वर्षे वैशाख वदि २ सोमे श्रीमालज्ञा० श्रे० वडूया भा० बाली पु० रत्नाकेन भा० लषमादे पु० सिंघा भा० वरादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० चित्रवालगच्छे श्रीवीरचन्द्रसूरिभिः। अहमदावादे ॥

१००३. सं. १५१३ वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० गोपाल भा० धाऊं सु० जयतसिंहेन भा० वीरू सु० भीमादिकुटुंबयुतेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं सद्गुरूणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना अहम्मदावादपुरे ॥

१००४. सं. १५०७ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृ जांटा मातृराजूश्रेयसे सु० रत्नाकेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसंघेन। कपारिवास्तव्य ॥

१००५. सं. १५१५ वर्षे फागणवदि ४ ऊकेशज्ञा० तेलहरागोत्रे श्रे० पद्मा भा० जटकू सु० श्रे० धर्मसी भा० धर्मादे सु० चांपाकेन भा० २ चांपलदे कुतिगदे भ्रा० समधर भा० सहजलदे वीरा भा० वीजलदे धना भा० राजू पांचा भा० माणिकि सहसा भा० वील्हा प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः॥

१००६. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १२ श्रीश्रीमालज्ञा० दो० चउथा भा० भोलीयुतेन गयाकेन भा० रत्नादेश्राविकया श्रीकलिकुंडबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसूरिभिः ॥

१००७. सं. १४३२ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमायां गुरुवासरे पुण्यपत्तनक्षेत्र पोरवाडजातीयेन सा० गोदा झांझणेन श्रीसुविधिनाथबिंबं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का० प्र० सा० नालाकेन श्रीभ० श्रीवृद्धिसागरसूरीश्वरेण वासक्षेप-कारितं ॥

१००८. सं. १५२५ वर्षे माघशुदि ३ सोमे प्रा० वंशे सं० मोल्हा भा० माणिकदे सु० भादा भा० भावलदे पु० ढावा ढाकेन पूर्वज-श्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१००९. सं. १५०६ माघशुदि ८ दिने उपकेशज्ञा० वडालिया-गोत्रे सा० भाषर भा० भावलदे पु० भादाकेन भा० डाउदे सु० स० स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छे श्रीगुणसुंदर-सूरिभिः ॥

१०१०. सं. १५११ वर्षे माघवदि ५ शुक्रे वीरवंशे श्रे० धर्मसी भा० भोली पु० डूंगर भा० नार्थी पु० भीमासुश्रावकेण श्रीअंचलगच्छ-नायकश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१०११. सं. १५०७ ऊकेशदेवणिगि० सं० नाथुमणकाई सुतया सं० लीला जइतसिरि सु० सं० हरराजजायया सं० जसमाईनाम्न्या सु० पाल्हणसि भा० चंपाईसुतया श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीरत्नशेखर-सूरिभिः ॥

१०१२. सं. १४८४ वर्षे माघशुदि १० शनौ ऊकेशज्ञातौ ची-चटगोत्रे वेसटाव्यय सा० सोढल भा० पाल्हदे पु० सोमदत्त भैरवसंसार चान्द्रैः पित्रोः श्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० ऊकेशगच्छे श्रीसिंह-सूरिभिः ॥

१०१३. सं. १५२१ वर्षे माघशुदि १३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० मेघा भा० मालणदे सु० वीरउ भा० गांगी सु० रंगउ बाडउ चीउ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंगा भा० लाडी सु० हरखा हरदास महिराज मणोरसहितेन पूर्वजश्रेयोऽर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छे श्रीगुणसुंदरसूरिभिः ॥

१०१४. सं. १५४९ वर्षे पोषवदि तिथौ उपकेशज्ञा० ठाहडीआगोत्रे संघवी धणसी पु० सं० सोनपाल पु० सं० षेता भा० कुतिगदे सहितेन....बिंबं का० प्र० श्रीदेवगुप्तिसूरिभिः श्रीउपकेशगच्छे ॥

१०१५. सं. १५२० वर्षे माघवदि ७ रवौ उपकेशवंशे व्य० चांपा भा० चांपलदे सु० देवड भा० देवलदेसु० वीराकेन भा० ऊमि सु० रणधीरस० आत्मश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीजीरापल्लीयगच्छे भ० श्रीउदयचन्द्रसूरिपट्टे श्रीसागरचन्द्रसूरिभिः ॥

१०१६. सं. १५०४ वर्षे फा० शुदि ११ प्राग्वाटज्ञा० सा. माला भा० रवधू सु० सांडाकेन भा० देऊ कुटुंबयुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

१०१७. सं. १५०८ वर्षे ज्ये. शुदि १३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० सं० मंमट भा० मेल्हादे सु० मेघा भा० रूडी सु० सं. हापाकेन भा० देऊ सु० आसधर माणिक बडूयासहितेन स्वपितृश्रेयोऽर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना तिमिरपुरवास्तव्य ॥

१०१८. सं. १५२३ वर्षे वैशाखशुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० चीत्रा भाद्र वा० ढोली सु० मेहाजलनिमित्तं श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीश्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणदत्तसूरिभिः झिंझुवाडावास्तव्य ॥

१०१९. सं. १५२४ वर्षे वैशाखशुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० विरूआ पु० श्रे० धना भा० ठाकुरसिश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीचित्रवालगच्छे........भिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०२०. सं. १५१३ वर्षे वैशाखशुदि १३ श्रीश्रीमाल दो० रेला भा० गंगादे सु० दो० पांचाकेन भा० हीरू सु० सीधर भा० रामति पौत्र जता वर्धमानादियुतेन पुत्रीधनीश्रेयसे श्रीशीतलबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। श्रीवीरमग्रामे॥

१०२१. सं. १५३८ वर्षे वैशाख शुदि ३ दिने प्राग्वाटज्ञा० दो० सिवदास भा० भलीनाम्न्या पु० सहजा अजा सुता पद्माई प्रमुखकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्रीश्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः अहम्मदावादे ॥

१०२२. सं. १५१९ वर्षे वैशाखवदि ११ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वरदेव भा० वील्हणदे सु० कर्मणकेन मातृपितृश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना रडालीवास्तव्य ॥

श्रीशान्तिनाथजीना देराना लेखो.

१०२३. सं. १५३७ वर्षे वैशाखशुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० भर्मा भा० गांगी पु० रहिआकेन हीरू पु० गोपादिकुटुंबयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१०२४. सं. १४२५ वैशाख शुदि १० प्राग्वाटव्य० गोटाकेन पितुः वरदेवस्य मातुः संसारदेव्याः श्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१०२५. सं. १५८४ वर्षे आषाढशुदि १ दिने प्राग्वाटज्ञा० श्रे०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेसंग भा० जसमादे जना हरदास श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसौभाग्यनंदिसूरिभिः ॥

१०२६. सं. १४६९ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे हूंबडज्ञा० दो० विजा भा० वरजलदे पु० गांगारामाभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० निवृतिगच्छे श्रीसूरिभिः ॥

१०२७. सं. १४९९ फागणवदि २ गुरौ ओसवालज्ञा० मं० छाहड भा० मचू पुत्र वयजा पुत्री माई पुनी स० श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीकोरंटगच्छे श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१०२८. सं. १५१० वर्षे माघशुदि ५ शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० नागसी भा० नागलदे हादा भा० पोमी श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिभिः ॥

१०२९. सं. १५२३ वर्षे माघशुदि १ रवौ श्रीवीजापुरवास्तव्य श्रीमालज्ञा० सा० सोबति भा० कर्मणि सु० सा० देवाकेन निजश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः प्र० ॥

१०३०. सं. १४८९ वर्षे वैशाख वदि १० दिने गुरुवासरे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे ककुदाचार्यसंताने श्रीश्रीसिद्धसूरिभिः ॥

१०३१. सं. १५१७ वर्षे पोषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वीजीया भा० रांभू सु० माईया चाईया फागा बाचा एतैः पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयसे च श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० चीत्रवालगच्छे धरणपद्रीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः ॥

१०३२. सं. १५०६ वर्षे माघ वदि ७ आशापल्लीवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कर्मण भा० कर्मादे सु० हीरा भा० हीरादे मातृपितृश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०३३. सं. १५१३ वर्षे वैशाख वदि २ सोमे चांगउद्रवासि-ओसवाल मं० जेसा भा० सारू पु० मं० पोचाकेन भा० वाल्ही पु० नाथा रत्नादिकुटुंबयुतेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१०३४. सं. १८९८ वर्षे फागुण शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाली व्य० सूंटा भा० सूहवदे सु० देवसी भा० हीरादे तथा माल्हणदेश्राविकया श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन श्रीसुमतिनाथबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१०३५. सं. १५६८ वर्षे माघ शुदि ४ शुक्रे सूराणागोत्रे संपूर्वी-राजा पु० सहसकिरण भा० संभरमादे तत्पु० सं० वस्ता भा० विमलदे पु० ५ तपमालणपंचादी सं० सिंघा सं० श्रीचंद सं० सहसा सं० विजा-सहितेन सं० वस्ताकेन स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० धर्मघोषगच्छे श्रीनमिचन्द्रसूरिभिः प्र० ।

१०३६. सं० १४८५ वर्षे वैशाख शुदि ७ सोमे श्रीओसवंशे कपासी खीमा भा० रूपादे सुतैः धनारत्नालषमादिभिः श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपागच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१०३७. सं. १३८९ मार्ग. वदि ४ शनौ सूराणागोत्रे सा० पाल्हण सु० सा० चिनाकेन कसणकान्हाप्रमुखयुतेन स्वपितुः श्रेयसे श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः ॥

१०३८. सं. १५१२ वर्षे माघमासे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० सारंग भा० गांगी तयोः मं० नाऊआ भा० नामलदे भ्रा० कुंरा समस्तकुटुंबश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुरुभिः ॥

१०३९. सं. १५८७ वर्षे माघवदि ८ गुरौ श्रीवीजापुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० मं० हर्षा भा० लाडकी पु० महं कीका भा० सोनाई

२४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्री मनाई श्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीउदयरत्नसूरिभिः ॥

१०४०. सं. १३७८ वर्षे वैशाखवदि ९ गुरौ श्रे० झांझण भा० वील्हणदे पु० पदमेन पितृमातृश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्री रत्नसिंहसूरिभिः ॥

१०४१. सं. १४५९ वैशाखवदि १ शनौ उपकेशज्ञा० श्रे० सरवा भा० सुंदरि सु० भोलाकेन पितृमातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंडेरगच्छे श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

१०४२. सं. १५०० ऊ० ज्ञा० व्य० सायर भा० सहजलदे पु० व्य० पाताकेन भा० बडघूयुतेन श्रीवर्धमानबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ॥

१०४३. सं. १५३० वर्षे चैत्रवदि २ सोमे ऊ० महं. ठाकुरसी भा० रूपाई....स्वपुण्यार्थं........का० प्र० श्रीबृहद्गच्छे भ० श्रीअमरचंद्रसूरिपट्टे श्रीदेवचन्द्रसूरिभिः ॥

१०४४. सं. १३९९ वर्षे फागुणवदि २ बुधे ओसवालज्ञा० ठ० नाला भा० वउलदे सु० ऊदाकाधिलेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

१०४५. सं. १५०७ वर्षे ज्ये. शुदि २ सोमे विद्यापुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सादा सु० श्रे० नरपति भा० हांसी सु० षेतादि कुटुंबपुण्यवृद्धये राजसिंहगणिना श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृहत्तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१०४६. सं. १४९८ वर्षे फागण शुदि ४ बुधदिने श्रीमालज्ञा० सहसा भा० सहजलदेवी पु० केन्हाकेन मातृपितृश्रेयसे श्रीदेवप्रभसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०४७. सं. १५७३ वर्षे वैशाखशुदि ५ दिने बोहडवर्धमानगोत्रे सा० सापा भा० हीरादे पु० सा० चांदा भा० श्रीपनाघलदे इत्यादि पुत्रपरिवारयुतेन निजपूर्वजपुण्यार्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

१०४८. सं. १५०९ वर्षे मार्गशीर्षशुदि ६ दिने ऊकेशवंशे काकरियागोत्रे सा० सीहा पु० हीरा भा० मरकाई पु० जीवाजगाभ्यां श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारश्रीजिनभद्रसूरि-खरतरगच्छेश ॥

१०४९. सं. १५०५ वर्षे पोषवदि प्राग्वाट व्य० खेतसी भा० गांगी सु० तेजाकेन भा० कदू सु० समधरमेलाभादाचांदादियुतेन भ्रातृहाजीश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

१०५०. सं. १५१८ वैशाख शुदि ५ गुरौ श्रीअंचलगच्छेश-श्रीगुण....सूरीणामुपदेशेन तेजा राणा सु० व्य० श्रीऊकेशवंशे सा० नरपति भा० धारण सु० पासु भा० पूरी सु० भाषू स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअनंतनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१०५१. सं. १५०५ वर्षे माघशुदि ८ शनौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० मूदा भा० बा० लाडी सु० देवाकेन आत्मश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षीय भ० श्रीदेवाणंदसूरिशिष्यभ० श्रीदयासागर-उपदेशेन ॥

१०५२. सं. १५३२ वर्षे वैशाख शुदि ५ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सहिसा भा० अरघू सु० सहिजाभाखाकेन स्वपूर्वज-निमित्तं मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिपट्टे भ० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः डांगरूआ अ० लीलापुरवास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०५३. सं. १४८३ वर्षे वैशाखशुदि ९ गुरुवारे लोढागोत्रे सं. वाला पु० सं० वाछाकेन निजजनकनिमित्तं श्रीविमलनाथप्रतिमा का० प्र० तपाभ० श्रीहेमहंससूरिभिः ॥

देवसानो पाडो श्रीपार्श्वनाथजीना देरासरना लेखो.

१०५४. सं. १५७३ वर्षे फागुण शुदि ८ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० देवा भा० देवलदे सु० नरबद भा० लीलादे सु० रंगा मागा चांदा श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीविनयसागरसूरिभिः प्र. वीजापुरवास्तव्य. ॥

१०५५. सं. १४९० फागुणशुदि ११ प्रा० महं० नरपाल भा० नामलदे सु० वीसलेन भा० वील्हणदे सु० सादाभादाहांसादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवर्धमानबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१०५६. सं. १५१६ वर्षे मार्ग. शुदि १ दिने ऊकेशवंशे राका श्रे० गोत्रे श्रे० आसा भा० अमकू पु० थिरपालसहितया श्रेयोऽर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे भ० श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

१०५७. सं. १५२४ वैशाख शुदि २ ऊकेश सो० मूंधा भा० राणी पु० सा० अमरसी भा० अरघू पु० सो० सोनपाल अमीपाललीबकैः निजश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिराजाधिराजैः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०५८. सं. १५२८ वर्षे माघवदि ५ बुधे ऊकेशाचड्डूआणगोत्रे मं० सामंत भा० भोली पु० मं० वर्जांगेन भा० लीलाई पु० परबत प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीश्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः सीरोहीग्रामे ॥

१०५९. सं. १५३२ वैशाखशुदि १५ दिने प्राग्वाट प० देवा भा० रूपिणि पु० प० पूंजा भा० मरगदेनाम्न्या श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१०६०. सं. १५२० आषाढशुदि २ गुरौ अहम्मदावादे डीसावालज्ञा० सा. धर्मसी भा० सुलेसरि सु० सा. साभाकेन भा० रामति सु० सीधरादिकुटुंबयुतेन श्रीअभिनन्दनबिंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागरसूरि श्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

१०६१. सं. १६१० वर्षे फागुणशुदि २ श्रीओसवालज्ञा० सा० जगा भा० जरतलदे पु० शीवराज श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१०६२. सं. १५९८ वर्षे वैशाखशुदि ५ गुरौ श्रीऊकेशवंशे दरडागोत्रे सा० द० भीमसी भा० समाई पु० सा० हमीर सा० राजपाल भ्रातृज सा० सचवीर सा० चांपा सा० रतनसी सश्रीकेण सा- तेजपाल भा० वइजलदे पु० सारंगधरादियुतेन श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः श्रीखरतरगच्छे ॥

१०६३. सं. १५०५ वर्षे वैशाखशुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञा० मं० कर्मा भा० कपूरदे सुतवीरपालेन भा० समू सु० देवा भ्रातृ धर्मसी धनारामाकुटुंबयुतेन पितृमातृपितृव्यआभाआल्हासांगाश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीमुनिचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०६४. सं. १५३१ वर्षे आ. शुदि २ सोमे जोटाणावास्तव्य डीसावालज्ञा० श्रे० हीरा भा० नाथी पु० ३ श्रे० हांसाकेन भा० टबकु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः शिष्यश्रीसोमजयसूरिश्रीजिनहंससूरिश्रीसुमतिसुंदरसूरिपरिवारयुतैः ॥

१०६५. सं. १५०३ वर्षे माघ शुदि ३ शुक्रे ऊ० श्रे० चांदण भा० चांदणदे पु० लावा भा० ललतादे पु० गोइंदेन पितृव्य गोधा भा० गंगादे पितृ धर्मसी भा० धर्मादे प्रभृतिमातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० ऊ० सिद्धाचार्यसंताने प्र० भ० श्रीकक्कसूरिपट्टे श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१०६६. सं. १५५२ वर्षे फागुणशुदि ६ शनौ सीहुंजवासि प्राग्वाट श्रे० कडूआ भा० चमकू पु० श्रे० जीताकेन भा० जसमादे पु० मेघा बीकाबांईआम्बाईयादिकुटुंबयुतेन निजश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१०६७. सं. १४९२ वर्षे वैशाखशुदि ११ श्रीउपकेशज्ञा० ममाउलेनगोत्रे सा. देवसी पु० सा० प्रजना पु० सा० हेमा भा० हीमी पु० सा० ऊदा भा० सुल्ही पु० सा० धनासहितेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० श्रीपल्लीवालगच्छेशश्रीयशोदेवसूरिभिः ॥

१०६८. सं. १५६७ वर्षे ज्ये. शुदि १ शुक्रे श्रीप्राग्वाटज्ञा० सा० मनका पुत्री सा० हरराज भा० कर्मादे सु० सा० जगा भा० हासी निजश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीजयकल्याणसूरिभिः ॥

१०६९. सं. १५१६ ज्ये. शुदि ३ प्राग्वाट पा० सागर भा० सचू पु० हलाकेन भा० मटकू पितृ देवदास सचव भूचरादिकुटुंबयुतेन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीमुनिसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः पत्तने ॥

१०७०. सं. १५८८ वर्षे फागुण शुदि ८ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० चांपा भा० चांपलदे सु० तेजा भा० तेजलदे सु० रूपा रामा लषमण रामाकेन भा० रांभलदेयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसौभाग्यरत्नसूरीणां पट्टे श्रीगुणमेरुसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

१०७१. सं. १५१० वर्षे माघ वदि ३ श्रीश्रीमालज्ञा० मं० आसा भा० कपूरी सु० मं० मालाकेन भ्रातृजूठानिमित्तं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० गूंदाऊआ म० श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः ॥

१०७२. सं. १५०१ वर्षे ज्ये० सु० ओसवंशे सा० हरीआ भा० हेमादे सु० कुरा भा० कामलदे सु० आंबाकेलादिकुटुंबयुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१०७३. सं. १६१७ वर्षे ज्ये० शुदि ९ दिने श्रीपारकग्रामे ओसवालज्ञा० जे.रावरसिंग सु० महिराज बुरा वाका भा० जइतलदे सु० गोइंद सांगा रहीआ श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः ॥

१०७४. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीमंडपे श्रीमालज्ञा० सं० ऊदा भा० हर्षू पु० सं. षीमा भा० पूती पु० सं० जगसी भा० माकू पु० सं० गोल्हा भा० सामा पु० मेघा भा० रामणी लघुभ्रातृ सं० राजा भा० सांगू पु० सं० जावड भा० धनाइ जीवादे सुहागदे सक्कादे धनाई पु० सं० हीरा भा० रमाई सं० लालादिकुटुंबयुतेन ४ बिंबं का० निजश्रेयसे श्रीस्वयंप्रभबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिश्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०७५. सं. १४९९ वर्षे ओसवालज्ञा० मं० जसवीर भा० सरसू सु० मं० नाईआकेन भा० नयणादे सु० पचा जावड काला मेघादे धरमनादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० तपाश्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ॥

१०७६. सं. १५४० वर्षे वैशाख शुदि ९ शुक्रे ऊपकेशवंशे श्रे० राघव भा० अमकू पु० झाझवेन राघवनिमित्तं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छे श्रीदेवाचार्यसंताने श्रीदेवचन्द्रसूरिपट्टे श्रीदेवकुंवरसूरिभिः ॥

१०७७. सं. १५५३ वर्षे ज्ये. शुदि १० गुरौ श्रीओएसवंशे मीटडीयाशाखायां व्य० देवा भा० सलखू पु० व्य० अमराकेन भा० बल्हादे लघुभ्रातृ व्य० मेला व्य० वीभायुतेन पितुः पुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छेशश्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन पारकरवास्तव्य ॥

१०७८. सं. १५७० वर्षे कार्त्तिक वदि ९ गुरौ ओसवालज्ञा० श्रे० धणपाल भा० हलू पु० श्रे० लीषा भा० लषमादे पु० सा. लटा भा० मानूसहितेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० श्रीबिवंदनीकगच्छे सिद्धाचार्यसं. प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः डडाणवास्तव्य ॥

१०७९. सं. १२९७ वैशाख शुदि ६ पाल्हाश्रीपार्श्वनाथप्रतिमा सु० सिंहाकेन का० प्र० चन्द्रगच्छे श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

१०८०. सं. १५३५ वर्षे पोष वदि ६ बुधे लाटाप० श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वानर भा० अमकू सु० धना वाछा मंडण धना भा० गोरी सु० चांपाकेन वाछा भा० हासू सु० लीला जेसिंग माणिक कुटुंबयुतेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० वृहत्तपा भ० श्रीरत्नसिंहसूरिश्रीज्ञानसागरसूरिश्रीउदयसागरसूरिभिः प्र० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०८१. सं. १५१६ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृपासण भा० मातृहांसू सु० महिपाकेन भा० झासूंयुतेन पित्रोः श्रेयोऽर्थं स्वश्रेयोऽर्थं च जीवितस्वामिश्रीशांतिनाथ-बिंबं का० प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिपट्टे श्रीविमलसूरिभिः बारोडीवास्तव्य ॥

१०८२. सं. १५९१ वर्षे वैशाख वदि २ सोमे श्रीमालज्ञा० श्रे० वडूया भा० वाली सु० श्रे० धनाकेन भा० भावलदे पु० वर्धमा-नादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० चित्राबालगच्छे श्रीवीरचन्द्रसूरिभिः ॥

१०८३. सं. १५८७ वर्षे वैशाख वदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० हर्षा भा० हर्षादे सु० झाझण भा० पूरी सु० नाथावाघाभ्यां युतेन श्रीसद्गुरूणामुपदेशेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन देउलिग्रामे ॥

१०८४. सं. १५२४ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे वालासीणवा-स्तव्यश्रीश्रीमालज्ञा० मं० गंगा भा० गंगादे सु० नाथाकेन भा० नाग-लदे सु० सहिसा रहिया प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ॥

१०८५. सं. १५७३ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने श्रीओसवंशे सा. नुला भा० टीबू सु० सा. धणपाल भा० टबकू पु० सा. समरा भा० श्रीयादे सा. परबत भा० पाल्हणदे सा. नरसिंग भा० सलई सा. परब-तेन स्वभ्रातृतानाश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० श्रीद्विवंदनीकगच्छे प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१०८६. सं. १५०७ ज्ये. शुदि २ दिने वालिंभवासिप्राग्वाट-ज्ञा० व्य० कर्मण भा० कर्मादे सु० कांधाकेन भा० धारू सु० हांसा वानरादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्न-सिंहसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१०८७. सं. १५२१ वर्षे चैत्र वदि ९ शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमालज्ञा० श्रे० लाखा भा० धरणू सु० नीला भा० माणिकदे सु० मलाकेन पितृश्रेयसे श्रीअभिनंदननाथबिंबं प्र० श्रीविमलसूरिभिः भारुद्रग्रामे ॥

१०८८. सं. १५४७ वर्षे माघ शुदि १३ चंपकनेरवासिगूर्जर-ज्ञा० सा. अमरसी भा० शाणी सु० सा. यदववच्छेन भा० जीवाई प्रमुखकुटुंबयुतेन निजश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसुमति-साधुसूरिभिः ॥

१०८९. सं. १५१७ वर्षे वैशाख शुदि १२ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञा० श्रे० ऊदा भा० शाणी सु० श्रे० धना भा० संभू सु० राजाकेन भा० संपूरीयुतेन स्वपितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीआ-गमगच्छे श्रीआणंदसूरिभिः बुबुआणावास्तव्य ॥

१०९०. सं. १४९३ वर्षे वैशाख शुदि २ शनौ उपकेशज्ञा० श्रे० शामल भा० रामी पु० गोसवेन भा० गुरदेवी भ्रातृबाबासहितेन पितृश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० मद्दाहडगच्छे रत्नपूरीयश्रीधण-चन्द्रसूरिभिः ॥

१०९१. सं. १५१६ वर्षे माघशुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं. गहिदा भा० सुलेसरि द्वि० जासू सु० लाडा भा० माकू सु० सा. सं० साभा भा० राजि द्वि० भा० वालह सु० साजणसूरायुतेन स्वपूर्वजश्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीआणंदप्रभसूरिभिः ॥

१०९२. सं. १५०९ वैशाख वदि ११ शुक्रे श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उएसवंशे डागलीगोत्रे सा. राववीर भा० सांपू पु० वसतानाम्ना पितृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१०९३. सं. १३९६ माघ वदि २ सोमे ओसवालज्ञा० पितृ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठ० वीजपालश्रेयोऽर्थं सु० भाभल प्रमुख आमसिंहेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीचित्रगच्छे श्रीमानदेवसूरिभिः ॥

१०९४. सं. १५१९ माघ वदि ५ बुधे ओसवालज्ञा० पा० खीमसी भा० बुल्ही पु० जेसिंग नाथा भ्रातृगोविंदेन भा० इन्द्राणीयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१०९५. सं. १५३५ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ डीसावाल श्रे० जवा भा० अमकू सु० मं० भोजाकेन भा० बडुआ स्व० भा० मचकू सु० नाथादिकुटुंबश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरि तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१०९६. सं. १४९२ वर्षे श्रीमालज्ञा० कासद्रीयागोत्रीय सा. रधामा सु० धारणेन पु० वीरपालजगपालसहितेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

१०९७. सं. १५१३ प्राग्वाट श्रे० महिराज भा० वर्जू पु० श्रे० आबाकेन भा० संपूरी सु० हेमा देवजादियुतेन श्वसुरश्रे० केल्हण भा० किल्हणदे श्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः श्रीवीसलनगरे ॥

१०९८. सं. १५५० वर्षे वैशाख शुदि ५ रवौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० गुणीया भा० धर्माई सु० लाला भा० खीमाई श्रीसंभवनाथबिंबं का० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे प्र० श्रीविजयचन्द्रसूरि तत्पट्टे श्रीउदयचन्द्रसूरिभिः विधिना ॥

१०९९. सं. १४७९ वैशाख वदि ९ रवौ श्रीमालज्ञा० पितामह श्रे० खीमा पितृव्य सोमा पितृ महिआ मातृ नाल्दे भ्रातृ मेगल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेयोऽर्थं सु० पर्वतेन श्रीपार्श्वनाथपंचतीर्थी का० प्र० सुदर्शनित्यश्री गुणप्रभसूरिभिः ॥

११०० सं. १५२५ मार्ग. शुदि १० प्राग्वाट मं० गांगा भा० गंगादे पु० देवदासेन भा० पूरी पु० दादादिकुटुंबयुतेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे लक्ष्मीसागरसूरिभिः अहमदावादे ॥

११०१. सं. १५४९ वर्षे ज्ये० वदि १ दिने उकेशवंशे सा० अमरा भा० कउतिगदेपुण्यार्थं सा० काजाकेन पु० पहिराजकेन रामादिपरिवारयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० बृहत्श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः ॥

११०२. सं. १६१७ वर्षे ज्येष्ट शुदि ५ सोमे श्रीनमिनाथबिंबं श्रीविजयदानसूरिभिः प्र० बाईकामा का० ॥

११०३. सं. १५१३ वर्षे पोष वदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० सा० वाछा भा० रही पु० महणसिंहेन पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे भट्टारकश्रीपद्मानंदसूरिपट्टे श्रीविनयप्रभसूरिभिः गुरुकाकरेवास्तव्य ॥

११०४. सं. १५०३ आषाढशुदि २ गुरौ इलदुर्गीयश्रीश्रीमालज्ञा० मं० पाताकेन भा० माल्हणदे पुत्री कमाई श्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरिभिः ॥

११०५. सं. १५३३ वर्षे माघ वदि १० प्राग्वाटज्ञा० व्य० नाथा भा० सुलेसरी पु० व्य० पताकेन निजश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

११०६. सं. १६२७ वर्षे वैशाख शुदि २ शुक्रे उकेशवंशे पिपलीयागोत्रे सा० गठिया भा० बबा लघुभ्रातृ सा० चांपा पु० सा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरजी स्वपुण्यार्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीबृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनसिंहसूरिभिः प्र० ॥

श्रीधर्मनाथजीना देराना लेखो. (उपलो गभारो).

११०७. सं. १६९७ वर्षे शाके १४६२ प्र० पोष वदि ६ रवौ श्रीकालुपुरे श्रीओशवंशे लघुशाखायां मं० थावर भा० बाई भीमाई सु० मं० भाणजीकेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीबृहत्तपागच्छनायक भ० श्रीधर्मरत्नसूरिपट्टे भ० श्रीविद्यामंडनसूरिभिः ॥

नीचेना गभाराना लेखो.

११०८. सं. १५७९ वर्षे वैशाख शुदि ६ सोमे श्रीपत्तनवास्तव्य श्रीमालज्ञा० श्रे० दो० नारद भा० गहीं सु० हेमा भा० चंगी सु० धर्मसी भा० धनाकेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीधनरत्नसूरि श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः प्र० ॥

११०९. सं. १५५१ वर्षे वैशाख .... भा० भावलदे अजादिप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० तपागच्छनायकश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीहेमविमलसूरिभिः प्र० ॥

१११०. सं. १५१९ वर्षे वैशाख शुदि २ शनौ ओसवालज्ञा० भंडारी सुभ्रम भा० लाखणदे पु० रत्नाकेन भा० रत्नादे पु० देपाल वरपाल भ्रातृपोपटसहितेन स्वपितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० संडेरगच्छे प्र० श्रीसूरिभिः अहमदावादवास्तव्य. ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१११११. सं. १२६४ माघ शुदि २ नाणगच्छे शान्तिसूरिगुण-समुद्रसू० पुनानिमित्तं श्रीपार्श्वनाथ का० ॥

१११२. सं. १५२० वर्षे वैशाख शुदि ९ सोमे अहमदावाद वास्तव्यश्रीमालज्ञा० दो० धर्मा भा० राभू सु० समधर भा० जछू सु० लखराजलटकणखीमराजयुतेन श्राविका जछू स्व० श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० विधिना श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीधर्मशेखरसूरि उपदेशेन ॥

१११३. सं. १४७४ वर्षे फागण शुदि ९ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सामा भा० पाल्हणदे पितृव्य पासण सु० कुंपाकेन निजपूर्वज-श्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचित्रगच्छे श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीणां शिष्यश्रीमलयचन्द्रसूरिभिः ॥

१११४. सं. १५१९ वर्षे वैशाख वदि २ गुरु श्रीहूंबडज्ञा० खरे गोत्रे दो० नरपाल भा० हरखू सु० दो० आभा जासा श्रीआदि-नाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१११५. सं. १५९९ वर्षे शाके १४५५ प्र० ज्ये० वदि २ रवौ उकेश श्रे० सूरा भा० पुद्गली पु० नीसल भा० पूगी पु० देवराज-युतेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० ऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने बिवंदनीक-पक्षे भ० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः प्र० श्रीइडरवास्तव्य. ॥

१११६. सं. १५१६ पोष वदि १२ गुरौ उपकेशज्ञा० वद्धरज-गोत्रे व्होरा माला भा० मालणदे पु० रांका स्वपुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहत्गच्छे श्रीकमलचन्द्रसूरिसंताने श्रीदेवचन्द्रसूरिभिः नगवाडावास्तव्य ॥

१११७. सं. १५२५ वर्षे फागण शुदि ७ शनौ प्राग्वाटज्ञा० सं० देवराज भा० वरजू सु० वाच्छा भा० राजू सु० कान्हाकेन भा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्नायुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१११८. सं. १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ९ दिने पेथापुरवास्तव्य वृद्धप्राग्वाटज्ञा० दो० बाला भा० अमरादे सु० भा० हेमादे सु० नाथायुतेन स्वश्रेयसे श्रीअरनाथबिंबं का० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीमुनिचन्द्रसूरिपट्टे श्रीविद्याचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

१११९. सं. १४०० वर्षे.... .... राकेन स्वभ्रातृनिमित्तं श्रीशान्तिनाथमुख्यपंचतीर्थी का० प्र० चैत्रगच्छे धरणपद्रीयश्रीराजदेवसूरिभिः थिराद्रवास्तव्य. ॥

श्रीशान्तिनाथजाना देराना लेखो.

११२०. सं. १५२२ वर्षे ज्ये. वदि ७ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वीरा भा० लाडी सु० साईयाकेन भा० राडू पु० वस्तानिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिभिः वडुद्रवास्तव्य. ॥

११२१. सं. १५२० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीओएसवंशे सा० रूदा भा० देल्ही पु० सा० सहसा भा० करमिणिसुश्राविकया पुत्रीनाऊसाहितया निजश्रेयसे श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरिउपदेशात् श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

११२२. सं. १५०४ वर्षे वैशाख शुदि २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रे० नाना भा० वारू तयोः सु० खेताकेन भा० माईसहितेन भ्रातृजेसा टबटूश्रेयोऽर्थं श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीसुविहितसूरिभिः ॥

११२३. सं. १५१५ वर्षे पोस वदि ९ शुक्रे श्रीमाली श्रे० मेघा भा० मेघलदे सु० शाणा भा० टाबु पु० धना प्रभृतिस्वकुटुंबयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीविधिपक्षिमुख्यैः श्रीसूरिभिः विधिना ॥

११२४. सं. १५७७ वर्षे माघ वदि १० दिने उसधस श्रे० कीका भा० भली पु० श्रे० शाणा भा० पनी स्वश्रेयसे स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

११२५. सं. १४६६ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरौ ओसवालज्ञा० मं० करमा सा. ....मातृ पाल्हण पितृव्य लषमण सा. जयसिंह सा. देवसीनिमित्तं सु० सारंगेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० सद्गुरुश्रीचतुर्दशीपक्षे ॥

११२६. सं. १५१२ वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरौ श्रीमालज्ञा० श्रे० मादा भा० बोनी सु० २ श्रे० भोला मउल वृद्धभा० ललीसहितेन पितृमातृश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं प्र० श्रीसोमचन्द्रसूरिपट्टे श्रीउदयदेवसूरिभिः पीपलगच्छे ॥

११२७. सं. १४३३ वर्षे वैशाख शुदि ९ शनौ .... भा० आल्हणदे.... ....समधर पूर्वजनिमित्तं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० साधुपूर्णिमाश्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥

११२८. सं. १४३४ वर्षे वैशाख वदि २....गोत्रे सा. धना पु० सलषण भा० सलखणदे पु० नरदेव धनाश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० रुद्रपल्लीयश्रीअभयदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११२९. सं. १५१० वर्षे ज्ये. शुदि ५ शनौ उप. सा० जेसा भा० लाछलदे पु० गहिंद गोपा भा० धारू पु० रतना राणा सहितेन आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीज्ञानकीयगच्छे श्रीशान्तिसूरिभिः ।

११३०. सं. १५०६ वर्षे माघशुदि १२ रवौ श्रीश्रीमाल सं० भामा भा० राजु सु० कीकाश्रेयोऽर्थं भ्रा० वाच्छाकेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन का० विधिना काहावास्तव्य ॥

११३१. सं. १५१७ वर्षे माघशुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमाल मं० गाहिया भा० सूभसिरि द्वि० भा० जासू सु० साभा कुडा रोमा कुडा भा० कुवलदे सु० जयता भा० गाहूयुतेन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० आगमगच्छे श्रीपूर्णदेवसूरिभिः ॥

११३२. सं. १४९६ वैशाखशुदि १३ ऊकेशश्रे० धना भा० धनादे सु० वीसलेन भा० रामलदे पु० कान्हादिकुटुंबयुतेन भ्रातृझांझणश्रेयोऽर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

११३३. सं. १५३९ वर्षे वैशाखशुदि ३ गुरौ ओसवालवृद्ध ज्ञा० ठाकुरगोत्रे सा० पर्बत भा० पोमादेनाम्न्या पु० सा० जावडभावडमणोरादिपुत्रेण मातृकृते श्रीशीतलनाथबिंबं का० फु० मा० श्रीधनेश्वरसूरिभ० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने प्र० श्रीसूरिभिः डालिलाग्रामे ॥

११३४. सं. १६९७ वर्षे फा. शुदि ५ दिने ऊकेशवृद्ध सा० गला भा० सरूपदे सु० दो० श्रीवंतनाम्ना श्रीअजितबिंबं का० प्र० श्रीविजयदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिराजैः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११३५. सं. १५७८ वर्षे फा. शुदि ९ बुधे श्रीआदिनाथबिंबं का० मरघाईअभिधानेन ॥

११३६. सं. १५९३ वर्षे श्रीश्रीमालवारिआववाडगोत्रे श्रीखरतरगच्छे सं० महिपाल भा० इन्द्राणीश्राविकया श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीमाणिक्यसूरिभिः फा० सु० ३ सोमे ।

११३७. सं. १५०३ वर्षे फा. वदि २ बुधे श्रीओसवालज्ञा० मं० जेसिंग भा० देवलदे सु० मं० तिहुणाकेन भा० करमा भ्रातृगागालकेन सा० सल्हाहलयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः षाटडगोत्रे ॥

११३८. सं. १६६७ वर्षे फा. शुदि ५ ऊकेशवृद्ध दो० श्रीवंत भा० गमतादे पु० दो० केशवनाम्ना श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिभिः ॥

११३९. सं. १५०५ वीरपुरे नीमाज्ञा० श्रे० देपा भा० लाषू पु० धरणाकेन भा० नामलदे भ्रातृव्य सांगा सूरा जाटादियुतेन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

११४०. सं. १३०४ वर्षे माघशुदि ४ श्रे० पुपाकेन पितृसोषा मातृ लषण पु० पाल्हणश्रेयसे श्रीशान्तिनाथादिजिनप्र० डरिया भा० की० सूरिभिः ॥

११४१. सं. १४१५ वर्षे ज्ये. वदि १३ रवौ प्र० ठ० वयरसिंह भा० वील्हणदे श्रेयसे सु० कर्मसीपद्मसीभ्यां श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीगोतमसूरिभिः ॥

११४२. सं. १५२८ वर्षे माघवदि ४ प्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखायां मं० रत्ना भा० महदोदलदे पु० मं० भीमापुण्यार्थं भ्रातृ मं. कीका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भा० कमादे पु० श्रीपालसहितेन जाहरबारूयादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीसूरिभिः उगजग्रामे ॥

११४३. सं. १५६७ वर्षे ज्ये. शुदि १३ सोमे राजाधिराजश्रीमहसेन माता श्रीलक्ष्मणा तत्पुत्र श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीचन्द्रप्रभस्य बिंबं का० मल्हाईअभिधानेन कर्मक्षयार्थं ॥

११४४. सं. १४६१ वर्षे ज्ये. शुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृ टापर मातृ गठरदे सु० मेलकेन पितृ पितृव्य चतुर्थनिमित्तं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयचन्द्रसूरिभिः ॥

११४५. सं. १५०७ वर्षे ज्ये. शुदि १० सोमे प्रभापुरीयश्रीमालज्ञा० मं० डलाकेन भा० शाणी सु० मेघा राजादिकुटुंबयुतेन सुतासाहुश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपारत्नसिंहसूरिभिः ॥

११४६. सं. १४३९ वर्षे पोषवदि ८ सोमे लोढागोत्रे सा० डाह्या भा० लबई पुत्रेण धन्हुकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीरुद्रपल्लीयगच्छे श्रीसिंहतिलकसूरिभिः ॥

श्रीसीमंधरजिनना देराना लेखो.

११४७. सं. १५१७ वर्षे माघशुदि १० सोमे श्रीउपकेश श्रीसूराणागोत्रे सं० शिखर भा० लाच्छि पु० सा० राजा भा० गंगादे पु० सा० कुरपाल श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीपद्मशेखरसूरिमूलपट्टे श्रीपद्मानंदसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११४८. सं. १५११ माघशुदि ५ गुरौ श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्ना-चार्यसंताने श्रीमालज्ञातौ सामल भा० राजू अपरनाम कुतिगदेव्या आत्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

११४९. सं. १५३९ वर्षे आ. सुदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० लांपा भा० चांदू सु० श्रे० धर्मसी भा० वाछूनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः विद्यापुरवास्तव्य. ॥

११५०. सं. १५२० वर्षे ज्ये. शुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० संग्रामसी भा० मांकू सु० मं० देवाकेन भा० देमाई सु० भोजा कुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० सूरीणामुपदेशेन ॥

११५१. सं. १५०७ वर्षे वैशाखवदि १२ बुधे ऊकेशवंशे व्य० वीजड सु० भारमल्ल तद्भार्या भरमादे तयोः पु० व्य० वाछा भा० अमरी ताभ्यां श्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

११५२. सं. १५०६ वर्षे आषाढशुदि ५ बुधे उपकेशज्ञा० श्रे० ठाकुरसी भा० देज पु० हरदासेन पितृठाकुरसीश्रेयोर्थं भ० श्रीदेवगुप्तसूरिउपदेशेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

११५३. सं. १५२५ वर्षे चैत्रवदि १० गुरौ हूंबडज्ञा० षयरजगोत्रे पोसीनीया देल्हा भा० हेमल्दे सु० लषा भा० मांकू सु० सोमा-भोजातेजादिभिः पितृश्रे० लाषानिमित्तं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीज्ञानदेवसूरिभिः डूंगरपुरवास्तव्य. ॥

११५४. सं. १५३६ वर्षे माघवदि ६ भूमे श्रीभावडारगच्छे उपकेशज्ञा० वाठीआगोत्रे सा. धरकण भा० माजू पु० पशामल भा० श्रीमलदे पु० नारद पदमा स्वपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः शनावडवा० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११५५. सं. १५४८ वर्षे वैशाखशुदि गुरौ प्रा० ज्ञा० बृहत्सजने गां. सा. हेमराज भा० हेमादेनाम्न्या स्वश्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरि ग० वि० श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः अहम्मदावादनगरे ॥

११५६. सं. १५२५ वर्षे माघशुदि ५ बुधे उपकेशज्ञा० श्रे० माला भा० नाकुं सु० श्रे० सहिसाकेन भा० लाछी सु० समधर देवा सहितेन आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसर्वसूरिभिः देणवालवास्तव्य. ॥

११५७. सं. १५१६ वर्षे वैशाखमासे फलटधिग्रामवासि प्राग्वाटज्ञा० व्य० सोहण भा० पूंजी पु० वेलाकेन भा० वींजलदे पु० वेला ठाकुर प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिश्रीमुनिसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिगच्छाधिराजप्रवरैः ॥

११५८. सं. १५११ वर्षे श्रीप्राग्वाटज्ञा० मं० भीमा भा० रमकू राजू तयोः पु० मं० वछराज भा० राभू पु० जिनदास प्रमुखकुटुंबयुतेन मातृपितृभ्रातृश्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुरुभिः ॥

११५९. सं. १५४९ वर्षे वैशाखशुक्ल ५ ऊकेशवंशे भणसालीगोत्रे भ० सादा पु० भ० माला भा० श्रा० जेठी पु० भ० हरपति भ० सुरपतियुतेन भ० नरपतिकेन भा० श्रा० सोनाई पु० भ० सूरचन्द भ० सोमचन्द श्रीसुमतिनाथबिंबं का० श्रीखरतरगच्छेशश्रीजिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीश्रीश्रीजिनहर्षसूरिभिः प्र० ॥

११६०. सं. १५११ वर्षे आषाढशुदि ६ शुक्रे सांतिजवासू व्य० श्रे० चांपा भार्यया तकूश्राविकया सु० सालिग वधूसुहवदेव्याः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रेयसे श्रीशान्तिनाथपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरीणामुपदेशेन का० श्रीसंघेन प्र० ॥

११६१. सं. १५१० वर्षे माघशुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालवंशे श्रे० सइभू भा० पांची पु० श्रे० हीरा भा० पुरी पु० श्रे० सुंटा सुश्रावकेण भा० माणिकिसहितेन श्रीअंचलगच्छे गुरुश्रीजयकेसरिउपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

११६२. सं. १५५३ वर्षे माघशुदि ५ रवौ राजपुरवासिप्राग्वाटज्ञा० व्य० सोढा भा० कपूरी पु० व्य० डाह्याकेन भा० णीमा भ्रातृ कुंपा भा० कामलदे प्रमुखस्वकुटुंबयुतेन लघुभ्रातृहेमाश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

११६३. सं. १५१५ वर्षे वैशाखशुदि १ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० पोमा भा० टीबू तयोः पु० देपाल भा०बडघूनाम्न्या स्वपतिरात्मश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन अंबासणग्रामे ॥

११६४. सं. १५४८ वर्षे वैशाखशुदि २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० संग्राम भा० जाषू सु० श्रे० तेजाकेन भा० जीवा हासी सु० श्रे० कान्हा श्रे० वाना श्रे० राना श्रे० श्रीपति प्रमुखसमस्तकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० देवकुलिकासहितं प्र० श्रीतपागच्छे भ० श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे भट्टारकश्रीहेमविमलसूरिभिः श्रीआंबुद्रग्रामे ॥

११६५. सं. १५२८ वर्षे माघवदि ५ गुरौ श्रीश्रीवंशे श्रे० जेसा भा० रामति सु० श्रे० षोनाकेन भ्रातृजीवायुतेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे धर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन गूंदीग्रामे॥

११६६. सं. १५२० अहम्मदावादे ऊकेशवरहडीआगोत्रे सा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेमा भा० तयणीपुत्र्या सा० देईआ भा० देवलदे सु० सा० महिणा भार्यया श्राविकासमाईनाम्न्या स्वश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिश्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

११६७. सं. १५१२ ज्ये. वदि १ गुर्जरज्ञा० वडलीवा० सं० नरपाल भा० बूटी सुतया मं. गोधाभार्यया श्रा० रजाईनाम्न्या सं० हरपति बडूआ वरजांग भ्रातृयुतया श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपा सोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

११६८. सं. १५२४ वर्षे वैशाखवदि ७ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० श्रे० जेसिंग भा० पानू सु० पूजाकेन भा० हर्षू पु० गणपत्यादियुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

११६९. सं. १५१६ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्रा० ज्ञा० व्य० वेला भा० धरणू सु० व्य० सातिाकेन भा० सिरियादे भ्रातृ व्य० वानरहलूप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० बृहत्तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः निजामपुरे भ्रा० शिवा ॥

११७०. सं. १५२४ वर्षे वैशाखशुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० यशमल भा० पाल्हणदे सु० कइआ भा० चमकू सु० धर्माभिधानेन भ्रा० करणा भीमादिकुटुंबयुतेन स्वपितृश्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं श्रीपूर्णिमा० श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना नलहराग्रामे ॥

११७१. सं. १५०४ वर्षे ज्ये. शुदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० माइण भा० पानू सु० पत्रायण भा० पेचू सु० मांडणेन पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणसागरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ॥

११७२. सं. १५०८ डीसावालज्ञा० श्रे० देपाल भा० देऊ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सु० जेसा भा० लाछी सु० समधरेण स्यश्रेयोऽर्थं श्रीवर्द्धमानबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकैः श्रीरत्नशेखरसूरिभिः इहिम्मदावादे ॥

११७३. सं. १५३३ वर्षे वैशाखशुदि ३ बुधे प्राग्वाटज्ञा० लघुमंत्रि....भा० बडी सु० महिराज भा० अमकू पु० जावडादिसहितेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० द्विवंदनीकगच्छे सिद्धाचार्यसंताने भ० श्रीसिद्धसूरिभिः कुणजिराग्रामवास्तव्य. ॥

११७४. सं. १५४७ माघशुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालषारडगोत्रे सा० साल्हा भा० सरसति पु० स० कुंरा भा० वडू पु० सा० हेमा भा० हांसी हर्षदे प्रमुखयुतेन श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकारश्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः ॥

११७५. सं. १४८५ वर्षे आषाढशुदि ३ रवौ उपकेशज्ञा० चैचटागोत्रे सा० श्रीसोनपाल पु० सदयवरा भा० विमलादे पु० सा० सुभकरण मातुः श्रेयसे श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे ककुदाचार्यसंताने श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

११७६. सं. १४९२ वर्षे श्रीऊकेशवंशे कांकरीयागोत्रे सा० सोहड भा० हीरादे तत्पुत्रेण साधुटापरेण श्रीपार्श्वनाथमूर्तिः का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः फागुणवदि १० ॥

११७७. सं. १५६९ वर्षे फागुणवदि २ शुक्रे उपकेशज्ञा० ठ० धूना भा० पूनादे पु० ठ० वरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

११७८. सं. १४८३ वर्षे फागुणशुदि १० गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० वनयपाल भा० मची सु० ठोसाश्रेयसे व्य० सधारणेन श्रीशान्तिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीगुणसागरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११७९. सं. ११४३ श्रीनाणकीयगच्छे स्वसुवपद्मासुयचनतः श्राद्धैः श्रीवीरनाथबिंबं चायणसुदेवऊलभदेवडमनि ॥

११८०. सं. १५२० वर्षे ज्ये. शुदि २ दिने ऊकेशचोपडागोत्रे सा० वरसिंघ भा० सोपू पुत्रेण सा० गणपतिसुतेन सं० घणपतिना भा० सं० हर्षू पु० पूनसिंहाद्युपेतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीश्रीजिनसागरसूरिभिः खरतरगच्छेश्वरैः ॥

११८१. सं. १५२४ वैशाखशुदि ३ सोमे श्रीश्रीमाली सा० रत्ना भा० संघविनीपूरीनाम्न्या स्वश्रेयसे देवीश्रीपद्मावतीमूर्त्तिः का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

११८२. सं. १३८० ज्ये. शुदि १४ व्य० अभयसिंह पु० सलषा व्य० लोला पु० सामंतउभाभ्यां श्रीअंबिका कारिता श्रीहारिज्यगच्छे ॥

११८३. सं. १६६१ वर्षे वैशाख शुदि १३ शुक्रे आजुलिवास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० भूचर भा० भावलदे सु० श्रे० लषमण भा० देमति प्रमुखकुटुंबसहितेन श्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपागच्छे श्रीलब्धिसागरसूरिभिः ॥

११८४. सं. १६६४ वर्षे वैशाखवदि १२ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० कर्मण भा० गोरी पु० सा० धना भा० गेली पु० सा० श्रीराजसुश्रावकेण भा० पनी पु० नाकर प्रमुखकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छेश-श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन श्रीअहम्मदावादनगरे ॥

११८५. सं. १६६७ वैशाखशुदि १० बुधे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० मं. वना सु० पोमा भा० हीरू सु० डूंगर रंगाकेन झाडण मांडण सहितेन मातृपूर्वजश्रेयोऽर्थं आत्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० भ० श्रीमुनिचन्द्रसूरिभिः वीसरोडावास्तव्य ॥

२७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११८६. सं. १४३६ वैशाखशुदि ३ रवौ श्रीमालपितृ राजा मातृ लाछी भ्रातृ गोराबपाल्हणरमसुत मांडणश्रेयोऽर्थं श्रे० जांबूकेन श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीगुणकरसूरिभिः ॥

११८७. सं. १६३२ वर्षे वैशाखशुदि ३ सोमवारे प्राग्वाटज्ञा० वृद्धशाखायां दो० श्रीपाल सु० हरजीकेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० वृद्धतपापक्षे भट्टारकप्रभुश्रीहीरविजयसूरिभिः ॥

११८८. सं. १५२५ वर्षे मार्ग.शुदि १० भृगौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० देवराज भा० अधकू पु० सं० हरराजेन भा० चंपाई पु० सहसमल्लरत्नपाल प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः राजपुरे ॥

११८९. सं. १४५९ वर्षे चैत्रशुदि १५ शनौ गूर्जरज्ञा० दोसी माषा भा० माल्हणदे सु० रत्नाश्रेयसे श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीदेवचन्द्रसूरीणां पट्टे श्रीपासचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ॥

११९०. सं. १५४९ वर्षे कार्त्तिकवदि १ सोमे कडीवास्तव्य ओसवालज्ञा० सो० गोईयाकेन भा० फलकू श्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० सु० सो० वेला सो० वीरा सो० हांसा आना सूरा सापादियुतेन का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिपक्षे श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥

११९१. सं. १५१८ ज्ये.वदि १ दिने वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० आसा भा० सरूपिणी सु० सं० राउलेन भ्रातृ माणिलालामाला भा० धर्मिणि वाल्ही ल्हकू कपूरी सु० हथी वर्जांग माईआ वीरामूढाशाणादिकुटुंबयुतेन सु० सं० नाथाश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीरत्नशेखरसूरिशिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११९२. सं. १५७१ वर्षे माघवदि १ सोमे वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० व्य० चहिता भा० लीली सु० रूपाकेन भा० राजलदे सु० वर्धमान भा० नाथी भटा भा० शाणी सु० कमलसी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० तपागच्छे श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे परमगुरुगच्छनायकश्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

११९३. सं. १५०५ वर्षे पोषवदि वडलीग्रामे प्राग्वाटज्ञा० व्य० ऊमा भा० ऊमादे सु० सं० कोल भा० जीविणि सु० शवानोडारतना वधूवानूमाणिकिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

११९४. सं. १५१२ वर्षे मार्ग.शुदि १५ त्रिसीगमावासिप्राग्वाट श्रे० करण भा० रूपिणी पु० व्य० अजाकेन भा० श्रांपायुतेन निजश्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिपट्टालंकारश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

नीशापोळ श्रीजगवल्लभपार्श्वनाथजीना देराना लेखो.

११९५. सं. १५२१ वर्षे माघशुदि १३ गुरौ श्रीचैत्रगच्छे श्रीऊकेशवंशे धारूयागोत्रे सा० विजपाल भा० चनू सु० नोलउ भा० भदू पु० राजा भा० राजलदे सु० साल्हण मांडण लाडण कान्हा सहि० पूर्वजश्रेयसे श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० चान्द्रसमीया श्रीमलयचन्द्रसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः कंयारजवास्तव्य ॥

११९६. सं. १५२० वर्षे पोषवदि १३ भूमे श्रीओसवाल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञा० व्य० लीबा भा० लबी सु० राजा भा० माकू सु० धना मंगलदास सहितेन पूर्वजश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे चांद्रसमीयश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

११९७. सं. १४५४ वैशाखवदि ११ रवौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० लोला भा० बा० रूपू तयोः सु० व्य० पूना भा० बा० सलषणदे तेषां श्रेयोऽर्थं सु० रूदाकेन श्रीशान्तिनाथबिंबं पंचायतेन का० प्र० श्रीसूरिभिः साधुपू० श्रीजिनसिंहसूरीणामुपदेशेन ॥

११९८. सं. १४७३ वर्षे फागणशुदि ९ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० षेता सु० श्रे० टुंडा भा० नांतादे सुतेन श्रे० आल्हाकेन स्वबंधुसामंतनिमित्तं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीदेवचन्द्रसूरिभिः ॥

११९९. सं. १५०५ वर्षे माघशुदि १० रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० जोगा भा० गंगादे सु० जसा रत्ना धीरा भा० पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीपद्माणंदसूरिपट्टे श्रीविनयप्रभसूरिभिः ॥

१२००. सं. १५५३ वर्षे वैशाखशुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० रामा भा० सोही सु० सा० पहिराजकेन भा० अजी सु० राजा हरदास लटकण रविदास प्रभृतिकुटुंबयुतेन निजपूर्वजमातृपितृस्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना ॥

१२०१. सं. १४६९ वर्षे फागुणशुदि ३ ऊकेशवंशे मं० संडलिया सु० मं० सं० दिपा भा० सांजू पुत्रेण समधरेण निजपितुः श्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीदेवसुंदरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिभिः ।

१२०२. सं. १५१३ वैशाखवदि ५ शनौ श्रीओसवंशे सा० षेतसी भा० हेमाई पुत्रेण सोमसीसुश्रावकेण भा० सोमलदे प्रमुख-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छगुरुश्रीजयकेसरिसूरिउपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१२०३. सं. १५२९ वर्षे ज्ये० शुदि ९ शुक्रे उपकेशज्ञा० सहदेव पु० सूरा भा० राभू पु० षीमाकेन आत्मश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीकोरंटगच्छे श्रीकक्कसूरिपट्टे श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१२०४. सं. १४२९ वर्षे माघवदि ७ चिंचटागोत्रे वसटवास्तव्यसाधुश्रीसहजपालभार्यया नयणादेव्या आत्मश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० ककुदाचार्यसंतानीयदेवप्रभसूरिभिः ॥

१२०५. सं. १५३३ वर्षे आषाढशुदि २ रवौ प्राग्वाटज्ञा० पा० तेजा भा० मनी पु० रूपा भा० धनी पुत्र परिवृती स्वश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० उ० श्रीसिद्धाचार्यसंतानीयदेवप्रभसूरिभिः ॥

१२०६. सं. १५६४ वर्षे वैशाखवदि १२ बुधे श्रीश्रीवंशे मं० कर्मण भा० गोरी पु० सा० धना भा० गेली पु० सा० श्रीराजसु श्रावकेण सा० धनापुण्यार्थं अंचलगच्छेशश्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन श्रीअहम्मदावादे ॥

१२०७. सं. १५०९ वर्षे वीजापुरवासी श्रे० रत्ना भा० तिलकू सु० श्रे० तेजपालेन भ्रातृ हासा जीवा भा० हारी सु० हेमादिकुटुंबयुतेन ससुत देवराजश्रे० श्रीवासुपूज्यजिनबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२०८. सं. १६७७ वर्षे फागुणशुदि ८ सोमे ओसवालज्ञा० दो० जादव भा० जसमादे पु० सा० वीरजीकेन उ० श्रीविवेकहर्षउपदेशात् श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छाधिराजभ० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

१२०९. सं. १५९५ वर्षे माघशुदि १२ शुक्रे श्रीउकेशज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा. कूरपाल भा० कमलादे सु० कर्मसी श्रीआदिनाथबिंबं का० तपागच्छे श्रीआणंदविमलसूरिभिः प्र० नित्यं प्रणमन्ति ॥

१२१०. सं. १४६९ वर्षे फा. वदि ३ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० ठ. जीजी भा० हीमादे पु० ठ० हीराकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० पूर्णिमाप० श्रीसूरीणामुपदेशेन ॥

१२११. सं. १४५९ चैत्र वदि १ श्रीश्रीमालज्ञा० मांडण भा० पूजल सु० तिहुणाकेन पितृमातृश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षीयश्रीसुमतिसिंहसूरीणामुपदेशेन ॥

१२१२. सं. १५१५ वर्षे कार्त्तिकवदि १ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० भीमा सु० श्रे० पांचा भा० लापू सु० श्रे० समधर भा० मरगदे तया स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं आगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरिगुरूपदेशेन का० प्र० च ॥

१२१३. सं. १५१० माघे देकावाटकीय श्रे० सारंग भा० शाणी पु० कर्माकेन भा० भली पु० माईयादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीवर्द्धमानबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१२१४. सं. १५१५ वर्षे फागुणशुदि १२ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० चउथ भा० चांपलदे सु० कूंपाकेन भा० जाणी पु० मेलासहितेन पितृमातृभ्रातृ चांपा स्वपूर्वजश्रेयसे श्रीविमलनाथमुख्यपंचतीर्थी का० प्र० पिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः कोतरडवाडावास्तव्य ॥

१२१५. सं. १५१३ वर्षे पोषसुदि १० बुधे वांटड्वासिश्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० मेत्रा भा० लेलरि पु० श्रे........भा० फूदी भ्रा० वेला भा० वउलदे सु० कोका भा० जिरि सु० चांगादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीरत्नशेखरगुरुभिः ॥ अं० श्रीगणदेवसूरि.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२१६. सं. १९८७ वर्षे माघवदि ८ गुरौ श्रीवीजापुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० मं. तीपा भा० जसाई सु० मं० रीडाकेन भा० सहजलदे प्रमुखयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीआगमगच्छे श्रीउदयरत्नसूरिभिः ॥

१२१७. सं. १९०८ वर्षे आषाढशुदि २ सोमे अहम्मदावादवास्तव्य ओसवालज्ञा० दो० धीरण भा० हीरू सु० दो० जोगा घडसीभगिनी रोहिणीनाम्न्या भ्रातृजराणानथाजावडबडूयादियुतया श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१२१८. सं. १५१९ वर्षे ज्येष्ठशुदि ९ शुक्रे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वीसल भा० प्रथमा राजू द्वि० भा० मनी सु० चुघाकेन गृहीतप्रवर्जेन भ्रातृहस्ता हरीया नरीया सरवणसहितेन स्वमातृपितृश्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिभिः ॥

१२१९. सं. १५१३ वर्षे माघशुदि ९ रवौ ऊ० ज्ञा० अहमदावादवास्तव्य सा० लषा भा० लषमादे सु० फूटाकेन भा० रमाई सु० घउलादियुतेन भा० सूदाश्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१२२०. सं. १५९६ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ भोमवारे श्रीअहिम्मदावादवास्तव्य श्रीऊकेशज्ञा० सा० येवारालर्षसुहाडिनिमुरसर................आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

१२२१. सं. ११२४ फागुणशुदि ३................श्रीऋषभदेवबिंबं का० प्र० श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

१२२२. सं. १९१६ वर्षे का० व० २ सोमे शामीग्रामे श्रीश्री-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माल व्य० कान्हा भा० राळू सु० गदिमा भोजा गजा भ्रातृ चांपाकेन भा० चांपाईयुतेन पितृश्रेयसे श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीमतितिलकसूरिपट्टे श्रीराजतिलकसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२२३. सं. १५१६ वर्षे वैशाखशुदि ५ शुक्रे ओसवालज्ञा० श्रे० माल्हा भा० गांगी सु० सीधर भा० सिरियादे सु० भीमा निज-कुटुंबश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसिंहसूरिभिः ॥

१२२४. सं. १५०४ वर्षे ज्ये.शुदि ९ रवौ श्रीकोरंटगच्छे उपकेशज्ञा० सा० सालिग भा० सुलेसरि पु० ऊदाकेन भा० प्रीमीसहि-तेन पितृमातृनिमित्तं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१२२५. सं. १४७२ वर्षे फागुणवदि ११ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० पितृमहिपा मातृप्रीमीश्रेयसे सु० ठाकुरसिंहेन श्रीआदिनाथबिंबं का० पूर्णिमाप० श्रीजयतिलकसूरीणामुपदेशेन प्र० सूरिभिः ॥

१२२६. सं. १४८७ वर्षे माघशुदि ५ गुरौ देकावाटकवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० श्रे० सामंत भा० गुरुदेवी सु० श्रे० मेघाकेन आत्मश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० आगमगच्छेशश्रीअमरसिंहसूरिपट्टे श्रीहे-मरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० विधिना श्रीसंघेन ॥

१२२७. सं. १४५९ वर्षे ज्ये. वदि ९ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० ठ० गोघल भा० गुरदे सु० ठ० त्रासणेन निजमातृपितृश्रेयसे श्रीआदि-नाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१२२८. सं. १५२५ वर्षे फागुणशुदि ७ शनौ प्राग्वाट श्रे० सारंग भा० चमकू सु० श्रे० खेताकेन भा० सरंगदे सु० हांसादि-कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छनायकश्री-लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२२९. सं. १५२१ वर्षे ज्ये. मासे डीसावालज्ञा० मं० सिंघा भा० सहजलदे सु० श्रे० मूलाकेन भा० सोहा सु० कर्मसी नीसल भ्रातृजेसादिकुटुंबयुतेन निजश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१२३०. सं. १४५३ वर्षे वैशाखशुदि २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कडूया भा० कानलदे पितामही जासू श्रेयोऽर्थं सु० आसाकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० त्रिभवीयाश्रीधर्मप्रभसूरिभिः ॥

१२३१ सं. १४८४ वर्षे वैशाखशुदि ३ शुक्रे श्रीपत्तनवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० आका भा० गांगी सु० श्रे० मूलाकेन स्वभा० श्रीरनू श्रेयोऽर्थं श्रीआगमगच्छेशश्रीहेमराजसूरिगुरूपदेशेन श्रीसुमतिनाथादिपंचतीर्थी का० प्र० च विधिना ॥

१२३२. सं. १५१३ वर्षे पोषवदि २ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृ वीधा मातृवील्हणदे सु० नागिणि स्वश्रेयसे जीवितस्वामिश्रीश्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० श्रीपूर्णि० श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० ।

१२३३. सं. १५०३ वर्षे ज्ये. वदि १० श्रीश्रीमालज्ञा० दो० गहिगा भा० वारू सु० दो० नरपाल भा० नागलदे सु० वर्धनयुतेन स्वमातृश्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२३४. सं. १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० बडूआ भा० रमाई सु० दो० सीपा भा० चंगी पु० दो० जीवाकेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० पूर्णि० श्रीसुमतिरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

१२३५. सं. १५११ वर्षे आषाढ शुदि ६ शनौ भाव० दादा भा० हीरू पु० पाता भा० अमरीकेन आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीश्रीविजयधर्मसूरिभिः ॥

२८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२३६. सं. १५६० वर्षे वैशाखशुदि ३ बुधे श्रीश्रीवंशे मं० हरपति भा० रतनू पु० मं० वाघासुश्रावकेण भा० वहाली पु० मं० श्रीराजश्रीवंतसहितेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छे श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन मंडलीनगरे ॥

१२३७. सं. १३८७ वर्षे फा. शुदि १० गुरौ श्रीनागरगच्छे श्रीजिनेश्वरसूरिसंताने मं० जयपतिना महं० श्रे०....आरश्रेयोऽर्थं वीणाकेन मूलनायकश्रीमहावीरस्वामिचतुर्विंशतिपट्टः का० ॥

१२३८. सं. १५१० वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जीवा भा० बडू सु० मनाकेन भा० मनकू सु० वेलादिकुटुंबयुतेन पितृव्य० श्रे० पोमा श्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० ब्रह्माणगच्छे श्रीविमलसूरिभिः ॥

श्रीशान्तिनाथजीना देराना लेखो.

१२३९. सं. १५११ वर्षे माहशुदि ८ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० सीपा भा० हर्षू पु० धर्मसी....भा० गउरीकुअरीयुतेन पितृमातृ हर्षेण श्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० उकेशगच्छे सिंहाचार्यसंताने श्रीककसूरिभिः।

१२४०. सं. १४९२ वर्षे चैत्रवदि ५ शुक्रे उपकेशज्ञा० व्य० सीहा भा० सीहादे पितृमातृश्रेयसे सुतशिवाकेन श्रीअनंतनाथमुख्यपंचतीर्थी कारापिता पूर्णिमा० श्रीभीमपल्लीयश्रीपासचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजयचन्द्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

१२४१. सं. १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीओसवंशे सा० नरपाल भा० मरगाई स्वश्रेयोऽर्थं पु० सा० जगा सा० धना सा० देवदास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पौत्र रायमल सा० जसवीर पासवीर समस्तकुटुंबसहितेन श्रीगुणनिधानसूरीणामुपदेशेन श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१२४२. सं. १९३३ वर्षे वैशाखवदि १३ ओसवालान्वये महेतागोत्रे सा० सारंग पु० सा० काला भा० देउ पु० धीरा भा० राही आत्मश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० श्रीचन्द्रगच्छे भ० श्रीअमरचन्द्रसूरिपट्टे भ० श्रीदेवचन्द्रसूरिभिः प्र० ॥

१२४३. सं. १५१२ वर्षे वैशाखशुदि २ शनौ श्रीप्राग्वाटज्ञा० व्य० सहसवीर भा० अमरादे सु० वजंगी भ्रातृ मेघराज भ्रातृ संघराज स्वकुटुंबआत्मश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीहेमविमलसूरिभिः॥

१२४४. सं. १५४३ वर्षे वैशाखवदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० नागा भा० नागलदे सु० मं० षीमाकेन भा० चंपाई सु० सहिजा सहितेन भ्रातृहेमाश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० मड्डुकरगच्छे श्रीमुनिप्रभसूरिभिः प्र० साणंदग्रामे ॥

१२४५. सं. १५०७ वर्षे माघशुदि ११ बुधे नागरज्ञा० श्रे० आसा भा० तेजू सु० पाल्हा भा० पाल्हणदे सु० मुका सा० देवासहितेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० भ० श्रीजिनरत्नसूरिभिः ॥

१२४६. सं. १५१६ वर्षे वैशाखशुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० व्य० वेला भा० धरणू सु० देवाकेन भा० देवलदे भ्रातृ व्य० वानर हलू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० बृहत्तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१२४७. सं. १५१६ वर्षे आषाढशुदि ९ शुक्रे सं० कान्हाकेन भा० कुतिगदे जाणीयुतेन श्रीगौतम का० ॥

१२४८. सं. १५४९ वर्षे ऊकेशवंशे सा० पोपा भा० सारू पु० सा० बडूया सुश्रावकेण भा० कपूराई पु० हदा अदा श्रीपाल परि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बारसश्रीकेण श्रीसुमतिनाथबिंबं का० स्वश्रेयसे प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः ॥

१२४९. सं. १५२४ वर्षे वैशाखवदि ९ सोमे श्रीमालज्ञा० मं० लीबा भा० अरधू सु० नारद भा० हारीसहितेन पितृमातृ व्य० भ्रातृ श्रे० पार्श्वनाथपंचतीर्थी का० पूर्णिमा० श्रीराजतिलकसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

१२५०. सं. १५११ वर्षे आषाढवदि ६ शुक्रे श्रीक्षेत्रवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० श्रे० आसा भा० मचकू सु० वस्ताकेन भा० गोरी कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथादिपंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीदेवरत्नसूरीणामुपदेशेन का० श्रीसंघेन प्र० ॥

१२५१. सं. १५५४ वर्षे पोषवदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालीपटू० मूला भा० मनकू सु० पटू० पहिराजेन भा० अमरादे सु० गदा गोईया विद्याधर मंगल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहत्तपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिपट्टे श्रीउदयसागरसूरिभिः श्रीअहम्मदावादे ॥

१२५२. सं. १५२९ वर्षे ज्ये. शुदि १० बुधे ओसवालज्ञा० श्रे० साल्हा सु० रामसी भा० शाणी सु० पाता भा० मणिकदे हरदेव भा० हीरादे जागा भा० तेजदे एभिर्मातृनिमित्तं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० श्रीचित्रगच्छे श्रीगुणदेवसूरिसंताने प्र० श्रीरत्नदेवसूरिभिः ॥

१२५३. सं. १५३४ वर्षे पोषवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० वेला भा० अमकू पु० भादाकेन पितृमातृश्रेयोऽर्थं आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिभिः सवडकूतासी वास्तव्य. ॥

१२५४. सं. १५०९ वैशाख शु० १३ शुक्रे श्रीश्रीमालवंशे महं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलराज भा० शारू पु० मं० पंचायणसुश्रावकेण भा० सलषू पु० सूरा शिवदास हरिचन्द्रसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन पत्नीश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० श्रीसंघेन प्र. ॥

१२९५. सं. १५७३ वर्षे वैशाखशुदि ३ शनौ दिने चडाउला-गोत्रे उ० ज्ञा० पद्मा भा० रुपिणि सु० वीना भा० हेमी द्वि. विम-लादे सु० सोनी लाभ सोनी भा० पेतलदे सु० संघहज लाला भा० लीलादे का० शवकर श्रीधर्मनाथबिंबं श्रीदेवरत्नसूरिभिः प्र० ॥

श्रीशान्तिनाथजीनी पोळ—श्रीशान्तिनाथजीना देराना लेखो.

१२९६. सं. १४०८ वैशाखशुदि ९ गुरौ....ज्ञा०............ वास्तव्य प्रपितामहश्रे०........रूपिणी....नागपति पितृ छाहड भ्रातृ षीमसीह पितुः नरसिंह पितृव्य नरपाल....श्रेयसे सु० सुटाकेन श्रीआ-दिनाथबिंबं का० विद्याधरगच्छे प्र० श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥

१२९७. सं. १६१३ वर्षे शा. १४७७ प्र० ज्ये. शुदि ११ शनौ छाहडगोत्रे सा. अमीपाल पु० नानायुतेन श्रीआदिनाथपंचतीर्थीपट्टः का० श्रीखरतरगच्छे प्र० श्रीविद्यादानसूरिभिः कर्मक्षयार्थं ॥

१२९८. सं. १५२० अहमदावादे ऊकेश बरहडिआगोत्रे सा. सना भा० सूराई पु० सा० समरा अमरा पद्मसिंहैः भा० चंगाई गुराई पद्माई प्रमुखकुटुंबयुतैः सा. अमरा भा० श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिशिष्यश्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२५९. सं. १५१२ ऊकेश सा. लीबा भा० लीलादे सु० सा० राजा भा० राजलदेव्या श्रेयोऽर्थं श्री९सुविधिबिंबं का० प्र० तपाश्री सोमसुंदरसूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिशिष्यश्रीउदयनंदीसूरिभिः सिद्धपुरे ॥

१२६०. सं. १५३१ वर्षे ज्ये. शुदि ३ ऊकेशज्ञा० श्रे० धणपाल भा० मनी सु० लषसी भा० फडू सु० वानर देधर धर्मा मांडण भ्रातृ हेमाकेन भा० वर्जू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीककसूरिभिः त्रभग्रामे ॥

१२६१. सं. १३६८ वर्षे ज्ये. वदि १३ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० सोवीरसंताने महं. साहण पु० आदा आंबड भा० प्रीमलश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं पु० देवडेन का० प्र० पिप्पलाचार्यश्रीककसूरिभिः ॥

१२६२. सं. १५१५ वर्षे वैशाखवदि २ गुरु उपकेशज्ञा० पितृ सारंग मातृ सारू सु० पद्माश्रेयोऽर्थं भ्रातृ सूराकेन श्रीअभिनंदननाथबिंबं का० रुद्रपल्लीयगच्छे श्रीजिनराजसूरिभिः प्र० श्रीसंघेन वडुद्रावास्तव्य. ॥

१२६३. सं. १५२४ वैशाखशुदि ३ ऊकेश सा० लाषा भा० हर्षू प्रमुखकुटुंबयुताभ्यां पितृव्य सं० कर्मसीश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

१२६४. सं. १५९१ वर्षे वैशाखवदि २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० हरदेव भा० अरघू सु० श्रे० सहिजा भा० सहिजलदे पु० माला रांका भाणा वछा भा० वनादे आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीश्रेयांसबिंबं का० श्रीवृद्धतपापक्षे भट्टा० श्रीधनरत्नसूरिभिः प्र० नागडवास्तव्य. ॥

१२६५. सं. १५३२ वर्षे ज्ये. वदि १३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० जयता सं० सदेन भा० चंगीई सु० विद्याधरादियुतेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीअमरचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२६६. सं. १४६२ वर्षे वैशाखशुदि ५ शुक्रे श्रीहारीजगच्छे ओसवालज्ञा० श्रे० लाडा भा० लीलादे सु० धर्मादेवाभ्यां श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीशीलभद्रसूरिभिः ॥

१२६७. सं. १४९६ वर्षे वैशाखशुदि ९ सोमे कुसलागोत्रे सा० षेता पु० सा० हरिया तत्पुत्र सा० लखामहिराजाभ्यां माता वीरू पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

१२६८. सं. १४०६ वर्षे वैशाखशुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० तेजपाल भा० तेजलदे सु० सहजा भा० धाईनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसागरसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च विधिना ॥

१२६९ सं. १४९१ वर्षे द्वि० ज्ये.वदि ७ शनौ श्रीपत्तनवास्तव्यश्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० धरमा भा० धांधलदे सु० समाकेन तदात्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथादिपंचतीर्थी आगमिश्रीहेमरत्नसूरिगुरूपदेशेन का० प्र० च ॥

१२७०. सं. १५६६ वर्षे वैशाखवदि ११ शनौ भा० लाखा भा० कुंअरि सु० भा० वर्णा भा० जइनू पु० भा० वदा भा० हीरू कुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छे श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१२७१. सं. १५१८ वर्षे ज्ये.शुदि २ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० गां० देवाइत सु० गां० कडूआ भा० कुतिगदे पु० सहसेन पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० पूर्णि० प० प्रधानश्रीजयभद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

१२७२. सं. १५२० वर्षे वैशाखशुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० देवा भा० देवलदे सु० रामाकेन भा० गोमतीसह पितृमातृश्रे०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीगुणसमुद्रसूरि-उपदेशेन आवा० श्रीगुणदेवसूरिभिः वावडीवास्तव्य ॥

१२७३. सं. १५२२ वर्षे पोषवदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० धांगा भा० मिलू सु० रामाकेन आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरिभिः ॥

१२७४. सं. १५२५ मार्ग.शुदि १० प्राग्वाट मं० मेघा भा० मूंजी पु० बदाकेन भा० लाली भ्रातृ हरदास भा० धनी भ्रातृ व्य० धरकणादिकुटुंबयुतेन सरवण सारंग मांडण पाता ठूसादिश्रेयसे श्रीवासुपूज्य-बिंबं का० प्र० तपागच्छेशश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१२७५. सं. १३४६ वर्षे ज्ये.वदि १ शुक्रे श्रे० जगा श्रेयोऽर्थं पु० पद्मसिंहेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२७६. सं. १५६६ वर्षे माघवदि २ रवौ श्रीऊकेशवंशे लघु-शाखायां वि. महिपाल भा० मरगदे सा० महुणा भा० लीली पु० सा० नाथासुश्रावकेण निजकुटुंबसहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छेश्वर-श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० श्रीश्राद्धेन श्रीप-त्तननगरे ॥

१२७७. सं. १४४० वर्षे पोषशुदि १२ बुधे प्राग्वाटज्ञा० व्य० श्रीकर्मा भा० सहजलदे पु० मदनेन भा० माल्हणदेसहितेन पितृमातृ-श्रेयोऽर्थं श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णचन्द्रपट्टे श्रीहरिभद्रसूरिभिः॥

१२७८. सं. १५९८ वर्षे वैशाखशुदि ६ पोरूआडज्ञा० श्रे० शाणा भा० कुअरि सु० सिवा स्वसाबाई सामाईपुण्यार्थं भर्तृज कीका मागा रत्नपालश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीजिनसाधुसूरिपट्टे श्रीजिनकीर्त्तिसूरिभिः श्रीसहुआलीआगच्छे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२७९. सं. १५१२ वर्षे माघशुदि ९ वृ. श्रीसांडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० जुहाणेचागोत्रे सं० भीमसी पु० जयंता भा० देई पु० ४ सं० वाल्हा भा० बहुसिरि पु० चांदा बाला रत्नादियुतैः श्रीविमलनाथबिंबं आत्मश्रेयसे का० प्र० श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥

१२८०. सं. १५२५ वर्षे फा. शुदि ७ शनौ ऊकेशज्ञा० व्य० सोमा भा० वीरू सु० वीरा भा० दूबीनाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथ-बिंबं का० प्र० श्रीलक्ष्मीसागरसूरितपागच्छेशैः ॥

१२८१. सं. १५२० वर्षे ज्ये. शुदि १० बुधे श्रीमालज्ञा० श्रे० भीमाकेन भा० नानू पु० जीवणसहितेन पुत्रीहीराईश्रेयोऽर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नदेवसूरिभिः ॥

१२८२. सं. १५५१ वर्षे आषाढवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० हांसा भा० हांसलदे तत्पुत्रौ श्रे० जागा श्रे० जीवाभ्यां श्रे० जागा भा० चंपाईनाम्न्या स्वश्रेयोऽर्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्ध तपापक्षे श्रीउदयसागरसूरिभिः शिष्यउ० श्रीमुनिसिंहगणिउपदेशेन का० ॥

१२८३. सं. १५४३ वर्षे गूर्जरज्ञा० मं० रामा भा० चमकू सु० मं० सामल भा० सखीनाम्न्या पुत्री नाथी सु० यूसायुतया स्वंभर्तृ-श्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिसंताने श्रीज्ञानसागरसूरिपट्टे श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥

१२८४. सं. १५१७ वर्षे माघशुदि ९ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं. अर्जन भा० ऊमादे पु० सामंत साभा साही सामंत भा० राणी द्वि० माणिकदे सु० जांटा धीरा सामा भा० मानू सीहा भा० सोही सु० मूलू समधरयुतेन स्वभर्तृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० आगमगच्छे श्रीमहे-न्द्रसूरिभिः ॥

१२८५. सं. १६७८ वर्षे ज्ये, सित १० शुक्रे साबलीवास्त-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्य ऊकेशज्ञा० दो० सरचंद भा० श्रीधर्माई सु० हाका हानुआनाम्ना श्रीमहावीरबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयसेनसूरिपट्टे श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

१२८६. सं. १७०५ वर्षे वैशाखवदि ७ बुधे राजनगरवास्तव्य ऊकेशज्ञा० वृद्धशाखीय सा० मानसिंघेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीविजयदेवसूरिभिः श्रीविजयसिंहसूरिभिः ॥

१२८७. सं. १४५४ वैशाखवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० परी. देवल भा०देवलदे पु० परी. मांडणसुश्रावकेण श्रीअंचलगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरीणामुपदेशेन पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का०प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२८८. सं. १५६४ वर्षे ज्ये.शुदि १२ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० कडीवास्तव्य श्रे० महिराज भा० जीविणि सु० गांगाकेन भा० गांगाई सु० मेला प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्री उदयचन्द्रसूरिभिः ॥

१२८९. सं. १५२५ वर्षे मार्ग.शुदि १० ऊकेशज्ञा० सो० रत्ना भा० रत्नादे पु० सो० नागराज भा० नयणादे पु० सो० मांकाकेन भा० धनाई पु० कमलसी वच्छराजहांसादिकुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिराजपट्टे श्रीतपागच्छनायकश्रीलक्ष्मीसागरसूरिराजैः अहम्मदावादे ॥

१२९०. सं. १५२२ वर्षे फागुणशुदि ३ सोमे श्रीप्राग्वाटज्ञा० सा० पासा भा० वल्हादे धर्मपुत्री शृंगारदे सुश्राविकया समस्तकुटुंबसहितया निजश्रेयोऽर्थं श्रीअंचलगच्छेश्वरश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का०.प्र० श्रीसंघेन मंडपमहादुर्गे ॥

१२९१. सं. १५१५ वर्षे माघशुदि ७ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सिद्धसंताने सं. सूरा भा० सामलदे सु० सं. हेमा भा० राणी सु० सं. फताकेन भा० कुअरि सु० शिवदासप्रभृतिकुटुंबयुतेन स्वभार्याश्रे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मसागरसूरिभिः ॥

१२९२. सं. १५१६ मार्ग.वदि १ अहमदावादवासि प्रा० सा० नाथा रूडी पु० डूंगरानुजेन सा० मेघराज भा० मीणलदे पु० पर्वतेन भा० सांकू भ्रातृ महिपति हरपति भ्रातृजाया चमकू अधकू मटी पु० पूनसीभूंभच राजपाल देपाल चोंकसी जयतसिंह टाकुआ मटकल मालदेव कीकादिकुटुंबयुतेन भ्रातृ शिवा भा० सरस्वतीश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१२९३. सं. १५२७ वर्षे पोषवदि ५ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० व्य० सहदेव भा० चनू सु० व्य० देवा भा० देवलदेनाम्न्या सु० अजा हेमा प्रमुखकुटुंबयुतया श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१२९४. सं. १५४६ वर्षे आषाढवदि द्वितीयातिथौ शनिवासरे ....सुरासरिजनयपित्रे श्रीचंडाबियागोत्रे सं० मेहासंताने मं० डूंगर श्रीवंत भा० सवीरदे पु० रत्ना........श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छे श्री........सुरिभिः ॥

१२९५. सं. १५२० वर्षे फागणशुदि ७ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० सं० नरपाल भा० श्रा० मूल्हानाम्न्या सु० जिनदास सं० कुंरपाल महसेनस्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीमलधारिगच्छे श्रीगुणनिधानसूरिभिः ॥

१२९६. सं. १३६९ वर्षे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमालज्ञा० सु० मदनेन पितृ सलषा गोषलादेवीश्रेयोऽर्थं श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० श्रीविमलसूरिभिः ॥

१२९७. सं. १३३२ आषाढशुदि २ श्रीमालीज्ञा० सा० महणा पु० विहडेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० चित्रगच्छे श्रीदेवानंदसूरिभिः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२९८. सं. १४८४ वर्षे वैशाखशुदि ३ दिने ऊकेशज्ञा० आल्हा भा० आल्हणदेनाम्न्या सु० डूंगर चांपा लांपा सामल गिरूआदि-कुटुंबयुतया स्वश्रेयोऽर्थं श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१२९९. सं. १४४२ वर्षे...............पितृ अजेसी मातृ अहिगदेवी...............श्रीशान्तिनाथबिंबं का० नागेन्द्रगच्छे श्रीगुणाकरसूरिभिः प्र० ॥

१३००. सं. १३११ वैशाखवदि २ शनौ सा० नरपाल सु० ....सुश्राविकया आत्मश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्री-सूरिभिः ॥

१३०१. सं. १४७७ वर्षे माघशुदि १० दिने श्रीश्रीमालज्ञा० सं० पासड सु० मांडण भा० मेचू सु० ऊगमेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० साधु० पू० भ० श्रीरामचन्द्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

१३०२. सं. १५९० वर्षे वैशाखशुदि ६ रवौ प्राग्वाटज्ञा० सा० देवदास भा० रूपिणि पु० दो० थावर सापा थावर भा० चंगी पु० दो० पासा भा० रहि तया श्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० कुतुबपुरागच्छे श्रीसौभाग्यनंदिसूरिभिः प्र० ॥

१३०३. सं. १५६८ वर्षे वैशाखवदि १२ बुधे श्री ७ श्रीअ-जितनाथप्रतिमा सेवक रहीआ हेमा का० सुलक्षणपुरग्रामे ॥

१३०४. सं. १३७२ श्रीमालश्रे० वीरड श्रे० श्रीशान्तिनाथ-बिंबं सु० मंडलकेन का० प्र० श्रीदेवानंदसूरिभिः ॥

१३०५. सं. १५०६ वर्षे चैत्र गुरु ऊ० ल० श्रे० गोना भा० चमकू पु० हेमा पौमा भा० देमतिनामनी स्वभर्तृश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० ऊ० ग० सि० भ० कक्कसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३०६. सं. १४३४ वैशाखवदि १ श्रीब्रह्माणच्छे श्रीश्रीमाली पितृ भीमा मातृ जासलदे पंचायण लाडण श्रेयसेसु० पूनाकेन श्रीशान्तिनाथ प्र० का० प्रतिमा श्रीज० ग० सूरिभिः ॥

१३०७. सं. १५०९ वर्षे वैशाखशुदि ७ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० विजु भा० करमादे सु० सटापालेन मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीतिलकसूरिभिः ॥

१३०८. सं. १४६१ वर्षे माघशुदि १० वाणिवटगोत्रे सा० ठ० कउडिया भा० स० कमलश्रीपुत्रेण सा० राजाकेन पितृमातृपितृव्यभ्रातृश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीमलयचन्द्रसूरिभिः ॥

१३०९. सं. १५०४ वर्षे श्रीश्रीमाली सा० मेघा भा० चंगाइ सु० जीवण भा० जीवादे सु० लषराज श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० आगमगच्छे श्रीजिचन्द्रसूरिभिः ॥

१३१०. सं. १४८९ वर्षे वैशाखशुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० साल्हा भा० सिरिआदे पु० लीबा आवा कडूआ लीबा भा० लकलदे पु० डूंगरदेवाभ्यां शिवानिमित्तं श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीशान्तिसूरिपट्टे श्रीमुनिशेखरसूरिभिः ॥

१३११ सं. १५७६ वर्षे माघमासे ५ शुदि गुरुवासरे प्राग्वाटज्ञा० श्रे० हरपति भा० ठूसी पु० श्रे० जाटा भा० रंगी पु० श्रे० हासा भा० रतनादे द्वितीयभ्रातृश्रे० वीसादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपापक्षे कुतुबपुरीयशाषायां पूज्यश्रीसौभाग्यनंदिसूरिभिः प्र० स्वश्रेयसे जयतपुरे पं. श्रीसुंदरविशालगणिनामुपदेशेन ॥

१३१२. सं. १५०४ वर्षे फागणशुदि १२ गुरु श्रीश्रीमालज्ञा० दो० धणसी भा० मरगदे सु० नगाकेन भार्या बाई धारी स्वपितृश्रेयोऽर्थं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अह्मिदावादवास्तव्य श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः आगमगच्छेशश्री-अमरसिंहसूरिशिष्यश्रीहेमरत्नस्वगुरूपदेशेन का० प्र० विधिना ॥

१३१३. सं. १५०५ वर्षे माघशुदि १० रवौ प्राग्वाट सा० नाथा भा० रूडी सु० डूंगरकेन भ्रातृ सा० भीमाश्रेयोऽर्थं श्रीसुविधिनाथ-चतुर्विंशतिपट्टः का० मलधारिगच्छे श्रीविद्यासागरसूरिशिष्यश्रीगुणसुंदर-सूरिभिः प्र० ॥

१३१४. सं. १५१७ वर्षे फागुणशुदि ३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० सं० सरवण भा० सिंगारदे सु० मं० रामा भा० रमादे पुत्रेण सं० कर्मणेन भा० चमकू भ्रातृ सं० भोजा भा० पद्माई पुत्रादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० मलधारिगच्छे श्री-विद्यासागरसूरिपट्टे श्रीगुणसुंदरसूरिभिः प्र० श्रीअहमदावादनगरे ॥

१३१५. सं. १६६७ वर्षे ज्ये० शुदि ९ दिने पत्तनवास्तव्य श्रीप्राग्वाटज्ञा० सं० ठाकर भा० श्रीमाउ श्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्री-विजयदानसूरिभिः तपागच्छे ॥

१३१६. सं. १५१६ वर्षे ज्ये. शुदि १३ सोमे पेथापुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कला भा० हर्षू सु० श्रे० ईसरेण भा० रत्नाईयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० बृहत्तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरि-पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१३१७. सं. १५२७ वर्षे पोषवदि १ सोमे वडनगरवासि ऊकेश मं० देवराज सु० मं० जेसिंग भा० चाई सु० वरजांगेन भा० वल्हादे पु० श्रीचन्द्रादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१३१८. सं. १६२८ वर्षे शाके १४९४ प्र. वैशाखशुदि ११ बुधे उकानक्षेत्रे ओसवालज्ञा० उदसजन सोनी श्रीवंत भा० सुहवदे पु०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो० श्रीचंद् द्वि० नाम सो० कीकजी समस्तकुटुंबेन श्रीपार्श्वनाथपंच-तीर्थीबिंबं का० तपागच्छे भ० श्री ५ श्रीहीरविजयसूरिभिः प्र० ॥

१३१९. सं. १५२० वर्षे ज्ये. वदि १ भोमे पलाडागोत्रे ऊ० सा० देवराज भा० देवलदे पु० तेजा भा० कडू पु० मालायुतेन मातृ-पितृश्रेयोऽर्थं श्रीश्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१३२०. सं. १५६९ वर्षे माघशुदि १५ गुरौ अहिमदावाद-वास्तव्यश्रीश्रीमालीज्ञा० पं० सादा भा० चमकू सु० वरजांगेन भा० हांसी भ्रातृ भोला वृद्ध सु० गोमादिकुटुंबयुतेन स्वमातृश्रेयसे श्रीनमि-नाथबिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छे श्रीकमलप्रभसूरिभिः ॥

१३२१. सं. १५१२ वर्षे अहम्मदावादवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० दो० अल्हणसी भा० चमकू सु० दो० माला दो० जिनदास दो० पासवीरयुतैः जीवितस्वामिनमिनाथादिचतुर्विंशतिपट्टः स्वमातृश्रेयसे श्री-आगमगच्छेशश्रीहेमरत्नसूरिगुरूपदेशेन का० प्र० विधिना ॥

१३२२. सं. १५१३ वर्षे वैशाखसुदि १० बुधे श्रीमूलसंघे आचार्यश्रीविद्यानंदिदेवोपदेशात् श्रीहुंबडवंशे ठ० षेता भा० करणू तयोः पु० जेता भ्रातृ देवसी भा० माजू जेता भा० लाछू पु० सिवा भा० अमकू द्वितीयभ्रा० देइया भा० कर्माई भ्रातृसिंहराज भा० नाथी ४ भ्रातृनेमिदास भा० करमादे एतेषां श्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० ॥ *

१३२३. सं. १५९२ वर्षे माघवदि ९ रवौ ओसवालज्ञा० दो० जेसंघ भा० जटकू सु० दो० हांसा भा० अरघाई पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीजीराउलगच्छे भ० श्रीदेवरत्नसूरिभिः ॥

१३२४. सं. १५१६ वैशाखशुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० ऊधरण भा० वजू सु० श्रे० शिवाकेन भा० गउरी भ्रातृ धर्मसी माला पु०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामणयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं का० प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१३२५. सं. १५८८ वर्षे ज्ये.शुदि ९ गुरौ श्रीप्राग्वाटज्ञा० श्रे० गोरा भा० रषिमणि पु० वर्धमान भा० मरघाइ पु० षीमा भा० वछादे प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीविमलनाथबिंबं का० कुतुबपुरापक्षे श्रीसौभाग्यनंदिसूरिभिः प्र० श्रीअहमदावादवास्तव्य ॥

१३२६. सं. १५४६ माघशुदि ३ प्रा० श्रे० सहजाकेन भा० जालू पु० समधर सालिग तेजा पंचायणादियुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः निजामपुरे ॥

१३२७. सं. १५२९ वर्षे ज्येष्टवदि ७ गुरौ श्रीश्रीवंशे महं० नगा भा० रत्नू पु० महं०आशा भार्यया पहुतिसुश्रीविकयास्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छाधिराजश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१३२८. सं. १५४२ वैशाखशुदि १० गुरौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० रामा भा० मांजू अरघू पु० व्य० जागाकेन भा० रेई पु० पनापटादिवृद्ध भ्रातृ व्य० महिराज जीवादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः सिद्धपुरे धांधलदेश्रेयसे च ॥

१३२९. सं. १५०५ वर्षे माघवदि ९ सोमे श्रीओएसवंशे मीठडीआशाखायां सा० मेघा भा. माणिकदे पु० सा० तिलासुश्रावकेण भा० दुल्हादे प्रमुखसमस्तकुटुंबसहितेन श्रीअंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन मातृपित्रोः श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन॥

१३३०. सं. १४३७ वर्षे वैशाखवदि ११ सोमे ऊपकेशव्य० षादा भा० आल्हणदे पु० ळछाकेन पित्रोःश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० मदाहडश्रीसोमचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३३१. सं. १४१७ वर्षे ज्ये. शुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० पं० जेसलभा० नयणादे पु० तेजाकेनवीदा........गहदा श्रे० मेरसीनिमित्तं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीपिप्पलाचार्यगच्छे श्रीपद्मप्रभसूरिभिः

१३३२. सं. १३७६ वैशाख................श्रीपाल्हणश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० ॥

१३३३. सं. १५४७ माघ श्रीओसवालज्ञा० सा० धाठाभा० आल्ही सु० कान्हाकेन भगिनी बाई धांधीयुतेन श्रीअंचलगच्छे श्रीसिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० ॥

१३३४. सं. १५२० वर्षे वैशाखवदि १ बुधे ऊकेशज्ञा० षांटडगोत्रे मं० नीसलभा० आसू सु० पाल्हाभा० प्रीमलदे पितृमातृ श्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० भावडारगच्छे श्रीभावसागरसूरिभिः ॥

१३३५. सं. १५६० वर्षे मार्ग. शुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० टाहाभा० टीबू पुत्र लीषाराणामांडणसहितैः भ्रातृ कुंदानिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० ब्रह्माणगच्छेभ० श्रीजाजगसूरिभिः थीरापद्रवास्तव्य ॥

श्रीअजितनाथजीना देराना लेखो (सुतारनी खडकी).

१३३६. सं. १४८९ वर्षे ज्ये. वदि १० शुक्रे श्रीओसवालज्ञा० सा० नाईया भा० नानादे तयोसुताभ्यां जाटाकेल्हाभ्यां निजभ्रातृ काल्हा श्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१३३७. सं. १५०९ माघवदि ९ प्राग्वाटज्ञा० कूराभा० कपू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रदेसु० व्य० मूलूनाम्नाभा० सीलूसहितेन निजश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिशिष्य श्रीजयचन्द्रसूरिभिः ॥

१३३८. सं. १५७७ ज्ये. शुदि ५ सरषिजवास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० श्रे० नरदेवभा० मचूयुसेंघरभा० सिरिआदे पु० कसाकेन भा० सपू पु० रीडादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपा श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१३३९. सं. १५१८ वर्षे माघ. शुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० वीसलभा० लाडी पु० आसाभा० जसमादे पु० तेजाकालाभा० ठबीचमकूसहिताभ्यां श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० वृहद्गच्छे श्रीजयमंगलसूरिसंताने श्रीपुनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीकमलप्रभसूरिभिः ॥

१३४०. सं. १९७६ वर्षे वैशाखशुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० मं० धरणभा० लाडी सु० जयसिंहेननिजपितृ मं० धरणश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१३४१. सं. १५५९ वर्षे वैशाखशुदि १३ दिने अहम्मदावाद्वासि प्रा० सं० जिणदत्त पु० सं० वछाकेनभा० डाही द्वि० कद्कूयुतेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीकमलकलशसूरिभिः ॥

१३४२. सं. १५०० वर्षे वैशाखशुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० सा० साल्हाभा० श्री० राणी सु० देवराजभा० रत्नूनाम्न्या श्रे० भीलाभा० चांपू युतयास्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्ध तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१३४३. सं. १५०९ वर्षे आषाढसुदि २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० भोलाभा० वापूसुतयारत्नूनाम्न्या श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

१३४४. सं. १५१० वर्षे वैशाखवदि ५ करजग्रामे भा० सा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जइताभा० जबकूसु० सा० गोपाकेनभा० हर्षूपु० लूंडा कुंताजागापदमादिकुटुंबयुतेनस्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

१३४५. सं. १५२३ वर्षे माघ शुदि ११ ऊकेशज्ञा० सोनानिवासि ऊदाभा० वीजूसु० भरमाकेनभा० भरमादेसु० कडु आदि कुटुंबयुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपा श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१३४६. सं. १९८९ वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य श्रीमालज्ञा० श्रे० जांटाभा० रतूसु० लीबा मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं श्रीमदागमगच्छेश श्रीअमरसिंहसूरिपट्टे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन का० विधिना प्र० ॥

१३४७. सं. १५४६ वर्षे आमलेश्वरग्रामे लाइआ श्रीमालीज्ञा० श्रे० कर्मसीभा० तेजूसु० श्रे० गदाकेनभा० वीकूसु० लखा पोपट हीरा प्रमुख परिवार श्रेयोऽर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१३४८. सं. १५२० वर्षे फागुणवदि ३ सोमे श्रीअहम्मदावाद वास्तव्य प्राग्वाटज्ञा० मं० मउलसीभा० वीजलदेसु० मं० सहसाभा० मरगादेसु० धीराकेनभा० जीविणिसु० तेजावइजा भ्रातृ चासणभा० वाली सु० हर्षीयुतेनस्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथचतुष्पट्टः का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः पं. माणिक्यरत्नउपदेशतः ॥

१३४९. सं. १५०८ वर्षे वैशाखवदि १२ रवौ श्रीगूर्जरज्ञा० पितृ मं० वयरा मातृ बाई रांकू श्रेयसे सु० षेता वाछाकेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० आगमिक श्रीजिनरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१३५०. सं. १५६८ वर्षे माघशुदि ५ गुरौ श्रीश्रीवंशे सा० महिराजभा० माल्हणदेपु० सा० श्रीराजभा० देनाईपु० सा० लालाकेन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भा० ललनादेसु० उदयकिरणभा० सा० रतारीडावाघामेघा वाछा प्रमुख कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छेश श्रीभावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेनअहम्मदावादे ॥

१३५१. सं. १५३३ वर्षे पोषवदि १० वरहडीयागोत्रे ऊके० सा० नरसिंहसु० सा० महिराजपु० सा० आसाभा० चंपाईसु० सा० कषजीकेनभा० कउतिगदेसु० सहसकिरणसंसारचन्दादिकुटुंबयुतेन स्वमातृश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरीश्वरैः॥

१३५२. सं. १६१७ वर्षे पोष वदि १ गुरौ ओसवालज्ञा० सा० सहसवीरभा० सिरियादेपु० सा० सकलचन्द्र लषाजसारतायुतेन च श्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसिंहसूरिभिः॥

१३५३. सं. १५३० वर्षे माघवदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० दो० नरपालभा० नागलदेपु० वर्धनभा० जमकू सहितेन पितृश्रेयसे संभवनाथ का० प्र० पूर्णि० पं० श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेनविधिना ॥

१३५४. सं. १५२८ वर्षे आषाढशुदि ९ रवौ प्राग्वाट देधर भा० अमरीपु० श्रे० महिराजभा० मकूद्वितीया हीराईपु० रथावरवरजांगसहितेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० प्र० श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीसूरीणामुपदेशेन ॥

१३५५. सं. १५८० वर्षे वैशाखशुदि २ शुक्रे बलासरवास्तव्य प्रा० ज्ञा० वृद्धशाखायां से० नारदभा० डाहीपु० सेठि हरपाभा० हीराईपु० आंबसहितेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० आत्मपुण्यार्थं प्र० श्रीरायकुमारसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(फताशाहनी पोळ) श्रीश्रेयांसनाथजीना देराना लेखो.

१३५६. सं. १५२५ वर्षे वैशाखशुदि ५ चांइउ० सा० पूना भा० अमरीपु० लापाभा० सोभीपु० सहितेन आत्मश्रेयोऽर्थं साधू पु० श्रीहीराणंदसूरि वा० प्रज्ञातिलक उपदेशेन श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० श्रीजयशेखरसूरिभिः ॥

१३५७. सं. १५१७ वर्षे वैशाखशुदि ९ शनौ प्राग्वाटज्ञा० मणी० देपालभा० बाई सोहासणिपु० मणी० शिवदासेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्वमातृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० ॥

१३५८. सं. १५६९ वर्षे वैशाखवदि ५ सोमे श्रीश्रीमालीज्ञा० मं० देवराजभा० अमीदेसुकान्हभा० कामलदेसु० अमिपाल राजपाल युताभ्यां पितृमातृश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० पूर्णि० प० वटपद्रीय श्रीलब्धिसुंदरसूरिभिः प्र० वंद्रामणवास्तव्य ॥

१३५९. सं. १५१७ वर्षे फागुणशुदि ३ शुक्रे शालापतिज्ञा० सं० चूणाभा० हलीसु० समराभा० हीरूसु० देवापाथारामासहितेन श्रीआदिनाथबिंबं का० श्रीसिद्धान्तीयगच्छे श्रीसोमचन्द्रसूरिभिः प्र० ॥

१३६०. सं. १४७२ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० गुणपालसु० श्रे० साहभा० श्रे० साहभा० रूडीसु० मांइआसोमाभ्यां श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१३६१. सं. १५११ वर्षे माघ शुदि ५ गुरौ उकेशवंशे टीकगोत्रे मं० शिवाभा० हर्षूपु० महंधीराकेनभा० राणीपु० मालासरवणसहितेन निजश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३६२. सं. १५१२ वर्षे वैशाखशुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सगालभा० बदुसु० जायडकालाभ्यां पितृमातृ स्वश्रेयोऽर्थं श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीमुनिचन्द्रसूरिः वरमरवास्तव्य ॥

१३६३. सं. १५६५ वर्षे माघ शुदि ५ गुरौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० नागाभा० नागलदेसु० श्रे० जीवाभा० उबाईनाम्न्या का० श्रीअनंतनाथबिंबं प्र० तपागच्छे श्रीइन्द्रनंदिसूरिभिः पं० विनयहंसगणिभिः ॥

१३६४. सं. १५२५ वर्षे आषाढवदि ७ कडाग्रामे मा० व्य० सरवणभा० वाछूसु० हासाभा० मेघूसु० हषाकेन भामांनूकुटुंबयुतेन पितृश्रेयोऽर्थं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः श्रीआदिनाथबिंबं ॥

१३६५. सं. १३७८ वर्षे वैशाखवदि ५ गुरौ श्रीवायटज्ञा० ठ० सींहणसीभा० सलखणदे पितृमातृश्रेयसे सु० तहुणाख्येन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीरासिहसूरिभिः ॥

१३६६. सं. १७२१ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ दिने अहमदावादवास्तव्य श्रीश्रीमालीवृद्धशाखीय सा० पा० तियाभा० बाई फूली नाम्न्यास्वश्रेयोऽर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छेभ० श्री विजयदेवसूरिभिः दक्षिणदेशे विद्यापुरे ॥

१३६७. सं. १७०१ वर्षे फागुणवदि ५ दिने राजनगरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० वृ० शा० सायनियासु० सा० ईमाकेन स्वपितृश्रेयोऽर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः दक्षिणदेशे विद्यापुरे ॥

१३६८. सं. १५२६ वर्षे ज्ये.वदि ९ शुक्रे श्रीमालज्ञा० श्रे० रवीमाभा० अरघूसु० छाछाकेनभा० सारू भ्रातृ रत्नाभा० चांपू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटुंबयुतेन श्रीश्रीआदिनाथादि पंचतीर्थी का० प्र० च श्रीउदयदेवसूरिभिः विधिना दीयासणवास्तव्य ॥

१३६९. सं. १५६९ वर्षे ज्ये. शुदि १२ शुक्रे विद्यापुरवास्तव्य श्रीओसवंशे ठकरगोत्रे दो० पिहिराजभा० मंदोयरि सु० दो० कडूया भा० लीलाईसु० दो० राउलकेनभा० सहिजलदेसु० अमिपाल महिपाल वीराप्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० श्रीमारुद्र-सूरिभिः नाणायालगच्छे ॥

१३७०. सं. १४९० वर्षे वैशाखशुदि ६ गुरौ............... धरेणपितृश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः सीसाणाग्राम-वास्तव्य ॥

१३७१. सं. १४७२ प्राग्वाटज्ञा० मं० कडूआभा० कामलदे पु० कल्हाकेनभा० महकू सु० हमारलाला भ्रातृ मांजा श्रेयसे श्रीमुनि-सुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीदेवसुंदरसूरिशिष्य श्रीसोमसुंदर-सूरिभिः ॥

१३७२. सं. १५८१ वर्षे ज्ये. वदि ९ गुरौ राजपुरवासि प्राग्वाटवंशे श्रे० मांगाभा० पुहतीपु० श्रे० लटकणभा० लषमादे सु० लाबाकेन स्वश्रेयोऽर्थं श्रीश्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छनायक श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

१३७३. सं. १४६८ वर्षे वैशाखवदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० अर्जुनभा० अहिवदे श्रेयसे सु० मेघाकेनभा० मेघलदे सहितेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० पू० पं० श्रीविद्याशेखरसूरीणामुपदेशेन ॥

१३७४. १४३९ वर्षे फागुणसुदि २ शुक्रे श्रीमाल पितृ जगा मातृ हीरादे श्रे० सु० वाछाकेन श्रीसुमतिनाथबिंबं श्रीधर्मतिलकसूरि श्रीधनतिलकसूरीणामुपदेशेन का० प्र० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३७५. सं. १४९७ वैशाखशुदि ३ शनौ प्राग्वाटज्ञा० व्य० खेतसीसु० व्य० छीडाभा० पोमादेपु० भोजाकेनपितामहषेतसीश्रेयसे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० साधु पु० श्रीधर्मतिलकसूरिउपदेशेन प्र० ॥

१३७६. सं. १४८२ वर्षे प्रा० व्य० महिपा भा० हापा भा० रांऊसु० नरसिंहभा० सोनीयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१३७७. सं. १३६७ वर्षे पोषवदि ९ श्रीमालज्ञा० श्रे० भीमा सु० नउलापूल्लकेन पिताश्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० वाचनाचार्य उपदेशेन मकणपुरवास्तव्य ॥

१३७८. सं. १५३६ वर्षे महनीआणज्ञा० वाइडागोत्रे सा० भूराभा० साल्हीपु० रत्नपालकेनभा० संसारदेपु० नाथा श्रीचन्दयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीखरतरगच्छेभ० श्रीजिनहर्षसूरिभिः ॥

१३७९. सं. १४०९ वर्षे वैशाखशुदि २ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सांडी............पितृ षेता मातृ भावलदे पितृव्य मदन भ्रातंकुरा सु० सलषाश्रेयोऽर्थं पंचायुतेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१३८०. सं. १४४९ वर्षे ज्ये. शुदि २ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जोकाभा० सोमलसु० देवाभा० राजू भ्रातृ जदेवाकेन स्वपितृव्य श्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपा श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१३८१. सं. १५२४ प्रा० श्रे० खेताभा० लाडीसु० श्रे० गनिआ अमरा कर्मसीकरणाराउलरीणास्वीमातेषु श्रे० कर्मसिंहेनभा० अर्चू पु० लाषा लालादिकुटुंबयुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३८२. सं. १६९७ वर्षे फा. शुदि ९ दिने प्राग्वाटज्ञा० लघुशाखीय सा० वीरा भा० वयजलदे पु० सा० वच्छराजनाम्ना स्व भा० बाई सनरगदे स्वकीयसहोदर सा० गदाधर प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोऽर्थे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० च तपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिभिः श्रेयसे भवतात् सदा ॥

१३८३. सं. १६२९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे १३ तिथौ बुधवासरे श्रीअंचलगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० सो० जसा भा० बाई जसमादे तयोः पु० सो० अभा भा० बा. मनकाई पुत्राभ्यां रामलषाभ्यां युताभ्यां स्वपुण्यार्थं श्रीधर्म्ममूर्त्तिसूरीश्वराणामुपदेशेन श्रीपार्श्वनाथस्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ॥

१३८४. सं. १९३२ वर्षे पोषवदि १ सोनेपत्तने श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० कालू भा० हीसू सु० सदाकेन भा० चमकू सु० माणिकतेजा महिपति प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिपट्टे श्रीउदयसागरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इडर.

१३८५. सं. १७०५ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० शुक्रे शा. श्रीपाल सुत शा. रुपजी भार्या रुपादे भ्रातृ शा. उदयसिंघ भार्या कादुबाई प्रमुख श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीभूवनकीर्त्तिसूरिभिः ॥

१३८६. सं. १६९२ वर्षे वै. शुदि ६ गुरु बा० सहजानाम्न्या कुंथुनाथबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिपट्टे आचार्यश्री विजयसिंहसूरिभिः श्रीरस्तु ॥

१३८७. सं. आलाई २६४२ वर्षे माघवदि १ रवौ दिने श्री अकबरसुलतानराज्ये ओसवंशे बो० पबा भार्या तत्पुत्र बो० कीका भार्या लाषणदे तत्पुत्र बो० हेमराज बंधव बो० तेजा भार्या तेजदे पुत्री तोलबाइ श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे पातसाहीश्रीअकबर महाराजाधिराजप्रदत्तजगद्गुरुबिरुदधारिश्रीहीरविजयसूरिपट्टे संप्रति विजयमान श्रीविजयशेखरसूरिभिः ॥

मूळनायक सन्मुख.

१३८८. सं. १८८८ वर्षे माघशुदि ५ चन्द्रे श्रीइडरगढे पंच महाजनसमस्तयुतेन श्रीअजितनाथजिनबिंबं कारापितं महाराजाधिराजश्रीगंभीरसिंहजिविजयराज्ये भट्टारकश्रीविजयदेवेन्द्रसूरीश्वरजि आदेशात् प्र० श्रीतपागच्छे श्रीरायुदेशे श्रीरस्तु सर्वेषां जनानां ॥

१३८९. सं. १६८१ ज्येष्ठ शुदि २ रवौ तपागच्छे० ....

भमतिनो लेख.

१३९०. सं. १६५१ वर्षे माघ वदि ९ सोमे श्रीमूलसंघे भ० श्रीगुणकीर्त्ति सू० भ० श्रीवादिभूषणगुरूपदेशात् इडरवास्तव्य हो०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो० पासा भा० सोभागिन सुत दो० श्रीअरघादे श्रीपार्श्वनाथबिंबं प्रतिष्ठितं ॥

१३९१. सं. १८९२ वर्षे वैशाखशुदि ३ शुक्रे इडरनगरे श्रीमहाराजाजीश्रीयुवानसिंघजिविजयराज्ये श्रीतपागच्छे श्रीऋषभजिनबिंबं प्र० ॥

१३९२. सं. १/४२ वर्षे माघ वदि १ रवौ दिने श्रीअकबर सुलतानराज्ये हुंबडज्ञातीय शा० ठाकर भा० कीबाइ सुत गा० जीवराज बांधव गा० पोपट भा० सषमादे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीतपागच्छे पातसाहीश्रीअकबरमहाराजाधिराजप्रदत्तजगद्गुरुबिरुदधारिश्रीहीरविजयसूरिसंप्रतिविजयमानविजयसेनसूरिभिः ॥

१३९३. सं. १६५६ वर्षे वै. वदि ६ शुक्रे इडरदुर्गवास्तव्य हुंबडज्ञातीय....

१३९४. सं. १८९२ वर्षे वै. शुदि १२ शुक्रवासरे श्रीइडरनगरे श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजाजिश्रीश्रीयुवानसिंहजीविजयराज्येश्री आदिनाथजिनबिंबं प्रतिष्ठितं भ० श्रीश्रीविजयदेवेन्द्रसूरीश्वरादेशात् पं० राजविजय प० सूपशत्वा लघुप्राग्वाट शा. खेमचंद हेमचंद भार्या हेमकुंवर तेन बिंबं कारितं श्रीरायदेशे शुभं भूयात् सर्वेषां जनानाम् ॥

१३९५. सं. १८८० वर्षे माघशुदि ५ चन्द्रे श्रीइडरगढे पंच समस्तमहाजनयुतेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० भ० विजयदेवेन्द्रसूरीश्वरादेशात् महाराजाधिराज श्रीगंभीरसिंहविजयराज्ये श्रीरायदेसे श्री तपागच्छे महामहेन स्थापितं कल्याणमस्तु सज्जनानाम् ॥

१३९६. सं. १८९२ वर्षे वैशाखशुदि १३ इडरगढे महाराजाधिराजमहाराजश्रीयुवानसिंहविजयराज्ये श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० भ०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीश्रीविजयदेवेन्द्रसूरीश्वरादेशात् प० राजवि प० रूप० श्रीतपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिगछयसंघसमस्तेन कारितं शुभं भूयात् सर्वसज्जनानां ॥

१३९७. सं. १८९२ आषाढि वर्षे वैशाख शुदि १२ शुक्रे इडरगढे महाराजाधिराज महाराजाश्री युवानसिंहजिविजयराज्ये श्रीचंद्रप्रभजिनबिंबं शा. रेवाजिरणपुदास भा० बाइ हेती तया कारापितं लघु-प्राग्वाटज्ञातीय प्र० श्रीतपागच्छे भट्टारकश्रीविजयदेवेन्द्रसूरीश्वरादेशात् ॥

धातुप्रतिमा.

१३९८. सं. १३१४ वर्षे वैशाख वदि १ ....
इडरगामना मूल नायकश्री चिंतामणजी.

१३९९. सं. १८५४ शा० १७२१ प्र० ज्येष्ठ शुद १० गुरौ उशवंशज्ञातीय वृद्धशाखायां फो० श्रीकुशला ज्ञाज्ञण भार्या पुत्र शाली सुत आहलचंद भार्या कुशलीतेन श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं कारापितं श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिराज्ये प्रतिष्ठितं श्रीमहाराजा श्रीगंभीरसिंहजी तत् श्रीइडरगढे श्रीतपागच्छे विजयदेवसूरिगतेन ॥

१४००. सं. १८५४ ज्येष्ठसुदि ९ गुरौ संघवीत्कुशालीमोडणतेन श्रीसहस्त्रफणापार्श्वनाथबिंबं कारापितं म० श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिराज्ये प्र० श्रीतपागच्छे महाराजा गंभीरसिंहजीराज्ये इडरनगरे

एक सरखा पांच लेख.

१४०१. सं. १८९९........श्रीअजितनाथ

१४०२. सं. १९०३ माघसुदि ९ शुक्रे अहिमदावाद वास्तव्यं ओशवालज्ञातीय वृद्धशाखायां नेमचंदभाइ नानीभार्या जेकोर तत्पुत्र दलसुखभाई स्वश्रेयोऽर्थं महावीरजिनबिंबं कारापितं श्रीशान्तिसागरसूरिपट्टे श्रीतपगच्छसागरशाखा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४०३. सं. १९२१ शा. १७८६ प्र० माघशुदि ७ गुरौ अंचलगच्छे श्रीकच्छदेशे कोठारानगरवास्तव्य उशवंशे लघु शा० गांधि मोहोतागोत्रे शा० केशवजीनायकगृहे पत्नी वल्लभा बा० पाबुबाईना पादलिप्तनगरे सिद्धक्षेत्रे श्रीवर्द्धमानजिनबिंबं नवीनं भरावी—गच्छनायक भ० श्री पू० रत्नसागरसूरिभिः ॥ पंचतीर्थिनीप्रतिमा

१४०४. सं. १५१९ आषाढवदि २ श्रीमंत्रीदल्लीये श्रीतुशीयडगोत्रे सं० मेघराज सु० ठ० जिनदास पु० सुभगरभार्या पद्मिणी पु० ट० लक्ष्मीसेनश्रावकेण स्वश्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं कारापितं श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः खरतरगच्छे प्र०श्रीरस्तु ॥

मूळनायक उपर.

१४०५. सं. १६७८ वर्षे सकलभूपतिनतचरणारविंद राजाधिराजमहाराज श्रीकल्याणमंत्रीजी राज्ये शा० सूरजाकेन सुविधिनाथबिंबं का० प्र० भ० भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः ॥

१४०६. सं. १७०९ वर्षे वै. वदि २ दिने शा० बलिनगरवास्तव्य उकेशज्ञातीय वृद्धशाखा.

धातुप्रतिमा.

१४०७. सं० १२२२ वर्षे माघशुदि १९ पिता० आमण माता० जासण श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारापितं ॥

१४०८. सं. १२६१ ज्येष्ठशुदि १२ श्रीमदूकेशगच्छे श्रे० महाराज श्रे० महिस तयोःश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

१४०९. सं. १३५७ वर्षे ज्येष्ठवदि ९ श्रीखंडेरगच्छे श्रीयशोभद्रसूरिसंताने श्रा० यशोभद्र भार्या तेउ पुत्र काहड धाधल भार्या लाडी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र वयरामदन खेताप्रमृति कुटुंबश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्री-सुमतिसूरिभिः ॥

१४१०. सं. १३७५ वर्षे आषाढशुदि ६ खडायतिज्ञातीय श्रे० वनदेव भार्या लाच्छिपुत्र धिणीकेन पित्रोःश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० सूरिभिः ॥

१४११. सं. १३७० वर्षे आषाढशुदि ६ खडायतिज्ञातीय विदेजयतशाह श्रेयसे श्रे० धीणाकेन श्रीनमिबिंबं कारितं ॥

१४१२. सं. १२८९ फाल्गुनवदि २ रवौ ठ० जगपालभार्या ठ० आल्हणदीव्या कारितं श्रीवज्रसेनसूरिशिष्य श्रीनरचंद्रसूरिभिः प्र० ॥

१४१३. सं. १३२६ वर्षे माघवदि २ रवौ ठ० मलहाकेन पितृयशश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारि० श्रीराजगच्छे श्रीमाणक्यसूरि-शिष्य श्रीहेमसूरिभिः ॥

१४१४. सं. १५०९ वर्षे वै.शुदि ७ रवौ श्रीश्रीमालीज्ञातीय श्रेष्ठिसुरा भार्या पुनी सुता डुंगर मालुआ सुमाला भार्या करणु सुता देशल सहीजु हालुकालु देशल भार्या साहपुत्री जलुश्रेयोर्थं श्रीश्रीकुंथु-नाथबिंबं का० प्र० ब्रह्मगच्छे श्रीमुनिचंद्रसूरिभिः वालसासणवास्तव्य ॥

१४१५. सं. १५२९ वर्षे फा.शुदि ७ शनौ प्रा० ज्ञा० मं० धनसिंह भा० वाबु पु० हापानरसिंघाभ्यां श्रीआदिनाथबिंबं का० उएस-गच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः हापा भा० अकु नरसिंघ भा सहुजु श्रीवर्द्धमान ॥

१४१६. सं. १५८० वर्षे वै.शुदि १२ शुक्रे श्रीश्रीमालीज्ञातीय मंत्री हीरा भा० सखी सुत मं० हेमा भा० हमीरदे सु० मं० तेजाकेन भा० नीति सुत डुंगर सुंगर भाणायुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं श्रीपु-ण्यरत्नसूरिप० श्रीसुमतिरत्नसूरिणा मो० का० प्र० सुविधिना ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४१७. सं. १५३१ वर्षे माघवदि ८ दिने उकेश शा० कान्हा भार्या कउरदे पुत्र कुआसाताभ्यां भ्रातृ ठाकुर भा० अमरादेपुराई प्र० कुटुंबयुताभ्यां श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्र० कोरंटगच्छे श्रीसावदेवसूरिभिः ॥

१४१८. सं. १२२० वर्षे ज्येष्ठवदि ९ श्रीकोरंटकीयगच्छे श्रीपद्मसिंह भा० विल्लु पुत्र पुण्यसिंह विजयसिंह स्वपितृश्रेयसे बिंबं का० प्र० श्रीसर्वदेवसूरिभिः ॥

चोमुखजीनी बे प्रतिमाओ कुवावालादेरासरे.

१४१९. सं. १४९१ आषाढ १३ प्राग्वाटवंशे डीसाग्रामवास्तव्य श्रे० पल्हा भा० हिमी मु सुत हरपति एतेन भा० आसु भ्रातृ धरणादि कुटुंबसहितेन श्री जिनमूलनायकचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१४२०. सं. १३९४ वर्षे श्रीनागेन्द्रगच्छे प्राग्वाट पितृ पुसारामि श्रे० साझणेन श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीदेवेंद्रसूरिभिः ॥

१४२१. सं. १६१३ वर्षे वैशा. शुदि १० गुरौ राजाधिराज महाराज श्रीनाभिराजा माता श्रीमरुदेवी तत्पुत्र श्रीआदिनाथस्यबिंबं का० श्रीपाटणवास्तव्य श्रीओशवालज्ञातीय वृद्धशाखायां सा समधर तत्पुत्र सा वच्छा भार्या बाइ इकुराइ पुत्र स्व० कुपुजाकर्मक्षयार्थं का० प्र० विधिना शुभं भवतु ॥

१४२२. सं. ८२ वर्षे वै. वदि ८ गुरौ श्रीनाणकीयगच्छे उप-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केशज्ञातीय श्रे० पासड भार्या झालणदेवी पुत्र नागसिंह वयरसिंह देवसिंहम्यां मातृपित्रोः श्रेयसे का० श्रीमहावीरबिंबं प्र० श्रीपाशदेवसूरिभिः सत्यपुर्ये ॥

१४२३. सं. १३०३ वर्षे चै. शुदि २ रवौ श्रे० गंगा० श्रे० सिद्धणागच्छ कारितं प्रतिष्ठितं श्रीआमदेवसूरिभिः ॥

१४२४. सं. १५१३ वर्षे माघशुदि १ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० चंपा भा० चापलदेव सुत लाला केशवरामा ए श्रीसंभनाथबिंबं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे म० श्रीश्रीमुनिचंद्रसूरिभिः गाहलावास्तव्य सर्वे पूर्वजानां प्रसादात् सिद्धिभवतु ॥

१४२५. सं. १४५९ चै. शुदि १५ शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीय महावीरधवल सुत नापा भार्या बाइ लाडीश्रेयोर्थं सुत गांगाकेन श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० श्रीहरिभद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

१४२६. सं. १४८३ माघशुदि १० बुधे प्राग्वटज्ञातीय श्रे० परमा भार्या सारु सुत गीगाकेन भार्या अमकुयुतेन श्रीचंद्रप्रभबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१४२७. सं. १५५२ ज्ये. वदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय सं० पंचा भा० राजू पु० सागा भा० ढुबी जीवितस्वामि आत्मश्रेयसे सुत षला सागण भाइसी पा० श्रीआदिनाथबिंबं का० श्रीपूर्ण० श्रीदेव सुंदरसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना जामलीवास्तव्यैः ॥

१४२८. सं. १३४४ ज्ये. वदि ४ श्रीमालज्ञातीय श्रे० पाल्हणेन पितृ धरणिय मातृ नायकदेवि श्रेयोर्थं श्रीनेमिनाथबिंबं का० प्र० सूरिभिः ॥

१४२९. सं. १३२७ माघशुदि ५ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० जसचंद्रेण माल्दे कुरी श्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्र० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४३०. सं. १२९९ माघशुदि ५ सोमे थारापद्रीयगच्छे श्रे० नायकसुत श्री०................महावीरबिंबं का० प्र०

१४३१. सं. १५२५ पौषशुदि १५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय डो० वाहड भार्या कर्मणी पु० हीरा भा० हांसलदे पु० डो० पर्वतेन पितृस्व-श्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः पेथापुर वास्तव्य साभ्र-पुनमीयागच्छे ॥

पाषाण प्रतिमा.

१४३२. सं. १८०४ आषाढशुदि ३ गुरौ श्रीइडरवास्तव्य ओशवाल........पार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीहेमसूरिभिः ॥

१४३३. १५९४ वै.शुदि ३ श्रीपार्श्वनाथबिंबं प्र० श्रीचंद्रसूरिभिः उकेशगच्छे ॥

पंचतीर्थि प्रतिमा.

१४३४. सं. १६७० वै.शुदि ८ दिने श्रीमलीज्ञातीवृद्ध शाखीय शा० हरदासनाम्ना श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० च श्रीतपा-गच्छे भ० श्रीविजयसेनसूरिभिः पुरागते ॥

१४३५. सं. १५९६ फाल्गुनवदि २ बुधे २ श्रीभावडारगच्छे उपकेशज्ञातीय खाटडगोत्रे मंत्री धर्मा भा० सेतुपुत्र मं० वाच्छा भा० पिमु पु० मीना रामा माकाकेन भा० माल्हणदेयुतेन स्वपुण्यार्थं श्रीवा-सुपूज्यबिंबं का० श्रीकालकाचार्यसंताने भ० विजयसिंहसूरिभिः प्र० प्रांतिजवास्तव्यः ॥

१४३६. सं. १८३७ शाके ७२७ वर्तमाने मासोत्तममासे माघ मासे कृष्णपक्षे ७ गुरौ हुच्छमच्छानीयवृद्ध शाखाये मंत्री घुडा-सीया कपुर हीरादास भोजाई रुपाबाई श्रीआदिनाथबिंबं का० ओहाडी-पोशालगच्छे म० ९०८ श्रीराजविमल सूरिभिः प्र० इडरनगरे ॥

३२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४३७. सं. १२०४ वैशाखवदि ३..........

१४३८. सं. १५०० ज्ये.वदि १२ गुरौ प्रा० रा० धारसी भा० साहु पु० काहा भा० कामलादे पुत्र बाहु वाल्हा हीदासहितेन स्वश्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० कच्छोलीडागच्छे म. श्रीसकलचंद्रसूरिभिः माकुरादेशे ॥

१४३९. सं. १५७२ फा.शुदि ८ सोमे सोढलाइ ग्रामे वास्तव्य नागरज्ञातीय श्रे० शा० द्रामा० हीरसुतलयभा० पुतली सुत कोक पोपट भा० हासीकेन भा० हासनदे सुत राजीभवापत्ती कन्या सारिंगपेघाप्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का० प्र० श्रीवृद्धतपापक्ष भट्टारक श्रीधनरत्नसूरिभिः ॥

पाषाणप्रतिमा लेख.

१४४०. सं. १८१७ वै. शुदि ७ गुरौ श्रीइडरगढवास्तव्य हुंबड ज्ञातीय वृद्धशाखायां गांधी वांजि तत् भार्या नियरगदे हेमसुत गांधी बाइ कुंवरका ऋषभदेवजिनबिंबं का० श्रीजिनेन्द्रसोमसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

१४४१. सं. १८५५ शाके १७२० प्र० माघमासे शुदि १० भगुवासरे श्रीलघुपोषधशालायां उपकाराय श्रीसहस्त्रफणीनाम्मा श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० पंचतीर्थी० ॥

१४४२. सं. १५७३ वै.शुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालिवंशे संघवीनरपालभार्या सुलही पुत्र संघवी जिनदासेन भा० रूपाही सहितेन लालु सुश्राविका श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीमलधारगच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः अहमदावादे ॥

१४४३. सं. १५३३ वर्षे चैत्रवदि २ गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय व्य० तेजा भा० पोमी पु० जावडजगाभी पितृ मा० श्रे० पुत्र वदेहलानमिश्रं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्मश्रेयोर्थं चंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीविनयप्रभसूरि-पट्टे श्रीसोमरत्नसूरि काकरेचा गुरु ॥

१४४४. सं. १९ वर्षे श्रीकाष्ठासंघे श्रीपराकेनबावज्ञातीय मे० साय्या भा० माणिका पु० लाच्छाराणसानीहीराधनापत्न्य श्रीपार्श्वनाथ-बिंबं कारापितं प्र० (चैत्र वदि ८ बुधे) श्रीपालन्याय्या ॥

शिलालेख प्रतिमा.

१४४५. सं. १६७८ वर्षे ज्ये. शुदि ६ सोमे इलाइदुर्गवास्तव्य हुंबडज्ञातीय भ्रु० दो० वाच्छा सुत दो० हांसा भा० सपराणदे सुत दोसी कर्मीखान भा० केसरदे सुत दो० देवचंद दो० रायचंद इंद्रजियुतेन श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे भ० विजयदेवसूरिभिः ॥

१४४६. सं. आलाई १६४२ वर्षे माघवदि १ रवौ श्रीअकबर सुलतान राज्ये ओसवाले पिपाडगोत्रे भोजा भार्या कपुरदे सुत अकबर राजपालसकुटुंब्युतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीअकबर महाराजाधि-राज जगद्गुरुबिरुदधारि हीरविजयसूरिप्रतिविजयमान श्रीविजयसेनसूरिभिः॥

१४४७. सं. ५४२ वर्षे इडर वास्तव्य......................

१४४८. सं. १६९३ चैत्र दि ० गुरौ का० उकेश० श्रीसुम-तिनाथबिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसूरिपट्टे आचार्यश्रीविजयसिंहसूरिभिः॥

१४४९. सं. १६८१ वर्षे ज्ये. वदि १ इडर का० वृ० प्रा० दो० वाकु भार्या.... ....

१४५०. सं. आलाइ १६४२ वर्षे माघ वदि १२ दिने श्रीआ-लाइराज्ये हुंबडज्ञातीय गांगीयराज भार्या जोचिदे सुत जाठुराभार्या श्री संभवनाथबिंबं का० प्र० ॥

१४५१. सं. १६६० वैशाखशुदि २ रवौ श्रीमूलसंघे भ० वादि भूषण उपदेशात् का०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४५२. सं. १५५६ वैशाखवदि ६ गुरौ हु० श्रीउगादेवृद्धतपागच्छे श्रीजयसूरिभिः प्र० ॥

१४५३. सं. आलाई १६४२ माघवदि १२ रवौ श्रीअकबर सुल्तान राज्ये हुंबडज्ञातीय शा० ठाकर भार्या कीबाइ सुत गांधी जीवराज भार्या जीवादे सुत लालजी भार्या अजाइ श्रीमहावीरबिंब का० प्र० तपागच्छे बादशाही श्रीअकबर महाराजाधिराज प्रदत्त जगद्गुरू बिरुद्धारि श्रीश्रीश्रीहिरविजयसूरिपट्टे संप्रतिविजयमान श्रीविजयसेनसूरिभिः पंडित श्रीमुनिचन्द्रगणिभिः ॥

१४५४. सं. १६९३ माघशुदि ५ गुरौ श्रीमूलसंघयुतेन भट्टारक श्रीपद्मनंदिगुरूपदेशात्...............सं० पंचतीर्थी ॥

१४५५. सं. १५०९ वै. वदि ११ शुक्रे ऊकेश शा० घरणसि भा० धवलदे पुत्र शा० रत्ना भा० देमाइ पुत्र शा० श्रीघाजिणीया भा० मेलाई संपुराइ पु० धना भ्रातृ देवा भा० धवलदे पु० प्रमुखकुटुंबयुताभ्यां मुनिसुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः संघस्तीर्थे ॥

१४५६. सं. १५५२ वै. वदि ८ गुरौ हेलुली वास्तव्य हुंबडज्ञातीय ऊकेशगोत्रे फ० उज्ञापरम भात्रेन वडिपोषभजरसूरिविमिपट्टे श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः हुंबडगच्छे श्रीसंघदत्तसूरयः ॥

१४५७. सं. १५२१ मा. शुदि १ गुरौ चैत्रगच्छे उकेशवंश धारुयागोत्रे शाह विजयपाल भार्या वणु सुत नोलुमा मटु सुत लिंबा भा० लिलादे सुत हाघउसी हाडहाप हे० पूर्वजश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० विद्रसमीय श्रीमलचंद्रसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः कुयारको वास्तव्यः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४५८. सं. १५३५ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्त्तिसु० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात्ज्ञा० गोत्रश्रीनीतिप्रणमति ॥

केसरीयाजी पादुका लेख.

१४५९. सं. १८७३ वर्षे शाके १७३९ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे शुभकारि ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ गुरौ उपकेशज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठगागोत्रे सुश्रावक पुण्यप्रभावक श्रीदेवगुरु भक्तिकारक श्रीजिनाज्ञा प्रतिपालक शाह श्रीशंमुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुलदीपक शिवलाल अंबावीदास तत्पुत्र दोलतराम वृषभदास श्रीउदेपुर वास्तव्यः श्रीआदिनाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता श्रीतपागच्छे सकलभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्रीश्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः उपदेशान्मोहनविजयेन श्रीधूलवेरभंडारि दलिचंद आंगुच्छइ ॥

१४६०. सं. १०४२ वर्षे वैशाखशुदि ९ सोमे भट्टारक श्री जसराज श्रीकला भार्या सोनबाइ विजिराज द्वंदाचलवीग्रामात तपडी शा. भा० हासणदेत सा पत्रकादेबराइ मारा भ्रात यणुमन भ० छी भ्रात साचा भा० पीची राजवेनाथः शेरपाल श्रीकाष्टासंघे विरन्याका सवगोत्रे एक श्रीयादीसानंदन ॥

डुंगरपुर पार्श्वनाथजिनालये लेख.

१४६१. ॐनमः कमठेधरणेन्द्रेच स्वोचितं कर्म्मकुर्वति प्रभुस्तुल्य मनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥१॥ स्वस्तिश्री संवत १७९९ वर्षे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैशाख कृष्णपक्षे पञ्चमीसोमे श्रीमद्वागडदेशे गिरिपुरे महाराउलश्रीशिवसिंघविजयराज्ये प्राग्वाटज्ञाती बृहत्शाखायां महेता हीरजी भार्या हीरादे सुत महेता रायसिंघ भा० रायमती सु० म० सुरजी भार्या सुरमदे सुत म० जादवजी सुत करणजी म० माधवजी म० मदनजी म० मुरारजी मद्यभार्या गंभीरदे सुत राजमान्य म० श्रीदयालजी भार्या रंगरूपदे सुत सदाशिव पुत्री नाथी नाम्नी तथाच लघुमाता महीबाइ लाडी नाम्नी तथाच भगिनीबाई गोकुल नाम्नीप्रमुखकुटुम्बान्वितेन संघेन श्रीगंभीरपार्श्वनाथकस्य चैत्यालये देवकुलिकायां सुवर्णकलशं ध्वजारोपणं कीर्त्तिस्तंभं तथा समस्तसंघ ज्ञाति भोज्यंदत्वा....महोत्सवेन पीत्तलमयश्रीसुखसंपत्तिपार्श्वनाथस्यबिंबं स्थापितं तपागच्छे पूज्यभट्टारक श्रीविजयदयासूरेरादेशात् पन्यासकेसरसागरेण प्रतिष्ठितं देवेदाने गुरौ संघे भक्तिः शक्तिः स्तुतिः रतिः ॥ यादृशीविद्यते अद्यतादृशीतादृशीभवः ॥ १ ॥

१४६२. सं. १६७१ वर्षे वैशाखवदि ९ रवौ श्रीवागडदेशमण्डने भूभामिनीभालतिलकायमान सर्वनगर शिरोमणि श्रीगिरिपुरे वागडमहाराउलश्रीपुंजराजजीविजयराज्ये प्रधानपदधारि गांधी रघासुत रत्न गांधी श्रीजोगीदास मेघजीकलाजी विजयिनितन्नगरनिवासि लघुनज्जन प्राग्वटज्ञाति शृंगारहार श्रेष्ठी मांडण भार्या शीलालंकारधारिणी मनरंगदे नाम्नी तदधिक प्रथम पुत्र सकलगुण संपूर्ण ज्ञानादि कृतसुर होमावत् धर्मभार धुरंधर सुकृतजनवीरभार्या द्विक प्रथम भार्या जोडीमदे द्वितीया श्रीपागरदे प्रथम भार्या पुत्र रत्नकहानजी भ्रातृ जेगा भार्या जोडीमदे पुत्र रहीया भगिनी द्रीकमइत्यादि सकलपरिवार श्रेयोर्थं श्रीसिहलाकारित श्रीपार्श्वनाथभुवने भद्रप्रासादः कारापितः प्रतिष्ठा कारापिता तपागच्छनायकश्रीपूज्यश्री ९ श्री सोमविमलसूरितच्छिष्यकलिकालसर्वज्ञ जगद्गुरु बिरुदधारि संप्रतिविजयमान श्रीपूज्यश्री ९ हेमसोमसूरीश्वरपट्ट प्रभाकर लक्षण प्रत्यक्षणोत्तमावतार आचार्यश्रीविमलसोमसूरीश्वरआदेशात् महोपा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्याय श्री ५ आनंदप्रमोदगणि शिष्यपंडितश्रेणी शिरोमणि पं० श्रीसकलप्रमोदगणिशिष्य पं० तेजप्रमोदगणि प्रतिष्टाकृता ॥

१४६३. सं. १४४४ वर्षे पुर्णिमागच्छे श्रीहेमचन्द्रसूरिशिष्य श्री लक्ष्मीचंद्रसूरि श्रीमहावीरप्रसाद कारापितं गुरुश्रेयोर्थं ॥

पोसीना पार्श्वनाथी देरीओना लेखो.

१४६४. सं. १७८८ ना वर्षे माघशुदि ९ चंद्रे श्रीईडरनगरवास्तव्य उकेशज्ञातीय वृद्धशाखायां पारख सोध रामचंद भार्या अमृत माता नाथीयुतेन श्रीनेमीजीनबिंबं का० प्र० श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिरादेशात् तपागच्छे माहाराजाजी श्रीगंभिरसिंग्रजी राज्ये श्रीपोसीनातिर्थे. ॥

१४६५. सं. १८८८ वर्षे माघशुदि ९ चंद्रेश्रीसुपार्श्वनाथबिंबं प्र० भ० विजयदेवेन्द्रसूरिभिः ॥

१४६६. १८८८ वर्षे माघशुदि ९ चंद्रे श्रीसावलीनगरवास्तव्य उकेशज्ञातिय प्राग्वाट समस्त श्रीसंघयुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारावितं प्रतिष्ठीतं भट्टा०रक श्रीविजयदेवेन्द्रसुरिरायदेसे श्रीपोसीणातीर्थे महाराजाधिराज श्रीगंभीरसिंघजीविजय राज्ये पीताम्बर भ्राता फुलचंदेण कारापीतं श्रीतपागच्छे ॥

१४६७. सं. १८८८ वर्षे माघशुदि ९ चंद्रे श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं कारापीतं प्रतिष्ठितं विजयदेवेन्द्रसूरि राज्ये सावलीगामेसमस्तसंघ कारावितं पोसीनातीर्थे ॥

१४६८. सं. १२०० वर्षे वैशाखवदि २ दीने श्रीसावलीनगरेवास्तव्य उकेशज्ञातिय वृद्धशाखा श्रीअजितनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पालना मुलनायकनो पाषाण.

१४६९. सं. १५६१ वर्षे ज्येष्टवदि ९ गुरौ प्र० साजमामलसी मा० धर्म सु० म० देवी म० हेसा ओगीथ म० देवा भार्या जबक सु० तागाइयोगा नाथादीकुटुम्बयुतेन श्रीशान्तिनाथबिंबं कारापितं ॥

मु० साबळीश्वेतांबरी लेख.

१४७०. सं. १५६३ वर्षे वैशाखशुदि ११ गुरौ दिने श्रीश्रीमालज्ञातीय नाणुटी अमरसिंह भार्या वाल्ही सुत नाणुटी सोमाकेन भार्या सूनद पुत्रपौत्राणांश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं तपागच्छ नायक श्रीश्रीहेमविमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं चतुर्विंशतिपट्ट कारापितं विजापुर वास्तव्य श्रीरस्तु ॥

१४७१. सं. १५१८ माघशुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० प्रथम भार्या मेघू सुत बदाकेन भा० माणिकी सहितेन पुत्रपाषर भार्या वाल्ही युतेनस्वश्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रत स्वामिबिंबं कारा० प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयदेवसूरिपट्टे श्रीरत्नदेवसूरिभिः पाडवाला वास्तव्य शुभंभवतु श्रीः॥

१४७२. सं. १६३७ वर्षे श्रीअहिंमतनगर वास्तव्य श्रीओशवाल ज्ञा० दोषी लहुवाबाई ललतादे दोषी वासणवदुआ श्रीकुंथुनाथबिंबं कारापितं प्र० श्रीहीरविजय सूरिभिः ॥

१४७३. सं. १५२२ व. मा.शुदि ९ शनि रोहिण्यां पाहणपुरवासि उके० श्रे० सिवा भा० वमकू सु० गदाकेन भा० कर्मादे भ्रा० प्रमु० कुटुंबयुतेन स्वश्रे० श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपा० श्रीसोमसुंदरसूरिसंताने श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१४७४. सं. १३१८ वर्षे ज्येष्ठवदि ८ बुधे श्रे० धनपाल सुत रतनसिंह भार्या रतनदेवि श्रेयसे जगसिंहने श्रीशांतिबिंबं का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४७५. सं. १५३३ वर्षे मा.वदि १० गुरौ उकेशज्ञा० शा० देवा भा० रामती सुत जसाकेन भा० पोहती सुत नगराजादी कुटुंबयुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्र० तपा० श्रीश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागर- सूरिभिः ॥

१४१६. सं. १३०२ वैशाखशुदि १० चांगवास्तव्य प्राग्वाट ज्ञा० स्वपितृव्यवस्तुपाल मातृमूलदेवीश्रेयोर्थं सुत ठा० वरसिंहने श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्रगच्छे विजयसेनसूरिशिष्य श्रीयशो.... सूरिभिः ॥

१४७७. सं. १५८७ वर्षे माघवदि ०) गुरौ श्रीविजापुर वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० वस्ता भा० विजलदे सुत जीवाकेन श्रीविमलनाथबिंबं का० श्रीआगमगच्छे श्रीउदयरत्नसूरिभिः प्र० श्रीरस्तु. ॥

१४७८. सं. १५३३ वर्षे माघवदि १० उ० दो० शिता भा० सुहवदे सुत दो० सिहाकेन भा० सिंगारदे सुत वरसिंग अजादि कुटुंबयुतेन निज भ्रातृ दुदा श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः श्रीइलदुर्गनगरे ॥

१४७९. सं. १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीश्रीवंशे श्रे० चांपा भार्या हीरु पु० हासा भा. फदकुदु पौत्र भा० प्रीमलदे सु० अजनसु श्रावकेण भा० अमरा॒ पु० मघा सहितेन स्व पुत्र श्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीगुणनिधानसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन अहमुदनगरे ॥

१४८०. सं. १५२२ व. उ० ज्ञा० शा० मूलराज भा० बडघू सु० साहवीरा षिमाकेन भा० प्रमीणी सु० मुंजा माला प्रभृतिकुटुंबयु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेन भ्रातृ लोहट श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० बृहत् तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरि सं० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

१४८१. सं. १५०६ वर्षे पौषवदि ६ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० मं० आमू० शाखायां मं० गोवल भार्या उमादे सु० सोढाकेन पितृमातृ आत्म श्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमश्रीवीरप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

१४८२. सं. १४८१ माघशुदि १० प्राग्वाटज्ञा० शा० लाषा भा० सुल्ही सुत सा० मोकलेन भा० पावि यु० श्रीज्ञान० उद्यापने श्रीश्रेयांसबिंबं का० श्रेयसे प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

१४८३. सं. १२९८ वर्षे भाद्रपदशुदि १ गुरौ नागेन्द्रगच्छे श्रीविजयसिंहसूरिसंताने भा० गालाकेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० ॥

पाषाणप्रतिमा लेख.

१४८४. सं. १६७८ वर्षे ज्ये. वदि ६ सोमवासरे शावली-वास्तव्य प्राग्वटज्ञातीय लघुशाखीय वो० नानासुत वो० हंसराजकेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं श्रीतपागच्छनायक श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिभिः ॥

१४८५. सं. १६७८ वर्षे सकलनृपति कोटिकीरहीर महाराज श्रीकल्याणमलजी राज्ये सो० रतनसिंहकेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं प्रति० भट्टारक श्रीपांच श्रीविजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रदीपभट्टारक श्रीविजयदेवसूरीश्वर तपगच्छे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरमगाम.

श्रीअजितनाथजीना देराना लेखो.

१४८६. सं. १३४१ ज्ये. शुदि १९ स्व श्रेयोऽर्थं श्रीमोहणेन श्रीवीरबिंबं का० प्र० (ल) नागरगच्छे श्रीप्रद्युम्नसूरिभिः ॥

१४८७. सं. १२७६ फा. शुदि २ शनौ मातृ राजू श्रेयोऽर्थं सु० देधरेण श्रीमहावीरबिंबं का० ॥

१४८८. सं. १३९६ वर्षे वैशाखशुदि १० गुरौ बाकीना अक्षरो वांची शकाता नथी. श्रीनरचन्द्रसुरिशिष्यश्रीमाणिक्यचन्द्रसूरिभिः ॥

१४८९. सं. १३९१ वर्षे..........श्रीब्रह्माणगच्छे नउलदेउल पु० लीलाकेन पित्रोः श्रेयसे सुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीगुणाकरसूरीणामुपदेशेन ॥

१४९०. सं. १४१४ वर्षे ज्ये. वदि १३ रवौ ओसवालज्ञा० श्रे० लषमण भा० लषमादेनिमित्तं पु० रूदाकेन आत्म श्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० श्रीबृहद्गच्छे श्रीसत्यगुरु श्रीअमरचन्द्रसूरिभिः प्र० ॥

१४९१. सं. १४४८ पोसशुदि १२ श्रीकूकूटगोत्रे शा........ भा० माहणदे पु० रतनेन मातृपितृ श्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

१४९२. सं. १५२५ वर्षे वैशाखवदि ११ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य०...........सु० भादाकेन भा० लषी सु० ३ केल्हक्षीसुवाघासहितेन श्रीजीवितस्वामि श्रीपद्मप्रभबिंबं का० प्र० प्रधानपूर्णिमापक्षे भ० श्रीजयप्रभसूरिभिः मगवाडाग्रामे ॥

१४९३. सं. १३५६ वर्षे वैशाखवदि १२ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पितृ देवचन्द्र श्रेयोऽर्थं सु० घयसाकेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीथारापद्रियगच्छीय श्रीशान्तिसूरिशिष्य श्रीसर्वदेवसूरिभिः ॥

१४९४. सं. १३९७.............................श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० श्रीरत्नदेवसूरिभिः ॥

१४९५. सं. १३४६ वर्षे फागणशुदि १० मोढज्ञा० ठ० जाल्हा सु० पद्मेनआत्मनः श्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० श्रीहरिप्रभसूरिभिः॥

१४९६. सं. ....चैत्रवदि ५ गुरौ भावदेवाचार्यगच्छे श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० भावदेवसूरिभिः ॥

१४९७. सं. १२७८ वर्षे मातृ स्वसृपद्मिणिश्रेयोऽर्थं सो० तेजपाल श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० ॥

१४९८. सं. ११९८ वर्षे वैशाखवदि ५ बुधे श्रीथारापद्रीयगच्छे श्रीशान्तिसूरिसंताने पंचासरग्रामे ठ० वास० सुतया जसमत्या प्रतिमा कारिता........निगमप्रभावक श्रीआणंदसागरसूरिभिः ॥

१४९९. सं. १५७३ वर्षे वैशाखशुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० सिंघा भा० रही पु० कर्णा सुश्रावकेण भा० साधु पु० अजा भा० अहिवदे पु० राणा तथा भ्रातृ सूया प्रमुखकुटुंबसहितेन श्रीजांगेडगच्छेसुगुरूणामुपदेशेन मं० सिंघा पुण्यार्थं श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० संघेन विठ्ठलापरग्रामे ॥

श्रीशांतिनाथजीना देराना लेखो.

१५००. सं. १५५२ वर्षे मार्गसिरशुदि ५ रवौ श्रीनाणावालगच्छे उपनागगोत्रे पु० गोया भा० गंगादे पु० हरा भा० हीरादे पुत्राभ्यां स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० भट्टा० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९०१. सं. १५१६ वर्षे आषाढशुदि २ शनौ श्रीमालज्ञा० श्रे० लोला भा० लीलू उभयोःश्रेयार्थं सु० पाताकेन पार्श्वनाथबिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ॥

१९०२. सं. १५१९ वर्षे ज्ये. शुदि ९ रवौ श्रीमालज्ञा० श्रे० हीरा भा० हर्षू सु० पता भा० मनी सु० देवा प्रमुखसकुटुंबयुतेन मातृ पितृ श्रेयोऽर्थं स्व श्रेयसे च श्रीसंभवनाथबिंबं का० चन्द्रगच्छे श्रीसूरिभिः मद्रासराग्रामे ॥

दसाडाना देरानो प्रतिमाना लेख.

१९०३. सं. १५६१ वर्षे माघ. शुदि १० बुधे ओसवंशे सा० मेला भा० पूराई सु० लटकणकेन भा० पद्माई सुतारूडी प्रमुखकुटुंबयुतेन स्व श्रेयोऽर्थं श्रीशान्तिनाथबिंबं का० प्र० किनरसगच्छे श्रीपुण्यवर्धन- सूरिभिः स्तंभतीर्थे ॥

श्रीसंखेश्वर पार्श्वनाथजीना देराना लेखो.

१९०४. सं. १२१९ माघ शुदि १३ वचलकबुदेवाभ्यांवहुदेवि मातृ श्रेयोऽर्थं ....बिंबं कारितमिति ॥

१९०५. सं. १५२३ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ प्रा० श्रे० कर्मण भा० कपुरी पु० श्रे० कडूआ भा० मानू पु० धर्मसी भा० बडु आदि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटुंबयुतेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्रीचित्रावालगच्छे श्रीश्रीयणदेवसूरिपट्टे श्रीश्रीरत्नदेवसूरिभिः शुभंभवतु श्रीपत्तने ॥

१५०६. सं. १५०० वै. शुदि ५ प्राग्वाटज्ञा० सं० उदयसी भा० चांपलदे पु० सं० नाथा भार्यया कडी नाम्न्या सु० समधर सीधर आसधर देवदत्त पुत्री कपुरी कीबाई पूराथादि कुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्रीवर्धमानबिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

१५०७. सं. १४७८ वैशाखशुदि १३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० जेसा भा० जसमादे द्वि० जाल्हणदे श्रे० सु० गोधाकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीकमलचंद्रसूरिपट्टे श्रीप्रभाणंदसूरिभिः॥

१५०८. सं. १४६८ वर्षे कार्तिकवदि २ सोमे श्रीअंचलगच्छेश श्रे० कडूआकेन श्रे० मंडलिक भा० आल्हनाममातापित्रोः श्रेयोऽर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं श्रीमेरुतुंगसूरीणामुपदेशेन का० प्र० च श्रीसूरिभिः ॥

१५०९. सं. १४८१ वर्षे माघ. शुदि ५ सोमे अंचलगच्छेश श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन ऊकेशवंशे सा० पूना भा० मेचू तत्पुत्रेण सा० सोमल श्रावकेण स्व श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० च सुश्रावकप्रवरैः ॥

१५१०. सं. १५२४ चैत्रवदि ५ भोमे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० सिंघा भा० धरणू पु० धनाकेन भा० राणी पु० हापाहीरा वस्ताहापा भा० कुंअरियुतेन आत्मश्रेयसे श्रीचतुर्विंशतिपट्टे मूलनायक श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षीय प्रथम श्रीविद्याशेषरसूरिसंताने श्रीगुणसुंदरसूरीणामुपदेशेन विधिनाश्री वा० श्रीज्ञानकलशनित्य ॥

१५११. सं. १३३४ वर्षे ज्ये. वदि २ सोमे प्राग्वाटज्ञा० व्य० वरसिंह सु० व्य० सालिग भा० साडू सु० देवराजेकेन भा० रलाई भ्रा० वानर अमरसिंह प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० द्विवंदनीकगच्छे श्रीसिद्धिसूरिभिः वीसलनगरवास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसंखेश्वरजीना जुना देरासरनी टुटी गयेली देरीओ उपरना लेखो.

दक्षिणदिशानी देरिओ उपरना लेखो.

१५१२. सं. १६६२ वर्षे कार्तिकशुदि ११ शंकरसाहेन भा० खरीसजण बई दीवारीबाई ॥

१५१३. सं. १६६६ वर्षे पोषवदि ८ रवि राजनगरना सुत वृद्धशाखीय ॥

१५१४. सं. १६६१ श्रे० सीराज वा० बा० दांउनी देहरी पटणीनी ॥

१५१५. सं. १६६२ वर्षे महं जेचंद सवघन्द प्रजाहोवजी देहरी पाटणनी ॥

१५१६. सं. १६६३ वर्षे पोषवदि २ दणीदोवरजपडंल ॥

उत्तर तरफ देरीना लेखो.

१५१७. सं. १६६२ ना वर्षे माघवदि १२ शनौ साणंदना संघ समस्तनी देरी. ॥

१५१८. सं. १६६६ वर्षे माघवदि ८ रवौ लटीपद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालीज्ञा० वृद्धशाखीय प० जावड भा० जसमादे सु० प० वाघजीकेन भा० सवरदे प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंखेश्वरग्रामे श्रीपार्श्वनाथमुख्यमासादे............प्रासादः शतशोरूप्यकव्ययेन का० ॥

दक्षिण तरफनी मोटी देरीनो लेख.

१५१९. सं. १६६८ वर्षे पोषवदि ८ रवौ राजनगर वास्तव्य वृद्धशाखीय ओसवालज्ञा० मीठडीयागोत्रीयसा० समरसिंह भा० हंसाई सु० सा० श्रीपालकेन भा० हर्षाईद्वि० भा० सुखमादेव्या सुपुत्रसा० वाघजी प्रमुखकुटुंब. आगळना अक्षरो बांची शकाता नथी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मशाळानी पाछली भींतपरनो लेख.

१९२०. श्रीगणेशायनमः सं. १८३६ ना वर्षे श्रावणशुदि २ दिने श्रीधर्मवाला महाजन समस्तनी छे करावी छे भामदेनाथीबअन करावीछे सा० कसलचन्द महाजन मारफत करावी छे सलाट श्रीहः परणकच्छः दरगम अजलल्ह लखीतंग ॥

पाटण—मणीयानी पाडो श्रीआदिनाथना देरीना लेखो.

१९२१. सं. १४९२ वैशाखशुदि ३ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० ठ० सीधण भा० सीमारदे पितृव्य डुंगरसिंघा भ्रातृ मातृतेषांश्रेयसे ठ० चाणक पासडाभ्यां श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० जेरंडगच्छे श्रीविजयसिंहसूरिभिः॥

१९२२. सं. १४६४ वर्षे ज्ये.शुदि १० सोमे प्राग्वाटज्ञा० व्य० महिपा भा० देऊ पु० चदुय भा० गदी पु० कर्मणधर्माभ्यां षूटीतकीसहिताभ्यां पित्रोश्रेयसे श्रीनमिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० कच्छोलीवालगच्छे पूर्णिमापक्षे भ० श्रीरत्नप्रभसूरिपट्टे भ० श्रीसर्वाणंदसूरीणामुपदेशेन ॥

पाटण कोटावाला बाबुनी धर्मशालामां देरानो लेख.

१९२३. सं. १९७३ वर्षे वैशाखशुदि ३ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० वृद्धशा० सा. वनाकेन भा० जेमू पु० जीवा जगमाल जीवा भा० आसू प्रभृतिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे कच्छोलीवाल श्रीविजयराजसूरिपट्टे श्रीविद्यासागरसूरीणामुपदेशेन प्र० बलद्रुठवास्तव्य ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only